श्रीः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास कृत

षोडश रामायण।

संग्रह

इसमें

श्रीरामनहछू, वैराग्यसंदीपिनी, बरवारामायण, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल, श्रीरामगीतावली, श्रीकृष्णगीतावली, श्रीरामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, कवित्तरामायण, विनयपत्रिका, कलिधर्म्माधर्म्म निरूपण, हनुमानबाहुक, छप्पयरामायण, हनूमानचालीसा, और संकटमोचन, हैं।

जिसको

संपूर्ण भगवद्भक्तोंके उपकारार्थ ।

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई.

निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानेमें

छापकर प्रकट किया.

भाद्रपद संवत् १९७१.

श्रीः ।

भूमिका ।

विदित होकि सम्पूर्ण भगवद्भक्त हरिचरणानुरागियोंके आनन्दार्थ तथा कराल कलिमल ग्रसित पुरुषोंके निस्तारार्थ और भगवत् कथामृत प्रेमियोंकी पूर्ण तृप्त्यार्थ हमने श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास जीके समग्र (१६) ग्रंथ एकत्र करके मुद्रित कियेहैं यह ग्रंथ परम क्लिष्टतासे प्राप्तकर उत्तम विद्वानोंके द्वारा शुद्ध कराकर अत्युत्तम रीतिसे छापेहैं ग्रंथोंकी संख्या निम्न लिखित रूपसे है ॥

१ श्रीरामललानहछू–इसमें सोहर छन्दमें परम मनरंजन दुःख भंजन श्रीरामचन्द्रजीके नह काटनेका वर्णनहै, तथा शृंगार और हास्य रसका अधिक उद्दीपन है ॥

२ वैराग्यसंदीपिनी–इसमें अत्युत्तम सामयिक दोहा चौपाई ज्ञान भक्ति मार्गी तथा राजनीतिक वर्णित हैं संत स्वभाव संत महिमा और शांति रसकाभी उत्तम प्रकारसे वर्णनहै ॥

३ बरवारामायण–बरवाछंदमें सातौकाण्ड रामायण सूक्ष्म रीतिसे वर्णित है ॥

४ पार्वतीमंगल–उमामहेश्वरका विवाह विस्तार पूर्वक वर्णित है ॥

५ जानकीमंगल–जगज्जननी जनकसुता जानकीजी और रामचन्द्रजीका विवाह विस्तार पूर्वक वर्णित है ॥

६ गीतावली–सातौकाण्ड रामायण अनेक प्रकारके रागरागिनियोंमें वर्णितहै ॥

७ श्री कृष्णगीतावली–श्रीकृष्णचरित्र तथा उद्धव गोपियोंका पवित्र चरित्र मनहरन रागरागिनियोंमें वर्णित है ॥

श्रीः ।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

अथ श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत-

श्रीरामलला नहछू प्रारम्भः ॥



सोहरछंद

आदि शारदा गणपति गौरि मनाइयहो ॥ रामललाकर नहछू गाइ सुनाइयहो ॥ जेहि गाये सिधिहोय परमनिधि पाइयहो ॥ कोटि जनमकर पातक दूरि सो जाइयहो ॥ १ ॥ कोटिन्ह बाजन बाजहिं दशरथके गृहहो ॥ देवलोक सब देखहिं आनँद अतिहियहो॥ नगर सोहावन लागत बरणि न जातैहो ॥ कौशल्याके हर्ष न हृदय समातैहो ॥ २ ॥ आलेहि बाँसके माँडव मणिगण पूरनहो ॥ मोतिन्ह झालर लागि चहूँ दिशि झूलनहो ॥ गंगाजलकर कलशतौ तुरित मँगाइयहो ॥ युवतिन्ह मंगलगाइ राम अन्हवाइ यहो ॥ ३ ॥ गजमुकुता हीरामणि चौक पुराइयहो ॥ देइ सुअरघ रामकहँ लेइ बैठाइयहो ॥ कनकखंभ चहुँ ओर मध्य सिंहासनहो ॥ माणिक दीप बराय बैठि तेहि आसनहो ॥ ४ ॥ बनिबनि आवत नारि जानि गृहमायनहो ॥ बिहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायनहो ॥ अहिरिनि हाथ दहेंड़ि शकुनलेइ आवहि हो ॥ उनरत योवन देखि नृपति मनभावइहो ॥ ५ ॥ रूप सलोनि तँबोलिनि बीरा हाथहिहो ॥ जाकी ओर विलोकहि मन तेहि साथहिहो॥ दरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो ॥ केशरि परम लगाइ सुगंधनबोराहो ॥६॥ मोचिनि वदन सकोचिनि हीरा माँगनहो ॥ पनिहि लिहे करशोभित सुंदर आँगनहो ॥ बातियाकै सुघरि मलिनिया सुंदर गातहिहो ॥ कनक रतनमणि मौर लिहे मुसुकातहि हो ॥ ७ ॥ कटिके छीन बरनिआँ छाता पानिहिहो ॥ चंद्रबदनि मृगलोचनि सब रसखानिहिहो ॥ नैन विशाल नउनियां भौंह चमकावइ हो ॥ देइगारी रनिवासहि प्रमुदित गावइहो ॥ ८ ॥ कौशल्याकीजेठि दीन्ह अनुशासनहो ॥ नहछू जाइ करावहु बैठि सिंहासनहो॥गोद लिहे कौशल्या बैठी रामहिवरहो ॥ शोभित दूलह राम शीशपर आँचरहो ॥ ९ ॥ नाउनि

अति गुणखानि तौ वेगि बोलाईहो ॥ करि शृंगार अति लोनि तौ विहँसति आईहो॥कनक चुनिनसो लसितनहरनीलियेकरहो ॥ आनँद हिय न समाइ देखिरामहि वरहो ॥ १० ॥ काने कनकतरीवर वेसरि सोहहिहो ॥ गजमुक्ताकर हार कंठमणि मोहहिहो ॥ कर कंकण कटि किंकिणि नूपुर बाजहिहो॥रानीकै दीन्ही सारी तौ अधिक विराजहिहो ॥ ११ ॥ काहे रामजिउ साँवर लछिमन गोरहो ॥ की दुहुँरानि कौशिलहि परिगा भोरहो ॥ राम अहहिं दशरथके लछिमन आनकहो ॥ भरत शत्रुहन भाइ तौ श्रीरघुनाथ कहो ॥ १२॥ आजु अवधपुर आनँद नहछू रामकहो॥ चलहु नयनभरि देखिय शोभा धामकहो ॥ अति वड़भाग नउनियाँ छुए नखहाथ सों हो ॥ नैनन्ह करत गुमान तौ श्रीरघुनाथसोंहो ॥ १३ ॥ जो पगु नाउनि धोवइ राम धोवावहिंहो ॥ सो पग धूरि सिद्ध मुनि दरशन पावहिं हो॥अतिशय पुहुपकमाल राम उर सोहहिंहो ॥ तिरछी चितवनि आनँद मुनि मुख जोहहिंहो ॥ १४ ॥ नखकाटत मुसुकाहिं वरणि नहिं जातहिहो॥ पद्मपरागमणिमानहुँ कोमल गातहिहो ॥ जावक रचित अँगुरियन्ह मृदुल सुठारीहो ॥ प्रभुकर चरण प्रछालि तो अति सुकुमारीहो ॥ १५ ॥ भई निछावरि वहुविधि जो जस लायकहो ॥ तुलसिदास बलिजाउँ देखि रघुनायकहो ॥१६॥ भरिगाड़ी नेवछावरि नाउ लेइ आवइहो ॥ परिजन करहिं निहाल अशीशत आवइहो ॥तापरकरहिं सुमौजबहुतदुख खोवहिंहो ॥ होइ सुखी सब लोग अधिक सुख सोवहिंहों ॥ १७ ॥ गावहिं सब रनिवास देहिं प्रभुगारीहो ॥ रामलला सकुचाहिं देखि महतारीहो ॥ हिलिमिलि करत सवाँग सभारस केलिहो ॥ नाउनि मनहरषाइ सुगंधनमेलिहो ॥ १८ ॥ दूलहको महतारि देखि मन हरषैंहो ॥ कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघ जनु वरषैंहो ॥ रामललाकर नहछू अति सुखगाइयहो ॥ जेहि गाये सिधिहोइ परमनिधि पाइयहो ॥ १९ ॥ दशरथराउ सिंहासन वैठि विराजहिंहो॥तुलसिदास बलिजाहि देखि रघुराजहिहो ॥ जे यह नहछू गावै गाइ सुनावइँहो ॥ ऋद्धि सिद्धि कल्याण मुक्ति नर पावइँहो ॥ २० ॥

इति श्रीगोसाँईतुलसीदासजी विरचित श्रीरामललानहछू संपूर्ण ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

अथ श्रीगोस्वामि तुलसीदास कृत

वैराग्यसंदीपिनी प्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥ राम वामदिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याण मय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ तुलसी मिटै न मोह तम, किए कोटि गुणग्राम ॥ हृदय कमल फूलै नहीं, विनु रविकुल रविराम ॥ २ ॥ सुनत लखत श्रुति नयन विनु रसना विनु रसलेत ॥ वास नासिका विनुलहै, परसै बिना निकेत ॥ ॥३॥ सोरठा॥ अज अद्वैत अनाम, अलखरूप गुणरहित जो ॥ मायापति सोइ राम, दासहेतु नरतनु धरेउ ॥ ४ ॥ दोहा ॥ तुलसी यह तनु खेतहै, मन वच कर्म किसान ॥ पाप पुण्य द्वै वीजहैं, बवैसो लहै निदान ॥ ५ ॥ तुलसी एह तनु तवाहै, तपत सदा त्रैताप ॥ शांति होहि जब शांतिपद, पावै राम प्रताप ॥ ६ ॥ तुलसी वेद पुराण मत, पूरण शास्त्र विचार ॥ यह विराग संदीपिनी, अखिल ज्ञानको सार ॥ ७ ॥ (अथ संत स्वभाव वर्णनम्) ॥ दोहा ॥ सरल वरण भाषा सरल, सरल अर्थमय मानि ॥ तुलसी सरले संतजन, ताहि परी पहिचानि ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ अति शीतल अतिही सुखदाई । शम दम राम भजन अधिकाई ॥ जड़ जीवनको करै सचेता । जगमाहीं विचरत यहि हेता ॥ ९ ॥ दोहा ॥ तुलसी ऐसे कहु कहूँ धनि, धरणी वहु संत ॥ परकाजे परमारथी, प्रीति लिए निबहंत ॥ १० ॥ की मुख पट दीन्हे रहै, यथा अर्थ भाषंत॥तुलसी या संसारमें, सो विचारयुत संत ॥ ११ ॥ बोलै वचन विचारिकै, लीन्हे संत सुभाव ॥ तुलसी दुख दुर्वचनके, पंथ देत नाहिं पाव ॥ १२ ॥ शत्रु न काहू करि गनै मित्र गनै नाहिं काहि ॥ तुलसी यह मत संतको, बोलै समता माहिं ॥ ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ अति अनन्य गति इंद्रिजीता । जाको हरि विनु

कतहुँ न चीता ॥ मृगतृष्णा सम जग जिय जानी । तुलसी ताहि संत पहिचानी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास ॥ रामरूप स्वाती जलद चातक तुलसीदास॥ ॥ १५ ॥ सो जन जगत जहाजहै, जाके राग न दोष ॥तुलसी तृष्णा त्यागिकै, गहेउ शील संतोष॥१६॥शीलगहनि सबकी सहनि, कहनि हीय मुखराम ॥ तुलसी रहिए यहि रहनि, संत जननको काम॥१७॥ निज संगी निज सम करत, दुर्जन मन दुख दून ॥ मलयाचलहैं संत जन, तुलसी दोष विहून ॥१८॥कोमलवाणी संतकी, श्रवै अमृतमय आय ॥ तुलसी ताहि कठोरमन, सुनत मौन होइ जाय ॥ १९ ॥ अनुभव सुख उत्पति करत, भव भ्रम धरै उठाय॥ऐसी वाणी संतकी जो उर भेदै आय॥२०॥ शीतलवाणी संतकी, शशिहूते अनुमान ॥ तुलसी कोटि तपनि हरै, जो कोउ धारै कान ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ पापताप सब शूल नशावै । मोह अंध रवि वचन बहावै ॥ तुलसी ऐसे सद्गुरु साधू । वेद मध्य गुण विदित अगाधू ॥ २२ ॥ दोहा ॥ तन करि मन करि वचन करि, काहू दूषत नाहिं ॥ तुलसी ऐसे संतजन, राम रूप जग माहिं ॥ २३ ॥ मुख देखत पातक हरै, परसत कर्म विलाहिं ॥ वचन सुनत मनमोह गत, पूरुब भाग मिलाहिं ॥२४॥ अति कोमल अरु विमल रुचि, मानस में मल नाहिं॥तुलसी रत मन होइ रहै, अपने साहिबमाहिं॥२५॥जाके मनते उठि गई, तिल तिल तृष्णा चाहि॥मनसा वाचा कर्मना, तुलसी वंदत ताहि ॥ २६ ॥ कंचन काँचहि सम गनै, कामिनि काष्ठ पषान ॥ तुलसी ऐसे संतजन, पृथिवी ब्रह्म समान ॥२७॥ चौपाई ॥ कंचनको मृतिका करि मानत । कामिनि काष्ठ शिला पहिचानत ॥ तुलसी भूलि गयो रस एहा ॥ ते जन प्रगट रामकी देहा ॥ २८ ॥ दोहा ॥ अकिंचन इंद्रिय दमन, रमन राम इक तार ॥ तुलसी ऐसे संत जन, विरले या संसार॥ २९ ॥अहंवाद मैं तैं नहीं, दुष्टसंग नहिं कोइ ॥ दुखते दुख नाहिं ऊपजै, सुखते सुख नाहिं होइ॥ ३० ॥ सम कंचन काँचे गिनत, शत्रु मित्र सम दोइ ॥ तुलसी या संसारमें, कहत

संतजन सोइ॥३१॥ विरले विरले पाइए माया, त्यागीसंत ॥ तुलसी कामी कुटिल कलि, केकी काक अनंत॥३२॥मैं तें मेट्यो मोह तम उगेउ आतमाभानु ॥ संतराज सो जानिए, तुलसी यासहिदानु॥३३॥

इति श्रीवैराग्यसंदीपिनी महामोहविध्वंसिनी संत-
स्वभाववर्णन्नाम प्रथमप्रकाशः ॥ १ ॥

(अथसंतमहिमावर्णनं) ॥सोरठा॥को वरणै मुख, एक तुलसी महिमा संतकी॥जिन्हके विमल विवेक, शेष महेश न कहि सकत॥१॥ दोहा॥ महिपत्रीकरि सिंधु मसि, तरु लेखनी बनाइ॥तुलसी गणपति सो तदपि,महिमा लिखी न जाइ ॥२॥धन्य धन्य माता पिता, धन्य पुत्र वर सोइ॥तुलसी जो रामहिं भजै जैसे हु कैसेहु होइ॥३॥तुलसी जाके वदनते, धोखेउ निकसत राम॥ताके पगकी पगतरी, मेरे तनुको चाम ॥ ४ ॥ तुलसी भगत श्वपच भलो, भजै रैनि दिन राम ॥ ऊँचो कुल केहि कामको, जहाँ न हरिको नाम ॥५ अति ऊँचे भूधरनिपर, भुजगनके अस्थान॥तुलसी अति नीचे सुखदा ऊख अन्न अरुपान ६॥ चौपाई॥ अति अनन्य जो हरिको दासा। रटै नाम निशि दिन प्रतिश्वासा ॥ तुलसी तेहि समान नहिं कोई । हमनीके देखा सब लोई ॥ ७॥ यद्दपि साधु सबही विधि हीना। तद्यपि समता केन कुलीना ॥ यह दिन रैनि नाम उच्चरै। वह नित मान अगिनिमें जरै ॥८॥ दोहा॥दासरता एकनामसो, उभयलोक सुख त्यागि॥तुलसी न्यारे ह्वै रहै, दहै न दुखकी आगि ॥ ९ ॥

इति श्रीवैराग्यसंदीपिनी महामोहविध्वंसिनी संतमहिमा
वर्णनं नाम द्वितीयप्रकाशः ॥ २ ॥

(अथशांतिवर्णनं)॥दोहा॥रैनिको भूषण इंदुहै,दिवसको भूषणभान॥ दासको भूषण भक्तिहै, भक्तिको भूषणज्ञान ॥ १ ॥ ज्ञानको भूषण ध्यानहै, ध्यानको भूषण त्याग ॥ त्यागको भूषण शांतिप्रद, तुलसी अमल अदाग ॥ २ ॥ चौपाई ॥ अमलअदाग शांतिप्रदसारा । सकल कलेशन करत प्रहारा॥ तुलसी उर धारै जो कोई । रहै अनंद सिंधु महँ सोई ॥ ३ ॥ त्रिविध पाप संभव जो तापा । मिटहिं दोष दुख दुसह कलापा। परम शांति सुखरहे समाई।तहँ उतपात न भेदै

आई ॥ ४ ॥ तुलसी ऐसे शीतलसंता सदारहैं यहिभाँति एकंता ॥ कहा करैं खललोगभुजंगा ॥ कीन्ह्यौ गरल शील जो अंगा ॥ ५ ॥ दोहा॥अति शीतल अतिही अमल,सकल कामनाहीन ॥ तुलसी ताहि अतीत गनि, वृत्ति शांति लयलीन॥६॥चौपाई॥जो कोइ कोपभरैमुखवैना ॥ सन्मुखहतै गिराशरपैना॥तुलसी तऊलेश रिसनाहीं ॥ सो शीतल कहिए जगमाहीं ॥७॥ दोहा ॥ सातद्वीप नव खंडलों, तीनिलोक जगमाहिं॥तुलसी शांति समान सुख,अपर दूसरो नाहिं॥८॥ चौपाई ॥ जहाँ शांतिसत गुरुकीदई। तहाँ क्रोधकी जर जरिगई ॥ सकल काम वासना विलानी। तुलसी यही शांति सहिदानी ॥ ९॥ तुलसी सुखद शांति को सागर ॥ संतन गायो करन उजागर ॥ तामैं तन मन रहै समोई। अहं अगिनि नहिं दाहै कोई॥१॥दोहा॥ अहंकारकी अगिनिमें,दहतसकलसंसार ॥ तुलसी बाँचे संतजन, केवल शांति अधार ॥ ११ ॥ महाशांति जल परसि कै,शांतभएजनजोय॥ अहं अगिनिते नाहिं दहे,कोटि करै जो कोय ॥ १२ ॥ तेज होत तनतरणिको, अचरज मानत लोइ ॥ तुलसी जौ पानी भया, बहुरि न पावकहोइ ॥ १३ ॥ यद्यपिशीतल सम सुखद, जगमें जीवनप्राण ॥ तदपि शांतिजल जनिगनो, पावक तेज प्रमाण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ जरै बरै अरु खीझि खिझावै।राग द्वेष महँ जनम गँवावै॥सपनेहु शांति नहीं उन देही ॥ तुलसी जहाँ जहाँ व्रत एही ॥ १५ ॥ दोहा ॥ सोइ पंडित सोइ पारखी, सोई संत सुजान॥सोई शूर सचेत सो, सोई सुभटप्रमान ॥१६॥ सोइ ज्ञानी सोई गुणी, जन सोइ दाता ध्यानि ॥ तुलसी जाके चितभई,राग द्वेषकी हानि ॥ १७॥ चौपाई ॥ रागद्वेष की अगिनि बुझानी। काम क्रोध वासना नशानी ॥ तुलसी जबहिं शांति गृह आई। तब उर ही उर फिरी दोहाई ॥१८॥ दोहा ॥फिरी दोहाई रामकी, गेकामादिक भाजि ॥ तुलसी ज्यों रविके उदै, तुरत जात तम लाजि ॥१९॥ यह विराग संदीपिनी, सुजन सुचित सुनि लेहु ॥ अनुचित वचन विचारिकै, जस सुधारि तस देहु ॥ २० ॥

इति तुलसीदास विरचित वैराग्य संदीपिनी महामोह विध्वंसिनी शांति नाम वर्णनं तृतीयप्रकाशःसमाप्तः ॥ वैराग्य संदीपनी समाप्त॥

श्रीगणेशायनः ॥

श्रीजानकी वल्लभो विजयते

अथ श्रीबरवारामायण प्रारम्भः ॥



बरवाछंद ॥ केशमुकुत सखि मर्कत मणि मय होत ॥ हाथ लेत पुनि मुक्ता करत उदोत ॥ १ ॥ सम सुवरण सुखमाकर सुखद न थोर ॥ सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥ सियमुख शरद कमल जिमि किमि कहि जाइ ॥ निशिमलीन वह निशि दिन यह विगसाइ ॥ ३ ॥ बड़े नयन कट भृकुटी भाल विशाल ॥ तुलसी मोहत मनहिं मनोहरबाल॥ ४ ॥ चंपक हरवा अँगमिलि अधिक सोहाइ ॥ जानिपरै सिय हियरे जब कुँभिलाइ ॥ ५ ॥ सिय तुव अंग रंग मिलि अधिक उदोत ॥ हार वेलि पहिरावों चंपक होत ॥ ६ ॥ साधु सुशील सुमति शुचि सरल सुभाव ॥ रामनीत रत काम कहा यह पाव ॥ ७॥ कुंकुम तिलक भाल श्रुति कुंडल लोल ॥ काकपक्ष मिलि सखि कस लसत कपोल ॥ ८ ॥ भाल तिलक सर सोहत भौंह कमान ॥ मुखअनुहरिया केवल चंद समान॥९॥तुलसी वँक विलोकनि मृदु मुसुकानि॥ कस प्रभु नैन कमल अस कहौं बखानि॥१०॥ कामरूप सम तुलसी राम स्वरूप॥ को कवि सम सर करै परै भव कूप ॥ ११ ॥ चढ़त दशा यह उतरत जात निदान॥ कहौं न कबहूं करकस भौंह कमान ॥ १२ ॥ नित्यनेम कृत अरुण उदय जब कीन ॥ निरखि निशाकर नृप मुख भए मलीन ॥ १३ ॥ कमठ पीठ धनु सजनी कठिन अँदेश ॥ तमकि ताहि ए तोरिहि कहब महेश॥ १४ ॥ नृप निराश भए निरखत नगर उदास ॥ धनुष तोरि हरि सब कर हरेउ हरास ॥ ॥ १५ ॥ काघूँघट मुख मूदहू नवलानारि॥चाँद सरगपर सोहत यहि अनुहारि ॥ १६ ॥ गरब करहु रघुनंदन जनि मन माँह ॥ देखहु आपनि मूरति सियके छाँह ॥ १७ ॥ उठी सखी हँसि मिसकारि कहि

मृदुबैन ॥ क्षिय रघुवरके भए उनींदे नैन॥१८॥सींक धनुषहित सि-
खन सकुचि प्रभुलीन॥मुदित माँगि इक धनुही नृप हँसिदीन॥१९॥

इति श्रीवरवै रामायण बालकांड समाप्त ॥

सातदिवसभए साजत सकल बनाउ ॥कापूछहु सुठिराउर सरल
स्वभाउ॥२०॥राजभवन सुख बिलसत सिय सँग राम॥ विपिन चले
तजि राज सुविधि बड़वाम ॥२१॥ कोउ कह नरनारायण हरि हर
कोउ॥कोउ कह विहरत वन मधु मनसिज दोउ ॥२२॥ तुलसी भइ
मति विथकित करि अनुमान॥राम लषणके रूप न देखेउ आन२३॥
तुलसी जानि पग धरहु गंगमहँजांच ॥ निगानांगकरि नितहिं न-
चाइहि नाच ॥ २४ ॥ सजल कठौता कर गहि कहत निषाद ॥ च-
ढ़हु नाव पग धोइ करहु जनिवाद ॥ २५ ॥ कमल कंठकित सजनी
कोमलपाइ ॥ निशिमलीन यह प्रफुलित नितिदरशाइ ॥ २६ ॥
(वाल्मीकि) वचन ॥ द्वैभुजकर हरिरघुवर सुंदर वेष ॥ एक जीभकर
लछिमन दूसर शेष ॥ २७ ॥

इति श्रीवरवैरामायण अयोध्या कांड समाप्त ॥

वेदनाम कहि अँगुरिन खंड अकाश ॥ पठयोशूर्पणखाहि
लषणके पास ॥ २८ ॥ हेमलता सिय मूरति मृदुमुसुकाइ ॥
हेम हरिण कह दीन्हेउ प्रभुहि देखाइ ॥ २९ ॥ जटा मुकुट कर शर
धनु संग मरीच ॥ चितवनि वसति कनखियनु अँखियनु वीच ॥
॥ ३० ॥ (रामवाक्य)॥ कनक सलाक कला शशि दीप सिखाउ॥
तारासिय कहँ लछिमन मोहिं बताउ ॥ ३१ ॥ सीय वरण सम के-
तकि अति हिय हारि ॥ किहेसि भवर कर हरवा हृदय विदारि ॥
॥ ३२ ॥ शीतलता शशिकी रहि सब जग छाइ ॥ अगिनि ताप है
हम कहँ सचरत आइ ॥ ३३ ॥

इतिश्री वरवै रामायण आरण्यकांड समाप्त ॥

श्याम गौर दोउ मूरति लछिमन राम ॥ इनते भइ सित कीरति
अति अभिराम॥३४॥कुजन पाल गुण वर्जित अकुल अनाथ॥ कहहु
कृपानिधि राउर कस गुण गाथ ॥ ३५ ॥

इति श्रीवरवैरामायण किष्किधाकांड समाप्त॥

विरह आगि उर ऊपर जब अधिकाइ ॥ एअँखिया दोउ वैरानिं देहिं बुझाइ ॥ ३६ ॥ डहकुन है उजियरिया निशिनहिं घाम ॥ जगत जरत असलागु मोहिं विनुराम ॥ ३७ ॥ अब जीवन कैहै कपि आश न कोइ ॥ कनगुरियाकै मुदरी कंकण होइ ॥ ३८ ॥ राम सुयश कर चहुँयुग होत प्रचार ॥ असुरन कहँ लखि लागत जग अँधियार ॥ ३९ ॥ कपिवाक्य ॥ सिय वियोग दुख केहिविधि कहउँ बखानि ॥ फूलबानते मनसिज वेधत आनि ॥ ४० ॥ शरद चाँदनी सँचरत चहुँदिशि आनि ॥ विधुहि जोरिकर विनवति कुल गुरुजानि ॥ ४१ ॥

इति श्रीवरवैरामायण सुंदरकांड समाप्त ॥

विविधवाहनी विलसत सहित अनंत ॥ जलधि सरिस को कहै राम भगवंत ॥ ४२ ॥

इति श्रीवरवैरामायण लंकाकांड समाप्त ॥

चित्रकूट पयतीर सो सुरतरुवास ॥ लषण राम सिय सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४३ ॥ पयनहाइ फलखाहु परिहरियआस ॥ सीयराम पद सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४४ ॥ स्वारथ परमारथ हित एक उपाय ॥ सीयराम पद तुलसी प्रेम बढ़ाय ॥ ४५ ॥ काल कराल विलोकहु होइ सचेत॥रामनामजपुतुलसी प्रीतिसमेत ।४६।संकटसोचविमोचन मंगलगेह ॥ तुलसिरामनामपर करिय सनेह ॥ ४७ ॥ कलिनाहिं ज्ञान विराग न योग समाधि ॥ रामनाम जपु तुलशी नित निरुपाधि ॥ ४८ ॥ रामनाम दुइ आखर हियहितु जानु ॥ राम लषण सम तुलसी सिखव न आनु ॥४९॥ माय वाप गुरु स्वामि रामकरनाम ॥ तुलसी जेहि न सोहाइ ताहि विधि वाम ॥ ५० ॥ रामनाम जपु तुलसी होइ विशोक ॥ लोक सकल कल्याण नीक परलोक॥ ॥ ५१ ॥ तप तीरथ मख दान नेम उपवास ॥ सबते अधिक रामजपु तुलसीदास ॥ ५२ ॥ महिमा रामनामकी जान महेश ॥ देत परमपद काशी करि उपदेश ॥ ५३ ॥ जान आदिकवि तुलसी नाम

प्रभाव ॥ उलटा जपत कोलते भए ऋषिराव ॥ ५४ ॥ कलशयो-
नि जिय जानेउ नाम प्रतापु ॥ कौतुक सागर सोखेउ करि जिय
जापु ॥ ५५ ॥ तुलसी सुमिरत राम सुलभ फलचारि ॥ वेद पुराण
पुकारत कहत पुरारि ॥ ५६ ॥ रामनामपर तुलसी नेहनिवाहु ॥
एहिते अधिक न एहिसम जीवनलाहु ॥ ५७ ॥ दोषदुरित दुखदा-
रिद दाहक नाम ॥ सकल सुमंगलदायक तुलसीराम ॥ ५८ ॥
केहिगनती महँ गनती जस वन घास॥राम जपत भए तुलसी तुलसी
दास ॥ ५९ ॥ आगम निगम पुराण कहत करिलीक॥ तुलसी ना-
म राम कर सुमिरणनीक ॥ ६० ॥ सुमिरहु नाम राम कर सेवहु
साधु ॥ तुलसी उतरि जाहु भव उदधि अगाधु ॥६१॥ कामधेनु ह-
रिनाम कामतरु राम॥तुलसी सुलभ चारि फल सुमिरत नाम॥६२॥
तुलसी कहत सुनत सब समुझतकोय॥बड़ेभाग्य अनुराग राम सन
होय ॥ ६३ ॥ एकहि एक सिखावत जपत न आप ॥ तुलसी रा-
म प्रेमकर वाधकपाप ॥ ६४ ॥ मरत कहत सब सब कहँ सुमिरहु
राम ॥ तुलसी अब नाहिं जपत समुझि परिणाम ॥ ६५ ॥ तुलसी
रामनाम जपु आलस छाँडु ॥राम विमुख कलिकालको भयो न भाँडु
॥ ६६ ॥ तुलसी राम नाम सम मित्र न आन॥जो पहुँचाव रामपुर
तनु अवसान॥६७॥ नाम भरोस नाम बल नाम सनेहु ॥ जनम जनम
रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥६८॥ जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसि
हि देहु ॥ तहँ तहँ राम निबाहिब नाम सनेहु ॥ ६९ ॥

इति श्री गोसाँई तुलसीदासजी विरचित बरवै रामायण
उत्तर कांड समाप्तः ॥

इति बरवारामायण समाप्त।

श्रीगणेशायनमः ।

श्रीजानकीवल्लभोविजयते ।

अथ पार्वतीमंगल प्रारम्भः ॥

बरवैछन्द॥ विनय गुरुहिं गुणि गणहिं गिरिहि गणनाथहि॥ हृदय आनि सियराम धरे धनुभाथहि ॥ १ ॥ गावउँ गौरि गिरीश विवाह सुहावन ॥ पाप नशावन पावन मुनि मनभावन ॥ २ ॥ कवितरीति नाहिं जानौं कवि नकहावउँ ॥ शंकर चरित सुसरित मनहिं अन्हवावउँ ॥ ३ ॥ पर अपवाद विवाद विदूषितवाणिहि ॥ पावनि करौं सोगाइ भवेश भवानिहि ॥ ४ ॥ जय संवत फागुनसुदिपाँचै गुरुदिनु ॥ अश्विनिविरचेउँ मंगल सुनि सुख छिनु छिनु ॥ ५ ॥ गुणनिधान हिमवान धरणिधरधुरधानि ॥ मैनातासुघरणिघर त्रिभुवन तियमानि ॥ ६ ॥ कहहु सुकृत केहि भाँति सराहिय तिन्हकर ॥ लीन्हजाइ जगजननि जनम जिन्हकेघर ॥ ७ ॥ मंगलखानि भवानि प्रगट जवते भइ ॥ तबते ऋधि सिधि संपति गिरिगृह नितनइ ॥ ८॥ छंद ॥ निति नव सकल कल्याण मंगल मोदमय मुनिमानहीं॥ब्रह्मादि सुर नर नाग अति अनुराग भाग वखानहीं॥पितु मातु प्रियपरिवार हरषहिं निरखि पालहिं लालहीं ॥ सितपाखबाढ़ति चंद्रिका जनु चंद्र भूषण भालहीं ॥ कुँवरि सयानि विलोकि मातु पितु शोचहिं ॥ गिरिजा योग जुरिहि वर अनुदिन लोचहिं ॥९॥ एकसमय हिमवान भवन नारदगए ॥ गिरिवर मैना मुदित मुनिहि पूजतभए ॥१०॥ उमहिं बोलि ऋषिपगन मातु मेलतभई ॥ मुनिमन कीन्ह प्रणाम वचन आशिषदई ॥ ११ ॥ कुँवरिलागि पितु काँध ठाढ़ि भइ सोहई ॥ रूपनजाइ वखानि जान जोइ जोहई ॥ १२ ॥ अतिसनेह सतिभाय पाँय परि पुनि पुनि ॥ कह मैना मृदु वचन सुनिय विनती मुनि ॥ ॥ १३ ॥ तुम त्रिभुवन तिहुँकाल विचार विशारद ॥ पार्वती अनुरूप कहिय वर नारद ॥ १४ ॥ मुनि कह चौदह भुवन फिरउँ जग

जहँ जहँ ॥ गिरिवर सुनिय सरहना राउरि तहँ तहँ॥१५॥भूरिभाग तुमसरिस कतहुँ कोउ नाहिंन ॥कछु न अगम सब सुगम भयो विधि दाहिन ॥ १६ ॥ छंद॥दाहिनभए विधि सुगम सब सुनि तजहु चित चिंतानई ॥ वर प्रथम विरवा विरंचि विरचो मंगलामंगलमई॥ विधि लोक चरचा चलति राउरि चतुर चतुराननकही ॥ हिमवानकन्या योगवर वाउर विबुध वंदितसही ॥ २ ॥ मेरेहु मन अस आवमिलि हिवरवाउर ॥ लखिनारद नारदी उमहिं सुखभा उर ॥१७॥ सुनि सहमे परिपाइँ कहत भए दंपति ॥ गिरिजहिलाग हमार जिवन सुखसंपति ॥ १८ ॥ नाथ कहिय सोइ जतन मिटइ जेहि दूषण ॥ दोष दलतु मुनि कहेउ वाल विधुभूषण ॥१९॥ अवशि होइ सिधि साहस फलै सुसाधन ॥ कोटि कलपतरु सरिस शंभु अवराधन ॥२०॥ तुम्हरे आश्रम अवहिं ईश तप साधहिं॥कहिय उमहिं मनुलाइ जाइ अवराधहिं ॥ २१ ॥ कहि उपाउ दंपतिहि मुदित मुनिवरगए ॥ अतिसनेह पितु मातु उमहिं सिखवतभए ॥ २२ ॥ सजिसमाजु गिरिराज दीन्ह सब गिरिजहि ॥ वदति जननि जगदीश युवति जिनिसिरजहि ॥ २३ ॥ जननि जनक उपदेश महेशहि सेवहि ॥ अति आदर अनुराग भगति मन भेवहि॥२४॥ छंद ॥ भेवहि भगति मन वचन करम अनन्य गति हर चरनकी॥गौरव सनेह सकोच सेवा जाइ केहिविधि वरनकी ॥ गुणरूप योवनसींव सुंदरि निरखि छोभ न हर हिए ॥ ते धीर अछत विकार हेतु जे रहत मनसिज वशकिए ॥३॥ देव देखि भल समउ मनोज बुलायय ॥ कहेउ करिय सुरकाजु साजु सजि धायउ॥२५॥ वामदेव सनकामुवामहोइ वरतेउ ॥ जगजय मद निदरेसि हरपायेसि फरतेउ ॥२६॥ रति पतिहीन मलीन विलोकि विसूरति ॥ नीलकंठ मृदुशील कृपामय मूरति ॥ २७॥ आशुतोष परितोषकीन्ह वर दीन्हेउ॥शिव उदास तजि वास अनत गमकीन्हेउ ॥२८॥उमा नेहवश विकल देह सुधि बुधि गई॥कलपवेलि वन बढ़त विषम हिम जनुहई॥२९॥ समाचार सब सखिन जाइ घर घर कहे॥ सुनत मातु पितु परिजन दारुण दुखदहे॥३०॥जाइ देखि अति प्रेम

उमहिं उरलावहिं ॥ बिलपहिं वाम विधातहि दोष लगावहि ॥ ३१ ॥ जौ न होहि मंगल मग सुर विधि बाधक ॥ तौ अभिमत फल पावहिं करि श्रम साधक ॥ ३२ ॥ छंद ॥ साधक कलेश सुनाइ सब गौरिहि निहोरत धामको ॥ को सुनइ काहि सोहाइ घर चित चहत चंद्रल-लामको ॥ समुझाइ सबहि दृढ़ाइ मन पितु मातु आयसुपाइ कै ॥ लागी करन पुनि अगम तप तुलसी कहै किमि गाइकै ॥ ४ ॥ फिरेउ मातु पितु परिजन लखि गिरिजापन ॥ जेहि अनुराग लाग चित सोइ हितु आपन ॥ ३३ ॥ तजेउभोग जिमिरोग लोग अहि गण जनु ॥ मुनि मनसहुते अगम तपहि लायो मनु ॥ ३४ ॥ सकुच-हिं वसन विभूषण परसत जो वपु ॥ तेहि शरीर हर हेतु अरंभेउ बड़तपु ॥ ३५ ॥ पूजहि सबहि समय तिहुँ करहि निमज्जन ॥ देखि प्रेम व्रतनेमु सराहहिं सज्जन ॥ ३६ ॥ नींद न भूख पियास सरिस नि-शि वासर ॥ नयन नीर मुख नाम पुलक तनु हियहर ॥ ३७ ॥ कं-द मूल फल अशन कबहुँ जल पवनहिं ॥ सूखे वेलके पात खात दिन गवनहिं ॥ ३८ ॥ नाम अपरणा भयो पर्ण जब परिहरे ॥ नवल धवल कलकीरति सकल भुवन भरे ॥ ३९ ॥ देखि सराहहिं गिरि-जहि मुनिवर मुनि बहु ॥ अस तप सुना नदीख कबहुँ काहू कहुँ ॥ ४० ॥ छंद ॥ काहू न देख्यो कहहिं यह तप योग फल फल चारिका ॥ नहिं जानि जाइ न कहति चाहति काहि कुधर कुमारिका ॥ वटु वेष पेप्रन प्रेम पण व्रतनेम शशिशेखर गए ॥ मनसहि समरपेउ आपु गिरिजहि वचन मृदु बोलत भए ॥ ५ ॥ देखि दशा करु-णाकर हर दुख पायउ ॥ मोर कठोर सुभाय हृदय अस आयउ ॥ ॥ ४१ ॥ वंश प्रशंसि मातु पितु कहि सब लायक ॥ अमिय वचन व-टु बोलेउ सुनि सुखदायक ॥ ४२ ॥ देवि करौं कछु विनय सो वि-लगु न मानब ॥ कहौं सनेह सुभाय सांच जिय जानब ॥ ४३ ॥ जनमि जगत यश प्रगटेहु मातु पिताकर ॥ तीय रतन तुम उपजिहु भव रतनागर ॥ ४४ ॥ अगम न कछु जग तुम कहँ मोहिं अस सूझइ ॥ विनु कामना कलेश कलेश न बूझइ ॥ ४५ ॥ जो वर लागि करहु तप

तौ लरिकाइय॥ पारस जो घर मिलै तौ मेरु कि जाइय॥४६॥मोरेहि जान कलेश करिय बिनु काजहि ॥ सुधाकि रोगिहि चाहहि रतन कि राजहि ॥ ४७ ॥ लखि न परेउ तप कारण वटुहिय हारेउ ॥ सुनि प्रिय वचन सखी मुख गौरि निहारेउ॥४८॥छंद॥गौरी निहारेउ सखी मुख रुख पाइ तेहि कारण कहा ॥ तपकरहि हरहितु सुनि विहँसि वटु कहत मुरुखाई महा ॥ जेहि दीन्ह अस उपदेश बरेहु कलेश करि बरु बावरो॥ हित लागि कहौं सुभाय सो बड़ विषम वैरी रावरो ॥ ६ ॥ कहहु काह सुनि रीझिहु वर अकुलीनहिं ॥ अगुण अमान अजाति मातु पितु हीनहिं ॥ ४९ ॥ भीख माँगि भव खाहिं चिता निशि सोवहिं ॥ नाचहिं नगन पिशाच पिशाचिनि जोवहिं ॥५०॥ भाँग धतूर अहार छार लपटावहिं ॥ योगी जटिल सरोष भोग नहिं भावहिं ॥ ५१ ॥ सुमुखि सुलोचनि हरमुख पंच तिलोचन ॥ वाम देव फुर नाम काम मदमोचन ॥ ५२ ॥ एकउ हरहिनवर गुण कोटिक दूषण ॥ नर कपाल गजखाल व्याल विष भूषण ॥ ५३ ॥ कहँ राउर गुण शील स्वरूप सुहावन॥कहा अमंगल वेष विशेषु भयावन ॥ ५४ ॥ जो सोचहि शशिकलहि सो सोचहि रोरेहि ॥ कहा मोर मन धरी वरी वर वौरेहि ॥ ५५ ॥ हिए हेरि हठ तजहु हठै दुख पैहहु ॥ व्याह समय सिख मोरि समुझि पछितैहहु५६॥ छंद॥ पछिताव भूत पिशाच प्रेत जनेत ऐहैं साजिकै ॥यमधारिसरिसनिहारि सब नर नारि चलिहहिं भाजिकै ॥ गज अजिन दिव्य दुकूल जोरत सखी हँसि मुख मोरिकै॥ कोउ प्रगट कोउ हिएकहि हेहि मिलवत अमिय माहुर घोरिकै ॥ ७ ॥ तुमहिं सहित असवार वसह जब होइहिं ॥ निरखि नगर नर नारि विहँसि मुखगोइहिं ॥ ५७ ॥ वटुकरिकोटि कुतर्क यथा रुचिबोलइ ॥ अचलसुता मन अचल बयारि कि डोलइ ॥५८॥ साँचसनेह साँचि रुचि जो हठि फेरइ॥ सावन सरित सिंधुरुख सूपसो घेरइ ॥५९॥ मणि बिनु फणि जलहीन मीन तनु त्यागइ॥सो कि दोष गुण गणइ जो जेहि अनुरागइ॥६०॥करणकटुकवटु वचन विशिष सम हियहए ॥ अरुण नयन चढ़िभ्रु-

कुटि अधर फरकत भए॥६१॥बोली फिरि लखि सखिहि काँप तनु थरथर॥ आलि विदाकरु बटुहि बेगि बड़ बरबर॥६२॥कहुँ तियहोहि सयानि सुनहिं सिख राउरि॥ बौरेहिके अनुराग भइउँ बड़िबाउरि॥६३॥दोषनिधान इशान सत्यसबभाषेउ॥मेटिको सकइ सो आंक जो विधि लिखि राखेउ॥६४॥ कोकरिवाद विवाद विषाद बढ़ावइ॥ मीठ काह कबि कहहिं जाहि जोइ भावइ॥६५॥ भइ बड़िबार आलिकहु काज सिधारहि॥ बकि जनि उठहि बहोरि कु युगुतिसँवारहि॥६६॥ छंद॥ जानि कहहि कछु विपरीत जानत प्रीति रीति न बातकी॥ शिवसाधु निंदक मंद अति जोउ सुनै सोउ बड़पातकी॥ सुनि वचन सोधि सनेह तुलसी साँच अविचल पावनो॥ भएप्रगट करुणासिंधु शंकर भालचंद्र सुहावनो॥८॥ सुंदरगौरशरीर भूति भलि सोहइ॥ लोचन भाल विशाल बदन मनमोहइ॥॥६७॥ शैलकुमारि निहारि मनोहरमूरति॥ सजल नयनहिय हरष पुलकतनु पूरति॥६८॥ पुनि पुनि करै प्रणाम न आवत कछु कहि॥ देखौं स्वपनकी सौतुक शशिशेखरसहिं॥६९॥जैसे जन्म दरिद्र महामणिपावइ॥ पेखत प्रगट प्रभाउ प्रतीति न आवइ॥७०॥ सफल मनोरथ भयउ गौरि सोहइ सुठि॥घरतें खेलन मनहुँ अबहिं आई उठि॥७१॥ देखि रूप अनुराग महेश भएवश॥ कहत वचन जनुसानि सनेह सुधारस॥ ७२ ॥ हमहिं आजुलगि कनउड़ काहु न कीन्हेउ॥ पार्वतीतप प्रेम मोल मोहिं लीन्हेउ॥७३॥ अब जो कहहु सो करउँ विलंब न यहि घरी॥ सुनि महेश मृदुवचन पुलकि पाँयनपरी॥७४॥ छंद॥ परिपाँय सखि मुख कहि जनायो आपवाप अधीनता॥ परितोषि गिरिजहि चले वर्णत प्रीति नीति प्रवीणता॥ हरहृदय धरि घर गौरि गवनी कीन्ह विधिमन भावनो॥ आनंद प्रेम समाज मंगलगान वाजु बधावनो॥९॥ शिव सुमिरेमुनि सात आइ शिरनाइन्हि॥ कीन्ह शंभु सनमान जन्मफल पाइन्हि॥७५॥सुमिरहिं सकृत तुम्हहिं जन तेइ सुकृतीवर॥ नाथ जिन्हहिं सुधि करिअ तिन्हहिंसम तेइहर॥ ७६ ॥सुनि मुनिवि

नय महेश परमसुख पायउ ॥ कथा प्रसंग मुनीशन्ह सकल सुनायउ॥७७॥जाहु हिमाचल गेह प्रसंग चलायहु॥ जौं मनमान तुम्हार तौ लगनलिखायहु ॥ ७८ ॥ अरुंधतीमिले मैनहिं बात चलाइहि ॥ नारि कुशल इहि काज काज बनिआइहि ॥ ७९ ॥ दुलहिनि उमा ईश वरु साधक ए मुनि ॥ बनिहि अवशियहु काज गगनभइ असधुनि ॥ ८० ॥ भयउ अकनि आनंद महेश मुनीशन्ह ॥ देहिं सुलोचनि सगुण कलशलिए शीशन्ह ॥ ८१ ॥ शिवसोंकहे दिन ठाउँ बहोरि मिलनुजहँ॥चले मुदित मुनिराज गए गिरिवर पहँ॥ ॥ ८२ ॥ छंद ॥ गिरि गेह गे आति नेह आदर पूजि पहुनाई करी ॥ घर बात घरनि समेत कन्या आनि सब आगे धरी॥सुखपाइ बात चलाइ सुदिनु सोधाइ गिरिहि सिखाइकै ॥ ऋषि सात प्रातहि चले प्रमुदित ललित लगन लिखाइकै ॥ १० ॥ विप्र वृंद सन्मानि पूजि कुल गुरु सुर ॥ परेउ निसानहि घाउ चाउ चहुँ दिशि पुर ॥ ८३॥ गिरि वन सरित सिंधु सर सुनइ जो पायउ॥सब कहँ गिरिवर नायक नेवत पठायउ ॥८४॥ धरि धरि सुंदर बेष चले हरषित हिए॥ चउर चीर उपहार हारमणिगण लिए॥ ८५ ॥ कहेउ हरषि हिमवान वितान बनावन ॥ हरषित लगियँ सुवासिनि मंगल गावन ॥ ८६ ॥ तोरण कलशचँवर ध्वज विविध बनाइन्हि ॥ हाट पटोरन्हि छाय सफल तरु लाइन्हि ॥ ८७ ॥ गौरी नैहर केहिविधि कहहु बखानिय ॥ जनु ऋतुराज मनोज राज रजधानिय ॥८८॥ छंद ॥ जनु राजधानी मदनकी विरची चतुर विधि औरही ॥ रचना विचित्र विलोकि लोचन विथक ठौरहि ठौरही ॥ यहि भाँति व्याह समाज सजि गिरिराज मगु जोवन लगे॥ तुलसी लगनलै दीन्ह मुनिन्ह महेश आनँद रँग मगे॥ ११ ॥ वेगि बुलाइ विरंचि बँचाइ लगनतब ॥ कहेन्हि बियाहन चलहु बुलाइ अमर सब ॥ ८९ ॥ विधिपठए जहँ तहँ सब शिवगण धावन ॥ सुनि हर्षहिं सुर कहहिं निसान बजावन॥ ९० ॥ रचहिं विमान बनाइ सगुण पावहिं भले ॥ निज निज साज समाज साजि सुरगण चले॥९१॥मुदित सकल शिवदूत भूतगण गाजहिं॥

शूकर महिष श्वान खरवाहन साजहिं॥९२॥ नाचहिं नाना रंग तरं-
ग बढ़ावहिं ॥ अज उलूक वृकनाद गीतगण गावहिं ॥ ९३ ॥ रमा-
नाथ सुरनाथ साथ सब सुरगण ॥ आए जहँ विधि शंभु देखि ह-
रषेमन ॥९४॥ मिले हरिहि हर हरषि सुभाखि सुरेशहिं ॥ सुरनिहा-
रि सन्मानेउ मोद महेशहिं ॥ ९५॥ बहु विधि वाहन यान विमान
विराजहिं॥ चलीबरात निसान गहागह बाजहिं ॥९६॥ छंद ॥ बाज-
हिं निसान सुगानं नभ चढ़ि वसह विधु भूषण चले ॥ बरषहिं सु-
मन जय जय करहिं सुर सगुण शुभ मंगल भले ॥ तुलसी बराती
भूत प्रेत पिशाच पशुपति सँग लसे ॥ गज छाल व्याल कपाल मा-
ल विलोकि वर सुर हरि हँसे॥१२॥ विबुध बोलि हरि कहेउ निकट
पुर आयउ ॥ आपन आपन साज सबहि विलगायउ॥ ९७ ॥ प्रथम
नाथके साथ प्रमथ गणराजहिं ॥ विविध भाँति मुख वाहन वेष
विराजहिं॥९८॥ कमठखपरमढ़ि खाल निशान बजावहिं ॥ नर क-
पाल जलभरि भरि पियहिं पियावहिं ॥ ९९ ॥ वर अनुहरत बरात
वनी हरि हँसिकहा ॥ सुनि हिय हँसत महेश केलि कौतुक महा
॥१००॥वडविनोद मग मोद न कछु कहि आवत॥जाइ नगरनिय-
रानि वरात बजावत॥१०१॥ पुर खरभर उर हरषेउ अचल अखंड
ल ॥ परव उदधि उमगेउ जनु लखि विधु मंडल॥१०२॥ प्रमुदित
गे अगवान विलोकि वरातहि ॥ भभरे बनइ न रहत न बनइ परा-
तहि ॥१०३॥ चले भाजि गज वाजि फिरहिं नहिं फेरत ॥ बालक
भभरि भुलान फिरहिं घर हेरत॥१०४॥दीन्ह जाइ जनवास सुपास
किए सब ॥ घर घर बालक बात कहन लागे तब॥१०५॥प्रेत वेता-
ल वराती भूत भयानक ॥ वरद चढ़ा वरवाउर सबइ सुबानक
॥१०६॥कुशल करइ करतार कहहि हम साँचिय॥देखब कोटि वि-
वाह जियत जो वाँचिय॥१०७॥समाचार सुनि शोच भयउ मन मै-
नहिं ॥ नारदके उपदेश कवन घरगे नाहिं॥१०८॥ ॥छंद॥ घरघाल
चालक कलहप्रिय कहियत परम परमारथी ॥ तैसी बरेखी की-
न्हि पुनि मुनिसात स्वारथ सारथी ॥ उरलाइ उमहिं अनेक विधि

जलपति जननि दुखमानई ॥ हिमवान कहेउ इशानमहिमा अग-म निगम न जानई ॥१३॥ सुनि मैना भइ सुमन सखी देखन चली॥ जहँ तहँ चरचा चलइ हाट चौहट गली॥१०९॥श्रीपति सुरपति वि-बुधवात सब सुनि सुनि ॥ हँसहिं कमल कर जोरि मोरिमुख पुनि पुनि ॥११०॥लखि लौकिक्क गति शंभुजानि बड़ सोहर॥भएसुं दर शतकोटि मनोज मनोहर॥१११॥नील निचोल छाल भइ फणि म-णि भूषण॥ रोमरो मपर उदित रूपमय पूषण ॥११२ ॥गणभए मंग-लवष मदन मनमोहन ॥ सुनत चले हियहरषि नारि नर जोहन-॥११३॥शंभु शरद राकेश नखतगण सुरगण॥जनु चकोर चहुँ ओर बिराजहिं पुरजन॥११४॥गिरिवर पठए बोलि लगनवेरा भई ॥ मंग-ल अरघ पाँवड़े देत चले लई॥११५॥होहिं सुमंगल शकुन सुमनव-रषहिं सुर ॥ गहगहे गान निशान मोद मंगलपुर ॥११६॥पहिलिहि पँवारि सुसामध भा सुखदायक॥ इत विधि उत हिमवान सरिसस-बलायक ॥११७॥मणि चामीकर चारु थार सजि आरति ॥ रतिसि-हाहिं लखि रूप गान सुनि भारति॥११८॥भरी भाग अनुराग पुल-कतनु मुदमन ॥ मदनमत्त गजगवनि चली वरपरिछन ॥११९॥ व-रविलोकि विधु गौर सु अंग उजागर ॥ करति आरती सासु मगन सुखसागर॥१२०॥छंद ॥ सुखसिंधुमगन उतारि आरति करि निछा-वरि निरखिके ॥ मधु अरघ वसन प्रसून भरि ले चलीं मंडपहर-षिके ॥ हिमवान दीन्हे उचित आसन सकल सुर सनमानिकै ॥ तेहि समय साज समाज सब राखे सुमंडप आनिकै ॥ १४॥ अरघदे-इ मणिआसन वर बैठायउ ॥ पूजिकीन्ह मधुपर्क अमी अँचवा-यउ ॥ १२१॥ सत ऋषिन्ह विधि कहेउ विलंब न लाइय॥लगन बेर भई बेगि विधान बनाइय ॥१२२॥ थापि अनल हरवरहि वसनपहि-रायउ ॥ आनहु दुलहिनि बेगि समय अब आयउ॥१२३॥सखीसुवा-सिनि संग गौरि सुठि सोहति ॥ प्रगटरूप मय मूरति जन जगमो-हति ॥१२४॥भूषण वसन समय सम शोभा सो भली ॥ सुखमा बेलि नवल जनुरूप फलनि फली॥ १२५ ॥ कहहु काहि पटतरिय गौरि

गुणरूपहि॥सिंधुकहिय केहिभाँति सरिससरकूपहि ॥ १२६ ॥ आ-
वत उमाहिं विलोकि शीश सुरनावहिं ॥ भये कृतारथ जनमजा-
निसुख पावहिं॥१२७॥विप्र वेद ध्वनि करहिं शुभाशिष कहि कहि॥
गान निसान सुमन झरि अवसर लहि लहि ॥ १२८॥ वरदुलहिनि-
हि विलोकि सकल मनरहसहिं॥साखोच्चार समय सब सुर मुनि
विहँसहिं॥१२९॥ लोक वेदविधि कीन्ह लीन्ह जलकुशकर ॥ क-
न्यादान संकलपकीन्ह धरणीधर ॥ १३० ॥ पूजे कुलगुरुदेव कल-
शशिल शुभवरी॥लावा होम विधान बहुरि भाँवरि परी ॥१३१॥वं-
दन वंदि ग्रंथि विधि करि धुवदेखेउ ॥ भाविवाह सबकहहिं जनम
फलपे खेउ॥ १३२ ॥ छंद ॥ पेखेउ जनम फल भा विवाह उछाहउ-
मगहिं दशदिशा ॥ निसान गान प्रसून झरि तुलसी सुहावनिसो
निशा ॥ दाइज बसन मणि धेनु धनु हयगय सु सेवक सेवकी ॥
दीन्ही मुदित गिरिराजजे गिरिजाहिपियारी पेवकी ॥ १५॥ बहुरि
बराती मुदित चले जनवासहि॥ दूलह दुलहिनिगे तब हाँस अ-
वासहि ॥१३३॥रोकिद्वार मैना तब कौतुक कीन्हेउ ॥ करि लहकौ-
रि गौरि हर बड़ सुखदीन्हेउ ॥ १३४ ॥ जुआ खेलावत गारिदेहिं
गिरिनारिहि ॥ अपनी ओर निहारि प्रमोद पुरारिहि ॥ १३५ ॥
सखी सुवासिनि सासु पाउ सुखसबविधि॥ जनवासहि वर चलेउ स-
कल मंगलनिधि ॥ १३६॥ भइ जेवनार बहोरि बुलाइ सकलसुर॥
बैठाए गिरिराज धरम धरणीधुर ॥ १३७ ॥ परसनलगे सुवार विबु-
ध जनजेवहिं ॥ देहिं गारि वर नारि मोद मनभेवहिं॥ १३८ ॥कर-
हिं सुमंगल गान सुघर सहनाइन्ह ॥ जेंइचले हरि दुहिन सहितसुर
भाइन्ह ॥ १३९ ॥ भूधर भोर विदाकर साजसजायउ ॥ चले देव
सजियान निसान बजायउ ॥ १४० ॥ सनमाने सुरसकल दीन्ह
पहिरावनि ॥ कीन्हि बड़ाई विनय सनेह सुहावनि ॥ १४१ ॥ गहि
शिवपद कह सासु विनय मृदु मानवि ॥ गौरि सजीवनिमूरि मो-
रि जियजानवि ॥ १४२॥ भेंटि विदाकरि बहुरि भेंटि पहुँचावहिं ॥
हुँकरि हुँकरि सुलवाइ धेनु जनु धावहिं ॥ १४३॥ उमा मातु मुख

निरखि नयनजलमोचहिं ॥ नारि जनम जगजाय सखी कहि सोच-
हिं ॥ १४४ ॥ भेंटि उमहिं गिरिराज सहित सुत परिजन ॥ बहुत भाँ-
ति समुझाइ फिरे बिलखित मन ॥ १४५ ॥ शंकर गौरि समेत गए
कैलाशहि ॥ नाइ नाइ शिर देव चले निज वासहि ॥ १४६ ॥ उमा
महेश विवाह उछाह भुवन भरे ॥ सबके सकल मनोरथ विधि पूर-
णकरे ॥ १४७ ॥ प्रेमपाट पटडोरि गौरि हरगुण मणि ॥ मंगल हार
रचेउ कवि मति मृगलोचनि॥ १४८ ॥ छंद ॥ मृगनयनि विधुवदनी
रचेउ मणि मंजु मंगलहारसो ॥ उर धरहु युवती जन विलोकि ति-
लोक शोभा सारसो ॥ कल्याण काज उछाह व्याह सनेह सहित जो
गाइहैं ॥ तुलसी उमा शंकर प्रसाद प्रमोद मन प्रिय पाइहैं ॥ १६ ॥

इति श्रीगोसाईं तुलसीदासजी विरचित शिव पार्वती
मंगल संपूर्ण ॥ शुभंभवतु सर्वदा ॥

श्रीगणेशायनमः ।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

अथ जानकीमंगल प्रारम्भः ।



मंगलछंद ॥

गुरु गणपति गिरिजापति गौरि गिरापति ॥ शारद शेष सुकवि श्रुति संत सरल मति ॥ १ ॥ हाथ जोरि करि विनय सबहि शिरनावौं ॥ सिय रघुवीर विवाह यथामति गावौं ॥ २ ॥ शुभ दिन रच्यौ स्वयंवर मंगलदायक ॥ सुनत श्रवण हिय वसहिं सीय रघुनायक॥३॥देश सुहावन पावन वेद बखानिय॥ भूमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन जानिय ॥४॥तहँ वस नगर जनकपुर परम उजागर ॥ सिय लखि जहँ प्रगटी सब सुखसागर ॥५॥ जनक नाम तेहि नगर बसै नरनायक ॥ सब गुण अवधि न दूसर पटतर लायक॥ ६ ॥ भयउ न होइहि हैन जनक सम नरवइ ॥ सीयसुता भै जासु सकल मंगलमइ॥७॥नृप लखि कुँवरि सयानि बोलि गुरु परिजन॥करि मत रच्यौ स्वयंवर शिव धनु धरिपन ॥८ ॥छंद॥ पण धरउ शिवधनु रचि स्वयंवर अति रुचिर रचना बनी ॥ जनु प्रगटि चतुरानन देखाई चतुरता सब आपनी ॥ पुनि देश देश सँदेश पठयउ भूप सुनि सुख पावहीं॥सब साजि साजि समाज राजा जनक नगरहि आवहीं॥ १ ॥ रूप शीलवय वंश विरद बल दल भले ॥ मनहुँ पुरंदर निकर उतरि अवनी चले ॥ ९ ॥ दानव देव निशाचर किन्नर अहिगन ॥ सुनि धरि धरि नृप वेष चले प्रमुदित मन ॥ १० ॥ एक चलहिं यक बीच एक पुर पैठहिं ॥ एक धरहिं धनु धाय नाइशिर बैठहिं ॥ ११ ॥ रंगभूमि पुर कौतुक एक निहारहिं ॥ ललकि लोभाहि नयन मन फेरि न पारहिं ॥ १२ ॥ जनकहि एक सिहाहिं देखि सनमानत ॥बाहेर भीतर भीर न वैन बखा-

नत ॥ १३ ॥ गान निसान कोलाहल कौतुक जहँ तहँ ॥ सीय विवाह उछाह जाइ कहि कापहँ ॥ १४ ॥ गाधि सुवन तेहि अवसर अवध सिधायउ ॥ नृपति कीन्ह सनमान भवन लै आयउ ॥ १५ ॥ पूजि पहुनई कीन्ह पाइ प्रिय पाहुन ॥ कहेउ भूप मोहिं सरिस सुकृत किए काहुन ॥१६॥ छंद ॥ काहू न कीन्हेउ सुकृत सुनि मुनि मुदित नृपहि बखानहीं॥ महिपाल मुनिको मिलन सुख महिपाल मुनिमन जानहीं ॥ अनुराग भाग सोहाग शील स्वरूप बहु भूषण भरी ॥ हिय हरषि सुतन्ह समेत रानी आइ ऋषि पायन्ह परी ॥ ॥ २ ॥ कौशिक दीन अशीष सकल प्रमुदित भई ॥ सींची मनहुँ सुधारस कलपलता नई ॥ १७ ॥ रामहिं भाइन्ह सहित जबहिं मुनि जोहेउ ॥ नैन नीर तनु पुलकरूप मन मोहेउ ॥ १८ ॥ परसि कमल कर शीश हरषि हियलावहिं॥ प्रेम पयोधि मगन मुनि पार न पावहिं ॥ १९ ॥ मधुर मनोहर मूरति सादर चाहहिं ॥ बार बार दशरथके सुकृत सराहहिं ॥ २० ॥ राउ कहेउ कर जोरि सुवचन सुहावन ॥ भयउँ कृतारथ आजु देखि पद पावन ॥ २१ ॥ तुम्ह प्रभु पूरण काम चारि फल दायक ॥ तेहिते बूझत काज डरौं मुनि नायक ॥ २२ ॥ कौशिक सुनि नृप वचन सराहेउ राजहि ॥ धर्म कथा कहि कहेउ गयउ जेहि काजहि ॥ २३ ॥ जबहिं मुनीश महीशहि काज सुनायउ ॥ भयउ सनेह सत्यवश उतर न आयउ ॥२४॥ छंद ॥ आयउ न उतर वसिष्ठ लखि बहुभाँति नृप समुझायऊ॥ कहि गाधिसुत तप तेज कछु रघुपति प्रभाउ जनायऊ ॥ धीरजधरेउ गुरु वचन सुनि कर जोरि कह कोशलधनी ॥ करुणानिधान सुजान प्रभु सों उचित नहिं विनती घनी ॥ ३ ॥ नाथ मोहिं बालकन्ह सहित पुर परिजन ॥ राखनिहार तुम्हार अनुग्रह घर वन ॥ २५ ॥ दीन वचन बहुभाँति भूप मुनिसन कहे ॥ सौंपि राम अरु लषण पाँय पंकज गहे ॥२६॥ पाइ मातु पितु आयगुरू पाँयन परे ॥ कटि निषंग पट पीत करनि शर धनु धरे ॥ २७॥ पुरवासी नृपरानिन संग दिए मन॥ वेगि फिरेउ करि काज कुशल रघुनंद

न ॥ २८ ॥ ईशमनाइ अशीशहिं जय यश पावहु॥ न्हात खसै ज-
निवार गहरु जनि लावहु ॥ २९ ॥ चलत सकल पुरलोग वियोग
विकलभए ॥ सानुज भरत सप्रेम राम पाँयननए ॥ ३० ॥ होहिं
शकुन शुभ मंगल जनु कहि दीन्हेउ ॥ राम लषण मुनिसाथग-
मन तब कीन्हेउ ॥ ३१ ॥ श्यामल गौरकिशोर मनोहरता निधि॥
सुखमा सकल सकेलि मनहुँ विरचे विधि ॥ ३२ ॥ छंद ॥ विरचे
विरंचि बनाइ वाची रुचिरता रंचौ नहीं ॥ दशचारि भुवन नि-
हारि देखि विचारि नहिं उपमा कहीं ॥ ऋषि संग सोहत जातम-
गछवि वसति सो तुलसी हिए ॥ कियो गमन जनु दिननाथ
उत्तर संग मधु माधवलिए ॥ ४ ॥ गिरितरु वेलि सरित सर विपुल
विलोकहिं ॥ धावहिं बाल सुभाव विहँग मृग रोकहिं ॥ ३३ ॥ सकु-
चहिं मुनिहि सभीत बहुरि फिरि आवहिं ॥ तोरि फूल फल कि-
शलय माल बनावहिं ॥ ३४ ॥ देखि विनोद प्रमोद प्रेम कौशिक
उर ॥ करत जाहिं वनछाँह सुमन वरषहिंसुर ॥ ३५ ॥ बधीताड़का
रामजानि सब लायक ॥ विद्यामंत्र रहस्य दिए मुनिनायक
॥ ३६ ॥ मग लोगन्हके करत सफल मन लोचन ॥ गएकौशिक
आश्रमहिं विप्र भय मोचन ॥३७ ॥ मारि निशाचर निकर यज्ञक-
रवायउ ॥ अभयकिए मुनिवृंद जगत यश गाएउ ॥ ३८॥ विप्रसा-
धु सुर काज महा मुनि मन धरि ॥ रामहिं चले लिवाइ धनुषमख
मिसुकरि ॥ ३९ ॥ गौतमनारि उधारि पठै पतिधामहि ॥ जनक
नगर लै गएउ महामुनि रामहिं॥ ४० ॥ छंद ॥ लैगएउ रामहिं गा-
धिसुवन विलोकि पुर हरषे हिए॥सुनि राउ आगे लेन आयउ सचिव
गुरु भूसुरलिए ॥ नृपगहे पाँय अशीशपाई मान आदर अतिकि-
ए ॥ अवलोकि रामहिं अनुभवत मनु ब्रह्मसुख सौगुणदिए ॥ ५ ॥
देखि मनोहर मूरति मन अनुरागेउ ॥ बँध्यो सनेह विदेह विराग
विरागेउ ॥ ४१॥ प्रमुदित हृदय सराहत भल भवसागर ॥ जहँ उप-
जहिं अस माणिक विधिवड़नागर ॥ ४२॥ पुण्य पयोधि मातु पि-
तु ए शिशु सुरतरु ॥ रूप सुधासुख देत नयन अमरनि वरु॥४३॥

केहि सुकृतीके कुँवर काहिय मुनिनायक ॥ गौरश्याम छवि धाम धरे धनुशायक ॥ ४४ ॥ विषय विमुख मन मोर सेइ परमारथ ॥ इन्हहिं देखि भयो मगन जानि बड़ स्वारथ ॥ ४५ ॥कहेउ सप्रेम पुलकि मुनि सुनि महिपालक ॥ ए परमारथ रूप ब्रह्ममयबालक ॥ ४६ ॥ पूषण वंश विभूषण दशरथनंदन ॥ नाम राम अरु लषण सुरारि निकंदन ॥ ४७ ॥ रूप शील वय वंश रामपरिपूरन ॥ समुझि कठिन प्रण आपन लाग विसूरन ॥ ४८ ॥ छंद ॥ लागे विसूरन समुझि प्रण मन बहुरि धीरज आनिकै ॥ लैचले देखावन रंगभूमि अनेक विधि सनमानिकै ॥ कौशिक सराही रुचिर रचना जनक सुनि हरषित भए ॥ तब राम लषण समेत मुनि कहँ सुभग सिंहासनदए ॥ ६ ॥ राजत राजसमाज युगल रघुकुल मनि ॥ मनहुँ शरद विधु उभय नखत धरणी धनि ॥ ४९ ॥ काक पक्ष शिर सुभग सरोरुह लोचन ॥ गौर श्याम शत कोटि काम मद मोचन ॥ ५० ॥ तिलक ललित शर भ्रुकुटी काम कमानै॥श्रवण विभूषण रुचिर देखि मन मानै॥५१॥ नाशा चिबुक कपोल अधर रद सुंदर ॥ बदन शरदविधु निंदक सहज मनोहर ॥ ५२ ॥ उर विशाल वृष कंध सुभग भुज अति बल ॥ पीत वसन उपवीत कंठ मुकुताफल ॥ ५३ ॥ कटि निषंग कर कमलन्हि धरे धनुशायक ॥ सकल अंग मनमोहन जोहन लायक ॥ ५४ ॥ राम लषण छवि देखि मगन भए पुरजन ॥ उर आनँद जल लोचन प्रेम पुलक तन ॥ ५५ ॥ नारि परस्पर कहहिं देखि दुहुँ भाइन्ह ॥ लहेउ जनम फल आजु जनमि जग आइन्ह ॥ ५६ ॥ छंद ॥ जग जनमि लोचन लाहु पाए सकल शिवहि मनावहीं ॥ वर मिलौ सीतहि साँवरो हम हरषि मंगल गावहीं ॥ एक कहहिं कुँवर किशोर कुलिश कठोर शिव धनुहै महा ॥ किमिलेहिं बाल मराल मंदर नृपहि अस काहु न कहा॥ ७ ॥ भे निराश सब भूप विलोकत रामहिं॥ पण परिहरि सिय देव जनक वर श्यामहिं ॥ ५७ ॥ कहहिंएक भलिबात व्याहु भल होइहि ॥ वरदुलहिनि लगि जनक अपन प्रण

खोइहि ॥ ५८ ॥ शुचि सुजान नृप कहहिं हमहिं अस सूझइ ॥ तेज प्रताप रूप जहँ तहँ बलबूझइ ॥ ५९ ॥ चितइ न सकहु रामत-न गाल बजावहु ॥ विधि वश बलउ लजान सुमति न लजावहु ॥ ॥६०॥ अवशि रामके उठत शरासन टूटिहि ॥ गवनिहिराज समाज नाक असि फूटिहि ॥ ६१ ॥ कसन पियहु भरिलोचन रूप सुधार-सु॥करहु कृतारथ जन्म होहु कत नरपशु ॥ ६२ ॥ दुहुँ दिशिराज कुमार विराजत मुनिवर ॥ नील पीत पाथोज वीच जनु दिनक-र ॥६३॥ काकपक्ष ऋषि परसत पाणि सरोजनि॥लाल कमल जनु लालत बाल मनोजनि ॥ ६४ ॥ छंद ॥ मनसिज मनोहर मधुर मूरति कस न सादर जोवहू ॥ विनुकाज राज समाज महँ तजिलाज आ-पु विगोवहू ॥ शिख देइ भूपनि साधु भूप अनूप छवि देखनल-गे ॥ रघुवंश कैरवचंद चितइ चकोर जिमि लोचन ठगे ॥ ८ ॥ पुर नरनारि निहारहिं रघुकुल दीपहि ॥ दोष नेहवशदेहिं विदेह मही-पहि ॥ ६५ ॥ एक कहहिं भल भूप देहु जनि दूषण ॥ नृप न सोह विनु वचन नाकविनु भूषण ॥ ६६ ॥ हमरे जान-जनेश बहुतभ-लकीन्हेउ ॥ प्रणमिस लोचनलाहु सबन्हि कहँ दीन्हेउ ॥६७॥ अस सुकृती नरनाह जो मन अभिलाषिहि ॥ सो पुरइहि जगदीश पैज प्रण राखिहि ॥ ६८ ॥ प्रथम सुनत जो राउ राम गुण रूपहि ॥ बो-लि व्याहि सियदेत दोष नहिं भूपहि ॥ ६९ ॥ अबकरि पैज पंच महँ जो प्रण त्यागै॥विधि गति जानि न जाइ अयश जग जागै७०॥ अजहुँ अवशि रघुनंदन चाप चढ़ाउब ॥ व्याह उछाह सुमंगल त्रिभुवनगाउब॥७१॥लागि झरोखन्ह झांकहिं भूपति भामिनि ॥ क-हत वचन रद लसहिं दमक जनु दामिनि॥७२॥ ॥ छंद ॥ जनुदम-कदामिनिरूप रति मृदु निदरि सुंदरि सोहहीं ॥ मुनि ढिग देखा-ए सखिन्ह कुँवर विलोकि छवि मन मोहहीं ॥ सियमातु हरषी नि-रखि सुखमा अति अलौकिक रामकी ॥ हिय कहति कहँ धनु कुँ-वर कहँ विपरीत गति विधि वामकी ॥ ९ ॥ कहि प्रिय वचन स-खिन्हसन रानि विसूरति ॥ कहाँ कठिन शिव धनुष कहाँ मृदुमू-

रति ॥ ७३ ॥ जो विधि लोचन अतिथि करत नहिं रामहिं ॥ तौ कोउ नृपहि न देत दोष परिणामहिं ॥ ७४ ॥ अब असमंजस भयउ न कछु कहि आवै ॥ रानिहि जानि ससोच सखी समुझावै ॥ ॥ ७५ ॥ देवि सोच परिहरिय हरषहिय आनिय ॥ चाप चढ़ाउब राम वचन फुरमानिय ॥ ७६॥ तीनि काल कर ज्ञान कौशिकहि करतल ॥ सो कि स्वयंवर आनहिं बालक विनुबल॥७७॥ मुनि महिमा सुनि रानिहि धीरज आयउ ॥ तब सुबाहु सूदन यश सखिन सुनायउ ॥ ७८ ॥ सुनि जिय भयउ भरोस रानि हिय हरखइ ॥ बहुरि निरखि रघुवरहि प्रेम मन करखइ ॥ ७९ ॥ नृप रानी पुर लोग रामतन चितवहिं ॥ मंजु मनोरथ कलश भरहिं अरु रितवहिं॥८०॥ छंद ॥ रितवहिं भरहिं धनु निरखि छिन छिन निरखि रामहिशोचही ॥नर नारि हरष विषाद वश हिय सकल शिवहि सकोचहीं ॥ तब जनक आयसुपाइ कुलगुरु जानकिहि लै आयऊ ॥ सिय रूप राशि निहारि लोचन लाहु लोगन्हि पायऊ ॥ १० ॥ मंगल भूषण वसन मंजु तन सोहहिं ॥ देखि मूढ महिपाल मोहवश मोहहिं ॥ ८१ ॥ रूप राशि जेहि ओर सुभाय निहारइ ॥ नील कमल सर श्रेनि मयन जनु डारइ ॥८२ ॥ छिन सीतहि छिन रामहिं पुरजन देखहिं ॥ रूप शील वय वयश विशेष विशेषहिं ॥८३॥राम दीख जब सीय सीय रघुनायक॥ दोउतन तकि तकि मयन सुधारत शायक ॥ ८४ ॥ प्रेम प्रमोदपररूपर प्रगटत गोपहिं ॥ जनु हिरदय गुण ग्राम थूनि थिररोपहिं ॥ ॥ ८५ ॥ राम सीय वय समौ सुभाय सुहावन ॥ नृप योवन छवि पुरइ चहत जनु आवन ॥ ८६ ॥ सोछवि जाइ न वरणि देखि मनमानै ॥ सुधा पानकरि मूक कि स्वाद वखानै ॥८७॥ तब विदेहप्रण बंदिन्ह प्रगटि सुनायउ ॥ उठे भूप आमरषि शकुन नहिं पायउ॥८८॥ छंद॥ नहिं शकुनपायेउ रहे मिसुकरि एक धनु देखनगए ॥ टकटोरि कपि ज्यौं नारियर शिरनाइ सब बैठतभए ॥ एक करहिं दाप न चाप सज्जन वचन जिमिटारे टरै ॥ नृप नहुष ज्यौं स-

बके विलोकत बुद्धि बल बरबश हरै ॥ ११ ॥ देखिसपुर परिवारं जनकहिय हारेउ ॥ नृप समाज जनु तुहिन वनज बन मारेउ ॥ ॥ ८९ ॥ कौशिक जनकहि कहेउ देहु अनुशासन ॥ देखि भानु-कुल भानुइ सानु शरासन ॥ ९० ॥ मुनिवर तुम्हरे वचन मेरु महि-डोलहि ॥ तदपि उचित आचरत पाँच भल बोलहि ॥ ९१ ॥ वानु वानु जिमि गयउ गवहिं दशकंधर ॥ को अवनीतल इन्हसम वीरधुरंधर ॥ ९२ ॥ पार्वती मनसरिस अचल धनु चालक ॥ अह-हिं पुरारि तेउ एक नारि व्रत पालक ॥ ९३ ॥ सोधनु कहि अवि-लोकन भूप किशोरहि ॥ भेदकि सिरिस सुमन कण कुलिश कठो-रहि ॥ ९४ ॥ रोम रोम छवि निंदति सोम मनोजनि ॥ देखिय मूर-ति मलिन करिय मुनि सोजानि ॥ ९५ ॥ मुनि हँसि कहेउ जनक यह मूरति सोहइ ॥ सुमिरत सकृत मोह मल सकल बिछोहइ ॥ ९६ ॥ छंद॥ सब मल बिछोहनि जानि मूरति जनक कौतुक दे-खहू ॥ धनु सिंधु नृप बल जल बढ़चो रघुबरहि कुंभजलेखहू ॥ सुनि सकुचि सोचहिं जनक गुरु पद बंदि रघुनंदन चले ॥ नहिं हरष हृदय विषाद कछु भए शकुन शुभ मंगलभले ॥ १२ ॥ बरसनलगे सुमन सुर दुंदुभि वाजहिं ॥ मुदित जनक पुरप-रिजन नृप गण लाजहिं ॥ ९७ ॥ महि महिधरनि लषण कह बल-हि बढ़ावन ॥ राम चहत शिव चापहि चपरि चढ़ावन ॥ ९८ ॥ गए सुभाय राम जब चाप समीपहि ॥ सोच सहित परिवार विदेह महीपहि ॥ ९९ ॥ कहि न सकति कछु सकुचति सिय हि-यसोचइ ॥ गौरि गणेश गिरीशहि सुमिरि सकोचइ ॥ १०० ॥ हो-ति बिरहसर मगन देखि रघुनाथहि ॥ फरकि वाम भुज नयन देहिं जनु हाथहि ॥ १०१॥ धीरज धरति शकुन बल रहति सो नाहिंन॥ वरकिशोर धनु घोर दइउ नहिं दाहिन ॥ १०२॥ अंतर्यामीरा-म मरम सब जानेउ ॥ धनु चढ़ाइ कौतुकहिं कानलगि तानेउ ॥ १०३ ॥ प्रेम परखि रघुवीर शरासन भंजेउ ॥ जनु मृगराज कि-शोर महागज गंजेउ॥ १०४ ॥ छंद॥ गंजेउ सो गर्जेउ घोर धुनि सु-

नि भूमि भूधर लरखरे ॥ रघुवीर यश मुकुता विपुल सब भुवन प-
टु पेटकभरे ॥ हित मुदित अनहित रुदित मुख छबि कहत कवि
धनु जागकी ॥ जनु भोर चक्र चकोर कैरव सघन कमल तड़ाग
की ॥ १३ ॥ नभपुर मंगल गान निसान गहागहे ॥ देखि मनोरथ
सुरतरु ललित लहालहे ॥ १०५ ॥ तब उपरोहित कहेउ सखी सब
गावत ॥ चली लेवाइ जानकिहि भा मनभावत ॥ १०६ ॥ कर क-
मलनि जयमाल जानकी सोहइ ॥ वरणि सकै छवि अतुलित
अस कवि कोहइ ॥ १०७ ॥ सीय सनेह सकुचवश पियतन हेरइ ॥
सुरतरु रुख सुरवेलि पवन जनु फेरइ ॥१०८॥ लसत ललित क-
र कमल माल पहिरावत ॥ काम फंद जनु चंदहि वनजफँदा-
वत ॥ १०९ ॥ रामसीय छवि निरुपम निरुपम सोदिन ॥ सुख स-
माज लखि रानिन्ह आनँद छिनछिन ॥११०॥ प्रभुहि माल पहिराइ
जानकिहि लैचली ॥ सखी मनहुँ विधु उदय मुदित कैरव कली
॥ १११ ॥ वरषहिं विबुध प्रसून हरषि कहि जयजए ॥ सुख सनेह भरे
भुवन रामगुरुपाहिं गए॥११२॥छंद॥गए रामगुरुपहिं राउ रानी नारि
नर आनँदभरे ॥ जनु तृषित करि करिनी निकर शीतल सुधासागर
परे ॥ कौशिकहि पूजि प्रशंसि आयसुपाइ नृप सुखपायऊ ॥ लि-
खि लगन तिलक समाज सजि कुलगुरुहि अवध पठायऊ ॥ १४ ॥
गुणि गण बोलि कहेउ नृप मांडव छावन॥गावहिं गीत सुआसिनि बा
जवधावन ॥ ११३ ॥ सीय राम हित पूजहिं गौरि गणेशहि ॥ परि-
जन पुरजन सहित प्रमोद नरेशहि ॥ ११४ ॥ प्रथम हरदि वेदन
करि मंगल गावहिं ॥ करि कुल रीति कलश थपि तेलु चढ़ावहिं ॥
॥ ११५ ॥ गे मुनि अवध विलोकि सुसरित नहायउ ॥ सतानंद
शत कोटि नामफल पायउ ॥ ११६ ॥ नृप सुनि आगे आइ पूजि
सनमानेउ ॥ दीन्हि लगन कहि कुशल राउ हरषानेउ॥११७॥सु-
निपुर भयउ अनंद वधाव बजावहिं ॥ सजहि सुमंगल कलश विता-
न बनावहिं ॥ ११८ ॥ राउ छाँड़ि सब काजसाज सब साजहिं
चलेउ वरात बनाइ पूजि गणराजहिं ॥ ११९ ॥ बाजहिं ढोलनिसा

न शकुन शुभ पायन्हि ॥ सियनैहर जन कौर नगर नियरायन्हि ॥ १२० ॥ छंद ॥ नियरानि नगर वरात हरषी लेन अगवानीगए॥ देखत परस्पर मिलत मानत प्रेम परिपूरणभए॥ आनंदपुर कौतुक कोलाहल बनत सो वरणतकहाँ॥ लै दियो तहँ जनवास सकल सुपास नितनूतन जहाँ ॥ १५ ॥ गे जनवासेहि कौशिक रामलषण लिए॥हरषे निरखि वरात प्रेम प्रमुदित हिए ॥ १२१ ॥ हृदय लाइ लिए गोदमोद अति भूपहि ॥ कहि न सकाहिं शतशेष अनंद अनूपहि ॥ १२२॥ राय कौशिकहि पूजि दान विप्रन्हदिए ॥ राम सुमंगल हेतु सकल मंगल किए ॥ १२३ ॥ व्याह विभूषण भूषित भूषण भूषण ॥ विश्व विलोचन वनज विकासक पूषण ॥ १२४ ॥ मध्य बरात विराजत अति अनुकूलेउ ॥ मनहुँकाम आराम कल्पतरु फूलेउ ॥ १२५ ॥ पठईं भेंट विदेह बहुत बहु भाँतिन्ह ॥ देखत देव सिहाहिं अनंद वरातिन्ह ॥ १२६ ॥ वेदविहित कुल रीति कीन्हि दुहुँकुलगुर॥ पठई बोलि वरात जनक प्रमुदित उर॥१२७॥ जाइ कहेउ पगुधारिय मुनि अवधेशहि ॥ चले सुमिरि गुरु गौरि गिरीश गणेशहि॥१२८॥छंद॥ चले सुमिरि गुरु सुर सुमनवर्षहिंपरे बहुविधि पाँवड़े ॥ सनमानि सबविधि जनक दशरथ किए प्रेमकनावड़े ॥ गुण सकल सम समधी परस्पर मिलत अति आनँदलहे॥ जय धन्य जय जय धन्य धन्य विलोकि सुरनर मुनि कहे ॥ १६ ॥ तीनि लोक अवलोकहिं नहिं उपमा कोउ ॥ दशरथ जनक समान जनक दशरथ दोउ ॥ १२९ ॥ सजहिं सुमंगल साज रहस रनिवासहिं ॥ गान करहिं पिकवैनि सहित परिहासहि ॥ १३० ॥ उमा रमादिक सुरतिय सुनि प्रमुदित भईं ॥ कपट नारि वर वेष विरचि मंडप गईं ॥ १३१ ॥ मंगल आरति साजि वरहि परिछनचलीं ॥ जनुविकसीं रवि उदय कनक पंकज कलीं ॥१३२॥नख शिख सुंदर राम रूप जब देखहिं॥ सब इंद्रिन्ह महँ इन्द्र विलोचन लेखहिं ॥ ॥ १३३ ॥ परम प्रीति कुल रीति करहिं गजगामिनि ॥ नहिं अघाहिं अनुराग भाग भरि भामिनि ॥ १३४ ॥ नेगचारु

कहँ नागरि गहरु लगावहिं ॥ निरखि निरखि आनंद सुलोचनि पावहिं ॥ १३५ ॥ करि आरती निछावरि वरहि निहारहिं ॥ प्रेम मगन प्रमदागण तनु न सम्हारहिं ॥ १३६ ॥ छंद ॥ नहिंतनु सम्हारहिं छविनिहारहिं निमिष रिपु जनु रणजए ॥ चक्कवै लोचन रामरूप सुराजसुख भोगी भए ॥ तब जनक सहित समाज राजहि उचित रुचिराशन दए ॥ कौशिक वशिष्ठहि पूजि पूजे राउदै अंबर नए ॥१७॥ देत अरघ रघुवरहि मंडप लै चलीं ॥ करहिं सुमंगल गान उमगि आनँद अलीं ॥ १३७ ॥ वर विराज मंडप महँ विश्व विमोहइ ॥ ऋतुवसंत वन मध्य मदन जनु सोहइ ॥ १३८ ॥ कुल विवहार वेद विधि चाहिय जहँ जस ॥ उपरोहित दोउ करहिं मुदित मन तहँ तस ॥१३९॥वरहि पूजि नृप दीन्ह सुभगसिंहासन ॥ चलीं दुलहिनिहि ल्याइ पाइ अनुशासन ॥ ॥ १४० ॥ युवति युत्थमहँ सीय सुभाइ विराजइ ॥ उपमा कहत लजाइ भारती भाजइ ॥ १४१ ॥ दूलह दुलहिनिन्ह देखि नारि नरहरषहिं ॥ छिन छिन गान निसान सुमन सुर वरषहिं ॥ ॥ १४२ ॥ लैलै नाम सुआसिनि मंगल गावहिं ॥ कुँवर कुँवरि हित गणपति गौरि पुजावहिं ॥ १४३ ॥ अगिनि थापि मिथिलेशकुशोदक लीन्हेउ ॥ कन्यादान विधान संकलप कीन्हेउ ॥ १४४ ॥ ॥ छंद ॥ संकलिप सिय रामहिं समर्पी शील सुख शोभामई ॥ जिमिशंकरहि गिरिराज गिरिजा हरिहि श्रीसागर दई ॥ सिंदूरवंदन होमलावा होन लागी भाँवरी ॥ शिलपोहनी करि मोहनी मन हरयो मूरति साँवरी॥१८॥यहि विधि भयो विवाह उछाह तिहूँ पुर ॥ देहिं अशीश मुनीश सुमन वरषहिं सुर॥१४५॥ मन भावत विधि कीन्ह मुदित भामिनि भई ॥ वरदुलहिनिहि लेवाइ सखी कोहवरगई ॥ १४६ ॥ निरखि निछावरि करहिं बसन मणि छिन छिन ॥ जाइ न वरणि विनोद मोदमय सोदिन॥१४७॥ सिय भ्राताके समय भौमतहँ आयउ ॥ दुरीदुराकरि नेग सुनात जनायउ ॥ १४८ ॥ चतुर नारि वर कुवँरिहि रीति सिखावहिं ॥ दे-

हिं गारि लहकौरि समौ सुख पावहिं ॥ १४९॥ जुआ खेलावत कौं-
तुक कीन्ह सयानिन्ह ॥ जीति हारि मिसदेहिं गारि दुहुँ रानिन्ह
॥ १५० ॥ सीय मातु मन मुदित उतारति आरति॥कोकहि, सकइ
अनंद मगन भइ भारति ॥ १५१ युवति यूथ रनिवास रहस बस
यहि विधि॥देखि देखि सिय राम सकल मंगलनिधि॥१५२॥छंद॥
मंगल निधान विलोकि लोचन लाह लूटति नागरी ॥ दईज-
नक तिहुँ कुँवरन्हि कुँवरि विवाहि सुनि आनँभरी ॥ कल्या-
ण मो कल्याण पाइ वितान छवि मन मोहई॥ सुर धेनु शशि सुरम-
णि सहित मानहुँ कलपतरु सोहई ॥ १९ ॥ जनक अनुजतनयाद्वै
परम मनोरम ॥ जेठि भरत कहँ व्याहि रूपरति शयसम॥ १५३॥
सिय लघुभगिनि लषण कहँ रूप उजागरि ॥ लषण अनुज श्रुति
कीरति सब गुण आगरि॥१५४॥राम विवाह समान व्याह तीनिउ
भए ॥ जीवन फल लोचन फल विधि सबकहँ दए ॥ १५५॥ दाइज
भयउ विविध विधि जाइ न सो गनि ॥ दासी दास वाजि गज
हेम बसन मनि॥१५६॥ दान मान परमान प्रेम पूरण किए ॥ स-
मधी सहित वरात विनय वश करि लिए ॥ १५७ ॥ गेजनवासेहि
राउ संग सुत सुत बहू ॥ जनु पाएफल चारि सहित साधनच-
हूँ ॥१५८॥ चहुँ प्रकार जेंवनार भई बहु भाँतिन्ह ॥ भोजन करत
अवधपति सहित वरातिन्ह॥१५९॥देहिं गारि वर नारि नाम लै दुहुँ
दिशि ॥ जेंवत बढ़ेउ अनंद सोहावनि सो निशि॥१६०॥ छंद ॥ सो
निशि सोहावनि मधुर गावनि वाजने वाजहिं भले ॥ नृपकि-
यो भोजन पान पाइ प्रमोद जनवासहि चले ॥ नट भाट मागध
सूत याचक यश प्रतापहि वरनहीं ॥ सानंद भूसुर वृंद मणि
गज देत मन करषै नहीं ॥ २० ॥ करि करि विनय कछुक दिनरा-
खि वरातिन्ह ॥ जनक कीन्ह पहुनाई अगनित भाँतिन्ह ॥ १६१ ॥
प्रातवरात चलिहि सुनि भूपति भामिनि ॥ परि न विरहवश नींद
वीतिगइ यामिनि ॥ १६२ ॥ खरभर नगर नारि नर विधिहि मना-
वहिं ॥ वार वार ससुरारि राम जेहि आवहिं ॥ १६३ ॥ सकल चल

नके साज जनक साजत भए ॥ भाइन्ह सहित राम तब भूप भवनगए ॥ १६४ ॥ सासु उतारि आरती करहिं निछावरि ॥निरखि निरखि हिय हरषहिं मूरति साँवरि ॥ १६५ ॥ माँगेउ विदा राम तब सुनि करुणाभरी ॥ परिहरि सकुच सप्रेम पुलकि पायन्ह परी ॥ १६६ ॥ सीय सहित सब सुता सौंपि करजोरहिं ॥ वारवार रघुनाथहि निरखि निहोरहिं ॥१६७ ॥ तात तजिय जानि छोह मया राखविमन ॥ अनुचर जानबराउ सहित पुर परिजन॥१६८॥छंद॥ जन जानि करब सनेह वलि कहि दीन वचन सुनावहीं ॥ अति प्रेम वारहिं वार रानी बालकिन्ह उर लावहीं ॥ सिय चलत पुरजन नारि हयगय विहँग मृग व्याकुल भए ॥ सुनि विनय सासु प्रबोधि तब रघुवंश मणि पितुपहँ गए ॥ २१ ॥ परेउ निसानहिं घाउ राउ अवधहि चले॥सुरगण बरषहिं शकुन सगुन पावहिं भले॥१६९॥ जनक जानकिहि भेंटि सिखाइ सिखावन ॥ सहित सचिव गुरु बंधु चले पहुँचावन ॥१७० ॥ प्रेम पुलकि कहि राय फिरिय अब राजन॥ करत परस्पर विनय सकल गुणभाजन ॥१७१॥ कहेउ जनक कर जोरि कीन्ह मोहिं आपन ॥ रघुकुल तिलक सदा तुम्ह उथपन थापन ॥१७२॥विलग न मानब मोर जो बोलि पठायउँ॥प्रभु प्रसाद यश जाति सकल सुख पाएउँ॥१७३॥पुनि वशिष्ठ आदिक मुनि बंदि महीपति॥गहि कौशिकके पायँ कीन्हि विनती अति ॥ १७४ ॥ भाइन्ह सहित बहोरि विनय रघुवीरहि ॥ गदगद कंठ नयन जल उर धरि धीरहि ॥ १७५ ॥ कृपासिंधु सुखसिंधु सुजान शिरोमनि॥तात समय सुधिकर विछोह छांड़ब जनि॥ १७६ ॥ छंद ॥ जनि छोह छांड़ब विनय सुनि रघुवीर बहु विनती करी ॥ मिलि भेंटि सहित सनेह फिरेउ विदेह मन धीरजधरी ॥ सो समौ कहत न बनत कछु सब भुवन भरि करुणारहे ॥ तब कीन्ह कोशलपतिपयान निसान बाजे गहगहे ॥ २२ ॥ पंथ मिले भृगुनाथ हाथ फरसा लिये ॥ डाटहिं आँखि देखाइ कोप दारुण किए ॥१७७॥ राम कीन्ह परितोष रोषरिस परिहरि ॥ चले सौंपि शारंग सुफल लोचन करि ॥१७८॥ रघुवर भुज बल देखि उछाह बरातिन्ह ॥ मुदित

राउ लखि सन्मुख विधि सब भाँतिन्ह ॥ १७९ ॥ एहि विधि व्याहि सकल सुत जग यश छायउ ॥ मगलोगनि सुख देत अवधपति आयउ ॥१८० ॥ होहिं सुमंगल शकुन सुमन सुरवरषहिं ॥ नगरकोलाहल भयउ नारि नर हरषहिं ॥ १८१ ॥ घाट वाट पुर द्वार बजार बनावहिं ॥ वीथीसींचि सुगंध सुमंगल गावहिं ॥ १८२ ॥ चौकैंपूरैं चारु कलश ध्वज साजहिं ॥ विविधि प्रकार गहागह बाजने बाजहिं ॥१८३ ॥ वंदनवार वितान पताका घर घर ॥ रोंपे सफल सपल्लव मंगल तरुवर ॥ १८४ ॥ छंद ॥ मंगल विटप मंजुल विपुल दधि दूब अक्षत रोचना ॥ भरि थार आरति सजहिं सब शारंग शावक लोचना ॥ मन मुदित कौशल्या सुमित्रा सकल भूपति भामिनी ॥ सजि साज परिछन चलीं रामहिं मंत्र कुंजरगामिनी ॥ ॥२३॥ बधुन्ह सहित सुत चारिउ मातु निहारहिं ॥ वारहिं वार आरती मुदित उतारहिं ॥१८५॥ करहिं निछावरि छिनु छिनु मंगल मुद भरीं ॥ दुलह दुलहिनिन्ह देखि प्रेम पयनिधि परीं॥१८६॥ देत पाँवड़े अरघ चलीं लै सादर ॥ उमगि चलेउ आनंद भुवन भुइ बादर ॥ १८७ ॥ नारि उहार उघारि दुलहिनिन्ह देखहिं ॥ नैन लाहु लहि जनम सफल करि लेखहिं ॥ १८८ ॥ भवन आनि सनमानि सकलमंगल किए ॥ बसन कनकमणि धेनुदान विप्रन्हदिए॥१८९॥ याचक कीन्ह निहाल अशीशहिं जहँ तहँ ॥ पूजे देव पितर सब राम उदय कहँ ॥१९०॥ नेगचार करि दीन्ह सबहि पहिरावनि ॥ समधी सकल सुआसिनि गुरु तिय पावनि ॥१९१॥ जोरी चारि निहारि अशीशत निकसहिं ॥ मनहुँ कुमुद विधु उदय मुदित मन विकसहिं ॥ १९२ ॥ छंद ॥ विकसहिं कुमुद जिमि देखि विधु भए अवध सुख शोभामई ॥ एहि जुगुति राम विवाह गावहिं सकल कवि कीरति नई ॥ उपवीत व्याह उछाह जे सिय राम मंगल गावहीं ॥ तुलसी सकल कल्याण ते नर नारि अनुदिनु पावहीं ॥ २४ ॥

इति श्रीगोसाँई तुलसीदासजी विरचितं श्रीजानकी स्वयंवरमंगल संपूर्ण ॥

श्रीः ।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत

गीतावली ।

जिसमें

गान रसिक हरिभक्तोंके आनन्दार्थ सातौ काण्ड
रामायण अनेक प्रकारके राग रागिनियोंमें
वर्णितहै ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखानामें छापकर

प्रकट किया ।

ज्येष्ठ संवत् १९५१

श्रीरामपंचायतन ॥





श्रीगणेशायनमः ।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

अथ गीतावली प्रारंभः ॥



श्लोक ॥ नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वामभागं ॥ पाणौ महाशायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ १॥ (राग आसावरी)॥ आजु सुदिन शुभघरी सुहाई॥ रूपशील गुणधाम रामनृप भवन प्रगट भए आई ॥ १ ॥ अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह वार योग समुदाई॥ हर्षवंत चर अचर भूमि सुर तनरुह पुलकि जनाई ॥ २ ॥ वरषहिं विवुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौशल्यादि मातुमनहरषित यह सुख वरणि न जाई ॥ ३ ॥ सुनि दशरथसुत जन्म लिये सब गुरु जन विप्र बोलाई ॥ वेद विहित करि कृपा परम शुचि आनँद उर न समाई॥४॥ सदन वेद धुनि करत मधुरमुनि बहु विधि बाजबधाई ॥ पुरवासिन्ह प्रियनाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ ५ ॥ मणि तोरण बहु केतु पताकनि पुरी रुचिर करिछाई॥मागध सूत द्वार वंदीजन जहँ तहँ करत बड़ाई ॥ ६ ॥ सहज शृँगार किए वनिताचलीं मंगल विपुल बनाई ॥ गावहिं देहिं अशीश मुदित चिरजिवो तनय सुखदाई ॥ ७ ॥ वीथिन्ह कुंकुम कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई ॥ नाचहिं पुर नर नारि प्रेमभर देहदशा विसराई ॥ ८ ॥ अमित धेनु गज तुरँग वसन मणि जातरूप अधिकाई ॥ देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृह आई॥९॥ सुखी भए सुर संत भूमि सुर खल गण मन मलिनाई ॥ सवइ सुमन विकसत रवि निकसत कुमुद विपिन बिलखाई ॥ १० ॥ जो सुखसिंधु सुकृत सीकरते शिव विरंचि प्रभुताई ॥ सोइ सुख अवध उमँगि रह्यो दश दिशि कौन जतन कहौं गाई ॥ ११ ॥ जे रघुवीर चरण चिंतक तिन्हकी ग-

ति प्रगट देखाई ॥ अविरल अमल अनूप भगति दृढ़ तुलसि दास तब पाई ॥ १२ ॥ १ ॥ (राग जयतश्री) ॥ सहेली सुनु सोहिलोरे ॥ सोहिलो सोहिलो सोहिलो सोहिलो सब जग आज ॥ पूत सपूत कौशिला जायो अचल भयो कुलराज ॥ १ ॥ चैत चारु नौमी शितामध्य गगन गत भानु ॥ नखत योग ग्रह लगन भले दिन मंगल मोद निधानु ॥ २ ॥ व्योम पवन पावक जल थल दिशि दशहु सुमंगल मूल ॥ सुर दुंदुभी बजावहिं गावहिं हरषहिं वरषहिं फूल ॥ ३ ॥ भूपति सदन सोहिलो सुनि बाजैं गह गहे निसान॥जहँ तहँ सजहिं कलश ध्वज चामर तोरणकेतुवितान॥४॥सींचि सुगंध रचैं चौकैं गृह आँगन गली बजार ॥ दल फल फूल दूब दधि रोचन घर घर मंगलचार॥५॥ सुनिसानंद उठे दशस्यंदन सकल समाज समेत ॥ लिये बोलि गुरु सचिव भूमिसुर प्रमुदितचलेहैं निकेत॥६॥जातकर्म करि पूजि पितर सुर दिये महिदेवनि दान॥तेहि औसर सुत तीनि प्रगट भए मंगल मुद कल्यान७ आनँद महँ आनंद अवध आनंद बधावन होइ ॥ उपमा कहें चारि फलकी मोकों भलो न कहै कवि कोइ ॥ ८ ॥ सजि आरती विचित्र थारकर यूथ यूथ वरनारि ॥ गावत चलीं बधावनो लैलै निज निज कुल अनुहारि ॥ ९ ॥ असही दुसही मरहु मनहिं मन वैरि न बढ़हु विषाद ॥ नृपसुत चारि चारु चिरंजीवहु शंकर गौरिप्रसाद ॥ १० ॥ लैलै ढोल प्रजा प्रमुदित चले भाँति भाँति भरभार ॥ करहिं गान करि आन रायकी नाचहिं राजदुआर ॥ ११॥ गजरथ वाजि वाहिनी वाहन सबनि सँवारे साज ॥ जनु रतिपति ऋतुपति कोशल पुर विहरत सहित समाज ॥ १२ ॥ घंटा घंटि पखाउज आउज झांझ बेणु डफतार॥ नूपुर धुनि मंजीर मनोहर कर कंकण झनकार ॥ १३ ॥ नृत्य करहिं नट नटी नारि नर अपने अपने रंग॥ मनहुँ मदनरति विविध वेषधरि नटत सुदेश सुधंग ॥ १४ ॥ उगटहिं छंद प्रबंध गीत पद राग तान बंधान॥सुनि किन्नर गंधर्व सराहत विथकेहैं विबुध विमान ॥ १५ ॥ कुंकुम अगर अरगजा छिरकहिं

भरहिं गुलाल अबीर ॥ नभ प्रसून झरि पुरी कोलाहल भइ मन भावति भीर ॥ १६॥ बड़ीवयस विधि भयो दाहिनो गुरुसुर आशिरवाद ॥ दशरथ सुकृत सुधासागर सब उमगेहैं तजि मरयाद ॥१७॥ ब्राह्मण वेदवंदि विरदावलि जय धुनि मंगल गान ॥ निकसत पैठत लोग परसपर बोलत लगिलगि कान ॥ १८ ॥ वारहिं मुकुता रतन राजमहिषी पुर सुमुखि समान ॥ वगरे नगर निछावरि मणिगण जनु जुवारि जव धान ॥ १९ ॥ कीन्हि वेद विधि लोकरीति नृप मंदिर परम हुलास ॥ कौशल्या कैकयी सुमित्रा रहस विवश रनिवास ॥ २० ॥ रानिन दिए वसनमणि भूषण राजा सहन भंडार ॥मागध सूत भाट नट याचक जहँ तहँ करहिं कवार ॥२१॥ विप्र वधू सनमानि सुआसिनि जन पुरजन पहिराइ ॥ सनमाने अवनीश अशीशत ईश रमेश मनाइ ॥ २२ ॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि भूति सब भूपति भवन कमाहिं॥समउ समाज राजदशरथको लोकप सकल सिहाहिं ॥ ॥ २३ ॥ कोकाहिसके अवध वासिनको प्रेम प्रमोद उछाह ॥ शारद शेष गनेश गिरिशहि अगम निगम अवगाह ॥ २४ ॥ शिवविरंचि मुनि सिद्ध प्रशंसत बड़े भूपके भाग ॥ तुलसी दास प्रभु सोहिलो गावत उमगि उमगि अनुराग ॥ २५॥ २ ॥ (राग बिलावल) ॥ आजु महामंगल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भए॥ सदन सदन सोहिलो सोहावनो नभ अरु नगर निशान हये ॥१ ॥ साजि साजि यान अमर किन्नर मुनि जानि समय समगानठये ॥ नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वरषहिं सुमन चये ॥ २ ॥ अति सुख वेगि वोलि गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गए ॥ जातकर्म करि कनक वसन मणि भूषित सुरभि समूह दये ॥३॥ दल फल फूल दूब दधि रोचन युवतिन्ह भरि भरि थार लये ॥ गावत चलीं भीर भइ वीथिन्ह वंदिन्ह बाँकुरे विरद वये ॥ ४ ॥ कनक कलश चामर पताक ध्वज जहँ तहँ वंदनवार नये ॥ भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक एक रंगरये ॥ ५ ॥ उमगि चल्यो आनंद लोक देत सवनि मंदिर रितये॥ तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत रामकृपा

चितवनि चितये ॥ ६ ॥ ३ ॥ (राग जयतश्री ॥) गावैं विबुध विमल बरबानी॥भुवन कोटि कल्याण कंदु जायो पूत कौशिलारानी ॥१॥ मास पाख तिथिवार नखत ग्रह योग लगन शुभ ठानी ॥ जल थल गगन प्रसन्न साधु मन दशदिशि हिय हुलसानी ॥ २ ॥ बरषत सुमन वधाव नगर नभ हरष न जात बखानी ॥ ज्यों हुलास रनिवास नरेशहि त्यौं जन पद रजधानी ॥ ३ ॥ अमर नाग मुनि मनुज सपरिजन विगत विषाद गलानी॥ मिलेहि माझ रावण रजनीचर लंकशंक अकुलानी॥४॥देव पितर गुरु विप्र पूजि नृप दिए दान रुचिजानी॥मुनि वनिता पुरनारि सुआसिनि सहस भाँति सनमानी५॥ पाइ अघाइ अशीशत निकसत याचक जन भये दानी ॥ यौं प्रसन्न कैकयी सुमित्राहि होहु महेश भवानी ॥ ६ ॥ दिन दूसरे भूप भामिनि दोउ भई सुमंगल खानी ॥ भयो सोहिलो सोहिले मोजनु सृष्टि सोहिलो सानी ॥ ७ ॥ गावत नाचत भोमन भावत सुख आवत अधिकानी ॥ देत लेत पहिरत पहिरावत प्रजा प्रमोद अघानी ॥ ८ ॥ गान निसान कुलाहल कौतुक देखत दुनी सिहानी ॥ हरि विरंचि हर पुर शोभा कुलि कोशलपुरी लोभानी ॥ ९ ॥ आनंद अवनिराज रानी सब माँगहु कोखि जुड़ानी ॥ आशिषदै दै सराहहिं सादर उमा रमा ब्रह्मानी ॥ १० ॥ विभव विलास बाढ़ि दशरथकी देखि न जिनहिं सोहानी ॥ कीरति कुशल भूति जय ऋधि सिधि तिन्ह पर सबै कोहानी ॥ ११ ॥ छठी बारहौं लोक वेद विधि करि सुविधान विधानी ॥ राम लषण रिपु दवन भरत धरे नाम ललित गुरुज्ञानी॥१२॥ सुकृत सुमन तिल मोद वासि विधि जतन यंत्रभरि घानी॥सुख सनेह सब दिवो दशरथहि खरि खलेल थिरथानी ॥ १३ ॥ अनुदिन उदय उछाह उमग जग घर घर अवध कहानी ॥ तुलसीराम जनम यश गावत सो समाज उर आनी ॥ १४॥४॥(राग केदारा॥) अवध बधावने घर घर मंगल साज समाज ॥सगुण सोहावने मुदित करत सब निज निज काज ॥ छंद ॥ निज काज सजत सँवारि पुर नर नारि रचना अन-

गंनी ॥ गृह अजिर अटनि बजार वीथिन्ह चारु चौकै विधिघनी ॥ चामर पताक वितान तोरण कलश दीपावलि बनी ॥ सुख सुकृत शोभा मय पुरी विधि सुमति जननी जनु जनी ॥ दोहा ॥ चैत चतुर्दशि चंदिनी, अमल उदित निशिराज ॥ उडुगण अवलि प्रकाशहीं, उमगत आनँद आज ॥ १ ॥ ॥ छंद॥ आनंद उमगत आजु विबुध विमान विपुल बनाइकै॥ गावत बजावत नटत हरषत सुमन वरषत आइकै ॥ नर निरखि नभ सुरपेखि पुरछवि परस परस चुपाइकै ॥ रघुराज साज सराहि लोचन लाहुलेत अघाइकै॥२॥जागिये राम छठी सजनीरी रजनी रुचिर निहारि॥मंगल मोदमठी मूरति जहँ नृप बालकचारि॥छंद॥मूरति मनोहर चारि विरचि विरंचि परमारथमई॥अनुरूप भूपहि जानि पूजनयोग विधि शंकर दई॥तिन्हकी छठी मंजुलमठी जगसरस जिन्हकी सरसई॥किये नींदभामिनि जागरण अभिरामिनी यामिनि भई ॥ ३ ॥ दो०॥सेवक सजग भये समय, साधन सचिव सुजान ॥ मुनिवर गुरु सिखये, लौकिक वैदिक विविधविधान ॥ छंद ॥ वैदिक विधान अनेक लौकिक आचरत सुनि जानिकै॥ वलिदान पूजामूलिकामनि साधि राखीं आनिकै ॥ जे देव देवी सेइयत हित लागि चित सनमानिकै ॥ ते यंत्र मंत्र सिखाइ राखत सबनिसों पहिचानिकै ॥ ४ ॥ सकल सुआसिनि गुरुजन पुरजन पाहुनेलोग ॥ विबुध विलासिनी सुर मुनि याचक जो जेहि योग ॥ ॥ छंद ॥ जेहि योग जे तेहिभाँति ते पहिराइ परिपूरण किये ॥ जय कहतदेत अशीश तुलसीदास ज्यों हुलसत हिये ॥ ज्यों आजु कालिहु परँव जागर होहिंगे नेवते दिए ॥ ते धन्य पुण्य पयोधि जे तेहि समै सुख जीवन जिये ॥ ५ ॥ भूपति भागवली सुर वर नाग सराहि सिहाहिं ॥ तिय वरवेष अली संपति सिधि अणिमादिक माहिं ॥ छंद ॥ अणिमाहिं शारद शैलनंदिनि वाल लालहिपालहीं ॥ भरि जनमजे पाये नते परितोष उमारमा लही ॥ निज लोक विसरे लोकपति घरकी न च-

रचा चालहीं ॥ तुलसी तपत तिहुँ ताप जगजतु प्रभुछठीं छायालही ॥ ६।८ ॥ (राग जयतश्री) ॥ बाजत अवध गहागहेआ- नंद वधाये ॥ नामकरन रघुवरनिके नृप सुदिन सोधाए ॥ पा- य रजायसु रायको ऋषिराज बोलाए ॥ शिष्य सचिव सेवक स- खा सादर शिरनाए ॥ साधु सुमति समरथ सबै सानंद सिखाए ॥ जल दल फल मणि मूलिका कुलिकाज लिखाए ॥ १ ॥ गणप गौ- रि हर पूजिकै गोबृंद दुहाए ॥ घर घर मुद मंगल महागुण गाण सुहाए ॥ तुरत मुदित जहँ तहँ चले मनके भय भाए ॥ सुरपति सासनु घन मनो मारुत मिलिधाए ॥ २ ॥ गृह आँगन चौहट्ट गलीं बाजार बनाए ॥ कलश चँवर तोरण ध्वजा सु वि- तानतनाए ॥ चित्रचारु चौकै रची लिखि नाम जनाए ॥ भरिभ रि सरवर वापिका अरगजा सनाए ॥ ३ ॥ नर नारिन्ह पल चारिमें सब साज सजाए ॥ दशरथ पुर छवि आपनी सुर नगर लजा- ए ॥ विवुध विमान बनाइकै आनंदित आए ॥ हरषि सुमन व- रषन लगे गये धन जनु पाए ॥ ४ ॥ वरे विप्र चहुँ वेदके रविकु- ल गुरुज्ञानी ॥ आपु वशिष्ठ अथर्वणी महिमा जग जानी ॥ लो- करीति विधि वेदकी करि कह्यौ सुवानी ॥ शिशु समेत वेगि बोलि ये कौशल्या रानी ॥ ५ ॥ सुनत सुआसिनि लैचलीं गावत बड़भागीं ॥ उमा रमा शारद शची देखि सुनि अनुरागीं ॥ निज निज रुचिवेष विरचिकै हिलिमिलि सँगलागीं ॥ तेहि अव- सर तिहुँ लोक की सुदशा जनु जागीं ॥ ६ ॥ चारु चौक बैठत भईं भूप भामिनि सोहैं ॥ गोद मोद मूरति लिये सुकृती जन जोहैं ॥ सुख सुखमा कौतुक कला देखि सुनि मुनि मोहैं ॥ सोसमा- ज कहै वरणिकै ऐसे कविकोहैं ॥ ७ ॥ लगे पढ़न रक्षा ऋचा ऋ- षि राज विराजे ॥ गान सुमन झरि जयजये बहु बाजने बाजे ॥ भ- ए अमंगल लंकमे शक संकट गाजे ॥ भुवन चारि दशके व- ड़े दुख दारिद भाजे ॥ ८ ॥ बाल विलोकि अथर्वणी हँसि हरहि ज- नायो ॥ शुभको शुभ मोद मोदको राम नाम सुनायो ॥ आलबाल

कल कौशिला दल बरन सोहायो ॥ कंद सकल आनंदको जनु अंकुरि आयो ॥९॥ जोहि जानि जपि जोरिकै कर पुट शिरराखे ॥ जय जय जय करुणानिधे सादर सुरभाषे ॥ सत्यसिन्धुसाँचे सदा जे आषर आषे ॥ प्रणतपाल पाये सही जे फल अभिलाषे ॥ १० ॥ भूमिदेव देव देखिकै नर देव सुखारी ॥ बोलि सचिव सेवक सखा पट धारि भँडारी ॥ देहु जाहि जोइ चाहिए सनमानि सँभारी ॥ लगेदेन हिय हरषिकै हेरि हेरि हँकारी ॥ ११ ॥ ग्राम निछावरि लेनको हठि होत भिखारी ॥ बहुरि देत तेइ देखिए मानहुँ धन धारी ॥ भरत लषण रिपु दवनहूं धरे नाम विचारी ॥ फलदायक फल चारिके दशरथ सुतचारी ॥ १२ ॥ भये भूप बालकनिके नाम निरूपम नीके ॥ गये सोच संकट मिटे तब ते पुरतीके ॥ सुफल मनोरथ विधि किये सब विधि सबहीके ॥ अब ह्वैहैं गाए सुने सबके तुलसीके ॥ १३ ॥ ६ ॥ (रागविलावल) ॥ सुभगसेज शोभित कौशल्या रुचिर राम शिशु गोदलिये ॥ वारवार बिधु वदन विलोकति लोचन चारु चकोरकिए ॥ १ ॥ कबहुँ पौंढि पय पान करावति कबहूँ राखति लाय हिये ॥ बालकेलि गावति हलरावति पुलकति प्रेम पियूष पिये ॥ २ ॥ विधि महेश मुनि सुर सिहात सब देखत अंबुद ओट दिए ॥ तुलसिदास ऐसो सुख रघुपतिपै काहूँ तो पायो न विये ॥३॥७॥ (राग सोरठ)॥ ह्वै हो लाल कबहिं बड़े बलिमैया ॥ राम लषण भावते भरत रिपुदवन चारु चारचो भैया ॥ १ ॥ बाल विभूषण वसन मनोहर अंगनि विरचि बनैहों ॥ शोभा निरखि निछावरि करि उरलाय वारने जैहों ॥ २ ॥ छगन मगन अँगना खेलिहो मिलि ठुमुकु ठुमुकु कबधैहो ॥ कलबल वचन तोतरे मंजुल कहि माँ मोहिं बुलैहो ॥ ३ ॥ पुर जन सचिव राउ रानी सब सेवक सखा सहेली ॥ लेहैं लोचन लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ वेली ॥ ४ ॥ जा सुख की लालसा लटू शिव शुक सनकादि उदासी ॥ तुलसी तेहि सुखसिंधु कौशिला मगन पै प्रेम पियासी ॥ ५॥८॥ पगनि कब चलिहो चारौ

भैया ॥ प्रेम पुलकि उरलाइ सुवन सब कहति सुमित्रा मैया ॥ १ ॥ सुंदर तनु शिशु वसन विभूषण नख शिख निरखि निकैया॥दलि तृण प्राण निछावरि करि करि लैहै मातु बलैया ॥ २ ॥ किलकनि नटनि चलनि चितवनि भजि मिलनि मनोहर तैया ॥ मणि खंभनि प्रतिबिंब झलक छबि छलकिहै भरि अँगनैया ॥ ३ ॥ बाल विनोद मोद मंजुल विधु लीला ललित जोन्हैया ॥ भूपति पुण्य पयोधि उमग घर घर आनंद बधैया ॥ ४ ॥ ह्वैहैं सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया ॥ अनायास पायहैं जनम फल तोतरे वचन सुनैया ॥ ५ ॥ भरत राम रिपुदवन लषणके चरित सरित अन्हवैया ॥ तुलसी तब केसे अजहुँ जानिबे रघुवर नगर बसैया ॥ ६ ॥ ९ ॥ (राग केदारा)॥ चुपरि उबटि अन्हवाइकै नयन आँजे रचि रुचि तिलक गोरोचन को कियोहै ॥ भूपर अनूपमसिबिंदुवारे वारे वार विलसत शीश पर हेरि हरै हियोहै॥मोदभरी गोदलिये लालति सुमित्रा देखि देव कहैं सबको सुकृत उप वियोहै॥मातु पितु प्रिय परिजन पुरजन धन्य पुण्य पुंज पेखि पेखि प्रेम रस पियोहै॥ लोहित ललित लघु चरण कमल चारु चाल चाहि सो छवि सुकवि जिय जियोहै ॥ बालकेलि वातवश झलकि झलमलत शोभा की दीयटि मानो रूप दीपदियोहै ॥ रामशिशु सानुज चरित चारु गाइ सुनि सुजननि सादर जनम लाहु लियोहै ॥ तुलसी विहाइ दशरथ दश चारि पुर ऐसे सुखयोग विधि विरच्यो न वियोहै ॥ १० ॥ राम शिशु गोद महामोद भरे दशरथ कौशिलहुँ ललकि लषण लाल लयेहैं ॥ भरत सुमित्रा लये कैकयी शत्रु शमन तन प्रेम पुलक मगन मन भयेहैं ॥ मेढी लटकन मणि कनक रचित बाल भूषण बनाइ आछे अंग अंग ठएहैं ॥ चाहि चुचुकारि चूँ बिलालत लावत उर तैसे फल पावत जैसे सुवीजबयेहैं ॥ वनओट विबुध विलोकि वरषत फूल अनुकूल वचन कहत नेहन येहैं ॥ ऐसे पितु मातु पूत प्रिय परिजन विधि जानियत आयु भरि एई निरमएहैं॥ अजर अमर होहु करो हरि हर छोहु जरठ जठेरेन्हि आशिरवाद दएहैं ॥ तुलसी सराहैं भाग्य तिन्ह

के जिन्हके हिये डिंभ रामरूप अनुराग रंग रएहैं॥११॥ (राग आ-
सावरी)॥ आजु अनरसेहैं भोरके पय पियत न नीके॥रहत न बैठे
ठाढ़े पालने झूलतहू रोवत राम मेरो सो शोच सबहीके॥देव पितर ग्रह
पूजिये तुला तौलिये घीके ॥ तदपि कबहुँ कबहुँक सखी ऐसेही अ-
रत जब परत दृष्टि दुष्टतीके ॥ वेगि वोलि कुलगुरु छुएमाथे हाथ
अमीके ॥ सुनत आइ ऋषि कुश हरे नरसिंह मंत्र पढ़े जो सुमिरत
भयभीके ॥ जासु नाम सर्वस सदाशिव पार्वतीके ॥ ताहि झरावति
कौशिला यह रीति प्रीतिकी हिय हुलसाति तुलसीके ॥ १२ ॥ माथे
हाथ ऋषि जब दियो राम किलकन लागे ॥ महिमा समुझि लीला
विलोकि गुरु सजल नयन तनु पुलकि रोम रोम जागे ॥ लिए गो-
द धाये गोदते मोद मुनि मन अनुरागे ॥ निरखि मातु हरषी हिये
आली ओट कहति मृदु वचन प्रेमके से पागे॥ तुम्ह सुरतरु रघुवंश
के देत अभिमत मागे ॥ मेरे विशेषि गति रावरी तुलसी प्रसाद
जाके सकल अमंगल भागे ॥ १३ ॥ अमिय विलोकनि करि कृपा
मुनि वर जब जोये ॥ तब ते राम अरु भरत लषण रिपुदवन सु-
मुख सखि सकल सुवन सुख सोये ॥ लाय सुमित्रालिए हिए फणि
मणि ज्यों गोए।।तुलसी नेवछावरि करति मातु अति प्रेम मगन मन
सजल सुलोचनकोए॥१४॥मातुसकल कुलगुर वधू प्रिय सखी सुहा-
ई॥सादर सब मंगल किये महि मनि महेशपर सबनि सुधेनु दुहाई॥
बोलि भूप भूसुरलिये अति विनय बड़ाई ॥ पूजिपाइ सनमानि
दानदिए लहि अशीश मुनि बरषैं सुमन सुरसाई॥घर घर पुरबाजन
लगीं आनंद वधाई ॥ सुखसनेह तेहि समयको तुलसी जानै जाको
चोरचोहै चित चहुँ भाई॥१५॥(राग धनाश्री)॥या शिशुके गुण नाम
बड़ाई॥कोकहिसकै सुनहु नरपति श्रीपति समान प्रभुताई ॥ यद्यपि
बुधि वय रूप शील गुण समये चारुचारयोंभाई॥तदपि लोक लोचन
चकोर शशि राम भगत सुखदाई ॥ सुर नर मुनि करि अभय दनुज
हति हरिहि धरणि गरुआई॥ कीरति विमलविश्व अघमोचनि रहिहि
सफल जगछाई॥याके चरण सरोज कपट तजि जो भजिहैं मनलाई॥

सोकुल युगल सहित तरिहैं भव यह न कछू अधिकाई ॥ सुनि गुरु वचन पुलकितन दंपति हरष न हृदय समाई॥ तुलसिदास अवलोकि मातु मुख प्रभु मनमें मुसुकाई ॥ १६॥ ९॥(राग विलावल) ॥ अवध आजु आगमी एकु आयो ॥ करतल निरखि कहत सब गुणगण बहुतानि परिचौ पायो॥ बूढ़ो बड़ो प्रमाणिक ब्राह्मण शंकर नाम सुहायो ॥संग सुशिष्य सुनत कौशल्या भीतर भवन बोलायो ॥ पाँयपखारि पूजि दियो आसन अशन वसन पहिरायो ॥ मेले चरण चारु चारचौ सुत माथे हाथ दिवायो॥नख शिख बाल विलोकि विप्रतनु पुलक नयन जल छायो ॥ लैलै गोद कमल कर निरखत उर प्रमोद अनपायो॥ जनम प्रसंग कह्यो कौशिक मिसि सीय स्वयंवर गायो ॥ राम भरत रिपुदवन लषणको जय सुख सुयश सुनायो ॥ तुलसिदास रनिवास रहसवश भयो सबको मन भायो ॥ सन्मान्यौ महिदेव अशीशत सानँद सदन सिधायो ॥ १७ ॥ (राग केदारा)॥पौढ़िये लालन पालने हौं झुलावौं॥कर पद मुख चख कमल लसत लखि लोचन भँवर भुलावौं ॥ वालविनोद मोद मंजुलमणि किलकनि खानि खुलावों ॥ तेइ अनुराग ताग गुहिवेकहँ मति मृगनयनि बुलावों ॥ तुलसी भनित भली भामिनि उर सो पहिराइ फुलावों ॥ चारु चरित रघुवर तेरे तोहि मिलि गाइ चरण चितु लावों ॥ १८ ॥ सोइए लाल लाडिले रघुराई ॥ मगनमोदलिए गोद सुमित्रा वारवार बलिजाई॥ हँसे हँसत अनरसे अनरसत प्रतिबिंबनि ज्यों झाई॥तुम सबके जीवनके जीवन सकल सुमंगल दाई ॥ मूल मूल सुरवीथि वेलि तम तोमसुदल अधिकाई ॥ नखत सुमन नभ विटप वोडि मानो छपा छिटकि छविछाई ॥ हों जँभात अलसात तात तेरी वानि जानि मैं पाई ॥ गाइ गाइ हलराइ बोलि हौं सुख नीदरी सुहाई ॥ वाछरू छबीलो छौना छगन मगन मेरे कहति मल्हाइ मल्हाई ॥ सानुज हिय हुलसति तुलसीके प्रभु किललित लरिकाई ॥ १९ ॥ ललन लोनेलैरुआ वलि मैया ॥ सुख सोइये नीद वेरिया भई चारु चरित चारचो भैया ॥ कहति मल्हा-

इं लाइ उर छिन छिन छगन छबीले छोटे छैया ॥ मोद कंद कुल कुमुद चंद मेरे रामचंद रघुरैया ॥ रघुवर बालकेलि संतनकी सुभग सुभद सुरगैया ॥ तुलसी दुहि पीवत सुख जीवत पयसप्रेम घनो घैया ॥ २० ॥ सुखनींद कहति आलि आइहौं ॥ राम लषण रिपुदवन भरत शिशु करि सब सुमुख सोआइहौं ॥ रोवनि धोवनि अनखानि अनरसनि डिठि मुठि निठुर नशाइहौं ॥ हँसनि खेलनि किलकनि आनंदनि भूपति भवन बसाइहौं ॥ गोद विनोद मोदमय मूरति हरषि हरषि हलराइहौं॥ तनु तिल तिलकरि वारि रामपर लेहौं रोग बलाइहौं ॥ रानी राउ सहित सुत परिजन निरखि नयन फलपाइहौं ॥ चारु चरित रघुवंश तिलकके तहँ तुलसिहि मिलि गाइहौं ॥ २१॥ (राग आसावरी) ॥ कनक रतनमय पालनो रच्यो मनहुँ मार सुतहार ॥ विविध खेलौना किंकिणी लागे मंजुल मुकुताहार ॥ रघुकुल मंडन रामलला ॥ १ ॥ जननि उबटि अन्हवाइकै मणिभूषण सजिलिए गोद ॥ पौढ़ाये पटु पालने शिशु निरखि मगन मन मोद ॥ दशरथ नंदन राम लला ॥ २ ॥ मदन मोरके चंदकी झलकनि निदराति तनु जोति ॥ नीलकमल मणि जलदकी उपमा कहें लघुमति होति ॥ मातु सुकृत फल राम लला ॥ ३ ॥ लघु लघु लोहित ललितहैं पद पाणि अधर एक रंग ॥ कोकवि जो छवि कहिसकै नख शिख सुंदर सब अंग ॥ परिजन रंजन राम लला ॥ ४ ॥ पगनूपुर कटि किंकिणी कर कंजनि पहुँची मंजु ॥ हिये हरिनख अद्भुत वन्यो मानो मनसिज मणि गण गंज ॥ पुरजन सुरमणि राम लला ॥५॥ लोयन नील सरोजसे भूपर मसि विंदु विराज ॥ जनु विधु मुख छवि अमियको रक्षक राखो रसराज ॥ शोभासागर राम लला ॥ ६ ॥ गभुआरीं अलकावलीं लसै लटकन ललित ललाट ॥ जनु उडुगण विधु मिलनको चले तम विदारि करि बाट ॥ सहज सोहावनो राम लला ॥ ७ ॥ देखि खेलौना किलकहीं पद पानि विलोचन लोल ॥ विचित्र विहग अलिज लज ज्यौं सु-

खमा सर करत कलोल ॥ भगत कलपतरु राम लला ॥ ८ ॥ बाल बोल विनु अरथके सुनि देत पदारथ चारि ॥ जनु इन्ह वचनन्हिते भए सुरतरु तापस तिपुरारि ॥ नाम कामधुक राम लला ॥ ९ ॥ सखी सुमित्रा वारहीं मणि भूषण वसन विभाग ॥ मधुर झुलाइ मल्हावहीं गावैं उमागि उमागि अनुराग ॥ हैं जग मंगल राम लला ॥ १० ॥ मोती जायो सीपमें अरु आदिति जन्यो जग भानु ॥ रघुपति जायो कौशिला गुण मंगल रूप निधानु ॥ भुवन विभूषण राम लला ॥ ११ ॥ राम प्रगट जबते भये गये सकल अमंगल मूल ॥ मीत मुदित हित उदितहैं नित वैरिन के चित शूल ॥ भव भय भंजन राम लला ॥१२॥अनुज सखा शिशु संग लै खेलन जैहैं चौगान ॥ लंका खर भर परैगो सुरपुर वाजिहैं निसान ॥ रिपुगण गंजन राम लला ॥ १३ ॥ राम अहेरे चलहिंगे जब गज रथ वाजि सँवारि ॥ दशकंधर उर धकधकी अब जनि धावै धनुधारि ॥ अरि करिकेहरि राम लला ॥ १४ ॥ गीत सुमित्रा सखिन्हके सुनि सुनि सुर मुनि अनुकूल ॥ दैअशीश जय जय कहैं हरषैं वरषैं फूल ॥ सुर सुखदायक राम लला ॥ १५ ॥ बालचरित मय चंद्रमा यह सोरह कलानिधान ॥ चित चकोर तुलसी कियो करैं प्रेम अमिय रस पान ॥ तुलसीको जीवन राम लला ॥ १६ ॥ २२॥ (राग कान्हरा) ॥ पालनें रघुपतिहि झुलावै ॥ लैलै नाम सप्रेम सरस स्वर कौशल्या कल कीरति गावै । केकि कंठ द्युति श्याम वरण वपु बाल विभूषण विचित्र बनाए । अलकैं कुटिल ललित लटकन भ्रू नील नलिन दोउ नयन सुहाए ॥ शिशु सुभाय सोहत जब कर गहि वदन निकट पद पल्लव लाये ॥ मनहुँ सुभग युग भुजग जलज भरि लेत सुधा शशि सों सचुपाए ॥ उपर अनूप विलोकि खेलौना किलकत पुनि पुनि पाणि पसारत ॥ मनहुँ उभय अंभोज अरुणसों विधु भय विनय करत अति आरत॥ तुलसिदास बहु वास विवश अलि गुंजत सों छवि नाहिं जात वखानि ॥ मनहुँ सकल श्रुति ऋचा मधुपह्वै विशद सुयश वर्णत

वरवानी ॥ २३ ॥ (राग विलावल) ॥ झूलत राम पालने सोहैं ॥ भू-रि भाग जननी जन जोहैं ॥ तन मृदु मंजुल मेचकताई ॥ झल-कति बाल विभूषण झाँई ॥ अधरपाणि पद लोहित लोने॥ सर शृं-गार भवसारस सोने ॥ किलकत निरखि विलोल खेलौना ॥ मनहुँ विनोद लरत छवि छौना ॥ रंजित अंजन कंज विलो-चन ॥ भ्राजत भालतिलक गोरोचन ॥ लसै मसि बिंदु वदन विधुनीको ॥ चितवत चितचकोर तुलसीको ॥ २४ ॥ (राग कल्याण)॥ राजत शिशुरूप राम सकल गुण निकाय ॥ धाम कौतुकी कृपालु ब्रह्मजानु पाणि चारी ॥ नील कंज जलद पुंज मर-कतमणि सदृश श्याम काम कोटि शोभा अंग अंग उपर वारी॥हा-टक मणि रत्न खचित रचित इंद्र मंदिर भई इंदिरानिवास सदन विधि रच्यो सँवारी॥विहरत नृप अजिर अनुज सहित वालकेलि कुशल नील जलज लोचन हरि मोचन भयभारी ॥ अरुण चरण अंकुश ध्वज कंज कुलिश चिह्न रुचिर भ्राजत अति नूपुरवर मधुर मुखर का-री॥किंकिणी विचित्र जाल कंबु कंठ ललित माल उर विशाल केहरि नख कंकण करधारी॥चारु चिबुक नासिकाकपोल भाल तिलक भ्रु-कुटि श्रवण अधर सुंदर द्विज छवि अनूप न्यारी ॥ मनहुँ अरुण कंज कोश मंजुल युगपाँति प्रसव कुंदकली युगल युगल परम सुभ्रवारी ॥ चिक्कन चिकुरावली मनो षडंघ्रि मंडली बनी विशेषि गुंजत जनु वालक किलकारी ॥ एकटक प्रतिबिंब निरखि पुलकत हरि हरषि हरषि लै उछंग जननी रसभंग जिय विचारी ॥ जाकहँ सनकादि शंभु नारदादि शुकमुनींद्र करत विविध योग काम क्रोध लोभ जारी ॥ दशरथ गृह सोइ उदार भंजन संसार भार लीला अवतार तुलसिदास त्रासहारी ॥ २५ ॥ (राग कान्हरा)॥ आँगन फिरत घुटुरुवनि धाये ॥ नील जलद तनु श्याम राम शिशु जननि निरखि मुख निकट बोलाए ॥१ ॥ बंधुक सुमन अरुण पद पंकज अंकुश प्रमुख चिह्न बनि आए ॥ नूपुर

जनु मुनिवर कलहंसनि रचे नीरदै बाँहबसाए ॥ २ ॥ कटि मेख लवर हारग्रीव दर रुचिर बाहँ भूषण पहिराए ॥ उर श्रीवत्स मनोहर हरि नख हेम मध्य मणि गण बहु लाये ॥ ३ ॥ सुभगचिबुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोल मोहिं अतिभाए ॥ भ्रू सुंदर करुणारस पूरण लोचन मनहुँ युगल जल जाए ॥४॥ भाल विशाल ललित लटकन वर बालदशाके चिकुर सोहाए ॥ मानो दोउ गुरु शनि कुज आगे करि शशिहि मिलन तमके गुण आए॥५॥उपमा एक अभूत भई तब जबजननी पट पीत ओढ़ाए॥नील जलदपर उडुगण निरखित तजिसुभाव मानो तड़ित छपाए॥६॥अंग अंग परमारनिकरमिलि छविसमूह लैलै जनुछाए॥तुलसिदास रघुनाथरूप गुण तौ कहौं जो विधि होहिं बनाए॥७॥२६॥(राग केदारा)॥रघुवरबाल छवि कहौं वरणि॥सकल सुखकी सींवकोटि मनोज शोभाहरनि॥१॥ वसी मानहुँ चरण कमलनि अरुणता तजि तरनि॥रुचिर नूपर किंकिणी मनुहरति रुनझुनु करनि ॥ २ ॥ मंजुमेचक मृदुलतनु अनु हरति भूषण भरनि ॥ जनु सुभग शृंगार शिशु तरु फरयोहै अद्भुत फरनि ॥ ३॥ भुजनि भुजग सरोज नयननि वदन विधु जित्यों लरनि ॥ रहे कुहरनि सलिल नभ उपमा अपर दुरि डरनि ॥ ४ ॥ लसत कर प्रतिबिंब मणि आँगन घुटुरुवनि चरनि ॥ जनु जलजसंपुट सु छवि भरि भरि धरति उरधरनि ॥ ५ ॥ पुण्यफल अनुभवति सुतहि विलोकि दशरथ घरनि ॥ वसति तुलसी हृदय प्रभुकिलकनि ललित लरखरनि ॥ ६ ॥ २७ ॥ नेकु विलोकि धौं रघुवरनि॥चारि फलत्रिपुरारि तोको दिये प्रगटकरि नृपघरनि ॥ १ ॥ बाल भूषण वसन तन सुंदर रुचिर रजभरनि ॥ परस्पर खेलनि अजिर उठि चलनि गिरि गिरि परनि ॥ २ ॥ झुकनि झाँकनि छाँह सों किलकनि नटनि हठि लरनि ॥ तोतरी बोलनि बिलोकनि मोहनी मनुहरनि ॥ ३ ॥ सखि वचन सुनि कौशिला लखि सुढर पा-

से ढरनि ॥ लेति भरि भरि अंक सैंतातिपै तजनु दुहुँ करनि॥४॥चरित निरखत विबुध तुलसी ओट दै जलधरनि ॥ चहत सुरसुरपति भयो सुरपति भयो चहै तरनि॥५॥२८॥(राग जयतश्री)॥भूमिपाल भूपके बड़े भाग ॥ राम लषण रिपुदमन भरत शिशु निरखत अति अनुराग ॥ १ ॥ बाल विभूषण लसत पाइ मृदु मंजुल अंग विभाग ॥ दशरथ सुकृत मनोहर बिरवनि रूप करह जनु लाग ॥ ॥ २ ॥ राज मराल विराजत विहरतजे हर हृदय तड़ाग ॥ ते नृप अजिर जानु पाणि धावत धरन चटक चल काग ॥ ३ ॥ सिद्ध सिहात सराहत मुनि गण कहैं सुर किन्नरनाग ॥ ह्वै वरु विहँग विलोकिय बालक बासि पुर उपवन बाग ॥ ४ ॥ परिजन सहित राय रानिन्हकियो मज्जन प्रेम प्रयाग ॥ तुलसी फल चारयो ताके मणि मरकत पंकजराग ॥५॥२९॥ (राग आसावरी)॥ छँगन मगन अँगना खेलत चारु चारयो भाई ॥सानुज भरत लाल लषण राम लोने लोने लरिका लखि मुदित मातु समुदाई ॥१॥बाल बसन भूषण धरे नख शिख छवि छाई ॥ नील पीत मनसिज सरसिज मंजुल मालनि मानोंहै देहनिते द्युति पाई ॥ २ ॥ ठुमुकु ठुमुकु पगधरनि नटनि लरखरनि सुहाई॥भजनि मिलनि रुठनि टूठनि किलकनि अवलोकनि बोलनि बर[illegible] न जाई ॥३॥ जननि सकल चहुँ ओर आलबाल मणि अँगनाई ॥ [illegible]शरथ सुकृत विबुध विरवा विलसत विलोकि जनु विधि वर वारि[illegible]ाई॥ ४ ॥ हरि विरंचि हर हेरि राम प्रेम पर बसताई ॥ सुख समाज [illegible]घुराजके वरणत विशुद्ध मन सुरनि सुमन झरिलाई ॥ ५ ॥ सुमि[illegible]न श्रीरघुवरनकी लीला लरिकाई ॥ तुलसिदास अनुराग अवध आनँद अनुभवत तब को सो अजहुँ अघाई॥ ६ ॥३०॥ (राग बिलावल)॥ आँगन खेलत आनँदकंद ॥ रघुकुल कुमुद सुखद चारु चंद ॥ सानुज भरत लषण सँग सोहैं ॥ शिशु भूषण भूषित मन मोहैं ॥ तन द्युति मोरचंद जिमिझलकै ॥ मनहुँ उमगि अँग अँग छबि छलकै ॥१॥ कटि किंकिणि पाँय पैंजनीबाजैं ॥ पंकज पाणि पहुँचिया राजैं ॥ कंठुला कंठवघन हानी

के ॥ नयन सरोज मयन सरसीके ॥ २ ॥ लटकन लसत ललाट लटूरीं ॥ दमकति द्वैद्वै दँतुरियाँ रूरीं ॥ मुनि मन हरत मंजु मसि बुंदा ॥ ललित वदन वलि बालमुकुंदा ॥ ३ ॥ कुलही चित्र विचित्र झँगूलीं ॥ निरखहिं मातु मुदित प्रीति फूली ॥ गहि मणि खंभ डिंभ डगि डोलत ॥ कल बल वचन तोतरे बोलत ॥ ४ ॥ किलकत झकि झांकत प्रतिबिंबनि ॥ देत परम सुख पितु अरु अंबनि ॥ सुमिरत सुखमा हिय हुलसींहै ॥ गावत प्रेम पुलकि तुलसींहै ॥ ५ ॥२१॥ (राग कान्हरा) ॥ ललित सुतहि लालति सचुपाये ॥ कौशल्या कल कनक अजिर महँ सिखवत चलन अँगुरियाँ लाये ॥ १ ॥ कटिकिंकिणी पैंजनी पाँयनि बाजति रुनु झुनु मधुर रेंगाये ॥ पहुँची करनि कंठ कठुला बन्यो केहरि नख मणि जरित जराये ॥ पीत पुनीत विचित्र झँगुलिया सोहति श्याम शरीर सोहाये ॥ दतियाँ द्वैद्वै मनोहर मुख छवि अरुण अधर चित लेत चोराये ॥ ३ ॥ चिबुक कपोल नासिका सुंदर भाल तिलक मसि बिंदुबनाये ॥ राजत नययन मंजु अंजन युत खंजन कंज मीन मदनाये ॥ ॥ ४ ॥ लटकन चारु भ्रुकुटिया टेढ़ी मेढ़ी सुभग सुदेश सुभाये ॥ किलकि किलकि नाचत चुटकी सुनि डरपति जननि पाणि ‿‿ काये॥ ५॥ गिरि घुटुरुवनि टेकि उठि अनुजनि तोतरि बोलत पूप देखाये ॥ बाल केलि अवलोकि मातु सब मुदित मगन आनँद अन माये।६ ।देखत नभ घन ओटचरित मुनि योग समाधि विरति बिसराये॥तुलसिदास जे रसिकन येहि रस ते नर जड़ जीवत जग जाये ॥७॥ ॥२२॥ (राग ललित) ॥ छोटी छोटी गोड़ियां अँगुरियाँ छोटी छवीलीं ॥ नख जोति मोती मानो कमल दलनिपर ॥ ललित आँगन खेलैं ठुमुकु ठुमुकु चलैं झुँझुनु २ पाँय पैंजनी मृदु मुखर॥किंकिणी कलित कटि हाटक रतन जटित मंजु कर कंजनि पँहुचियाँ रुचिरतर ॥ पियरी झीनी झँगुली साँवरे शरीर खुली बालक दामिनि ओढ़ी मानों वारें वारिधर ॥ उरबघनहा कंठ कठुला झँडूलेकेश मेढीलटकन मसि बिंदु मुनिमनहर ॥ अंजन रंजित नैन चित चोरै चि-

तवनि मुखशोभापर वारों अमित असमशर ॥ चुटकी बजावति नचावति कौशल्या माता बालकेलि गावति मल्हावति सुप्रेम भर ॥ किलकि किलकि हँसैंद्वैद्वै दँतुरियाँ लसैं तुलसीके मनव-से तोतरे वचन वर ॥ २३ ॥ सादर सुमुखि विलोकि राम शिशुरूप अनूप भूपलिय कनियाँ ॥ सुंदर श्याम सरोज वरण तन सब अँग सुभग सकल सुखदनियाँ ॥१॥ अरुण चरण नख जोति जगम गति रुनु झुनु करति पाँय पैजनियाँ॥कनक रतन मणि जटित रटित क-टि किंकिणि कलित पीतपट तनियाँ ॥ २ ॥ पहुँची करनि पदिक हरिनख उर कठुला कंठ मंजुगज मनियाँ ॥ रुचिर चिबु करद अध-र मनोहर ललित नासिका लसति नथुनियाँ ॥ ३॥ विकट भृकुटि सुखमानिधि आनन कल कपोल काननि नग फनियाँ॥ भाल तिल-क मसि बिंदु विराजत सोहति शीश लाल चौतनियाँ ॥ मन मो-हनी तोतरी बोलनि मुनि मनहरणि हँसनि किलकनियाँ ॥ बाल सुभाय विलोल विलोचन चोरति चितहि चारु चितवनियाँ ॥ ५ ॥ सुनिकुल वधू झरोखनि झाँकति रामचंद्र छवि चंद्र वदनियाँ॥तुलसि दास प्रभु देखि मगन भई प्रेम विवश कछु सुधि न अपनियाँ ॥६॥ २४ ॥ (राग बिलावल) ॥ सोहत सहज सुहाये नैन ॥ खंजन मीन कमल सकुचत तव जव उपमा चाहत कवि देन ॥ १ ॥ सुंदर सब अंगनि शिशु भूषण राजत जनु शोभा आएलैन ॥ बड़ोलाभलाल-ची लोभवश रहिगए लखि सुखमा बहु मैन ॥ २ ॥ भोर भूप लिए गोद मोद भरे निरखत वदन सुनत कल वैन ॥ बालक रूप अनूप राम छबि निवसति तुलसिदास उर ऐन ॥३॥२५॥ (राग विभास)॥ भोरभयो जागहु रघुनंदन ॥ गतव्यलीक भक्तनि उर चंदन॥ शशि करहीन छीन द्युति तारे ॥ तमचुर मुखर सुनहुँ मेरे प्यारे ॥ वि-कसित कंजकुमुद विलखाने ॥ लैपरागरस मधुप उड़ाने ॥ अनुजस-खा सब बोलनि आए ॥ बंदिन्ह अति पुनीत गुणगाए ॥ मन भा-वतो कलेऊ कीजै ॥ तुलसिदास कहँ जूठनि दीजै ॥ २६ ॥ प्रात भयो तातवलि मातु विधु वदन पर मदनवारौं कोटि उठो प्राण प्यारे॥

सूत मागध वंदि वदत बिरदावली द्वार शिशु अनुज प्रियतम ति-हारे ॥ कोक गत शोक अवलोकि शशि छीन छबि अरुणमय ग-गन राजत रुचिरतारे ॥ मनहुँ रवि बाल मृगराज तमनिकर करि दलित अति ललित मणि गण बिथारे ॥ सुनहु तम चुर मुखरकीर कलहंस पिक केकि रव कलित बोलत विहँग बारे॥ मनहुँ मुनि वृं-द रघुवंश मणिरावरे गुणत गुण आश्रमनि सपारिवारे ॥ सरनि विकसित कंज पुंज मकरंद वर मंजुतर मधुर मधुकर गुंजारे ॥ म-नहुँ प्रभु जन्म सुनि चयन अमरावती इंदिरानंद मंदिर सँवारे॥ प्रेम संमिलित वर वचन रचना अकनि राम राजीव लोचन उघारे॥दास तुलसी मुदित जननि करै आरती सहज सुंदर अजिर पाँवधारे।३७। जागिये कृपानिधान जान राय रामचंद्र जननी कहै वारवार भोर भयो प्यारे ॥ राजिवलोचन विशाल प्रीति वापिका मराल ललित कमल वदन उपर मदन कोटि वारे॥१॥अरुण उदित विगत सर्वरी शशांक किरनि हीन दीन दीप जोति मलिन द्युति समूह तारे ॥ मनहुँ ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भव विलास आसत्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे।२।बोलत खग निकर मुखर मधुर करि प्रतीत सुनहु श्रवण प्राणजीवन धन मेरे तुमवारे॥ मनहुँ वेद बंदी मुनि बृंद सूत मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे ॥ ३ ॥ बि-कासित कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कल कोमल धुनि त्यागि कंजन्यारे ॥ जनु विराग पाइ सकल शोक कूप गृह विहाइ भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुनत गुन तिहारे ॥ ४ ॥ सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल बिपुल दुख कदंबदारे ॥ तुलसिदास अति अनंद देखिकै मुखारबिंद छूटे भ्रम फंद परम मंद द्वंदभारे ॥ ५ ॥ ३८ ॥ बोलत अवनिप कुमार ठाढ़े नृपभवन द्वार रूपशील गुण उदार जागहु मेरे प्यारे॥ बिलखित कुमुदिनि चकोर चक्र वाक हरष भोर करत शोर तमचुर खग गुंजत अलि न्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन करि भूषण सजि सकल अंग संग अनुज बाल-क सब विविध विधि सँवारे ॥ करतल गहि ललित चाप भंजन रिपु

निकर दाप कटितट पट पीत तूण शायक अनियारे ॥ उपवन मृगया विहार कारण गवने कृपाल जननी मुख निरखि पुण्य पुंज निज विचारे ॥ तुलसिदास संगलीजै जानि दीन अभै कीजै दीजै मति विमल गावै चरित वर तिहारे ॥३९॥ (राग नट) ॥ खेलन चलिये आनँद कंद॥सखा प्रिय नृप द्वार ठाढ़े विपुल बालक वृंद॥१॥ तृषित तुम्हरे दरश कारण चतुर चातक दास ॥ वपुष बारिद वरषि छवि जल हरहु लोचन प्यास ॥ २ ॥ बंधु वचन बिनीत सुनि उठे मनहुँ केहरिबाल ॥ ललित लघु शर चापकर उर नयन बाहु विशाल ॥ ३ ॥ चलत पद प्रतिबिंब राजत अजिर सुखमा पुंज ॥ प्रेम वश प्रति चरण महि मानो देति आसन कंज ॥ निरखि परम विचित्र शोभा चकित चितवहिंमात ॥ हर्ष विवश न जात कहि निज भवन विहरहु तात ॥ ५ ॥ देखि तुलसीदास प्रभु छवि रहे सब पलरोंकि ॥ थकित निकर चकोर मानहुँ शरदइन्दु विलोकि ॥ ॥ ६ ॥ ४० ॥ विहरत अवध वीथिन राम ॥ संग अनुज अनेक शिशु नव नील नीरद श्याम ॥ १ ॥ तरुण अरुण सरोज पद बनी कनक मय पद त्रान ॥ पीत पट कटितूण वर कर ललित लघु धनुबान ॥ २ ॥ लोचननिको लेत फल छवि निरखि पुर नर नारि ॥ बसत तुलसीदास उर अवधेशके सुत चारि ॥ ३ ॥ ४१ ॥ जैसे राम ललित तैसे लोने लषण लालु ॥ तैसेई भरत शील सुखमा सनेह निधि तैसेई सुभग संग शत्रु शालु ॥ धरे धनु शरकर कसे कटि तरकसी पीरे पट ओढ़े चले चारु चालु ॥ अंग अंग भूषण जरायके जगमगत हरत जनके जीको तिमिर जालु ॥ २ ॥ खेलत चौहटा घाटवीथी बाटिकानि प्रभु शिव सुप्रेम मानस मरालु ॥ शोभा दान देदै सनमानत याचकजन करत लोक लोचन निहालु ॥ ३ ॥ रावण दुरित दुखदलै सुर कहैं आजु अवध सकल सुखको सुकालु॥ तुलसी सराहैं सिद्ध सुकृत कौशल्याजूके भूरि भाग भाजन भुआलु ॥ ४ ॥ ४२ ॥ (राग ललित) ॥ ललित ललित लघु लघु धनुशर कर तैसी तरकसी कटि कसे पट पियरे॥ललित पनही पाँय पैंजनी

किंकिणी धुनि सुनि सुख लहै मनुरहै नित नियरे ॥ पहुँची अंगद चारु हृदय पदिक हारु कुंडल तिलक छवि गड़ी कवि जयरे॥ सिरसुटेपारोलाल नीरज नयन विशाल सुंदर वदन ठाढ़े सुरतरुसियरे ॥ सुभग सकल अंग अनुज बालक संग देखे नर नारि रहैं ज्यों कुरंग दियरे ॥ खेलत अवध खोरि गोली भौंरा चक डोरी मूरति मधुर बसै तुलसी के हियरे ॥ ४३ ॥ छोटिऐ धनुहियाँ पनहियाँ पगनि छोटी छोटिऐ कछौटी कटि छोटिऐ तरकसी ॥ लसत झँगूली झीनीदामिनिकी छवि छीनी सुंदर वदन शिर पगिया जरकसी॥ वय अनुहरत विभूषण विचित्र अँग जोहे जिय आवति सनेह की सरकसी ॥ मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै जानै सोई जाके उर कसकै करकसी ॥ ४४ ॥(राग टोड़ी) ॥ राम लषण एक ओर भरत रिपुदवन लाल एक ओरभए ॥ सरयुतीरसम सुखद भूमि थल गनि गनि गोइयाँ बाँटिलये ॥ कंदुक केलि कुशल हय चढ़ि चढ़ि मन कसकासि ठोकि ठोकि खये ॥ कर कमलनि विचित्र चौगानै खेलन लगे खेल रिझये ॥ व्योम विमाननि विवुध विलोकत खेलक पेखक छाह छये ॥सहित समाज सराहि दशरथहि वरषत निजतरु कुसुमचये ॥ एक लै बढ़त एक फेरत सब प्रेम प्रमोद विनोद मये ॥ एक कहत भइ हाल रामजूकी एक कहत भइया भरत जये ॥ प्रभु बकसत गज वाजि बसन मणि जय धुनि गगन निशान हये ॥ पाइ सखा सेवक याचक भरि जीवन दूसरे द्वारगए ॥ नभ पुर परति निछावरि जहँ तहँ सुर सिद्धनि वरदानदये ॥ भूरि भाग अनुराग उमगि ते जे गावत सुनत चरित नितये ॥हारे हरष होत हिय भरतहि जिते सकुचि शिर नयन नए ॥ तुलसी सुमिरि सुभाव शील सुकृती तेइ जे एहि रंग रए॥४५॥खेलि खेलि सुखेल निहारे ॥ उतरि उतरि चुचुकारि तुरंग सादर जाइ जोहारे ॥ १ ॥ बंधु सखा सेवक सराहि सनमानि सनेह सँभारे॥ दिए वसन गज वाजि साजि शुभसाज सुभाँति सँवारे॥२॥मुदित नयन फल पाइ गाइ गुण सुर सानंद सिधारे॥सहित समाज राज मंदिर कहँ राम राउ पगुधारे३

भूप भवन घरघर घमंड कल्याण कोलाहल भारे ॥ निरखि हर-
षि आरती निछावरि करत शरीर विसारे ॥ ४ ॥ नितये मंगल मोद
अवध सब विधि सब लोग सुखारे॥तुलसी तिन्ह समतेउ जिन्हके प्रभु
ते प्रभु चरित पियारे॥५॥४६ ॥ (राग सारंग)॥ चहत महामुनिया-
गजयो ॥ नीचनिशाचर देत दुसह दुख कृश तनु ताप तयो ॥१॥
शापे पाप नये निदरत खल तब यह मंत्रठयो ॥ विप्रसाधु सुर धेनु
धरणि हित हरि अवतार लयो ॥ २ ॥ सुमिरत श्रीसारंगपाणि
छन में सब सोचगयो ॥ चले मुदित कौशिक कोशल पुर सगुणनि
साथदयो ॥ ३॥ करत मनोरथ जात पुलकि प्रगटत आनंदनयो ॥
तुलसी प्रभु अनुराग उमगि मग मंगल मूल भयो ॥ ४७ ॥ आ-
जु सकल सुकृत फल पाइहौं ॥ सुखकी सींव अवधि आनँदकी अ-
वध विलोकिहौं जाइहौं ॥ १ ॥ सुतनि सहित दशरथहि देखिहौं प्रेम
पुलकि उर लाइहौं ॥ रामचंद्र मुखचंद्र सुधा छवि नयन चकोर-
निप्याइहौं ॥ २ ॥ सादर समाचार नृप बुझिहैं हौं सब कथा
सुनाइहौं ॥ तुलसी ह्वै कृतकृत्य आश्रमहिं राम लषण ले आइहौं
॥ ४८ ॥ (रागनट) देखि मुनिरावरे पद आज ॥ भयो प्रथम गण-
तीमैं अवतें हों जहँ लौं साधु समाज ॥ १ ॥ चरण वंदि कर जो-
रि निहोरत कहिय कृपा करि काज ॥ मेरे कछु न अदेय राम विनु
देह गेह सब राज ॥ २ ॥ भली कही भूपति त्रिभुवन में को सुकृती
शिरताज ॥ तुलसी राम जनमहिं ते जनियत सकल सुकृत को साज
॥३॥४९॥ राजन राम लषण जो दीजै॥ यशरावरो लाभ ढोटनिहूँ मु-
नि सनाथ सबकीजै॥१॥डरपतहौं साँचेहु सनेह वश सुत प्रभाव विनु
जाने॥बूझिय वामदेव अरु कुलगुरु तुम पुनि परम सयाने ॥२॥ रिपु
रणदलि मखराखि कुशल अति अलप दिननि घरऐहैं॥तुलसिदास र-
घुवंश तिलककी कवि कलकीरति गैहैं॥३॥५०॥रहेठगिसे नृपति सु-
नि मुनिवरके वयन ॥ कहि न सकत कछु राम प्रेम वश पुलक गा-
त भरे नीरनयन ॥१॥ गुरु वशिष्ठ समुझाय कह्यो तब हियहर-
षाने जाने शेष शयन ॥ सौंपे सुत गहि पाणि पाँय परि भूसुर

उर चले उमगि चयन ॥ २ ॥ तुलसी प्रभु जोहत पोहत चित सो हत मोहत कोटि मयन ॥ मधु माधव मूरति दोउ संग मानो दिन मणि गवन कियो उत्तर अयन ॥ ३ ॥ ५१ ॥ (राग सारंग) ॥ ऋषि सँग हरषि चले दोउ भाई ॥ पितु पद वंदि शीश लियो आयसु सुनि शिष आशिषपाई ॥ १ ॥ नील पीत पाथोज वरण वपु वय किशोर वनिआई ॥ शर धनु पाणि पीत पट कटितट कसे निखंग बनाई ॥ २ ॥ कलित कंठ मणि माल कलेवर चंदन खौरि सुहाई ॥ सुंदर वदन सरोरुह लोचन मुख छवि वरणि न जाई॥३ ॥ पल्लव पंख सुमन शिर सोहत क्यों कहौं वेष लुनाई ॥ मानो मूरति धरि उभय भाग भइ त्रिभुवन सुंदर ताई ॥ ४ ॥ पैठत सरनि शिलनि चढ़ि चितवत खग मृग वन रुचिराई ॥ सादर सभय सप्रेम पुलकि मुनि पुनि पुनि लेत बोलाई ॥ ५ ॥ एक तीर तकि हती ताडका विद्या विप्र पढ़ाई ॥ राख्यो यज्ञ जीति रजनीचर भइ जग विदित बड़ाई ॥ ६ ॥ चरण कमल रज परसि अहल्या निज पति लोक पठाई ॥ तुलसिदास प्रभुके बूझे मुनि सुरसरि कथा सुनाई ॥ ॥ ७ ॥ ५२ ॥ (राग नट)॥ दोउ राजसुवन राजत मुनिके संग ॥ नख शिख लोने लोने वदन लोने लोयन दामिनि वारिद वर वरन अंग ॥ १ ॥ शिरनि शिखा सुहाइ उपवीत पीत पट धनु शर कर कसे कटि निखंग ॥ मानो मख रुज निशिचर हरिवेको सुत पावकके साथ पठये पतंग ॥ २ ॥ करत छांह घन वरषैं सुर सुमन छवि वर्णत अतुलित अनंग ॥ तुलसी प्रभु विलोकि मगलोग खग मृग प्रेम मगन रँगे रूप रंग ॥ ३ ॥ ५३॥(राग कल्याण) ॥ मुनिके संग विराजत वीर ॥ काक पच्छ धर कर कोदंड सर सुभग पीतपट कटि तूणीर ॥ १ ॥ वदन इंदु अंभोरुह लोचन श्याम गौर सोभा सदन शरीर ॥ पुलकत ऋषि अवलोकि अमित छवि उर न समाति प्रेमकी भीर ॥ २ ॥ खेलत चलत करत मग कौतुक बिलवँत सरित सरोवर तीर ॥ तोरत लता सुमन सरसीरुह पियत सुधा सम शीतल नीर ॥ ३ ॥ बैठत विमल शिलनि विटपनि तर पुनि पुनि

वर्णत छाँह समीर॥ देखत नटत केकिकल गावत मधुप मराल कोकिला कीर ॥ ४ ॥ नयननि को फल लेत निरखि खग मृग सुरभी ब्रज वधू अहीर ॥ तुलसी प्रभुहि देत सब आसन निज निज मन मृदु कमल कुटीर ॥ ५ ॥ ५४ ॥ (राग कान्हरा) ॥ सोहत मग मुनि सँग दोउ भाई ॥ तरुणतमाल चारु चंपक छवि कवि सुभाय कहि जाई ॥ १ ॥ भूषण वसन अनुहरत अंगनि उमगति सुंदरताई ॥ वदन मनोज सरोज लोचननि रहीहै लोभाइ लोनाई ॥ २ ॥ अंशनि धनु शर कर कमलनि कटि कसेहैं निखंग वनाई ॥ सकल भुवन शोभा सरबसु लघु लागत निरखि निकाई ॥ ३ ॥ महि मृदु पथ घन छाँह सुमन सुर वरषि पवन सुखदाई ॥ जल थलरुह फल फूल सलिल सब करत प्रेम पहुनाई ॥ ४ ॥ सकुच सभीत विनीत साथ गुरु बोलनि चलनि सुहाई ॥ खग मृग विचित्र विलोकत विच विच लसत ललित लरिकाई ॥ ५ ॥ विद्यादई जानि विद्यानिधि विद्यहु लही बड़ाई ॥ ख्याल दली ताड़ुका देखि ऋषि देत अशीश अवाई ॥ ६ ॥ बूझत प्रभु सुरसरि प्रसंग कहि निज कुल कथा सुनाई॥ गाधिसुवनसनेह सुख संपति उर आश्रम न समाई ॥ ७ ॥ वनवासी वटु यती योगि जन साधु सिद्ध समुदाई ॥ पूजत पेखि प्रीति पुलकत तनु नयन लाभ लुटिपाई ॥ ८ ॥ मख राख्यो खल दल दलि भुजबल वाजति विवुध वधाई ॥ नित पथ चरित सहित तुलसी चित वसत लषण रघुराई ॥ ९ ॥ ५५ ॥ मंजुल मंगलमय नृप ढोटा॥ मुनि मुनितिय मुनिशिशु विलोकि कहैं मधुर मनोहर जोटा ॥ १ ॥ नाम रूप अनुरूप वेष वय राम लषण लाल लोने ॥ इन्हते लहीहै मानो घन दामिनि द्युति मनसिज मरकतसोने ॥ २ ॥ चरण सरोज पीतपट कटितट तूण तीर धनुधारी ॥ केहरिकंध काम करि करवर विपुल वाहुवल भारी ॥ ३ ॥ दूषण रहित समय सम भूषण पाइसु अंगनि सोहैं ॥ नवराजीव नयन पूरण विधुवदन मदन मन मोहैं ॥ ४ ॥ शिरनि शिखंड सुमन दल मंडन बाल सुभाय वनाये ॥ केलि अंकतनु रेणु पंकजनु

प्रगटत चरित चोराये ॥ ५ ॥ मखराखिवे लागि दशरथ सों माँगि आश्रमहिं आने ॥ प्रेम पूजि पाहुने प्राणप्रिय गाधिसुवन सनमाने ॥ ॥ ६ ॥ साधन फल साधक सिद्धनिके लोचन फल सबहीके ॥ सकल सुकृत फल मातु पिताके जीवन धन तुलसीके ॥ ७ ॥ ५६ ॥ राग सूहो ॥ राम पदपदुम परागपरी ॥ ऋषितिय तुरत त्यागि पाहन तनु छविमय देहधरी ॥ १ ॥ प्रबल पाय पति शाप दुसह दव दारुण जरनि जरी ॥ कृपा सुधासींची विबुध वेलि ज्यौं फिरि सुख फरनि फरी ॥ २ ॥ निगम अगम मूरति महेश मति युवति वराय वरी ॥ सोइ मूरति भइ जानि नयन पथ एकटक ते न टरी ॥ ३ ॥ वरणति हृदय स्वरूप शील गुण प्रेम प्रमोदभरी ॥ तुलसिदास ऐसे केहि आरतकी आरति प्रभु न हरी ॥ ॥ ४ ॥ ५७ ॥ परत पद पंकज रज ऋषिरवनी ॥ भईहै प्रगट अति दिव्य देह धरि मानो त्रिभुवन छवि छवनी ॥१॥ देखि बड़ो आचरज पुलकि तनु कहत मुदित मुनि भवनी ॥ जो चालिहैं रघुनाथ पयादेहि शिला न रहिहि अवनी ॥२ ॥ परसि जो पाँय पुनीत सुरसरी सोहै तीनि पथ गवनी ॥ तुलसिदास तेहि चरण रेणुकी महिमा कहै मति कवनी ॥ ३ ॥ ५८ ॥ भूरि भाग्य भाजनु भई ॥ रूपराशि अवलोकि बंधु दोउ प्रेम सुरंग रई ॥ १ ॥ कहा कहैं केहि भाँति सराहैं नाहिं करतूतिनई ॥ विनुकारण करुणाकर रघुवर केहि केहि गति न दई॥ २॥ करि वहु विनय राखि उरमूरति मंगल मोद मई ॥ तुलसी ह्वै विशोकपति लोकहि प्रभुगुण गनतगई ॥ ॥ ३ ॥ ५९ ॥ (राग कान्हरा) ॥ कौशिकके मखके रखवारे ॥ नाम राम अरु लषण ललित अति दशरथराज दुलारे॥१॥मेचक पीत कमल कोमल कल काकपच्छ धरवारे ॥ शोभा सकल सकेलि मदन विधि सुकर सरोज सँवारे॥२॥सहस समूह सुबाहु सरिसखल समर शूर भटभारे ॥ केलि तूण धनुवाण पाणि रण निदरि निशाचर मारे ॥ ३ ॥ ऋषि तियतारि स्वयंवर पेखन जनकनगर पगुधारे ॥ मग नरनारि निहारत सादर कहि बड़भाग्य हमारे ॥ ४ ॥ तुलसी

सुनत एक एकनिसों यों चलत विलोक निहारे ॥ मूकनि वचन लहु मानो अंधनि लहेहैं विलोचनतारे ॥५॥६०॥ (राग ठोड़ी) आए सुनि कौशिक जनक हरषानेहैं ॥ बोलि गुरु भूसुर समाज सों मिलन चले जानि वड़े भाग्य अनुराग अकुलानेहैं ॥ १ ॥ नाइ शीश पगनि अशीश पाइ प्रमुदित पांवड़े अरघदेत आदरसों आ- नेहैं ॥ अशन वसन वासकै सुपास सब विधि पूजि प्रिय पाहुने सुभा- य सनमानेहैं ॥ २ ॥ विनय वड़ाई ऋषिराजऊ परस्पर करत पुलकि प्रेम आनँद अघानेहैं ॥ देखे राम लषण निमेषैवि- थकित भई प्राणहुँते प्यारे लागे विनु पहिचानेहैं ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंद हृदय दरश सुख लोयननि अनुभए उभय सरस राम जाने हैं ॥ तुलसी विदेहकी सनेहकी दशा सुमिरि मेरे मन माने राउ निपटस- यानेहैं ॥ ४ ॥ ६१ ॥ (राग मलार) ॥ कोशलरायके कुँअरोटा ॥ राजतरुचिर जनकपुर पैठत श्याम गौर नीके जोटा ॥ १ ॥ चौत- नी शिरनि कनक कली काननि कटिपट पीत सोहाये ॥ उरमणि माल विशाल विलोचन सीय स्वयंवर आए ॥ २ ॥ वरणि न जात मनहिं मन भावत सुभग अवहिं वय थोरी ॥ भई हैं मग- न विधुवदन विलोकत वनिता चतुर चकोरी ॥ ३ ॥ कहँ शिवचा- प लरिकवनि बूझत विहँसि चितै तिरछौहैं ॥ तुलसी गलिन भीर दरशन लगि लोग अटनि अवरोहैं॥४॥६२॥एअवधेशके सुत दोऊ- चढ़ि मंदिरनि विलोकत सादर जनक नगर सब कोऊ ॥ १ ॥ श्याम गौर सुंदर किशोरतनु तूण वाण धनुधारी ॥ कटि पट पीत कंठ मुकुतामणि भुज विशाल वलभारी ॥२॥ मुखमयंक सरसीरुह लोचन तिलक भाल टेढ़ी भौंहैं॥ कल कुंडल चौतनी चारु अति च- लत मत्त गज गौहैं ॥३॥ विश्वामित्र हेतु पठए नृप इन्हहिं ताड़का मारी ॥ मखराख्यो रिपुजीति जान जग मग मुनि वधू उधारी ॥४॥ प्रिय पाहुने जानि नरनारिन नयननिअयन दये॥तुलसिदास प्रभु देखि लोग सब जनक समान भये ॥५॥६३॥ (राग ठोड़ी)॥ बूझनु जनक नाथ ढोटा दोउ काकेहैं॥ तरुण तमाल चारु चंपक वरणतनु कौने

बड़े भागीके सुकृत परि पाकेहैं ॥ १ ॥ सुखके निधान पाये हियके पिधानलाये ठगकेसे लाडू खाये प्रेम मधु छाकेहैं ॥स्वारथ रहित परमारथी कहावतहे भे सनेह विवश विदेहताविवाकेहैं ॥ २ ॥ शील सुधाके अगार सुखमाके पारावार पावत न पैरपार पैरि पैरि थाकेहैं॥ लोचन ललकिलागे मन अति अनुरागे एक रसरूप चित सकल सभाकेहैं ॥ ३ ॥ जिय जिय जोरत सगाई राम लषण सों आपने आपने भाँयँ जैसे भाय जाकेहैं॥प्रीतिको प्रतीतिको सुमिरिवेको सेइबेको शरणको समरथ तुलसीहुताकेहैं ॥४।६४ ॥ ए कौन कहाँते आए ॥ नील पीत पाथोज वरण मन हरण सुभाय सुहाए ॥ १ ॥ मुनिसुत किधौं भूप बालककिधौं ब्रह्म जीव जग जाए ॥ रूप जलधिके रतन सुछवि तिय लोचन ललित ललाये ॥ २ ॥ किधौं रवि सुवन मदन ऋतुपति किधौं हरि हर वेष बनाए ॥ किधौं आपने सुकृत सुरतरुके सुफल रावरेहि पाये ॥ ३ ॥ भए विदेह विदेहनेह वश देह दशा विसराए ॥ पुलक गात न समात हरष हिय सलिल सुलोचन छाए ॥ ४ ॥ जनक वचन मृदु मंजु मधु भरे भगति कौशिकहि भाये ॥ तुलसी अति आनंद उमगि उर राम लषण गुण गाये ॥ ५।६५ ॥ कौशिक कृपालुहूको पुलकित तनु भो ॥ उमगत अनुराग सभाके सराहे भाग देखि दशा जनक की कहिबेको मनु भो ॥ १ ॥ प्रीतिके न पातकी दिएहूँ शाप पाप बड़ो मख मिस मेरो तब अवध गवनुभो ॥ आशहूते प्यारे सुत माँगे दिये दशरथ सत्यसिंधुसोच सहे शूनो सो भवनुभो ॥ २ ॥ काक शिखा शिर करकेलि तूण धनु शर बालक विनोद यातुधाननि सो रनुभो ॥ बूझत विदेह अनुराग आचरज वश ऋषिराज जाग भयो महाराज अनुभो ॥ ३ ॥ भूमिदेव नरदेव सचिव परसपर कहत हमको सुरतरु शिवधनु भो ॥ सुनत राजाकी रीति उपजो प्रतीति प्रीति भाग तुलसीके भले साहेबको जनुभो ॥ ४।६६ ॥ चारयो भले बेटा देव दशरथ रायके ॥ जैसे राम लषण भरत रिपुहन तैसे शील शोभा सागर प्रभाकर प्रभायके ॥ १ ॥ ताड़का सँहारि मखराखे नीके

पाले व्रत कोटि कोटि भटकिए एक एक घायके ॥ एकबाण वेगही उड़ाने यातुधान जात सूख गए गातहैं पतइया भये वायके ॥ २॥ शिलाछोर छुवत अहल्या भई दिव्य देह गुण पेखे पारसके पंकरुह पायके ॥ रामके प्रसाद गुरु गौतम खसम भये रावरेहु सतानंद पूत भये मायके ॥ ३ ॥ प्रेम परिहास पोख वचन सरसपर कहत सुनत सुख सबही सुभायके॥तुलसी सराहै भाग कौशिक जनक जूके विधिके सुढर होत सुढर सुदायके ॥ ४।६७ ॥ एदोऊ दशरथके वारे॥नामराम घनश्याम लषण लघु नखशिख अंग उज्यारे।१।निज हित लागि माँगि आने मैं धर्मसेतु रखवारे॥धीर वीर विरुदैत बाँकुरे महाबाहु बल भारे ॥ २ ॥ एक तीर तकि हती ताड़ुका किए सुर साधु सुखारे ॥ यज्ञ राखि जग साखि तोषि ऋषि निदरि निशाचर मारे ॥ ३ ॥ मुनि तिय तारि स्वयंवर पेखन आए सुनि वचन तिहारे ॥ एउ देखि हैं पिनाकु नेकु जेहि नृपति लाज ज्वर जारे ॥ ॥ ४ ॥ सुनि सानंद सराहि सपरिजन बारहिं बार निहारे ॥ पूजिस-प्रेम प्रशंसि कौशिकहि भूपति सदन सिधारे ॥ ५ ॥ सोचत सत्य सनेह विवश निशि नृपहि गनत गयतारे ॥ पठये बोलि भोर गुरुके सँग रंगभूमि पगु धारे ॥ ६ ॥ नगर लोग सुधिपाइ मुदित सबही सब काज विसारे ॥ मनहुँ मघा जल उमागि उदधि रुख चले नदी नदनारे ॥७॥ ए किशोर धनु घोर बहुत विलखात विलोकि निहारे ॥ टरचो न चाप तिन्हते जिन्ह सुभटनि कौतुक कुधर उखारे ॥ ८ ॥ एजाने विनु जनक जानियत करि पण भूप हँकारे ॥ नतरु सुधासागर परिहरि कत कूप खनावत खारे ॥ ९ ॥ सुखमा शील सनेह सानि मानो रूप विरंचि सँवारे ॥ रोम रोम पर सोम काम शत कोटि वारि फिरि डारे ॥ १० ॥ कोउ कहै तेज प्रताप पुंज चितये नहिं जात भिआरे ॥ छुअत शरासन सलभ जरेगो ये दिनकर वंश दियारे॥११॥एक कहै कछु होउ सुफल भए जीवन जनम हमारे ॥ अवलोके भरि नयन आजु तुलसीके प्राणपियारे ॥ १२ ॥ ॥ ६८ ॥ जनक विलोकि बार बार रघुबरको ॥ मुनि पद शीश नाय

आयसु अशीश पाई एई बातै कहत गवन कियो घरको ॥ १ ॥ नींदन परति राति प्रेम पण एक भाँति सोचत सकोचत विरंचि हरि हर-को॥तुम्हते सुगम सब देव देखिवेको अवजस हंस किए जोगवत युग परको ॥ २ ॥ ल्याये संग कौशिक सुनाये कहि गुणगण आए देखि दिनकर कुल दिनकरको ॥तुलसी तऊ सनेहको सुभाउ वाउ मानो चलदलको सो पात करै चितचरको ॥३॥६९ ॥ (राग केदार) ॥ रंग भूमि भोरेंही जाइकै ॥ राम लषण लखि लोग लूटिहैं लोचन लाभ अघाइकै ॥१ ॥ भूप भवन घर घर पुर बाहर इहैं चरचारही छाइकै मगन मनोरथ मोद नारि नर प्रेम विवश उठैं गाइकै ॥ २ ॥ सो-चत विधि गति समुझि परस्पर कहत वचन विलखाइकै ॥ कुँवर किशोर कठोर शरासन असमंजस भयो आइकै ॥ ३ ॥ सुकृत सँभारि मनाइ पितर सुर शीश ईशपद नाइकै ॥ रघुवर कर धनु भंग चहत सब अपनो सो हितु चितु लाइकै ॥ ४ ॥ लेत फिरत कण सुईं शकुन शुभ बूझत गणक बोलाइकै॥ सुनि अनुकूल मुदित मन मानहुँ धरत धीरजहि धाइकै ॥ ५ ॥ कौशिक कथा एक एक-निसो कहत प्रभाउ जनाइकै ॥ सीय राम संयोग जानियत रच्यो विरंचि बनाइकै ॥ ६ ॥ एक सराहि सुबाहु मथन वर बाहु उछाह ब-ढ़ाइकै॥ सानुज राज समाज विराजिहैं रामपिनाक चढ़ाइकै ॥ ७॥व-ड़ी सभा बड़ो लाहु बड़ो यश बड़ी बड़ाई पाइकै ॥ को सोहिहै और को लायक रघुनायकहि विहायकै ॥ ८ ॥ गवनिहैंगँ वहि गवाँइ गरव गृह नृप कुल बलहि लजाइकै ॥ भली भाँति साहब तुलसीके चलिहैं व्याहि बजाइकै ॥ ९ ॥७० ॥ (रागटोड़ी) ॥ भोर फूल बीनवेको गए फुलवाई हैं ॥ शीशनि टेपारे उपवीत पीत पट कटि दोना वाम करनि सलोने भेस वाई हैं ॥१॥ रूपके अगार भूपके कुमार सुकुमार गुरुके प्राणअधार संग सेवकाई हैं ॥ नीच ज्यों टहल करें राखे रुख अनुसरे कौशिक से कोहीवश किये दुहुँ भाई हैं॥२॥स-खिन सहित तेहि औसर विधि संयोग गिरिजाजू पूजिवेको जानकीजू

आईहैं ॥ निरखि लषण राम जाने ऋतुपति काम मोहिमानो मद-
न मोहनी मूड़नाई हैं ॥ ३ ॥ राघोजू श्रीजानकी लोचन मिलिवेको
मोद कहिवेको जोगुनमैं वातै सी वनाईहैं ॥ स्वामी सीय सखिन्ह ल-
खनहुँ तुलसीको तैसो तैसो मन भयो जाकी जैसिये सगाईहैं ॥ ४ ॥
॥ ७१ ॥ पूजि पार्वती भले भाय पाँय परिकै ॥ सजल सुलोचन
शिथिलतनु पुलकित आवै न वचन मनुरह्यो प्रेम भरिकै ॥ १ ॥
अंतर्यामिनि भव भामिनि स्वामिनि सोंहो कही चहौं वात मातु
अंत तौहौं लरिकै॥ मूरति कृपालु मंजु माल दै बोलत भई पूजोमन
कामना भावतो वरुवरिकै ॥२॥ राम कामतरु पाइ वेलि ज्यों वोडी
बनाइ माग कोखि तोखि पोषि फैलि फूलि फरिकै ॥ रहौंगी कहौंगी
तव साँची कही अंवासिय गहे पाँयहै उठाय माथे हाथ धरिकै॥३ ॥
मुदित अशीश सुनि शीश नाइ पुनि पुनि विदाभई देवी सों जननि
डर डरिकै ॥ हरषीं सहेली भयो भावतो गावती गीत गौनीभवन
तुलसी प्रभुको हियो हरिकै ॥ ४ ॥ ७२ ॥ रंगभूमि आए दशरथ
के किशोरहैं ॥ पेखनो सो पेखन चलेहैं पुर नर नारि वारे बूढ़े अंध
पंगु करत निहारहैं ॥ १ ॥ नील पीत नीरज कनक मरकत घन
दामिनिवरणतनु रूपके निचोर हैं॥सहज सलोने राम लषण ललित
नाम जैसे सुने तैसेई कुँवर शिरमौरहैं ॥२॥ चरण सरोज चारु जंघा
जानु ऊरू कटि कंधर विशाल बाहु बड़े बरजोरहैं ॥ नीकेकै निषंग
कसे कर कमलनि लसै बाण विशिषासन मनोहर कठोरहैं ॥ ३ ॥
काननि कनकफूल उपवीत अनुकूल पियरे दुकूल विलसत आछे
छोरहैं ॥ राजिवनयन विधुवदन टपारे शिर नख शिख अंगनि
ठगौरी ठौर ठौरहैं ॥ ४॥ सभासरवर लोक कोकनद कोकगण प्रमु-
दित मन देखि दिनमणि भोरहैं ॥ अबुध असैलेमन मैले महि-
पाल भये कछुक उलूक कछु कुमुद चकोरहैं ॥ ५॥ भाई सों कह-
त बात कौशिकहि सकुचात वोल घन घोरसे बोलत थोर थोरहैं ॥
सन्मुख सबहि विलोकत सबहि नीके कृपासों हेरत हँसि तुलसीकी
ओरहैं ॥ ६।७३॥एई राम लषणजे मुनि सँग आएहैं॥चोतनी चोलना

काछे सखि सोहैं आगे पाछे आछे हुते आछे आछे आछे भाय भायेहैं॥१॥साँवरे गोरे शरीर महाबाहु महावीर कटि तूण तीरधरे धनुष सुहायेहैं॥देखत कोमल कल अतुल विपुल बल कौशिक कोदंड कला कलित सिखाएहैं ॥ २ ॥ इन्हहीं ताडका मारी गौतमकी तिय तारी भारी भारी भूरि भट रण विचलायेहैं ॥ ऋषि मख रखवारे दशरथके दुलारे रंगभूमि पगुधारे जनक बुलायेहैं ॥ ३ ॥ इन्हकेविमल गुण गणत पुलकित तनु सतानंद कौशिक नरेशहि सुनायेहैं ॥ प्रभुपद मन दिये सो समाज चित्त किये हुलसि हुलसिहिये तुलसिहुँ गायेहैं॥४।७४॥(राग कान्हरा) ॥सीय स्वयंवरु माई दोउ भाई आए देखन ॥ सुनत चलीं प्रमदा प्रमुदित मन प्रेम पुलकित नयनहुँ मदन मंजुल पेखन ॥ १ ॥ निरखि मनोहरताई सुख पाई कहैं एक एक सों भूरि भाग हम धन्य आलीए दिन अेखन॥ तुलसीसहजसनेह सुरँगसब सोसमाज चित चित्रसारलागी लेखन ॥ २ ७५॥ (राग गौरी) राम लषण जब दृष्टि परेरी॥अवलोकत सब लोग जनक पुर मानो विधि विविध विदेह करेरी ॥ १ ॥ धनुषयज्ञ कमनीय अवनि तल कौतुकही भये आय खरेरी ॥ छवि सुरसभा मनहुं मनसिजके कलितकलपतरु रूख फरेरी ॥ २॥ सकल काम वरषत मुख निरखत करषत चित हित हरष भरेरी ॥ तुलसी सबै सराहत भूपहि भले पैत पासे सुढर ढरेरी ॥ ३ ॥ ७६ ॥ नेकु सुमुखि चितलाइ चितौरी ॥ राजकुँवर मूरति रचिबेकी रुचि सुविरंचि श्रम कियो है कितौरी ॥ १ ॥ नख शिष सुंदरता अवलोकत कह्यो न परत सुख होत जितौरी ॥ साँवर रूप सुधा भरिवे कहँ नयन कमल कल कल सरि तौरी ॥ २ ॥ मेरे जान इन्हहिं बोलिवे कारण चतुर जनक ठयो ठाट इतौरी ॥ तुलसी प्रभु भंजिहैं शंभु धनु भूरिभाग्य सिय मातु पितौरी ॥ ३ ।७७ ॥ (राग सारंग)॥ जब ते राम लषण चितयेरी ॥ रहे एकटक नर नारि जनकपुर लागत पलक कलप बितयेरी ॥ १ ॥ प्रेम विवश माँगत महेश सों देखतही रहिए नितयेरी ॥ कै ए सदा बसहु इन्ह नयन-

न्हि कै ए नयन जाहु जित एरी ॥ २ ॥ कोउ समुझाइ कहै किन
भूपहि बड़े भाग्य आए इत येरी ॥ कुलिश कठोर कहाँ शंकर धनु
मृदु मूरति किशोर कित येरी ॥ ३ ॥ विरचत इन्हहिं विरंचि भु-
वन सब सुंदरता खोजत रितयेरी ॥ तुलसिदासते धन्य जनम जन
मन क्रम बच जिन्हके हित येरी ॥ ४ ॥ ७८ ॥ सुन सखि भूप-
ति भलोइ कियोरी ॥ जेहि प्रसाद अवधेश कुवँर दोउ नगर लोग
अवलोकि जियोरी ॥ १ ॥ मानि प्रतीति कहे मेरे तैं कत संदेह व-
शकरति हियोरी ॥ तौलौ है यह शंभु शरासन श्रीरघुवर जौलौं
न लियोरी ॥ २ ॥ जेहिं विरंचिरचि सीय सँवारी औ रामहिं ऐसो
रूप दियोरी ॥ तुलसिदास तेहि चतुर विधाता निजकर यह संयो-
ग सियोरी ॥ ३ ॥ ७९ ॥ अनुकूल नृपहि शूलपानिहैं ॥ नीलकंठ
कारुण्यसिंधु हर दीनबंधु दिनदानिहैं ॥ १ ॥ जो पहिलेही पि-
नाक जनक कहँ गए सौंपि जिय जानिहैं ॥ बहुरि त्रिलोचन लोचन
के फल सबहि सुलभ किये आनिहैं ॥ २ ॥ सुनियत भव भावते
रामहैं सिय भावती भवानिहैं ॥ परिखत प्रीति प्रतीति पयज प्रणर-
हे काज ठटु ठानिहैं ॥ ३ ॥ भये विलोकि विदेह नेहवश बालक
विनु पहिचानिहैं ॥ होत हरे होने बिरवनि दल सुमति कहति अनु-
मानिहैं ॥ ४ ॥ देखियत भूप भोरकेसे उड़गण गरत गरीब गला
निहैं ॥ तेज प्रताप बढ़त कुँवरनको यदपि सकोची बानिहैं ॥ ५ ॥
वय किशोर बरजोर बाहुबल मेरु मेलि गुण तानिहैं ॥ अवशिरा-
म राजीव विलोचन शंभु शरासन भानिहैं ॥ ६ ॥ देखिहैं व्याह
उछाह नारि नर सकल सुमंगल खानिहैं ॥ भूरिभाग्य तुलसीतेउ जे
सुनिहैं गाइहैं बखानिहैं ॥७॥८०॥ (राग केदारा) ॥ रामहि नीके कै-
निरखिसुनयनी॥ मनसहु अगम समुझि यह अवसरु कत सकुचति
पिकवयनी ॥ १ ॥ बड़े भाग्य मख भूमि प्रगट भइ सीय सुमंगल
अयनी ॥ जा कारण लोचन गोचर भइ मूरति सब सुख दयनी ॥
॥२॥ कुलगुरु तियके मधुर वचन सुनि जनक युवति मति पयनी ॥
तुलसी शिथिल देह सुधि बुधि करि सहज सनेह विषयनी॥३॥८१॥

मिलो वरु सुंदर सुंदरि सीतहि लायकु साँवरो सुभग शोभाहू को परम शृंगारु ॥ मनहुँ को मन मोहै उपमाको कोहै सो है सुखमासागर संग अनुज राजकुमारु ॥ १ ॥ ललित सकल अंग तनु धरे की अनंग नैननिको फल कैधौं सियको सुकृत सारु॥ शरद सुधा सदन छबिहि निंदै वदन अरुण आयत नवनलिन लोचन चारु ॥ २ ॥ जनक मनकी रीति जानि विरहीत प्रीति ऐसी औ मूरति देखे रह्यो पहिलो विचारु ॥ तुलसी नृपहि ऐसो कहि न बुझावैकोउ प्रण औ कुँवर दोउ प्रेमकी तुलाधौं तारु॥ ३ ॥ ॥ ८२ ॥ देखि देखिरी दोउ राजसुवन ॥ गौर श्यामसलोने लोने लोने लोयनानि जिन्हकी शोभाते सोहै सकल भुवन ॥ १ ॥ इन्हहि ताडका मारी मग मुनि तिय तारी ऋषि मख राख्यो रण दलेहैं दुवन॥तुलसी प्रभुको अब जनक नगर नभ सुयश विमल विधु चहत उअन॥२॥८३॥ राग टोड़ी ॥ राजा रंगभूमि आज बैठे जाइ जाइकै ॥ आपने आपने थल आपने आपने साज आपनी आपनी बरवानक वनाइकै॥१॥कौशिक सहित राम लषण ललित नाम लरिका ललाम लोने पठए बुलाइकै॥दरशलालसा वश लोग चले भाय भले विकसत मुख निकसत धाइ धाइकै ॥ २ ॥ सानुज सानंद हिये आगे हैं जनक लिये रचना रुचिर सब सादर देखाइकै ॥ दिये दिव्य आसन सुपास सावकाश अति आछे आछे बीछे बीछे बिछौना बिछाइके ॥३॥ भूपति किशोर दुहुँ ओर बीच मुनिराउ देखिवेको दाउ देखो देखिवो विहाइकै॥उदैशैल सोहैं सुन्दरकुँवर जोहैं मानौ भानु भोर भूरि किरनि छिपाइकै॥४॥कौतुक कोलाहल निसान गान पुर नभ वरषत सुमन सुविमान रहे छाइकै ॥ हित अनहित रत विरत विलोकि बाल प्रेम मोद मगन जनम फल पाइकै ॥ ५ ॥ राजाकी रजाइ पाइ सचिव सहेली धाइ सतानंद ल्याए सिय सिविका चढ़ाइकै ॥ रूप दीपिका निहारि मृग मृगी नर नारि विथके विलोचन निमेषै विसराइकै ॥ ६ ॥ हानि लाहु अनख उछाहु बाहु बलकहि वंदी बोले विरद अकस उपजाइके ॥ द्वीप द्वीपके महीप आये सुनि पैज प्रण

कीजै पुरुषारथको अवसर भो आइकै ॥ ७ ॥ आनाकानि कंठ हँसी मुहाँ चाहीं होन लगी देखि दशा कहत विदेह विलखाइकै॥ घरनि सिधारिये सुधारिये आगिले काज पूजि पूजि धनु कीजै विजय बजाइकै ॥ ८ ॥ जनक वचन छुए विरवालजाहूकेसे वीर रहे सकल सकुचि शिरनाइकै॥ तुलसी लषण माषे रोषे राखे रामरुख भाषे मृदु परुष सुभायन रिसाइकै ९॥८४भूपति विदेह कही नीकिये जो भईहै॥बड़ेहीं समाज आजु राजानि की लाज पति हाँकि आँक एकही पिनाकछीनिलईहै ॥१॥मेरो अनुचित न कहत लरिकाई वश प्रण परमिति और भाँति सुनि गईहै ॥ नतरु प्रभु प्रताप उतरु चढाएँ चाप देतो पै देखाइ बल फल पापमईहै ॥ २ ॥ भूमिके हरैया उखरइया भूमि धरनिके विधि विरचे प्रभाउ जाको जग जईहै ॥ विहँसि हिये हरषि हटके लषण राम सोहत सकोच शीलनेहनारि नईहै ॥ ३ ॥ सहमी सभा सकल जनक भए विकल राम लखि कौशिक अशीश आज्ञा दई है ॥ तुलसी सुभाय गुरुपाँय लागि रघुराज ऋषिराजकी रजाइ माथे मानिलई है ॥ ४ ॥ ८५ ॥ सोचत जनक पोच पेच परिगईहै॥जोरि कर कमल निहोरि कहैं कौशिक सों आयसुभो रामको सो मेरे दुचितईहै ॥ १ ॥ वाण यातुधान पति भूप द्वीप सातहूके लोकप विलोकत पिनाक भूमिलईहै ॥ जोतिलिंग कथासुनी जाको अंत पाये विनु आये विधि हरि हारि सोई हाल भईहै ॥ २ ॥ आपुही विचारिये निहारिये सभाकी गति वेद मर्याद मानौ हेतु वादहई है॥इन्हके जितौहैं मन शोभा अधिकानी तन मुखनकी सुखमा सुखद सरसईहै ॥३॥ रावरो भरोसोबल कैहैं कोऊ किये छल कैधौं कुलके प्रभाव कैधौं लरिकईहै ॥ कन्याकल कीरति विजय विश्वकी वटोरि कैधौं करतार इन्हहीं को निरमईहै॥४॥प्रणकी न मोहिं न विशेषि चिंता सीताहूकी लुनिहै पै सोइ सोई जोईजे हिवईहै ॥रहे रघुनाथकी निकाई नाकी नीके नाथ हाथसों तिहारे करतूतिं जाकी नईहै॥५।कहि साधु साधु गाधि सुवन सराहे राउ महाराज जानि जिय ठीक भली दईहै॥हरषे लषण हरषाने विलखाने लोग तुल-

सी मुदित जाको राजाराम जईहै ॥६॥ ८६॥ सजन सराहैं जो जन-क बातकहीहै ॥ रामहि सोहानी जानि मुनिमन मानी सुनि नीच महिपावली दहन विनुदहीहै ॥ १ ॥ कहैं गाधिनंदन मुदित रघुनंदन सों नृपगति अगहु गिरा न जाति गहीहै॥ देखे सुने भूपति अनेक झूठे झूठे नाम साँचे तिरहुतिनाथ साखी देत महीहै ॥ २ ॥ राग उविराग भोग योग जोगवत मनु योगी जाग बलिक प्रसाद सिद्धि लहीहै ॥ ताते न तरनि ते न सीरे सुधाकर-हूतें सहज समाधि निरुपाधि निरवहीहै ॥ ३ ॥ ऐसउ अगाध बोधरावरे सनेह वश विकल विलोकियत दुचितई सहीहै ॥ काम-धेनु कृपा हुलसानी तुलसीश उर प्रण शिशु हेरि मर्याद बाँधी र-हीहै ॥ ४ ॥ ८७ ॥ ऋषिराज राजा आजु जनक समानको ॥ आपु यहि भाँति प्रीति सहित सराहियत रागी औ विरागी बड़भागी ऐसो आनको ॥ १ ॥ भूमि भोग करत अनुभवत योग सुख मुनि मन अगम अलख गति जानको ॥ गुरु हर पद नेहु गेह बसि भो विदेह अगुण सगुण प्रभु भजन सयानको ॥ २ ॥ कहनि रहनि एक विरति विवेक नीति वेद बुध संमत पथीन निरवानको ॥ विनु गुनकी कठिन गाँठि जड़ चेतन की छोरी अनायास साधु सोधक अयानको ॥ ३ ॥ सुनि रघुवीरकी वचन रचनाकी रीति भए मिथिलेश मानो दीपक विहानको ॥ मिटयो महा मोह जीको छूटयो पोच शोच सीको जान्यो अवतार भयो पुरुष पुराणको ॥ ४ ॥ सभा नृप गुरु नर नारि पुर नभ सुर सब चितवत मुख करुणानिधानको ॥ एकहि एक कहत प्रगट एक प्रेम वश तुलसीश तोरिय शरासन इशानको ॥ ५ ॥ ८८ ॥ रागमारू ॥ सुनो भैया भूप सकल दैकान ॥ वज्ररेख गजदशन जनक प्रण वेद विदित जगजान ॥ १ ॥ घोर कठोर पुरारि शरासन नाम प्रसिद्ध पिनाकु ॥जो दशकंठ दियो बाँवो जेहिं हर गिरि कियो है मनाकु ॥ २ ॥ भूमि भाल भ्राजत न चलत सो ज्यों विरंचिको आँकु ॥धनु तोरै सोइ वरै जानकी राउ होइकी राँकु ॥ ३ ॥ सुनि आमरषि उठे अवनीपति लगे वचन जनु

तीर ॥ टरै न चाप करैं अपनो सो महा महाबलधीर ॥ ४ ॥ नमित शीश सोचहिं सलज्ज सब श्रीहत भए शरीर ॥ बोले जनक विलोकि सीय तन दुखित सरोष अधीर ॥ ५ ॥ सप्त द्वीप नव खंड भूमिके भूपति वृंद जुरे ॥ बड़ोलाभ कन्याकीरतिको जहँ तहँ महिप मुरे ॥ ६ ॥ डग्यौ न धनु जनु वीर विगत महि किधौं कहुँ सुभट दुरे ॥ रोषे लषण विकट भृकुटी करि भुज अरु अधर फुरे ॥ ७ ॥ सुनहु भानुकुल कमल भानु जो अब अनुशासन पावौं ॥ को वा पुरो पिनाकु मेलि गुण मंदर मेरु नवावों ॥ ८ ॥ देखौ निज किंकर को कौतुक क्यौं कोदंड चढावौं ॥ लैधावों भंजौं मृनाल ज्यौं तौ प्रभु अनुग कहावों ॥ ९ ॥ हरषे पुर नर नारि सचिव नृप कुँवर कहे वरवैन ॥ मृदु मुसकाइ राम वरज्यौ प्रिय बंधु नयनकी सैन ॥ १० ॥ कौशिक कह्यौ उठहु रघुनंदन जगवंदन बलऐन ॥ तुलसिदास प्रभु चले मृगपति ज्यौं निज भगतनि सुखदैन ॥ ११ ॥ ॥ ८९ ॥ जबहिं सब नृपति निराशभए ॥ गुरुपद कमल वंदि रघुपति तब चाप समीप गए ॥ १ ॥ श्यामतामरसदाम वरण वपु उर भुज नयन विशाल ॥ पीत वसन कटि कलित कंठ सुंदर सिंधुर मणि माल ॥ २ ॥ कल कुंडल पल्लव प्रसून शिर चारु चौतनी लाल ॥ कोटि मदन छवि सदन वदन विधु तिलक मनोहर भाल॥ ॥ ३ ॥ रूप अनूप विलोकत सादर पुरजन राजसमाज ॥ लषण कह्यो थिरहोहिं धरनि धरु धरनि धरनि धर आज ॥ ४ ॥ कमठ कोल दिग दंति सकल अंग सजग करहु प्रभु काज ॥ चहतचपरि शिव चाप चढ़ावन दशरथको युवराज ॥ ५ ॥ गहि करतल मुनि पुलक सहित कौतुकहि उठाइलियो ॥ नृपगन मुखनि समेत नमित करि साजि सुख सबहि दियो॥६॥आकरष्योसिय मन समेत हरिहरष्यो जनक हियो॥भंज्यौ भृगुपति गर्व सहित तिहुँ लोक विमोह कियो ॥ ७॥भयो कठिनकोदंड कोलाहल प्रलय पयोद समान ॥ चौंके शिव विरंचि दिशिनायक रहे मूँदि कर कान ॥ ८ ॥ सावधानह्वै चढ़े विमानानि चले बजाइ निसान॥उमगि चल्यौ आनंद नगर नभ जय

धुनि मंगल गान ॥९॥ विप्र वचन सुनि सखी सुआसिनि चलीं जानकिहिल्याइ ॥ कुँअर निरखि जयमाल मेलिउर कुँआरि रही सकुचाइ ॥ १० ॥ वरषाहिं सुमन अशीशहिं सुर मुनि प्रेम न हृदय समाइ ॥ सीय रामकी सुंदरतापर तुलसिदास बलिजाइ ॥११॥९०॥

(राग मलार) ॥ जब दोउ दशरथ कुँअर विलोके ॥ जनक नगर नर नारि मुदित मन निरखि नयन पल रोके ॥ १ ॥ वय किसोर घन तडित वरनतनु नखशिख अंगलोभारे ॥ दैचितुकै हित लै सब छवि वितु विधि निज हाथ सँवारे ॥ २ ॥ संकट नृपहि सोच अति सीताहि भूप सकुचि शिरनाए ॥ उठे राम रघुकुल कल केहरि गुरु अनुशासन पाए ॥ ३ ॥ कौतुकहीं कोदंड खंडि प्रभु जय अरु जानकिपाई ॥ तुलसिदासकीरति रघुपतिकी मुनिन्ह तिहूँपुरगाई ॥ ४ ॥ ९१ ॥

राग टोडी ॥ मुनि पदरेणु रघुनाथ माथे धरीहै ॥ रामरुखनिरखि लषणकी रजाइ पाइ धराधराधरनि सुसावधान करीहै ॥ १॥ सुमिरि गणेश गुरु गौरि हर भूमि सुर सोचत सकोचत सकोची वानधरीहै ॥ दीनबंधु कृपासिंधु साहसिक सीलसिंधु सभाकी सकोच कुलहू की लाज परीहै ॥ २॥ पेषि पुरुषारथ परिखिप्रण प्रेमनेम सियहियकी विशेषि बड़ी खरभरीहै ॥ दाहिनो दियो पिनाकु सहमि भयो मनाकु महाव्याल विकल विलोकि जनुजरीहै ॥ ३ ॥ सुर हरषत वरषत फूल वार वार सिद्धि मुनि कहत शकुन शुभघरीहै ॥ रामबाहु विटप विसाल बोडी देखिअत जनक मनोरथ कलप वेलि फरीहै ॥ ४ ॥ लख्यौ न चढ़ावत नतानत नतोरतहूं घोर धुनि सुनि शिवकी समाधि टरीहै॥ प्रभुके चरित चारु तुलसी सुनतसुख एकही सुलाभ सबही की हानि हरी है॥५॥९२॥

॥ (राग सारंग) ॥ राम कामरिपु चाप चढ़ायो ॥ मुनिहि पुलक आनंद नगर नभ निरखि निसान बजायो ॥ १ ॥ जेहि पिनाकु विनुनाक किये नृप सबहि विषाद बढ़ायो ॥ सोई प्रभुकर परशत टूटचौ जनु हुतो पुरारि पढ़ायो ॥ २ ॥ पहिराई जयमाल जानकी युवतिन्ह मंगल गायो ॥ तुलसी सुमनवरषि हरषे सुर सुयश तिहूँ पुर छायो ॥ ३ ॥ ९३ ॥

॥ (राग टोडी) ॥ जनक मुदित मन

टूटत पिनाकके ॥ बाजेहैं बधावने सुहावने मंगल गान भयो सुख एकरस रानी राजा राँकके ॥ १ ॥ दुंदुभी बजाइ गाइ हरषि बराषि फूल सुरगण नाचैं नाच नायकहू नाकके ॥ तुलसी महीश देखे दिनरजनीश जैसे सूने परे सूनसे मनो मिटाये आँकके ॥२॥९४ ॥ लाजतो न साजि साज राजा राउ रोषेहैं ॥ कहा भव चाप चढ़ाए व्याह ह्वै है बड़े खाये बोलै खोलै सेल असि चमकत चोखेहैं ॥१॥ जानि पुर-जन त्रसे धीर दै लषण हँसे बल इन्हके पिनाक नीके नापे जोखेहैं ॥ कुलहि लजावैं बाल बालि स बजावैं गाल कैधौं कूर कालवश तम-कि त्रिदोषेहैं ॥ २ कुँवर चढ़ाई भौंहैं अबको विलोकै सोहैं जहँ त-हँ भे अचेत खेत केसे धोखेहैं ॥ देखे नर नारि कहैं साग खाइ जाए माइ बाह पीन पाँवरनि पीना खाइ पोखेहैं ॥ ३ ॥ प्रमुदित मन लोक कोकनद कोकगण रामके प्रतापपर विशोच शरसोखेहैं ॥ तब के देखैया तोषे तबके लोगनि भले अबके सुनैया साधु तुलसीहुँ तोषे हैं ॥४॥९५॥जयमाल जानकी जलजकरलईहै॥सुमन सुमंगल शकुन की बनाइ मंजु मानहुँ मदनमाली आपु निरमई है॥१॥ राज रुषलखि गुरु भूसुर सुआसिनिन्हि समय समाजकी ठवनि भली ठई है॥ चलीगानकरत निसानबाजे गहगहे लहलहे लोयनसा नेह सरसई है ॥ २ ॥ हनिदेव दुंदुभि हरषि बरषत फूल सफल मनोरथ भो सुख सुचितई है ॥ पुरजन परिजन रानी राउ प्रमुदित मनसा अनूपराम रूप रंग रई है ॥ ३॥ सतानंदशिष सुनि पाँयपरि पहिराई माल सि-यपिय हिय सोहतसो भई है ॥ मानस ते निकसि विशाल सुत माल पर मानहुँ मरालपांति बैठी बनि गई है ॥ ४ ॥ हितनि को लाह की उछाहकी विनोद मोद शोभा की अवधि नहिं अब अधिकई है ॥ याते विपरीत अनहितनकी जानिलीबी गतिकहै प्रगट पुनि सखा सिखई है॥५॥निज निज वेद की सप्रेम योगक्षेममई मुदित अशीशवि-प्र विदुषनि दई है ॥ छवि तेहि कालकी कृपालु सीतादूलहकी हुल-सति हिए तुलसीके नितनई है॥६॥९६॥ (रागकेदारा)॥ लेहुरीलोच-ननि को लाहु ॥ कुँवर सुंदर साँवरो सखि सुमुखि सादर चाहु ॥ १ ॥

खंडि हरकोदंड ठाढ़े जानुलंबित वाहु ॥ रुचिर उर जयमाल राज-ति देतसुख सबकाहु ॥२॥ चितौचित हित सहित नख शिख अंग अंग निवाहु ॥ सुकृत निज सियरामरूप विरंचि मतिहि सराहु ॥ ३ ॥ मुदित मन वरवदन शोभा उदित अधिक उछाहु॥मनहुँ दूरि कलंक करि शशि समर सूघ्योराहु ॥ ४ ॥ नयन सुखमा अयनहरत सरोज सुंदरताहु ॥ बसत तुलसीदास उरपुर जानकीका नाहु ॥ ५ ॥९७ ॥ ॥ (रागसारंग) ॥ भूपके भागकी अधिकाई ॥ टूटचौ धनुष मनोरथ पूज्यौ विधि सबवात बनाई ॥१॥ तबते दिन दिन उदै जनकको जब-ते जानकी जाई ॥ अब यहि व्याह सफल भयो जीवन त्रिभुवन वि-दित बड़ाई ॥ २ ॥ वारहि वार पहुनई ऐहैं राम लषण दोउ भाई ॥ यहि आनंद मगन पुरवासिन्ह देहदशा विसराई ॥ ३ ॥ सादर सकल विलोकत रामहिं काम कोटि छविछाई ॥ यह सुखसमउ समाज एक मुख क्यों तुलसी कहै गाई ॥ ४ ॥ ९८ ॥ (रागसोरठ)॥ मेरे बालक कैसे धौं मग निबाहगे ॥ भूख पियास शीत श्रम सकुचनि क्यों कौशिकहि कहहिंगे ॥ १ ॥ को भोरहिं उबटी अन्हवैहै काढ़ि कले-ऊदेहै ॥ कोभूषण पहिराइ निछावरिकरि लोचन सुख लेहै ॥ २ ॥ न-यन निमेषनि ज्यो जोगवैं नित पितु परिजन महँ नारी ॥ तेपठये ऋषि साथ निशाचर मारन मख रखवारी ॥ ३ ॥ सुंदर सुठि सुकु-मार सुकोमल काकपक्षधर दोऊ॥तुलसी निरखि हरषि उरलेहौं वि-धिह्वै है दिन सोऊ ॥४ ॥ ९९॥ऋषिनृप शीश ठगौरिसी डारी ॥ कु-लगुरु सचिव निपुण नेवानि अवरेव न समुझि सुधारी ॥ १ ॥ सिरस सुमन सुकुमार कुँवर दोउ शूर सरोष सुरारी ॥ पठए विनाहिं स-हाय पयादेहि केलि बाण धनुधारी ॥ २ ॥ अति सनेह कातरि मां-ताकहै लखि सखि वचन दुखारी ॥ वादिवीर जननी जीवन जग छ-त्र जाति गत भारी ॥३॥ जोकहि है फिरे राम लषण घर कारि मुनि-मख रखवारी॥सो तुलसी प्रियमोहिं लागि है ज्यों सुभाय सुतचारी॥ ॥४॥ १००॥ जबते लै मुनिसंग सिधाये ॥ राम लषणके समाचार सखि तबते कछुअ न पाए ॥ १ ॥ विनुपानहीं गमन फल भोजन

भूमिशयन तरुछाहीं ॥ सर सरिता जलपान शिशुनके साथ सु से-
वक नाहीं ॥२॥ कौशिक परमकृपालु परमहित समरथ सुखद सुचा-
ली ॥बालक सुठि सुकुमार सकोची समुझि सोच मोहिँ आली॥३॥
वचनसप्रेमसुमित्राके सुनि सब सनेह वश रानी ॥ तुलसी आइ भरत
तेहि औसर कही सुमंगलवानी ॥४॥१०१॥ सानुज भरत भवन उ-
ठिधाए॥ पितु समीप सब समाचार सुनि मुदित मातुपहँ आए॥१॥
सजल नयन तनु पुलक अधर फरकत लखि प्रीति सुहाई ॥ कौ-
शल्या लिए लाइ हृदय बलि कहौ कछु है सुधि पाई ॥ २ ॥ सता-
नंद उपरोहित अपने तिरहुति नाथ पठाए ॥ क्षेम कुशल रघुवीर
लषणकी ललित पत्रिका ल्याए ॥ ३ ॥ दलि ताडुका मारि निशि-
चर मख राखि विप्र तिय तारी॥दै विद्या लै गए जनकपुर हैं गुरु सं-
ग सुखारी ॥ ४ ॥ करि पिनाक पण सुता स्वयंवर साजि नृप कट-
क बटोरचो ॥ राजसभा रघुवर मृणाल ज्यों शंभु शरासन तोरचो ॥
॥ ५ ॥ यों कहि शिथिल सनेह बंधु दोउ अंब अंक भरि लीन्हे ॥
वार वार मुख चूमि चारु मणि वसन निछावरि कीन्हे ॥ ६ ॥ सुनत
सुहावनि चाह अवध घर घर आनंद बधाई ॥ तुलसिदास रनिवास
रहस वश सखी सुमंगल गाई ॥ ७ ॥ १०२ ॥ (राग कान्हरा) ॥
राम लषण सुधि आई बाजै अवध बधाई ॥ ललित लगन लिखि प-
त्रिका उपरोहितके कर जनक जनेश पठाई ॥ १ ॥ कन्या भूप
विदेह की रूपकी अधिकाई ॥ तासु स्वयंवर सुनि सब आए देश
देशकें नृप चतुरंग बनाई ॥ २ ॥ पण पिनाक पविमेरु ते गुरुता
कठिनाई ॥ लोकपाल महिपाल बाणइत रावण सके न-
चाप चढ़ाई ॥ ३ ॥ तेहि समाज रघुराजके मृगराज जगाई ॥ भंजि
शरासन शंभुको जग जय कल कीरति तिय तियमणि सिय पाई॥
॥ ४ ॥ पुर घर घर आनंद महा सुनि चाह सुहाई ॥ मातु मुदित
मंगल सजै कहै मुनि प्रसाद भये सकल सुमंगल माई ॥ ५ ॥ गुरु
आयसु मंडप रच्यो सब साज सजाई ॥ तुलसिदास दशरथ बरा-
त सजि पूजि गणेशहि चले निशान बजाई ॥ ६ ॥ १०३ ॥ (राग

केदारा) मनमें मञ्जु मनोरथ होरी ॥ सो हर गौरि प्रसाद एक ते चौगुनो भोरी ॥ १ ॥ पण परिताप चाप चिंता नि-शि सोच सकोच तिमिर नाहिं थोरी ॥ रविकुल रवि अवलोकि स-भा सर हितचित वारिज वन बिकसोरी ॥ २ ॥ कुँवर कुँवारि सब मंगलमूरति नृप दोउ धरम धुरंधर धोरी ॥ राज समाज भूरि भा-गी जिन लोचन लाहु लही एक ठोरी ॥ ३ ॥ व्याह उछाह राम सो-ताको सुकृत सकेलि बिरंचि रच्योरी ॥ तुलसिदास जानै सोइ यह सुख जाके उर बसति मनोहर जोरी ॥ ४ ॥ १०४ ॥ राजति राम जानकी जोरी ॥ श्याम सरोज जलद सुंदर वर दुलहिनि तड़ित वरण तनु गोरी ॥ १ ॥ व्याह समय सोहाति वितान तर उपमा कहुँ न लहति मति मोरी ॥ मनहुँ मदन मंजुल मंडप महँ छवि शृंगार शोभा सोउ थोरी ॥ २ ॥ मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रंथित चूनरि पीत पिछौरी ॥ कनककलश कहँ देत भाँवरी निरखि रूप शारद भइ भोरी ॥ ३ ॥ मुदित जनकरानिवास रहसवश चतुर नारि चितवहिं तृण तोरी ॥ गान निशान वेद ध्वनि सुनि सुर वरष-त सुमन हरष कहैं कोरी ॥ ४ ॥ नयननको फल पाइ प्रेमवश स-कल अशीशत ईश निहोरी ॥ तुलसी जेहि आनंद मगन मन क्यों रसना वरणैं सुख सोरी ॥ ५॥ १०५॥ दूलह राम सीय दुलहीरी॥ घन दामिनि वर वरन हरन मन सुंदरता नख शिखनि वहीरी॥ १ ॥ व्या-ह विभूषण वसन विभूषित सखि अवली लखि ठगिसि रहीरी ॥ जी-वन जन्मलाहु लोचन फल है इतनोइ लह्यो आजु सहीरी ॥ २ ॥ सुखमा सुरभि शृँगार क्षीर दुहि मयन अमिय मय कियोहै दहीरी ॥ मथि माखन सिय राम सँवारे सकल भुवन छवि मनहुँ महीरी ॥ ३ ॥ तुलसिदास जोरी देखत सुख शोभा अतुल न जाति कहीरी ॥ रूप राशि विरची बिरंचि मानो शिला लवनि रति काम लहीरी ॥ ४ ॥ ॥ १०६ ॥ जैसे ललित लषण लाल लोने ॥ तैसिये ललित उरमिला परस्पर लखत सुलोचन कोने ॥ १ ॥ सुखमा सार शृँगार सार करि कनक रचैहैं तिहि सोने ॥ रूपप्रेम परमिति न परत कहि बिथकि

रहीहै मति मौने ॥ २ ॥ शोभाशील सनेह सोहावनो समउ केलि गृ-
ह गोने ॥ देखि तियनिके नयन सफल भयो तुलसिदासहुके होने
॥ ३ ॥ १०७ ॥ ॥ (राग विलावल) ॥ जानकी वर सुंदर माई ॥
इंद्र नील मणि श्याम सुभग अँग अंग मनोजनि बहु छवि छाई॥१॥
अरुण चरण अंगुली मनोहर नखद्युतिवंत कछुक अरुणाई ॥ कं-
जदलनि पर मनहुँ भौमदश बैठे अचल सुसदसि बनाई ॥ २ ॥ पी-
त जानु उर चारु जटित मणि नूपुर पद कल मुखर सोहाई ॥ पीत-
पराग भरे अलिगण जनु युगल जलज देखिरहे लोभाई ॥ ३ ॥
किंकिणि कनककंज अवली मृदु मरकत शिखर मध्य जनु जाई ॥
गई न उपर सभीत नमित मुख विकाशि चहूँ दिशि रही लोनाई॥४॥
नाभि गँभीर उदर रेखावर उर भृगु चरण चिह्न सुखदाई॥भुज प्रलं-
व भूषण अनेक युत वसन पीत शोभा अधिकाई ॥ ५ ॥ यज्ञोपवी-
त विचित्र हेममय मुक्तामाल उरसि मोहि भाई ॥ कंद तड़ित विच
जनु सुरपति धनु निकट वलाकपाँति चलि आई ॥ ६ ॥ कंबु कंठ
चिबुकाधर सुंदर क्यों कहौं दशननकी रुचिराई ॥ पद्मकोश महँ
बसे वज्र मनो निज सँग तड़ित अरुण रुचिलाई ॥ ७॥नासिक चा-
रु ललित लोचन भ्रू कुटिल कचनि अनुपम छवि पाई ॥ रहे घेरि
राजीव उभय मानो चंचरीक कछु हृदय डेराई ॥८॥ भाल तिल-
क कंचन किरीट शिर कुंडल लोल कपोलनि झाँई ॥ निरखहि
नारि निकर विदेहपुर निमि नृपकी मरयाद मिटाई ॥ ९ ॥ शारद
शेष शंभु निशि वसर चिंतत रूप न हृदय समाई ॥ तुलसिदास
शठ क्योंकरि वरणै यह छवि निगम नेति कहि गाई ॥ १०॥१०८॥
(राग कान्हरा) ॥ भुजनि पर जननी वारि फेरि डारी ॥ क्यों
तोरयौ कोमल कर कमलनि शंभु शरासन भारी ॥ १ ॥ क्यों मा-
रीच सुवाहु महाबल प्रबल ताडका मारी ॥ मुनि प्रसाद मेरे रामल-
षणकी विधि वडि करवर टारी ॥ २ ॥ चरणरेणुलै नयननि लावति
क्यों मुनिवधू उधारी ॥ कहौ धौं तात क्यों जीति सकल नृप वरी है
विदेहकुमारी ॥ ३॥ दुसह-रोष-मूरति भृगुपति अति नृपतिनिकर

पक्षकारी ॥ क्यों सौंप्यो शारंग हारि हियकरि हैं बहुत मनुहारी॥४॥ उमगि उमगि आनंद विलोकति वधुनसहित सुतचारी॥तुलसि दास आरती उतारति प्रेम मगन महतारी ॥ ५ ॥ १०९ ॥ मुदित मन आरती करै माता ॥ कनक वसन मणि वारिवारिकर पुलक प्रफुल्लित गाता॥१॥पाँलागनि दूलिहिनिहि सिखावति सरिस सासु सत साता देहिं अशीश तेवरिस कोटिलगि अचलहोउ अहिवाता ॥२॥रामसी-य छवि देखि युवतिजन करहिं परस्पर बाता ॥ अब जान्यो साँचेहु सुनहुसखि कोविद बड़ो विधाता ॥३॥ मंगल गान निसान नगर नभ आनँद कह्यो न जाता॥ चिरंजीवहु अवधेश सुवन सब तुलसि दास सुखदाता ॥ ४ ॥ ११० ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां बालकांडसंपूर्णम् ॥

राग सोरठ ॥ नृप कर जोरि कह्यो गुरुपाहीं ॥ तुम्हरी कृपा अशीशनाथ मेरी सबै महेश निवाहीं ॥ १ ॥ रामहोहिं युवराज जियत मेरे यह लालच मन माहीं ॥ बहुरि मोहिं जियवे मरिवेकी चितचिन्ता कछु नाहीं ॥२॥महाराजभलोकाज विचारयौ वेगविलंव न कीजे ॥ विधिदाहिनो होइ तौ सबमिलि जनम लाहु लुटि लीजै३॥ सुनत नगर आनंद वधावन कैकेयीविलखानी॥तुलसी दासदेवमाया-वश कठिन कुटिलताठानी ॥ ४ । १११ ॥ (रागगौरी) ॥ सुनहु रा-म मेरे प्राणपियारे ॥ वारौं सत्यवचन श्रुतिसम्मत जाते हों वि-छुरत चरण तिहारे ॥ १ ॥ विनु प्रयास सब साधनको फल प्रभु पायो सो तो नाहिं सम्हारे॥ हरितजि धरमशील भयो चाहत नृप-ति नारि वश सरवस हारे ॥ २ ॥ रुचिर काँच मणि देखि मूढ़ ज्यों करतलते चिंतामणि डारे ॥ मणि लोचन चकोर शशि राघव शि-व जीवनधन सोउ न विचारे ॥ ३ ॥ यद्यपि नाथ तात मायावश सुखनिधान सुत तुम्हहिं विसारे ॥ तदपि हमहिं त्यागहु जनि रघु-पति दीन बंधु दयालु मेरे वारे ॥४॥ अतिशै प्रीति विनीत वचन सु-नि प्रभुकोमल चित चलत न पारे ॥ तुलसीदास जो रहौं मातु हित को सुर विप्र भूमिभयटारे ॥ ५ । २ । ११२ ॥ रहिचलिए सुंदर रघु-

नायक ॥ जौं सुत तात वचन पालन रत जननिउ तात मानिवे ला-यक ॥ १॥ वेद विदित यह वानि तुम्हारी रघुपति सदा संत सुखदा-यक ॥ राखहु निजमरयाद निगमकी हौं वलिजाउँ धरहु धनुशाय क ॥ २ ॥ शोककूपपुर परिहि मरिहि नृप सुनिसँदेश रघुनाथसिधाय क ॥ यह दूषण विधि तोहिं होत अव रामचरण वियोग उपजायक ॥ ३ ॥ मातु वचन सुनि श्रवण नयन जल कछु सुभाउ जनु नर त-नु पायक ॥ तुलसिदास सुर काजन साध्यौ तौ तो दोष मोहिं महि आयक ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११३ ॥ (राग सोरठ) ॥ राम हो कौन जतन घर रहि हौं ॥ वार वार भरि अंक गोद लै ललन कौन सों कहि हौं ॥ १ ॥ इहि आँगन विहरत मेरे वारे तुम जो संग शिशु लीन्हे ॥ कैसे प्राण रहत सुमिरत सुत बहु विनोद तुम्ह कीन्हे ॥ २ ॥ जिन्ह श्रवणनि कल वचन तिहारे सुनि सुनिहों अनुरागी ॥ तिन्ह श्र-वणनि वन गवन सुनतिहों मोते कवन अभागी ॥ ३ ॥ युग सम निमिष जाहिं रघुनंदन वदनकमल विनु देखे ॥ जो तनु रहै वर-ष वीते वालि कहा प्रीति इहि लेखे ॥ तुलसीदास प्रेमवश श्रीहरि देखि विकल महतारी ॥ गदगद कंठ नयन जल फिरि फिरि आवन कह्यो मुरारी ॥ ५ ॥ ४ ॥ ११४॥ (राग बिलावल)॥ रहहु भव-न हमरे कहे कामिनि ॥ सादर सासु चरण सेवहु नित जो तुम्हरे अतिहित गृह स्वामिनि ॥ १ ॥ राजकुमारि कठिन कंटक मग क्यों चलिहो मृदु पद गजगामिनि ॥ दुसह वात वरषा हिम आतप कैसे सहि हो अगणित दिन यामिनि ॥ २ ॥ हों पुनि पितु आज्ञा प्रमाण करि ऐहों वेगि सुनहु द्युति दामिनि ॥ तुलसिदास प्रभु वि-रह वचन सुनि सहि न सकी मुरछित भइ भामिनि ॥ ३ ॥ ५ ॥ ॥ ११५ ॥ कृपानिधान सुजान प्राणपति संग विपिन हों आवोंगी॥ गृहते कोटि गुणित सुख मारग चलत साथ सचु पावोंगी ॥ १ ॥ था-के चरण कमल चापोंगी श्रम भये वायु डोलावोंगी॥ नयन चकोर-नि मुखमयंक छवि सादर पान करावोंगी॥ २ ॥ जोंहठि नाथ रा-खिहो मोकहँ तो सँग प्राण पठावोंगी ॥ तुलसिदास प्रभु विनु जी-

वत रहि क्यों फिरि वदन देखावोंगी ॥ ३ ॥ ६ ॥ ११६ ॥ कहो तु-
म्ह विनु गृह मेरो कौन काजु ॥ विपिन कोटि सुरपुर समान मोको
जोपै पिय परिहर्‍यो राजु ॥ १ ॥ वल्कल विमल दुकूल मनोहर कं-
द मूल फल अमि अनाजु ॥ प्रभु पदकमल विलोकिहों छिन छिन
इहिते अधिक कहा सुख समाजु ॥ २ ॥ हों रहों भवन भोग लोलु-
पह्वै पति कानन कियो मुनिको साजु ॥ तुलसिदास ऐसे विरह व-
चन सुनि कठिन हियो विहर्‍यो न आजु ॥ ३ ॥ ७॥ ११७ ॥ प्रि-
य निठुर वचन कहे कारन कवन ॥ जानत हो सबके मनकी गति
मृदुचित परमकृपालु रवन ॥ १ ॥ प्राणनाथ सुंदर सुजान मणि
दीनबंधु जन आरतिदवन ॥ तुलसिदास प्रभु पदसरोज त-
जि रहि हौं कहा करोंगी भवन ॥ २ ॥ ८ ॥ ११८ ॥ मैं तुम्हसों स-
तिभाव कही है ॥ बूझति और भाँति भामिनि कत कानन कठि-
न कलेश सहीहै ॥ १ ॥ जो चलि हो तो चलो चलिकै वन सुनि
सिय मन अवलंब लही है ॥ बूड़त विरह वारिनिधि मानहुँ नाह
वचनमिस बाँह गही है ॥ २ ॥ प्राणनाथके साथ चली उठि अब
ध शोकसरि उमगि वही है ॥ तुलसी सुनि न कबहुँ काहू कहुँ
तनु परिहरि परिछाँह रही है ॥ ३ । ९ । ११९ ॥ जबहिं रघुपति
सँग सीय चली ॥ विकल वियोग लोग पुरातिय कहैं अति अन्याउ
अली ॥ १ ॥ कोउ कहै मणिगण तजत काँच लगि करत न भूप
भली ॥ कोउ कहै कुल कुवेलि कैकेयी दुख विष फलनि फली ॥ २ ॥
एक कहैं वन योग जानकी विधिवड़ विषम वली ॥ तुलसी कुलिश-
हुकी कठोरता तेहि दिन दलकि दली ॥ ३ । १० । १२० ॥ ठाढ़े
हैं लषण कमल कर जोरे ॥ उर धकधकी न कहत कछु सकुचनि
प्रभु परिहरत सबनि तृण तोरे ॥ १ ॥ कृपासिंधु अवलोकि
बंधुतन प्राण कृपाण वीरसी छोरे ॥ तात विदा माँगिए मातु सों
बनि है बात उपाइ न औरे ॥ २ ॥ जाइ चरण गहि आयसु याच्या
जननि कहत बहुभाँति निहोरे ॥ सिय रघुवर सेवा शुचि ह्वैहौ तौ
जानिहौं सही सुत मोरे ॥ ३ ॥ कीजहु इहै विचार निरंतर राम

समीप सुकृत नहिँ थोरे॥ तुलसी सुनि शिष चले चकित चित उड़्यौ मानो विहग बधिक भये भोरे ॥ ४ । ११ । १२१ ॥ (राग सोरठ) मोको विधुवदन विलोकन दीजै ॥ राम लषण मेरी यहै भेंट वलि जाँउ मोहिँ मिलि लीजै ॥ १ ॥ सुनि पितु वचन चरण गहे रघुपति भूप अंक भरि लीन्हे ॥ अजहुँ अवनि विहरत दरार मिस सो अवसर सुधि कीन्हे ॥ २॥ पुनि शिरनाइ गवन कियो प्रभु मुरछित भयो भूप न जाग्यो ॥ करम चोर नृप पथिक मारि मानो राम रतन लै भाग्यो ॥ ३ ॥ तुलसी रविकुल रवि रथ चढ़ि चले तकि दिशि दक्षिण सुहाई ॥ लोगनलिन भए मलिन अवध सर विरह विषम हिम आई ॥ ४ । १२ । १२२ ॥ (राग विलावल) कहो सो विपिन है धौं केतिक दूरि ॥ जहाँ गवनाकियो कुँवर कोशलपति बूझति सियपिय पतिहि बिसूरि ॥१॥ प्राणनाथ परदेश पयादहि चले सुख सकल तजे तृण तूरि ॥ करौं बयारि विलंबिय विटपतर झारौं हौं चरण सरोरुह धूरि ॥ २ ॥ तुलसिदास प्रभु प्रियावचन सुनि नीरजनयन नीर आए पूरि ॥ कानन कहा अबहिं सुनि सुंदरि रघुपति फिरि चितये हित भूरि ॥३।१३। १२३ ॥ फिरि फिरि राम सीयतनु हेरत ॥ तृषित जानि जललेन लषण गए भुज उठाइ ऊँचे चढ़ि टेरत ॥ १ ॥ अवनि कुरंग विहग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत॥मगन न डरत निरखि कर कमलनि सुभग शरासन शायक फेरत ॥ २ ॥ अवलोकत मग लोग चहूँदिशि मनहुँ चकोर चंद्रमहि घेरत॥ ते जन भूरिभाग्य भूतलपर तुलसी राम पथिक पद जे रत ॥ ३ । १४ । १२४ ॥ नृपति कुँवर राजत मग जात ॥ सुंदर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनकवरण मृदुगात ॥ १ ॥ अंशनि चाप तूण कटि मुनिपट जटा मुकुट बिच नूतन पात ॥ फेरत पाणि सरोजनि शायक चोरत चितहि सहज मुसुकात ॥ २ ॥ संगनारि सुकुमारि सुभग सुठि राजति विन भूषण नवसात ॥ सुखमा निरखि ग्राम वनितनिके नलिन नयन विकसित मानो प्रात ॥ ३ ॥ अंग अंग अगणित अ-

नंग छवि उपमा कहत सुकवि सकुचात ॥ सिय समेत नित तुलसि-
दास चित वसत किशोर पथिक दोउ भ्रात ॥ ४ । १५ । १२५ ॥
तू देखि देखिरी पथिक परम सुंदर दोऊ ॥ मरकत कल धौत वर-
ण काम कोटि कांति हरण चरण कमल कोमल अति राजकुँवर
कोऊ।१॥कर शर धनु कटिनिषंग मुनिपट सोहैं सुभग अंग संग चंद्र-
वदनि वधू सुंदरि सुठि सोऊ॥तापसवर वेष किये शोभा सब लूटि लि-
ये चितके चोर वयकिशोर लोचन भरि जोऊ।२।दिनकर कुलमणिनि
हारि प्रेम मगन ग्राम नारि परस्पर कहैं सखि अनुराग ताग पोऊ॥
तुलसी यह ध्यान सुधन जानि मानि लाभ सघन कृपण ज्यों सनेह
सोहिये सुगेह गोऊ ॥ ३ ॥१६।१२६॥ कुँवर साँवरोरी सजनी सुं-
दर सब अंग॥रोम रोम छवि निहारि आलि वारि फेरि डारि कोटि
भानु सुवन शरद सोम कोटि अनंग॥१॥वाम अंग लसतचाप मौलि
मंजु जटा कलाप शुचि शरकर मुनिपट कटितट कसे निषंग॥ आय-
त उर बाहु नैन मुख सुखमा को लहै न उपमा अवलोकि लोक गिराम
ति गति भंग ॥ २ ॥ योंकहि भई मगनबाल विथकी सुनि युवति
जाल चितवत चले जात संग मधुप मृग विहंग ॥ वरणों किमि ति-
नकि दशाहि निगम अगम प्रेम रसहि तुलसीमन वसन रंगे रुचिर
रूपरंग ॥ ३।१७।१२७ ॥ (राग कल्याण) ॥ देखु कोउ परम सुं-
दर सखि वटोही ॥ चलत महि मृदु चरण अरुण वारिजवरण भूप
सुत रूपनिधि निरखि हों मोही ॥ १ ॥ अमल मरकत श्याम शील
सुखमाधाम गौरतनु सुभग शोभासुमुखि जोही ॥ युगल विचनारि
सुकुमारि सुठि सुंदरी इंदिरा इंदु हरि मध्य जनु सोही ॥ २ ॥ कर-
निवर धनु तीर रुचिर कटि तूणीर धीर सुर सुखद मर्दन अवनि
द्रोही ॥ अंबुजायत नैन वदन छवि बहु मैन चारु चितवनि चतुर
लेत चित पोही ॥ ३ ॥ वचन प्रिय सुनि श्रवण राम करुणाभवन
चितै सब अधिक हित सहित कछु वोही ॥ दास तुलसीनेह
विवश बिसरी देह जाननहि आपु तेहि काल धों कोही ॥ ४ । १८॥
॥ १२८ ॥ (राग केदारा)॥ सखि नीकेकै निरखि कोऊ सुठि सुंदर

वटोही ॥मधुर मूरति मनमोहन जोहन योगवदन शोभासदन देखिहों मोही॥ १॥ साँवरे गोरे किशोर सुर मुनि चित्त चोर उभय अंतर एक नारि सोही॥ मनहुँ वारिद विधु वीच ललित अति राजति तडित निज सहज विछोही॥ २॥ उर धीरजहि धरि जन्म सफल करि सुनहि सुमुखि जिनि विकलहोही॥ को जानै कौने सुकृत लह्योहै लोचन लाहु ताहिते वारहिँ वार कहति तोही॥ ३॥ सखिहि सुसिख दई प्रेम मगन भई सुरति विसरि गई आपनी वोही॥ तुलसी रहीहै ठाढ़ी पाहन गढ़ी सी काढ़ी कौ न जानै कहाँते आई कौन की कोही॥४।१९।१२९॥माई मनके मोहन जोहन जोग जोही थोड़ेही वयस गोरे साँवरे सलोने लोने लोयन ललित विधुवदन वटोही॥ १॥ शिरनि जटा मुकुट मंजुल सुमनयुत तैसिए लसति नव पल्लव खोही॥ किये मुनि वेषवीर धरे धनु तूण तीर सोहैं मग कोहैं लखिपरे न मोही॥ २ ॥ शोभाको साँचो सँवारि रूपजात रूपढारि नारि विरची विरंचि संग सो सोही॥ राजत रुचिर तनु सुंदर श्रमके कन चाहे चकचौंधी लागै कहौं का तोही॥ ३ ॥ सनेह शिथिल सुनि वचन सकल सिय चितई अधिक हित सहित वोही॥ तुलसी मानहुँ प्रभु कृपाकी मूरति फिरि हेरिकै हरषि हिये लियोहै पोही॥ ४॥ । २०। १३०॥ सखि शरद विमल विधुवदनि वधूटी॥ ऐसी ललना सलोनी न भई न है न होनी रत्योरची विधि जो छोलत छवि छूटी॥ १॥ साँवरे गोरे पथिक वीच सोहति अधिक तिहुँ त्रिभुवन शोभा मानहुँ लूटी॥ तुलसी निरखि सिय प्रेम वश कहैं तिय लोचन शिशुन्ह देहु अमिय घूटी॥॥ २॥ २१॥ ॥१३१ सोहैं साँवरे पथिक पाछे ललना लोनी॥दामिनि वरण गोरी लखि सखि तृणतोरि वीतीहैं वयकिशोरी जोवन होनी॥१॥नीकेकै निकाई देखि जन्म सफल लेखि हमसो भूरि भागिनिनभनछोनी॥तुलसी स्वामी स्वामिनिजोहे मोहीहैं भामिनि शोभा सुधा पियेकरि आँखियाँ दोनी॥२।२२।१३२।पथिक गोरे साँवरे सुठि लोने। संग सुतिय जाके तनुते लहीहै द्युति स्वर्ण सरोरुह सोने॥ १॥ वयकिशोर सरि

पार मनोहर वयस शिरोमणि होने ॥ शोभा सुधा आलि अँचवहु करि नयन मंजु मृदु दोने ॥ २ ॥ हेरत हृदय हरत नाहिं फेरत चारु विलोचन कोने ॥ तुलसी प्रभु किधौं प्रभुके प्रेम पढ़े प्रगट कपट विनु टोने ॥ ३ ॥ २३ ॥ १३३ ॥ मनोहरताके मानो ऐन ॥ श्यामल गौर किशोर पथिक दोउ सुमुखि निरखि भरिनैन ॥ १ ॥ वीच वधू विधुवदनि विराजति उपमा कहुँ कोउ हैन ॥ मानहुँ रति ऋतुनाथ सहित मुनि वेष बनायोहै मैन ॥ २ ॥ किधो शृंगार सुखमा सुप्रेम मिलि चले जग चितवितलैन ॥ अद्भुत त्रयी किधौं पठईहै विधि मग लोगन्हि सुखदैन ॥ ३ ॥ सुनि शुचि सरल सनेह सुहावने ग्राम वधुन्हके वैन ॥ तुलसी प्रभु तरु तर विलंबे किए प्रेम कनौड़ेकैन ॥ ४ ॥ २४ ॥ १३४ ॥ वै किशोर गोरे साँवरे धनुवाण धरेहैं ॥ सब अंग सहज सोहावने राजीव जिते नैनानि वदननि विधु निदरेहैं ॥ १ ॥ तूणस मुनिपट कटि कसे जटा मुकुट करेहैं ॥ मंजु मधुर मृदु मूरति पानह्यौ न पायनि कैसे धौं पंथ विचरेहैं ॥२॥ उभय वीच वनिता बनी लखि मोहि परेहैं॥मदन सप्रिया सप्रिय सखा मुनि वेष बनाए लिए मन जात हरेहैं ॥ ३ ॥ सुनि जहँ तहँ देखन चले अनुराग भरेहैं ॥ राम पथिक छवि निरखिकै तुलसी मग लोगनि धाम काम बिसरेहैं ॥ ४ ॥ २५ ॥ १३५ ॥ कैसे पितु मातु कैसे ते प्रिय परिजनहैं ॥ जगजलधि ललाम लोने लोने गोरे श्याम जिन पठएहौं ऐसे बालकनि बनहैं ॥ १ ॥ रूपके न पारावार भूपके कुमार मुनि वेष देखत लोनाई लघु लागत मदनहैं ॥ सुखमाकी मूरतिसी साथ निशिनाथ मुखी नखशिख अंग सब शोभाके सदनहैं ॥ २ ॥ पंकज करनि चाप तीर तरकस कटि शरद सरोज हूते सुंदर चरनहैं ॥ सीता राम लषण निहारि ग्रामनारि कहैं हेरि हेरि हेलीहियके हरनहैं ॥ ३॥ प्राणहूके प्राणसे सुजीवनके जीवनसे प्रेम रंक कृपिणके धनहै ॥ तुलसीके लोचन चकोरनके चंद्रमासे आछे मन मोर चित चातकके घनहैं ॥ ४ ॥ २६॥ १३६ ॥ (राग भैरव)॥ देखि द्वै पथिक गोरे साँवरे सुभगहैं ॥ सुतिय सलोनी सं-

ग सोहते सुमगहैं ॥ १ ॥ शोभासिंधु संभवसे नीके नीके नगहैं ॥ मातु पितु भाग वश गए पारि फँगहैं ॥ २ ॥ पाइ पनह्यौ न मृदु पंकजसे पगहैं ॥ रूपकी मोहनी मेलि मोहे अग जगहैं ॥ ३ ॥ मुनि वेष धरे धनु शायक सुलगहैं ॥ तुलसी हिये लसत लोने लोने डगहैं ॥ ४ ॥ २७ ॥ १३७ ॥ पथिक पयादे जात पंकजसे पायहैं ॥ मारग कठिन कुश कंटकनिकायहैं ॥ १ ॥ सखी भूखे प्यासे पै चलत चित चायहैं ॥ इन्हके सुकृत सुर शंकर सहायहैं ॥ २ ॥ रूप शोभा प्रेमकेसे कमनीय कायहैं ॥ मुनि वेष किये किधौं ब्रह्मजीव मायहैं ॥ ३ ॥ वीर वरियार धीर धनुधर रायहैं ॥ दशचारि पुर पाल आली उरगायहैं ॥ ४ ॥ मग लोग देखत करत हाय हायहैं ॥ वन इनको तो वाम विधिके बनायहैं ॥५॥ धन्य ते जे मीनसे अवधि अंबुधि आयहैं ॥ तुलसी प्रभुसो जिन्हहूके भले भायहैं ॥६॥२८॥ १३ ॥ ८ ॥ (राग आसावरी)॥ सजनीहैं कोउ राजकुमार ॥ पंथ चलत मृदु पद कमलनि दोउ शील रूप आगार ॥ १ ॥ आगे राजिवनैन श्यामतनु शोभा अमित अपार ॥ डारों वारि अंग अंगनि पर कोटि कोटि शत मार ॥ २ ॥ पाछे गोराकिशोर मनोहर लोचन वदन उदार ॥ कटि तूणीर बाणवर कर धनु चले हरण क्षिति भार ॥ ३ ॥ युगल वीच सुकुमारि नारि इक राजति विनहिं शृंगार ॥ इंद्र नील हाटक मुकुतामणि जनु पहिरे महिहार ॥ ४ ॥ अवलोकहु भरि नैन विकल जनि होहु करहु सुविचार ॥ पुनि कहँ यह शोभा कहँ लोचन देह गेह संसार ॥ ५ ॥ सुनि प्रियवचन चितै हितकै रघुनाथ कृपा सुखसार ॥ तुलसी दास प्रभु हरे सबन्हिके मन तन रहि न सँभार ॥ ६ ॥ २९ ॥१३९॥ देखु री सखी पथिक नख शिख नीकेहैं॥ नीले पीले कमलसे कोमल कलेवरनि तापसहू वेष किये काम कोटि फीकेहैं ॥ १ ॥ सुकृत सनेह शील सुखमा सुख सकेलि विरचे विरंचि किधौं अमिय अमीकेहैं ॥ रूपकीसी दामिनी सुभामिनी सोहति संग उमहुँ रमाते आछे अंग अंगतीकेहैं ॥ २ ॥ वन पट कसे कटि तूण तीर धनु धरे धीर बीर पालक कृपालु सबहीकेहैं ॥ पान-

ह्यो न चरण सरोजनि चलत मग कानन पठाए पितु मातु कैसे ही-केहैं ॥ ३ ॥ आली अवलोकिलेहु नयननिके फलु येहु लाभके सुलाभ सुखजीवनसे जीकेहैं ॥ धन्य नर नारि जे निहारि विनु गाहकहूँ आपने आपने मन मोल विनु बीकेहैं ॥ ॥ ४ ॥ विबुध बरखि फूल हरषिहिए कहत ग्राम लोक मगन सनेह सिय पीके हैं ॥ योगीजन अगम दरश पायो पाँवरनि मुदित वचन सुनि सुरप सची केहैं ॥ ५ ॥ प्रीतिके सुबालकसे लालत सुजन मुनि मग चारु चरित लषण राम सीके हैं ॥ योग न विराग याग तप न तीरथ त्याग एहि अनुराग भाग खुले तुलसी के हैं ॥ ६ । ३० । १४० ॥ रीति चलिवेकी चाहि प्रीति पहिचानि कै ॥ अपनी अपनी कहैं प्रेम परवश अहैं मंजु मृदु वचन सनेह सुधा सानिकै ॥ १ ॥ साँवरे कुँवरके चरणके चिह्न वराइ वधू पगधरति कहा धौं जिय जानिकै ॥ युगल पद कमल अंक जोगवत जात गोरे गात कुँवर महिमा महा मानिकै ॥ २ ॥ उनकी कहनि नीकी रहनि लषण सीकी तिनकी गहनि जे पथिक उर आनिकै ॥ लोचन सजल तन पुलक मगन मन होत भूरिभागी यश तुलसी वखानिकै ॥ ३ । ३१ । १४१ ॥ (राग केदारा) जेहि जेहि मग सिय राम लषण गए तहँ तहँ नर नारि विनु छरछरिगे ॥ निरखि निकाई अधिक विथकित भए विअ विधि नैन सर शोभा सुधा भरिगे ॥ १ ॥ जो ते बिनु वए बिनु निफन निराए विनु सुकृत सुखेत सुख शालि फूलि फरिगे ॥ मुनिहुँ मनोरथको अगम अलभ्य लाभ सुगमसो राम लघु लोगनिको करिगे ॥ २ ॥ लालची कौड़ीके कूर पारस परेहैं पाले जानत न कोहैं कहा कीबो सो विसरिगे ॥ बुधि न विचार न विगार न सुधार सुधि देह गेह नेह नाते मनसे निसरिगे ॥ ३ ॥ वरषि सुमन सुर हरषि हरषि कहैं अनायास भवनिधि नीच नीके तरिगे ॥ सो सनेह समउ सुमिरि तुलसीहु केसे भली भाँति भले पैत भले पाँसे परिगे ॥ ४ ॥ ३२ ॥ १४२ ॥ बोले राज देनको रजायसु भो कानन को आनन प्रसन्न मन मोद बड़ो काज भो ॥ मातु पितु बंधु हित आप-

नो परमहित मोको वीसहूको ईश अनुकूल आजु भो ॥ १ ॥ अ-
शन अजीरनको समुझि तिलक तज्यौ विपिन गमन भले भूखे
को सुनाज भो ॥ धरम धुरीण धीर वीर रघुवीर जूको कोटि
राज सरिस भरतजूको राजुभो ॥ २ ॥ ऐसी बातैं कहत सुनत मग
लोगनकी चले जात भ्राता दोउ मुनिको सो साजभो ॥ ब्याइवेको
गाइवेको सेइवे सुमिरिवेको तुलसीको सब भाँति सुखद समाज
भो ॥ ३ । ३३ । १४३ ॥ सिरससुमन सुकुमारि सुखमाकी सींव
सीय राम बड़ेही सकोच संग लई है ॥ भाईके प्राण समान प्रियाके
प्राणके प्राण जानि वानि प्रीति रीति कृपाशील मई है ॥ १ ॥ आ-
लबाल अवध सुकामतरु काम वेलि दूरिकारि कैकयी विपत्ति वेलि
वई है ॥ आप पति पूत गुरुजन प्रिय परिजन प्रजाहूको कुटिल दुसह
दशा दई है ॥ २ ॥ पंकजसे पगनि पानह्यौ न परुष पंथ कैसे नि-
बहैंगे निबहैंगे गति नई है ॥ एही शोच संकट मगन मग न-
र नारि सबकी सुमति राम राग रंग रई है ॥ ३ ॥ एक कहैं वाम
विधि दाहिनो हमको भयो उतकीन्ही पीठि इतको सुडीठि भईहै ॥
तुलसी सहित वनवासी मुनिहमारि औ अनायास अधिक अघाइ ब-
निगईहै ॥ ३ । ३४ ॥ १४४ ॥ (राग गौरी) ॥ नीकेकै मैं न
विलोकन पाये ॥ सखि यहि मग युगपथिक मनोहर वधु विधु वद-
नि समेत सिधाए ॥ १ ॥ नयन सरोज किशोर वयसबर शीश
जटा रचि मुकुट बनाए ॥ कटि मुनि वसन तूण धनु शरकर श्यामल
गौर सुभाय सोहाए ॥ २ ॥ सुंदर वदन विशाल बाहु उर तनु छवि
कोटि मनोज लजाए ॥ चितवत मोहिं लगी चौंधीसी जानौ न कौ-
न कहाँते धों आए ॥ ३ ॥ मनुगयो संग सोचवश लोचन मोचत
वारिकितौ समुझाए ॥ तुलसिदास लालसा दरशकी सोइ पुरवै
जेहिं आनि देखाए ॥ ४ । ३५ ॥ १४५ ॥ पुनि न फिरे दोउ वीर
बटाऊ ॥ श्यामल गौर सहज सुंदर सखि वारक बहुरि विलोकिवे
काऊ ॥ १ ॥ कर कमलनि शर सुभग शरासन कटि मुनि बसन
निषंग सोहाए ॥ भुज प्रलंब सब अंग मनोहर धन्य सो जनकजन-

नि जेहि जाए ॥ २ ॥ शरद विमल विधुवदन जटा शिर मंजुल अ-रुण सरोरुह लोचन ॥ तुलसिदास मनमय मारगमें राजत कोटि मदन मदमोचन ॥ ३ ॥ ३६ । १४६ ॥ (राग केदारा) ॥ आली काहूतौ बूझै न पथिक कहा धौं सिधैहैं ॥ कहाँ ते आएहैं कोहैं कहा नाम श्याम गोरे काज कै कुशल फिरि एहि मग ऐहैं ॥ ॥ १ ॥ उठत वैस मसि भीजत सलोने सुठे शोभा देखवैया विनु वित्तही विकैहैं ॥ हियेहेरि हरि लेत लोनी ललना समेत लोयन-नि लाहु देत जहाँ जहाँ जैहैं॥ २॥ राम लषण सियपथकी कथा पृ-थुल प्रेम विथकी कहाति सुमुखि सबैहैं ॥ तुलसी तिन्ह सरिस तेऊ भूरिभाग्य जेऊ सुनिकै सुचित तेहि समै समैहैं ॥ ३ । ३७।१४७ ॥ बहुत दिन बीते सुधि कछु न लही ॥ गए जो पथिक गोरे साँव-सलोने सखि संग नारि सुकुमारि रही ॥ १ ॥ जानि पहिचानि वि-नु आपुते आपनेहुते प्राणहुते प्यारे प्रिय तम उपही ॥ सुधाके सनेहहूके सारलै सँवारे विधि जैसे भावते हैं भाँति जाति न कही॥२॥ बहुरि विलोकिवे कबहुँक कहत तनु पुलक नयन जलधार बही ॥ तुलसी प्रभु सुमिरि ग्राम युवती शिथिल विनु प्रयास परीं प्रेम सही ॥ ३ । ३८ । १४८ ॥ आलीरी पथिक जे एहिपथपरवाँसिधाए ॥ तेतौ राम लषण अवध ते आए ॥ १ ॥ संग सिय सब अंग सहज सोहाये ॥ रति काम ऋतुपति कोटिक लजाये ॥ २ ॥ राजा दशरथ रानी कौशिलाजाये ॥ कैकेयी कुचालि करि कानन पठाए ॥ ३ ॥ वचन कुभामिनिके भूपहि क्यों भाये ॥ हाय हाय राउ वाम विधि भरमाये ॥ ४ ॥ कुलगुरु सचिव काहु न समुझा-ये ॥ काँच मणिलै अमोल माणिक गवाँए ॥ ५॥ भाग्य मग लोगनि के देखन पाये ॥ तुलसी सहित जिन गुण गण गाये॥६॥३९॥ १४९ सखि जबते सीता समेत देखे दोउ भाई ॥ तबते परै न कल कछू न सोहाई ॥ १ ॥ नख शिख नीके नीके निरखि निकाई॥तन सुधि गई मन अनत न जाई ॥ २ ॥ हेरनि विहँसनि हियलियेहैं चोराई ॥ पावन प्रेम विवश भई हौं पराई ॥ ३ ॥ कैसे पितु मातु प्रिय परि-

जन भाई ॥ जीवत जीवके जीवन वनहिं पठाई ॥ ४ ॥ समउसो चितकरि हित अधिकाई ॥ प्रीति ग्रामवधुनकी तुलसीहुँ गाई ॥ ५ । ४० । १५० ॥ (राग केदारा) जवते सिधारे यहि मारग लषण राम जानकी सहित तब ते न सुधि लही है ॥ अवधगए धौं फिरि कैधौं चढे विंध्यागिरि कैधौं कहुँ रहे सो कछु न काहू कही है ॥ १ ॥ एक कहै चित्रकूट निकट नदीके तीर परणकुटीरकारि वसे वातसही है ॥ सुनियत भरत मनाइवेको आवतहैं होइगी पै सोई जो विधाता चित्त चहीहै ॥ २ ॥ सत्यसिंध धरम धुरीण रघुनाथजूको आपनी निवाहिवे नृपकी निरवहीहै ॥ दशचारिव-रिस विहारवन पदचार करिवे पुनीत शैल सर सरि महीहै ॥ ३ ॥ मुनि सुर सुजन समाजके सुधारि काज विगरि विगरि जहाँ जहाँ जाकी रहीहै ॥ पुरपाँउ धारिहैं उधारिहैं तुलसीहूँसे जन जिन जानिकै गरीवी गाढ़ी गहीहै ॥ ४ । ४१ । १५१ ॥ (राग सारंग) ॥ ए उपही कोउ कुँवर अहेरी ॥ श्याम गौर धनु वाण तूणधर चित्रकूट अब आइ रहेरी ॥ १ ॥ इन्हहिं बहुत आदरत महामुनि समाचार मेरेनाह कहेरी ॥ वनिता वंधु समेत वसत वन पितु हित कठिन कले-शसहेरी ॥ २ ॥ वचन परस्पर कहति किरातिनि पुलक गात ज-ल नयन वहेरी ॥ तुलसी प्रभुहि विलोकति यकटक लोचन जनु विनुपलक लहेरी ॥ ३ । ४२ । १५२ ॥ चित्रकूट अति विचित्र सुं-दर वन महि पवित्र पावनि पयसरित सकल मल निकंदिनी ॥ सानु-ज जहँ वसत राम लोक लोचनाभिराम वाम अंग वामावर विश्व वंदिनी ॥ १ ॥ चितवत मुनिगण चकोर वैठे निज ठौर ठौर अ-क्षय अकलंक शरद चंद चंदिनी॥उदित सदावन अकाश मुदित वद-त तुलसिदास जय जय रघुनंदन जयजनकनंदिनी ॥ २ । ४३ ॥ ॥ १५३ ॥ फटिकशिला मृदु विशाल संकुल सुरतरु तमाल ल-लित लता जालहरति छवि वितान की॥ मंदाकिनि तटनि तीरमं-जुमृग विहंग भीर धीरमुनि गिरागँभीर सामगानकी ॥ १ ॥ मधुकर पिकवरहि मुखर सुंदर गिरि निर्झर झर जल कण घन छाँह छ-

ण प्रभान भानकी ॥ सब ऋतु ऋतुपाति प्रभाउ संतत बहै त्रिविध बाउ जनु विहार वाटिका नृप पंचबानकी ॥ २ ॥ विरचित तहँ पर्णशाल अति विचित्र लषण लाल निवसत जहँ नित कृपाल राम जानकी ॥ निजकर राजीवनैन पल्लव दल रचितसैन प्यास परसपर पियूष प्रेम पानकी ॥ ३॥ सिय अँगलिखै धातुराग सुमनानि भूषण विभाग तिलक करनि क्योंकहौं कलानिधानकी ॥ माधुरी विलास हास गावत यश तुलसिदास वसति हृदय जोरी प्रिय परम प्रानकी ॥ ४ ॥ ४४ ॥ १५४ ॥ (रागकेदारा) ॥ लोने लाललषण सलोने रामलोनी सियचारु चित्रकूट बैठे सुरतरु तरहैं ॥ गोरे साँवरे शरीर पीत नील नीरजसे प्रेम रूप सुखमाके मनसिज सरहैं ॥ १ ॥ लोने नख शिख निरुपम निरखिवे योग बड़े उरकंधर विशाल भुजवरहैं॥ लोने लोने लोचन जटनिके मुकुट लोने लोने वदननि जीते कोटि सुधाकरहैं ॥ २ ॥ लोने लोने धनुष विशिषकर कमलनि लोने मुनि पटकटि लोने शर घरहैं ॥ प्रिया प्रियबंधकों दिखावत विटपवेलि मंजु कुंज शिला तल दल फूल फरहैं ॥३॥ऋषिनके आश्रम सराहैं मृगनाम कहैं लागी मधुसरित झरत निर्झरहैं ॥ नाचत वरहीनीके गावत मधुप पिक बोलत विहँग नभ जल थल चरहैं ॥४ ॥ प्रभुहि विलोकि मुनिगण पुलके कहत भूरिभाग्य भये सब नीच नारि नरहैं ॥ तुलसी सो सुखलाहु लूटत किरात कोल जाको सिसिकत सुर विधिहरी हरहैं ॥ ५ ॥ ४५ ॥ १५५ ॥ (राग सारंग)॥ आइरहे जबते दोउभाई ॥ तबते चित्रकूटकानन छबि दिन दिन अधिक अधिक अधिकाई ॥ १ ॥ सीता राम लषण पद अंकित अवानि सोहावानि वरणि न जाई ॥ मंदाकिनि मज्जत अवलोकत त्रिविध पाप त्रयताप नशाई ॥ २ ॥ उकठेउ हरित भए जल थलरुह नित नूतन राजीव सुहाई ॥ फूलत फलत पल्लवित पलुहत विटप वेलि अभिमत सुखदाई ॥ ३ ॥ सरित सरनि सरसीरुह संकुल सदन सँवारि रमाजनु छाई ॥ कूजत विहँग मंजु गुंजत अलि जात पथिक जनु लेत बुलाई ॥ ४ ॥ त्रिविध समीर नीर

झरझरननि जहँ तहँ रहे ऋषि कुटी बनाई ॥ शीतल सुभग शिल-
निपर तापस करत योग जप तप मनलाई॥५॥ भए सब साधु कि-
रात किरातिनि राम दरश मिटिगै कलुषाई ॥ खग मृग मुदित एक
सँग विहरत सहज विषम बड़ वैर विहाई ॥ ६ ॥ कामकेलि वा-
टिका विबुध वन लघु उपमा कवि कहत लजाई ॥ सकल भुवन
शोभासकेलि मानौं राम विपिन विधि आनि वसाई ॥ ७ ॥ वन
मिस मुनि मुनि तिय मुनि बालक वरणत रघुवर विमल बड़ाई ॥
पुलक शिथिल तनु सजल सुलोचन प्रमुदित मन जीवन फलुपाई८
क्यों कहौं चित्रकूट गिरि संपति महिमा मोद मनोहर ताई ॥ तुल-
सी जहँ वसि लषण राम सिय आनँद अवधि अवध विसराई ॥ ९ ।
४६ । १५६ ॥ (रागगौरी) ॥ देखत चित्रकूट वन मन अति होत
हुलास ॥ सीताराम लषण प्रिय तापस वृंद निवास ॥१॥ सुरित सो-
हावनि पावनि पापहरनि पयनाम ॥ सिद्ध साधु सुर सेवित देत
सकल मन काम ॥ २ ॥ विटप वेलि नव किसलय कुसुमित सघन
सुजाति ॥ कंदमूल जल थलरुह अगणित अनवन भाँति ॥ ३ ॥
वंजुल मंजु वकुल कुल सुरतरु ताल तमाल ॥ कदलि कंद वसु
चंपक पाटल पनस रसाल॥ ४ ॥ भूरुह भूरिभरे जनु छबि अनुरा-
ग सुभाग॥ वन विलोकि लघु लागहिं विपुल विबुध वन बाग ॥ ५ ॥
जाइ न वरणि राम वन चितवत चित हरिलेत ॥ ललित लताद्रुम
संकुल मनहुँ मनोज निकेत ॥ ६ ॥ सरित सरनि सरसीरुह फूले
नाना रंग ॥ गुंजत मंजु मधुप गण कूजत विविध विहंग ॥ ७ ॥
लषण कहेउ रघुनंदन देखिय विपिन समाज ॥ मानहुँ चयन मयन
पुर आयउ प्रिय ऋतुराज ॥ ८ ॥ चित्रकूट पर राउर जानि अधिक
अनुरागु ॥ सखा सहित जनु रतिपति आयउ खेलन फागु ॥ ९ ॥
झिल्लि झाँझ झरना डफ पणव मृदंग निशान ॥ भेरि उपंग भृंग रव
ताल कीर कलगान ॥ १० ॥ हंस कपोत कबूतर बोलत चक्र च-
कोर ॥ गावत मानहुँ नारि नर मुदित नगर चहुँ ओर ॥ ११ ॥
चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डोगर डाँग ॥ जनु पुर वीथिन विह-

रत छैल सँवारे स्वांग ॥ १२ ॥ नटहिं मोर पिक गावहिं सुस्वर सुराग वधान ॥ निलज तरुण तरुणी जनु खेलहिं समय समान॥१३॥ भरि भरि शुंड करिनि कारे जहँ तहँ डारहिं वारि ॥ भरत परस्पर पिचकनि मनहुँ मुदित नर नारि ॥ १४ ॥ पीठि चढ़ाइ शिशुन्ह कपि कूदत डारहिं डार ॥ जनु मुँह लाइ गेरु मसि भए खरनि असवार ॥ १५ ॥ लिए पराग सुमनरस डोलत मलय समीर ॥ मनहुँ अरगजा छिरकत भरत गुलाल अबीर ॥ १६ ॥ काम कौतुकी यहि विधि प्रभुहित कौतुक कीन्ह ॥ रीझि राम रतिनाथहि जग बिजयी वरदीन्ह ॥ १७॥ दुख वहु मोर दास जनि मानेहु मोरि रजाइ ॥ भलेहि नाथ माथे धरि आयसु चलेउ वजाइ ॥ १८ ॥ मुदितकिरात किरातिनि रघुवर रूप निहारि ॥ प्रभुगुण गावत नाचत चले जोहारि जोहारि ॥ १९ ॥ देहिं अशीश प्रशंसहिं मुनि सुर वरषहिं फूल ॥ गवने भवन राखि उर मूरति मंगल मूल ॥ २० ॥ चित्रकूट कानन छवि को कवि वरणै पार ॥ जहँ सिय लषण सहित नित रघुवर करहिं बिहार ॥ २१ ॥ तुलसिदास चाचरि मिस कहे राम गुण ग्राम ॥ गावहिं सुनहिं नारि नर पावहिं सब अभिराम ॥ २२ । ४७ । १५७ ॥ (राग वसंत)॥ आजु वन्योहै विपिन देखो राम धीर॥ मानो खेलत फागु मुद मदन वीर॥१॥वट वकुल कदंव पनस रसाल॥ कुसुमित तरु निकर कुरव तमाल॥मनो विविध वेष धरे छैल यूथ॥ बिचबीच लता ललना वरूथ ॥ २ ॥ पन वानक निर्झर अलि उपंग ॥ बोलत पारावत मानो डफ मृदंग ॥ गायक शुक कोकिल झिल्लि ताल ॥ नाचत बहुभाँति वरही मराल ॥ ३ ॥ मलयानिल शीतल सुरभि मंद ॥ बहु सहित सुमन रसरेनु वृंद ॥ मानौ छिरकत फिरत सबनि सुरंग ॥ भ्राजत उदार लीला अनंग ॥ ४ ॥ क्रीड़तजीते सुर नर असुर नाग ॥ हठि सिद्ध मुनिनके पंथलाग ॥ कह तुलसिदास तेहि छाडुमैन ॥ जेहि राख राम राजीव नैन ॥ ५॥ ॥ ४८ ॥ १५८ ॥ ऋतुपति आए भलो बन्यो वन समाज ॥ मानो भए हैं मदन महाराज आज ॥ १ ॥ मनो प्रथम फागुमिस करि अ-

नीति ॥ होरी मिस अरिपुर जारि जीति ॥ मारुत मिस पत्र प्रजा उजारि ॥ नय नगर बसाये विपिन झारि ॥ २ ॥ सिंहासन शैल शिला सुरंग ॥ कानन छवि रति परिजन कुरंग ॥ सित छत्र सुमन बल्ली वितान ॥ चामर समीर निर्झर निसान ॥ ३ ॥ मानो मधु माधव दोउ अनिप धीर ॥ वर विपुल विटप बानैत वीर ॥ मधुकर शुक कोकिल वंदि वृंद ॥ वरणहिं विशुद्ध यश विविध छंद ॥ ४ ॥ माहि परत सुमन रसफल पराग ॥ जनु देत इतर नृपकर विभाग ॥ कलि सचिव सहित नय निपुण मार ॥ कियो विश्व विवश चारिहु प्रकार ॥ ५ ॥ विरहिन पर नितनइ परै मारि ॥ डाटहीं सिद्ध साधक प्रचारि ॥ तिनकी न काम सकै चापिछाहँ ॥ तुलसीजे बसहिं रघुवीर बाहँ ॥ ६ ॥ ४९ ॥ १५९ ॥(राग मलार) ॥ सबदिन चित्रकूट नीको लागत ॥ बरषाऋतु प्रवेश विशेषि गिरि देखत मन अनुरागत ॥ १ ॥ चहुँदिशि वन संपन्न विहँग मृग बोलत शोभा पावत ॥ जनु सुनरेश देश पुर प्रमुदित प्रजा सकल सुख छावत ॥ ॥ २ ॥ सोहत श्याम जलद मृदु घोरत धातुरंगमगे शृंगनि ॥ मनहुँ आदि अंभोज विराजत सेवित सुर मुनि भृंगनि ॥ ३ ॥ शिखर परसि घन घटहिं मिलत बग पाँतिसो छवि कवि वरणी ॥आदि बराह विहरि वारिधि मानो उठ्योहै दशन धरि धरणी ॥ ४ ॥ जल युत विमल शिलनि झलकत नभ वन प्रतिबिंब तरंग ॥ मानहुँ जग रचना विचित्र बिलसत विराट अँग अंग ॥ ५ ॥ मंदाकिनिहि मिलत झरना झरि झरि भरि भरि जल आछे ॥ तुलसी सकल सुकृत सुख लागे मानौ राम भक्तिके पाछे ॥ ६ ॥ ५० ॥ १६० ॥ (राग सोरठ) ॥ आजको भोर और सो माई ॥ सुनो न द्वार वेद वंदी धुनि गुणि गण गिरा सोहाई ॥ १ ॥ निज निज पति सुंदर सदननि ते रूप शील छवि छाई ॥ लेन अशीश सीय आगे करि मोपैं सुत वधू न आई ॥ २ ॥ बूझीहौंन विहँसि मेरे रघुवर कहाँरी सुमित्रा माता ॥ तुलसी मनहुँ महासुख मेरो देखि न सकेउ विधाता ॥ ३ ॥ ॥ ५१ ॥ १६१ ॥ जननी निरखति बाण धनुहियाँ ॥ बार बार उर

नैननि लावति प्रभुजीकी ललित पनहियाँ ॥ १ ॥ कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय वचन सबारे ॥ उठहु तात बलि मातु वदन पर अनुज सखा सबद्वारे ॥२ ॥ कबहुँ कहति यों बड़ी बार भइ जाहु भूप पहँ भइया ॥ बंधु बोलि जेंइय जो भावै गई नेवछावरि मइया॥३॥कबहुँ समुझि वन गवन रामको रहि चकि चित्र लिखीसी ॥ तुलसिदास यह समय कहे ते लागत प्रीति सिखीसी ॥४॥ ॥ ५२ ॥ १६२ ॥ माईरी मोहिं न कोउ समुझावै ॥ राम गवन साँचो किधौं सपनो मन परतीति न आवै ॥ १ ॥ लगेइ रहत मेरे नैननि आगे राम लषण अरु सीता ॥ तदपि न मिटत दाह या उर को विधि जो भयो विपरीता ॥ २ ॥ दुख न रहै रघुपतिहि विलोकत तनु न रहै विनु देखे ॥ करत न प्राण पयान सुनहुँ सखि अरुझि परी यहि लेखे ॥ ३ ॥ कौशल्याके विरह वचन सुनि रोइ उठीं सब रानी ॥ तुलसिदास रघुवीर विरहकी पीर न जाति बखानी ॥ ४ ॥ ५३ ॥ १६३ ॥ जब जब भवन विलोकति सूनो ॥ तब तब विकल होति कौशल्या दिन दिन प्रति दुख दूनो ॥१॥ सुमिरत बाल विनोद रामके सुंदर मुनि मनहारी ॥ होत हृदय अति शूल समुझि पद पंकज अजिर विहारी ॥२ ॥ को अब प्रात कलेऊ मागत रूठि चलै गो माई ॥ श्याम तामरस नैन श्रवत जल काहि लेउँ उरलाई ॥ ३ ॥ जीवों तो विपति सहौं निशि वासर मरौं तौ मन पछितायो ॥ चलत विपिन भरि नयन राम को वदन न देखन पायो ॥ ४ ॥ तुलसिदास यह दुसह दशा अति दारुण विरह घनेरो ॥ दूरि करै को भूरि कृपा विनु शोकजनित रुज मेरो ॥ ५॥५४ ॥ ॥१६४॥मेरो यह अभिलाष विधाता॥कब पुरवै सखि सानुकूल ह्वैहरि सेवक सुखदाता ॥ १ ॥ सीता सहित कुशल कोशलपुर आवतहैं सुत दोऊ॥श्रवण सुधा सम वचन सखी कब आइ कहै गो कोऊ ॥ ॥२॥ सुनि संदेश प्रेम परिपूरण संभ्रम उठि धावोंगी ॥ वदन विलोकि रोंकि लोचन जल हरषि हिये लावोंगी॥३॥जनकसुता कब सासु कहैं मोहिं राम लषण कहैं मैया॥बाहु जोरि कब अजिर चलहिंगे श्या-

म गौर दोउ भैया ॥४॥ तुलसिदास यहिभाँति मनोरथ करत प्रीति अति बाढ़ी॥थकित भई उर आनि राम छवि मनहुँ चित्र लिखि काढ़ी ॥५।८५।१६५॥ सुन्यो जब फिरि सुमंत पुर आयो ॥ कहिहै कहा प्राणपतिकी गति नृपति विकल उठि धायो ॥१॥ पाँय परत मंत्री अति व्याकुल नृप उठाइ उरलायो॥दशरथ दशा देखि न कह्यो कछु हरि जो सँदेश पठायो॥२॥बूझि न सकत कुशल प्रीतमकी हृदय यहै पछितायो ॥ साँचेहु सुत वियोग सुनिवे कहँ धिगविधि मोहिं जिआयो ॥ ३॥ तुलसिदास प्रभु जानि निठुर हौं न्याय नाथ विसरायो ॥ हा! रघुपति कहि परयो अवनि जनु जलते मीन विलगायो ॥ ४ । ८६ । १६६ ॥ मुएहु न मिटैगो मेरो मानसिक पछिताउ ॥ नारि वश न विचारि कीन्हो काज सोचत राउ ॥ १ ॥ तिलकको बोले दियोवन चौगुणो चित चाउ ॥ हृदय दाड़िम ज्यों न विहरयो समुझि शील सुभाउ॥२॥ सीय रघुवर लषण विनु भए भभरि भग्यौ न आउ॥मोहिं बूझि न परत याते कौन कठिन कुघाउ ॥३॥ सुनि सुमंतकी आनि सुंदर सुवन सहित जिआउ॥ दास तुलसी नतरु मोकों मरण अमिय पिआउ ॥ ४ ॥ ॥ ८७ ॥ १६७ ॥ अवध विलोकिहौं जीवत रामभद्र विहीन ॥ कहा करिहैं आइ सानुज भरत धर्मधुरीन ॥ १ ॥ राम शोक सनेह संकुल तनु विकल मनु लीन ॥ टूटि तारो गगन मग ज्यों होत छिन छिन छीन ॥ २ ॥ हृदय समुझि सनेह सादर प्रेम पावन मीन ॥ करी तुलसीदास दशरथ प्रीति परमिति पीन ॥ ३ ॥८८॥ १६८॥ (राग गौरी) करत राजा मनमो अनुमान॥ शोक विकल मुख वचन न आवैं विछुरे कृपानिधान ॥ १ ॥ राज देन कहँ बोलि नारि वश मैं जो कह्यौं वन जान ॥ आयसु शिर धरि चले हरषि हिय कानन भवन समान ॥ २ ॥ ऐसे सुतके विरह अवधि लौं जौं राखौं यह प्रान ॥ तौ मिटि जाइ प्रीतिकी परमिति अयश सुनौ निजकान ॥ ॥ ३ ॥ राम गये अजहूँ हौं जीवत समुझतहीं अकुलान ॥ तुलसिदास तनुतजि रघुपति हित कियो प्रेमपरवान ॥४।८९॥१६९ ॥

ऐसे तैं क्यों कटुवचन कह्यो री ॥ राम जाहु कानन कठोर तेरो कैसे धौं हृदय रह्योरी ॥ १ ॥ दिनकर वंश पिता दशरथ से राम लषण से भाई॥जननी तू जननी तौ कहा कहौं विधिकेहि खोरि न लाई॥२॥हौं लहिहौं सुखराज मातुह्वै सुताशिर छत्र धरैगो ॥ कुल कलंक मल मूल मनोरथ तो विनु कौन करैगो॥३॥ऐहैं राम सुखी सब ह्वैहैं ईश अयश मेरो हरिहैं॥तुलसिदास मोको बड़ो सोचहै तू जन्म कवनि विधि भरिहै॥४।६०।१७०॥ताते हौं देत न दूषण तो हू॥रामविरोधीउर कठोरते प्रगट कियोहै विधि मोहू॥१॥सुंदर सुखद सुशील सुधानिधि जरनि जाइ जिहि जोये ॥ विष वारुणी बंधुकहियत विधु नातो मिटत न धोये ॥ २॥ होते जौन सुजान शिरोमणि राम सबके मन माहीं ॥ तौ तेरी करतूति मातु सुनि प्रीति प्रतीति कहा हीं ॥ ३ ॥ मृदु मंजुल सोची सनेह शुचि सुनत भरत वरवानी ॥ तुलसी साधु साधु सुर नर मुनि कहत प्रेम पहिचानी॥४।६१।१७१॥ जो पै हौं मातुमतें महँ ह्वैहौं॥तौ जननी जगमें या मुखकी कहाँ कालिमा ध्वैहौं ॥ १ ॥ क्यों हौं आजु होत शुचि शपथनि कोन मानिहैं साँची॥महिमा मृगी कौन सुकृतीकी खल वचन विशिषतें बाँची॥२ गहि न जाति रसना काहूकी कहो जाहि जोइ सूझै ॥ दीनबंधुकारुण्य सिंधुविनु कौन हियेकी बूझै ॥ ३॥ तुलसी राम वियोग विषम विष विकल नारि नर भारी ॥ भरत सनेह सुधा सींचे सब भए तेहिसमै सुखारी ॥ ४ । ६२ । १७२ ॥ काहेको खोरि कैकयिहि लावों ॥ धरहु धीर बलिजाँउ तात मोकों आज विधाता बावों ॥ १ ॥ सुनिवे योग वियोग रामको हों न होउमे प्यारे ॥ सो मेरे नयननि आगे ते रघुपति वनहिं सिधारे ॥ २ ॥ तुलसिदास समुझाइ भरत कहँ आँसु पोंछि उरलाये ॥ उपजी प्रीति जानि प्रभुके हित मनहुँ राम फिरि आए ॥ ३ । ६३ । १७३ ॥ मेरो अवधधों कहहु कहा है ॥ करहु राज रघुराज चरण तजि लै लटिलोगु रहा है ॥१॥ धन्य मातु हों धन्य लागि जेहि राज समाजढहा है ॥ तापर मोसों प्रभु करि चाहत सब विनु दहन दहा है ॥ २ ॥ राम शपथ कोउ

कछू कहै जिनि मैं दुःख दुसह सहाहै ॥ चित्रकूट चलिए सब मिलि बलि क्षमिए मोहिं हहाहै ॥ ३ ॥ यों कहि भोर भरत गिरिवरको मारग बूझि गहाहै ॥ सकल सराहत एक भरत जग जन्मि सुलाहु लहाहै ॥ ४ ॥ जानहिं सिय रघुनाथ भरतको शील सनेह महाहै ॥ कै तुलसी जाको राम नाम सों प्रेम नेम निबहाहै ॥ ५ ६४।१७४॥ भाई हौं अवध कहा रहि लैहों ॥ राम लषण सिय चरण विलोकन काल्हि काननहिं जैहों ॥ १ ॥ यद्यपि मोते कै कुमातुते ह्वै आई अति पोची॥सन्मुख गए शरण राखहिंगे रघुपति परमसकोची॥२॥ तुलसी यों कहि चले भोरहीं लोग सकल सँग लागे ॥ जनु बनजरत देखि दारुण दव निकसि विहग मृग भागे ॥ ३ । ६५ । १७५ ॥ शुकसो गहवरि हिय कहै सारो ॥ वीर कीर सिय राम लषण विनु लागत जग अँधियारो ॥ १ ॥ पापिनि चेरि अयानिरानि नृपहित अनहित न विचारो ॥ कुलगुरु सचिव साधु सोचत विधि कौन बसाइ उजारो ॥२॥ अवलोके न चलत भरि लोचन नगर कोलाहल भारो॥सुने न वचन करुणा करके जब पुरपरिवार सँभारो ॥३॥ भैया भरत भावतेके सँग वन सब लोग सिधारो ॥ हम पर पाँइ पींजरनि तरसत अधिक अभाग हमारो॥४॥सुनि खग कहत अंब उमगी रहि समुझि प्रेमपथन्यारो ॥ गएते प्रभुहि पहुँचाइ फिरे पुनि करत करम गुन गारो ॥५॥ जीवन जग जानकी लषणको मरण महीप सँवारो॥ तुलसी और प्रीतिकी चरचा करत कहा कछु चारो॥६।६६।१७६॥ कहै शुक सुनहिं सिखावन सारो ॥ विधि करतब विपरीत वामगति रामप्रेम पथ न्यारो ॥ १ ॥ को नर नारि अवध खग मृग जेहि जीवन रामते प्यारो ॥ विद्यमान सबके गवने वन वदन करमको कारो ॥ २ ॥ अंब अनुज प्रियसखा सु सेवक देखि बिषाद विसा रो ॥ पक्षी परवश परे पींजरनि लेखो कौनु हमारो ॥ ३ ॥ रही नृपकी विगरीहै सबकी अब एक सँवारनिहारो ॥ तुलसी प्रभुनिज चरण पीठ मिस भरत प्राण रखवारो ॥ ४ । ६७॥ १७७॥ तादिन शृंगवेरपुर आए॥राम सखाते समाचार सुनि वारि वि-

लोचन छाए ॥ कुश साथरी देखि रघुपतिकी हेतु अपनपौ जानी ॥ कहत कथा सिय राम लषणकी बैठेहि रैनि विहानी ॥ भोरहि भरद्वाज आश्रमह्वै करि निषादपति आगे॥चले जनु तक्यो तड़ाग तृषित गज घोर घामके लागे ॥ बूझत चित्रकूट कहँ जेहि तेहि मुनि बालकनि बतायो ॥ तुलसी मनहुँ फणिक मणि ढूँढ़त निरखि हरषि हिय धायो॥१॥ ६८।१७८॥ (राग केदारा) ॥ विलोके दूरिते दोउवीर ॥ उर आयत आजान सुभग भुज श्यामल गौर शरीर ॥ ॥ १ ॥ शीश जटा सरसीरुह लोचन बने परिधन मुनिचीर ॥ निकट निषंग संग सिय शोभित करनिधुनत धनु तीर ॥ २ ॥ मन अगहुँड़ तनुपुलकि शिथिल भयो नलिन नयन भरे नीर॥गड़त गोड़ मानो सकुच पंकमहँ कढ़त प्रेम बलवीर ॥ ३ ॥ तुलसिदास दशा देखि भरतकी उठिधाये अतिहिं अधीर ॥ लिय उठाइ उरलाइ कृपानिधि विरह जनित हरिपीर ॥ ४ । ६९ । १७९ ॥ भरत भए ठाढ़े कर जोरि ॥ ह्वै न सकत सामुहे सकुचवश समुझि मातुकृत खोरि ॥ १ ॥ फिरिहैं किधौं फिरन कहिहैं प्रभु कलपि कुटिलता मोरि ॥ हृदय सोच जल भरे विलोचन नेह देह भइ भोरि ॥ २ ॥ वनवासी पुरलोग महामुनि किएहैं काठ केसे कोरि ॥ दै दै श्रवण सुनिवेको जहँ तहँ रहे प्रेम मनवोरि ॥३॥ तुलसीराम सुभाव सुमिरि उर धरि धीरजहि बहोरि ॥ बोले वचन विनीत उचित हित करुणा रसहि निचोरि ॥ ४ । ७० । १८० ॥ जानतहौ सबहीके मनकी ॥ तदपि कृपालु करौं विनती सोइ सादर सुनहुँ दीन हित जनकी ॥ १ ॥ एसेवक संतत अनन्य अति ज्यों चातकहि एकगति घनकी ॥ यह विचारि गवनहु पुनीत पुर हरहु दुसह आरत परिजनकी ॥२॥ मेरो पुनि जीवन जानिए ऐसोइ जिय जैसो अहि जासु गई मणि फनकी ॥ मेटहु कुलकलंक कौशलपति आज्ञा देहु नाथ मोहिं वनकी ॥ ३ ॥ मोको जोइ जोइ लाइय लागै सोइ सोइ जौं उतपति कुमातुते यातनकी ॥ तुलसिदास सब दोष दूरि करि प्रभु अब लाज करहु निज पनकी ॥ ४ । ७१ । १८१ तात विचारोधौं

हौं क्यौं आवौं ॥ तुम्ह शुचि सुहृद सुजान सकल विधि बहुत कहा कहि कहि समुझावौं ॥ १॥ निजकर खाल खैंचि या तनुते जो पितु पगपानहीं करावौं॥होउ न उऋण पिता दशरथते कैसे ताको वचन मेटि पतियावौं ॥ २ ॥ तुलसिदास जाको सुयश तिहूँ पुर क्यौं तेहि कुलहि कालिमाँ लावौं ॥ प्रभु रुख निरखि निरास भरत भए जान्योहै सबहि भाँति विधिवावौं ॥ ३ । ७२ । १८२ ॥ बहुरों भरत कह्यो कछु चाहैं ॥ सकुच सिंधु बोहित विवेक करि बुधि बल वचन निबाहैं ॥ १ ॥ छोटेहुते छोह करि आएमैं सामुहे न हेरो ॥ एकहि वार आजु विधि मेरो शील सनेह निवेरो ॥ २ ॥ तुलसी जौं फिरिबोन बनै प्रभुको तौहों आयसु पावौं॥घर फेरिए लषण लरिका हैं नाथ साथहों आवौं ॥ ३ । ७३ । १८३ ॥रघुपति मोहिं संग किन लीजै॥वारवार पुर जाहु नाथ केहि कारण आयसुदीजै ॥१॥ यद्यपिहौं अति अधम कुटिल मति अपराधिनि को जायो ॥ प्रणतपालकोमल सुभाव जिय जानि शरणतकि आयो॥ २ ॥ जौंमेरे तजि चरण आनगति कहौं हृदय कछु राखी ॥ तौ परिहरहु दयालु दीनाहित प्रभु अभिअंतरसाखी ॥३॥ताते नाथ कहौंमैं पुनि पुनि प्रभु पितु मातु गोसाईं॥भजनहीन नरदेह वृथा खर श्वान फेरु की नाईं ॥ ॥ ४ ॥ बंधु वचन सुनि श्रवण नयन राजीव नीरभरि आए ॥ तुलसिदास प्रभु परम कृपागहि बाँह भरत उरलाए ॥ ५ ।७४। १८४ ॥ काहे को मानत हानि हिएहो ॥ प्रीति नीति गुण शील धर्म कहँ तुम अवलंब दिएहो ॥ १ ॥ तात जात जानिवे न ए दिन करि प्रमाण पितु वानी ॥ ऐहौं वेगि धरहु धीरज उर कठिन कालगति जानी ॥ २ ॥ तुलसिदास अनुजहिं प्रबोधि प्रभु चरणपीठ निज दीन्हे ॥ मनहुँ सबनिके प्राण पाहरू भरत शीश धरि लीन्हे ॥ ३ ॥ ॥ ७५ ॥ १८५ ॥ विनती भरत करत कर जोरे॥ दीनबंधु दीनता दीनकी कबहुँ परे जिनि भोरे॥१॥ तुम्हसे तुम्हहिं नाथ मोकों मोसे जन तुमको बहु तेरे ॥ इहै जानि पहिचानि प्रीति क्षमिवे अघ औगुण मेरे ॥ २ ॥ यौं कहि सीय राम पाँयनि परि लषण लाइ उर

लीन्हे ॥ पुलक शरीर नीर भरि लोचन कहत प्रेम प्रण कीन्हे ॥३॥ तुलसी वीते अवधि प्रथम दिन जो रघुवीर न ऐहो ॥ तौ प्रभु चरण सरोज शपथ जीवत परिजनहि न पैहो ॥ ४ ॥ ७६ ॥ १८६ ॥ अवशि हौं आयसु पाइ रहौंगो॥जनमि कैकयी कोखि कृपानिधि क्यों कछु चपरि कहौंगो ॥ १ ॥ भरत भूप सिय राम लषण वन सुनि सानंद सहौंगो ॥ पुर परिजन अवलोकि मातु सब सुख संतोष लहौंगो ॥२॥ प्रभु जानत जेहि भाँति अवधिलौं वचन पालि निबहौंगो ॥ आगेकी विनती तुलसी तब जब फिरि चरण गहौंगो ॥ ३ ॥ ७७ ॥ ॥ १८७॥ प्रभुसों मैं ढीठो बहुत दई है ॥ कीवी क्षमा नाथ आरातिते कही कुजुगुति नई है ॥ १ ॥ यों कहि वार वार पाँयनि परि पाँवरि पुलकि लई है ॥अपनो अदिन देखि हौं डरपत जेहि विष वेलि बई है ॥ २ ॥ आये सदा सुधारि गोसाँई जनते विगरि गई है ॥ थके वचन पैरत सनेह सर परयो मानो घोर घईहै ॥ ३ ॥ चित्रकूट तेहि समै सबनिकी बुद्धि विषाद हई है॥ तुलसी राम भरतके विछुरत शिला सप्रेम भई है॥ ४॥ ७८॥ १८८॥जबते चित्रकूटते आए॥नंदिग्रामखानि अवनि डासि कुश पर्णकुटी करि छाये ॥ १ ॥ अजिन वसन फल अशन जटा धरे रहत अवधि चित दीन्हे ॥प्रभुपद प्रेम नेम व्रत निरखत मुनिन्ह नमित मुख कीन्हे ॥ २ ॥ सिंहासनपर पूजि पादुका वारहिंवार जोहारे ॥ प्रभु अनुराग माँगि आयसु पुर जन सबकाज सँवारे॥३॥तुलसी ज्यों ज्यों घटत तेजतनु त्यौं त्यौं प्रीति अधिकाई ॥ भए न हैं न होहिंगे कबहूं भुवन भरतसे भाई ॥४॥७९॥ १८९॥ (राग राम कली)॥ राखी भक्ति भली भलाई भली भली भाँति भरत ॥ स्वारथ परमारथ पथी जय जय जग करत ॥ १ ॥ जो व्रत मुनिवरनि कठिन मानस आचरत ॥ सो व्रत लिए चातक ज्यों सुनत पापहरत ॥ २ ॥ सिंहासन सुभग राम चरण पीठ धरत चालत सब राज काज आयसु अनुसरत॥ ३ ॥ आपु अवधविपिन बंधु सोच जरनि जरत ॥ तुलसी सम विषम सुगम अगम लखि न परत ॥ ४।८०।१९० ॥ मोहिं भावत कहि आवत नहिं भरत

जूकी रहनि ॥ सजल नयन शिथिल वयन प्रभु गुण गण कहनि॥१॥
अशन वसन अयन शयन धरम गरुअ गहनि ॥ दिनादिन प्रणप्रेम ने-
म निरुपधि निरवहनि ॥ २ ॥ सीता रघुनाथ लषण विरह पीरस-
हनि ॥ तुलसीतजि उभय लोक रामचरण चहनि ॥३।८१।१९१ ॥
जानी है शंकर हनुमान लषण भरत राम भगति ॥ कहत सुगम
करत अगम सुनत मीठी लगति ॥ १ ॥ लहत सकृत चहत सकल
युगयुग जगमगति ॥ राम प्रेम पथते कबहुँ डोलति नाहिं डगति
॥ २ ॥ रिधि सिधि विधि चारि सुगति जा विनु गति अगति ॥
तुलसी तेहि सन्मुख विनुविषय ठगिनि ठगाति॥३।८२।१९१॥ (राग
गौरी) ॥ कैकयी करि धौं चतुराई कौन॥राम लषण सिय वनहिं पठाए
पति पठए सुरभौन ॥ १ ॥ कहाँ भलो धौं भयो भरतको लगे
तरुण तन दौन ॥ पुरवासिन्हके नयन नीर विनु कबहुँ तो देखाति
हौंन ॥ २ ॥ कौशल्या दिन राति विसूरति बैठि मनहिं मन मौन ॥
तुलसी उचित न होइ रोइवो प्राण गए सँग जौन ॥ ३।८३।१९३ ॥
हाथै मीजबो हाथ रह्यौ ॥ लगी न संग चित्रकूटहु ते ह्याँ कहाँ जात
बह्यो ॥१॥ पति सुरपुर सिय राम लषण वन मुनिव्रत भरत गह्यौ॥
हौं रहि घर मशान पावक ज्यों मरिबोइ मृतक दह्यौ ॥ २ ॥ मेरोइ
हियो कठोर करिबे कहँ विधि कहुँ कुलिशलह्यौ ॥ तुलसीवन पहुँ-
चाइ फिरी सुत क्यों कछु परत कह्यौ॥ ३।८४।१९४॥ (राग सो-
रठ ॥ हौं तो समुझि रही अपनोसो ॥ राम लषण सियको सुखमो
कहँ भयो सखी सपनोसो ॥ १ ॥ जिन्हके विरह विषाद बढ़ाउन्ह
खग मृग जीव दुखारी ॥ मोहिं कहा सजनी समुझावति हौं तिन्हको
महतारी ॥२॥ भरत दशा सुनि सुमिरि भूपगति देखि दीन पुरवा-
सी ॥ तुलसी राम कहत हों सकुचति है है जग उपहाँसी ॥ ३।८५
१९५ ॥ आली हों इन्हहिं बुझावौं कैसे ॥ लेत हिये भरि भरि प-
तिके हित मातु हेतु सुत जैसे ॥ १ ॥ वारवार हिहिनात हेरि उत
जो बोलै कोउ द्वारे ॥ अंगलगाइ लिए वारेते करुणामय सुत प्यारे
॥ २ ॥ लोचन सजल सदा सोवतसे खान पान विसराये ॥ चितव-

त चौंकि नाम सुनि सोचत राम सुरति उर आये ॥ ३ ॥ तुलसी प्रभुके विरह वधिक हठि राजहंससे जोरे ॥ ऐसेहुँ दुखित देखिहों जीवति राम लषणके घोरे ॥ ४ । ८६ ॥ १९६ ॥ राघो एकवार फिरि आवो ॥ ए वर बाजि विलोकि आपने वहुरो वनहिं सिधावो १ जे पय प्याइ पोखिकर पंकज वारवार चुचुकारे ॥ क्यों जीवहिं मेरे राम लाड़िले ते अब निपट विसारे ॥२॥ भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे ॥ तदपि दिनहुँ दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिम मारे ॥ ३ ॥ सुनहु पथिक जो राम मिलहिं वन कहियो मातु सँदेशो ॥ तुलसी मोहिं और सबहिनते इन्हको बड़ो अँदेशो ॥ ४ ॥ ८७ ॥ १९७ ॥ (राग केदारा) ॥ काहूसों काहू समाचार ऐसे पाए ॥ चित्रकूटते राम लषण सिय सुनियत अनत सिधाये ॥ १ ॥ शैल सरित निर्झर वन मुनिथल देखि देखि सब आये ॥ कहत सुनत सुमिरत सुखदायक मानस सुगम सुहाये ॥ २ ॥ बड़ि अवलंब वाम विधि विघटित विषम विषाद बढ़ाये ॥ सिरस सुमन सुकुमार मनोहर बालक विंधि चढ़ाये ॥ ३ ॥ अवध सकल नर नारि विकल अति अकानि वचन अनभाये ॥ तुलसी राम वियोग शोक वश समुझत नाहिं समुझाये ॥ ४ ॥ ८८ ॥ १९८ ॥ सुनीमैं सखि मंगल चाह सुहाई ॥ शुभ पत्रिका निषादराजकी आजु भरत पहँ आई ॥ १ ॥ कुँवरसो कुशल क्षेम अलि तेहि पल कुलगुरु कहँ पहुँचाई ॥ गुरु कृपालु संभ्रम पुर घर घर सादर सबहि सुनाई ॥ २ ॥ वाधि विराध सुर साधु सुखी करि ऋषि शिख आशिष पाई ॥ कुंभज शिष्य समेत संग सिय मुदित चले दोउ भाई ॥३॥ रेवा विंधि वीच सुपास थल बसेहैं पर्ण गृह छाई ॥ पंथ कथा रघुनाथ पथिककी तुलसिदास सुनि गाई ॥ ४ ॥ ८९ ॥ १९९ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां अयोध्याकांड समाप्तः ॥

अथ आरण्यकाण्ड प्रारम्भः ॥ ३ ॥

(राग मलार) ॥ देखे राम पथिक नाचत मुदित मोर ॥ मानत मनहुँ सतड़ित ललित घन धनु सुर धनु गरजनि टंकोर ॥ १ ॥

कंपै कलाप वर वराह फिरावत गावत कल कोकिल किशोर ॥ जहँ जहँ प्रभु विचरत तहँ तहँ सुख दंडकवन कौतुक न थोर ॥ सघन छाँह तम रुचिर रजनि भ्रम वदन चंद चितवत चकोर ॥ तुलसी मुनि खग मृगनि सराहत भये हैं सुकृत सब इन्हकी ओर ॥ १ ॥ २०० ॥ (राग कल्यान) ॥ सुभग शरासन शायक जोरे ॥ खेलत राम फिरत मृगया वन वसति सो मृदु मूरति मन मोरे ॥ पीत वसन कटि चारु चारि शर चलत कोटि नट सो तृण तोरे॥श्यामल तनु श्रम कण राजत ज्यों नव घन सुधा सरोवर खोरे ॥ ललित कंध वर भुज विशाल उर लेहिं कंठ रेखें चित चोरे ॥ अवलोकत मुख देत परमसुख लेत शरद शशि की छविछोरे ॥ जटा मुकुट शिर सारस नयननि गोहैं तकत सुभौंह सकोरे ॥ शोभा अमित समाति न कानन उमगि चली चहुँ दिशि मिति फोरे ॥ चितवत चकित कुरंग कुरंगिनि सब भये मगन मदनके भोरे ॥तुलसिदास प्रभु वाण न मोचत सहज सुभाय प्रेमवश थोरे ॥ २ ॥ २०१ ॥ (राग सोरठ) ॥ बैठेहैं राम-लषण अरु सीता ॥ पंचवटीवर पर्णकुटीतर कहैं कछु कथा पुनीता ॥ कपट कुरंग कनकमणिमय लखि प्रिय सों कहति हँसि वाला ॥ पाए पालिवे योग मंजु मृग मारेहुँ मंजुल छाला ॥ प्रिया वचन सुनि बिहँसि प्रेमवश गवहिं चाप शर लीन्हे ॥ चल्यो सो भाजि फिरि फिरि हेरत मुनि मख रखवारे चीन्हे ॥ सोहति मधुर मनोहर मूरति हेमहरिणके पाछे ॥ धावनि नवनि विलोकनि विथकनि वसै तुलसि उर आछे ॥ ३ ॥ २०२ ॥ (राग कल्यान) ॥ कर शर धनु कटि रुचिर निषंग ॥ प्रिया प्रीति प्रेरित वन वीथिन्ह विचरत कपट कनक मृग संग ॥ भुज विशाल कमनीय कंध उर श्रम सीकर सोहैं साँवरे अंग ॥ मनो मुकुतामणि मरकत गिरिपर लसत ललित रवि किरणि प्रसंग ॥ नलिन नयन शिर जटा मुकुट विच सुमन माल मानो शिव शिरगंग ॥ तुलसिदास ऐसी मूरति की वलि छवि विलोकि लाजैं अमित अनंग ॥ ॥ ४ ॥ २०३ ॥ (राग केदारा ॥) राघव भावति मोहिं विपिन की

वीथिन्ह धावनि ॥ अरुण कंज वरण चरण शोक हरण अंकुश कु-
लिश केतु अंकित अवनि ॥ सुंदर श्यामल अंग बसन पीत सुरंग
कटि निषंग परिकरमिरवनि ॥ कनक कुरंग संग साजे कर शर
चाप राजिवनयन इत उत चितवनि ॥ सोहत शिर मुकुट जटा पट
ल निकर सुमन लता सहित रचीवनवनि ॥ तैसेई श्रम सीकर रु-
चिर राजत मुख तैसिए ललित भ्रुकुटिन्हकी नवनि ॥ देखत खग
निकर मृग रवनिन्ह युत थकित बिसारि जहाँ तहाँ की भवनि ॥
हरि दर्शन फल पायोहै ज्ञान विमल याचत भगति मुनि चाहत ज-
वनि॥जिन्हके मन मगन भयेहैं रस सगुण तिन्हके लेखे अगुण मु-
कुति कवनि ॥ श्रवण सुखकरनि भवसरिता तरनि गावत तुलसि-
दास कीरति पवनि ॥ ५ ॥ २०४॥ (राग सोरठ) ॥ रघुवर दूरि जा-
इ मृग मारयो ॥ लषण पुकारि राम हरुयें कहि मरतहुँ वैरसँभा-
रयो ॥ सुनहु तात कोउ तुम्हहिं पुकारत प्राणनाथ की नाईं ॥ क-
ह्यो लषण हत्यो हरिण कोपि सिय हठि पठये बरिआईं ॥ बंधु वि-
लोकि कहत तुलसी प्रभु भाई भली न कीन्ही ॥ मेरे जान जानकी
काहू खल छलकरि हरि लीन्ही ॥ ६ ॥ २०५ ॥ आरत वचन कह-
ति वैदेही॥ विलपति भूरि विसूरि दूरि गए मृग सँग परमसनेही ॥
कहे कटु वचन रेख नाँघी मैं तात क्षमा सो कीजै ॥ देखि
वधिक वश राज मरालिनि लषण लाल छिनि लीजै ॥ वन-
देवनि सिय कहनि कहति यों छल करि नीच हरीहों ॥ गोमर
कर सुरधेनुनाथ ज्यों त्यों पर हाथ परीहों ॥ तुलसिदास रघुनाथ
नाम धुनि अकनि गीध धुकि धायो ॥ पुत्रि पुत्रि जिनि डरहि न
जैहै नीचु मीचुहों आयो ॥ ७।२०६ ॥ फिरत न वारहिं बार प्रचा-
रयौ ॥ चपरि चोंच चंगुल हय हतिरथ खंड खंड करि डारयौ ॥
विरथ विकल कियो छीन लीन्हि सिय घन वायनि अकुलान्यौ ॥
तब असि काढ़ि काटि पर पाँवर लै प्रभु प्रिया परान्यौ ॥ राम
काज खगराज आजु लरयौ जियत न जानकि त्यागी ॥ तुलसि
दास सुर सिद्ध सराहत धन्य विहँग बड़भागी ॥ ८।२०७ ॥ (राग

गौरी) ॥ हेमको हरिण हनि फिरे रघुकुल मणि लषणललित कर लिए मृगछाल ॥ आश्रम आवत चले शकुन न भये भले फरकैं वामबाहु लोचन विशाल ॥ १ ॥ सरित जल मलिन सरनि सूखे नलिन अलि न गुंजत कल कूजें न मराल॥ कोलिनि कोल किरात जहाँ तहाँ विलखात वन न विलोकि जात खग मृगमाल॥ २ ॥ तरु जे जानकी लाये ज्याये हरि करि कपि हेरैं नहुँकरि झरैं फल न र-साल॥जे शुक शारिका पाले मातु ज्यौं ललकि लाडे तेउ न पढ़त न पढ़ावैं मुनिबाल ॥ ३ ॥ समुझि सहमे सुठि प्रिया तो न आई उ-ठि तुलसी विवरण परण तृणशाल ॥ औरैसो सब समाजु कुशल न देखों आजु गहव हिय कहैं कोशलपाल॥ ४ । ९ । २०८ ॥ आश्रम निरखि भूले द्रुम न फले न फूले अलि खग मृग मानो कबहुँ नहे ॥ मुनि न मुनिवधूटी उजरी परणकुटी पंचवटी पहिचानि ठाढ़ेइ रहे ॥ उठि न सलिल लिए प्रेम मुदित हिए प्रिया न पुलकि प्रिय वचन कहे ॥ पल्लव सालन हेरी प्राणवल्लभा न टेरी विरह वि-थकि लखि लषण गहे ॥ देखे रघुपति गति विबुध विकल अति तुलसी गहन विनुदहन दहे ॥ अनुज दियो भरोसो तौलौंहै सोचु-खरोसो सिय समाचार प्रभु जौलों न लहे ॥ १० । २०९ ॥ (राग सोरठ) ॥ जबहिं सिय सुधि सब सुरनि सुनाई॥भएसुनि सजग वि-रहसरि पैरत थके थाह सी पाई॥कसि तूणीर तीर धनु धर धुर धीर वीर दोउ भाई॥ पंचवटी गोदहिं प्रणाम करि कुटी दाहिनी लाई॥चले बूझत वन वेलि विटप खग मृग आल अवलि सुहाई ॥ प्रभुकी दशा सो समो कहिवेको कवि उर आहनआई ॥ रटनि अकनि पहिचानि गीध फिरे करुणामय रघुराई ॥ तुलसीरामहिं प्रिया विसरि गई सु-मिरि सनेह सगाई ॥ ११ ॥ २१० ॥मेरे एको हाथ न लागी ॥ गयो वपु बीति वादि कानन ज्यों कलपलता दव दागी ॥ दशरथसों न प्रेम प्रति पाल्यो हुतो जो सकल जग साखी ॥ वरवशहरत निशा-चरपतिसों हठि न जानकी राखी ॥मरत न मैं रघुवीर विलोके तापस वेष बनाए ॥ चाहत चलन प्राण पाँवर विनु सिय सुधि प्रभुहि सु-

नाए ॥ वारवार कर मीजि शीश धुनि गीधराज पछिताई ॥ तुलसी प्रभुकृपालु तेहि औसर आइ गए दोउ भाई ॥ १२ ॥ २११ ॥ राघो गीध गोद करिलीन्हो ॥ नयन सरोज सनेह सलिल शुचि मनहुँ अरघजल दीन्हो ॥ सुनहु लषण खगपतिहि मिले वनमें पितु मरण न जान्यौ॥सहि न सक्यौ सो कठिन विधाता बड़ो पछु आजुहि भान्यौ॥ वहु विधि राम कह्यौ तनुराखन परमधीर नहिं डोल्यौ ॥ रोंकि प्रेम अवलोकि वदनविधु वचन मनोहर बोल्यो ॥ तुलसीप्रभु झूँठे जीवन लगि समय न धोखो लैहों॥जाको नाम मरत मुनि दुर्लभ तुमहिं कहाँ पुनि पैहों॥१३॥२१२॥नीकेकै जानत राम हियोहों ॥प्रणतपाल सेवक कृपालु चित पितु पटतरहि दियोहों ॥ त्रिजगयोनि गत गीध जनमभरि खाइ कुजंतु जियोहों ॥ महाराज सुकृती समाज सव ऊपर आजु कियोहों ॥ श्रवण वचन मुख नाम रूप चख राम उछंग लियोहों ॥ तुलसीमो समान वड़भागी कोकहिसके वियोहों ॥ १४ । २१३ ॥ मेरे जान तात कछू दिन जीजै ॥ देखिए आपु सुवन सेवासुख मोहिं पितुको सुख दीजै ॥ दिव्य देह इच्छा जीवनजग विधि मनाइ माँगिलीजै ॥ हरि हर सुयश सुनाइ दरशदै लोग कृतारथ कीजै ॥ देखि वदन सुनि वचन अमियतन रामनयन जल भीजै ॥ बोल्यौ विहग विहँसि रघुवर बलि कहों सुभाय पतीजै॥ मेरे मरिवे सम न चारिफल होहिं तौ क्यों न कहीजै ॥ तुलसी प्रभु दियो उतरु मौनहीं परी मानो प्रेम सहीजै ॥ १५ ॥ २१४ ॥ मेरो सुनियो तात सँदेशो ॥ सीयहरण जानि कहेहु पितासों ह्वैहै अधिक अँदेशो ॥ रावरे पुण्यप्रताप अनल महँ अलप दिननि रिपु दहिहैं ॥ कुल समेत सुरसभा दशानन समाचार सव कहिहैं ॥ सुनि प्रभु वचन आनि उर मूरति चरणकमल शिरनाई ॥ चल्यो नभ सुनत राम कलकीरति अरु निजभाग बड़ाई ॥ पितु ज्यों गीध क्रिया करि रघुपति अपने धाम पठायो ॥ ऐसो प्रभु विसारि तुलसी शठ तू चाहत सुखपायो॥१६॥२१५॥(राग सूहो)॥शबरी सोइ उठी फरकत वाम विलोचन बाहु ॥ शकुन सुहावने सूचत मुनि मन अगम उ-

छाहु ॥ छंद ॥ मुनि अगम उर आनंद लोचन सजल तनु पुलका-
वली ॥ तृण पर्णशाल बनाइ जल भरि कलस फल चाहन चली ॥
मंजुल मनोरथ करत सुमिरत विप्र वरवाणी भली ॥ जो कल्प वे-
लि सकेलि सुकृत सुफूल फूली सुखफली ॥१॥ प्राणप्रिय पाहुने ऐहैं
राम लषण मेरे आजु ॥ जानत जन जियकी मृदु चित राम ग़रीब
निवाजु ॥ छंद ॥ मृदु चित ग़रीबनिवाज आजु विराजि हैं गृह
आइकै ॥ ब्रह्मादि शंकर गौरि पूजित पूजिहों अब जाइकै ॥ ल-
हिनाथ हों रघुनाथ वानो पतितपावन पाइकै ॥ दुहुँ ओर लाहु
अघाइ तुलसी तीसरेहु गुण गाइकै ॥ २ ॥ दोना रुचिर रचे पूरण
कंद मूल फल फूल ॥ अनुपम अमिय ते अंबक अवलोकत अन-
कूल ॥ छंद ॥ अनुकूल अंबक अंब ज्यों निज डिंभ हित सब आ-
निकै ॥ सुंदर सनेह सुधासहसजनु सरस राखे सानिकै ॥ छन भवन
छन बाहर विलोकति पंथ भूपर पानिकै ॥ दोउ भाइ आये शब-
रिकाको प्रेम प्रण पहिचानिकै ॥३॥ श्रवण सुनत चली आवत देखि
लषण रघुराउ ॥ शिथिल सनेह कहै है सपनो विधि कैधों, सतिभाउ
॥ छंद ॥ सतिभाउ कै सपनो निहारि कुमार कौशलरायके ॥ गहे
चरण जे अघहरण नत जन वचन मानस कायके ॥ लघु भाग भा-
जन उदधि उमगे लाभ सुख चित चायकै ॥ सो जननि ज्यों आदरी
सानुज राम भूखे भायके॥४॥ प्रेम पट पाँवड़े देत सु अरघ विलोचन
वारि ॥ आश्रम लै दिये आसन पंकज पाँय पखारि ॥ छंद ॥ पद पं-
कजात पखारि पूजे पंथ श्रम विरहित भये ॥ फल फूल अंकुर मूल
धरे सुधारि भरि दोना नये ॥ प्रभु खात पुलकित गात स्वाद सराहि
आदर जनु जये ॥ फल चारिहू फल चारिदहि परचारि फल शबरी
दये ॥५॥ सुमन वरषि हरषे सुर मुनि मुदित सराहि सिहात ॥ केहि
रुचिकेहि क्षुधा सानुज माँगि माँगि प्रभुखात ॥ छंद ॥ प्रभु खात
माँगत देति शबरी राम भोगी जागके ॥ पुलकत प्रशंसत सिद्ध शि-
व सनकादि भाजन भागके ॥ बालक सुमित्रा कौशिलाके पाहुने
फल सागके ॥ सुनु समुझि तुलसी जानु रामहिं वश अमल अनु-

रागके ॥ ६ ॥ रघुवर अँचइ उठे शवरी करि प्रणाम कर जोरि ॥ हौं बलि बलि गई पुरई मंजु मनोरथ मोरि ॥ छंद ॥ पुरई मनोरथ स्वारथहु परमारथहु पूरण करी ॥ अघ अवगुणन्हिकी कोठरी करि कृपा मुदमंगल भरी ॥ तापस किरातिन कोल मृदु मूरति मनोहर मन धरी ॥ शिरनाइ आयसु पाइ गवने परमानिधि पाले परी ॥ ७ ॥ सिय सुधि सब कही नख शिख निरखि निरखि दोउ भाइ ॥ दैदै प्रदक्षिणा करत प्रणाम न प्रेम अघाइ ॥ छंद ॥ अति प्रीति मानस राखि रामहिं राम धामहिं सोगई॥तेहि मातु ज्यों रघुनाथ अपने हाथ जल अंजलि दई ॥ तुलसी भणित शवरी प्रणति रघुवर प्रकृति करुणा मई ॥ गावत सुनत समुझत भगति हिए होय प्रभुपद नित नई ॥ ८ ॥ १७ ॥ २१६ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां आरण्यकांडः समाप्तः ॥

अथ किष्किन्धाकाण्ड प्रारंभः ॥

(राग केदारा) ॥ भूषण वसन विलोकत सियके ॥ प्रेम विवश मनमें पुलकित तनु नीरजनयन नीर भरे पियके ॥ १ ॥ सकुचत कहत सुमिरि उर उमगत शील सनेह सुगुणगण तियके ॥ स्वामिदशा लखि लषण सखा कपि पघिले हैं आँच माठ मानो घियके ॥ २ ॥ सोचत हानि मानि मन गुणि गुणि गये निघटि फल सकल सुकियके ॥ वरणे जाम्बवंत तेहि अवसर वचन विवेक वीररस वियके ॥ ३ ॥ धीर वीर सुनि समुझि परसपर बल उपाय उढ़कत निज हियके ॥ तुलसिदास यह समउ कहेते कवि लागत निपट निठुर जड़ जियके ॥४॥१॥२१७॥ प्रभु कपिनायक बोलि कह्योहै॥वरषा गई शरद आई अब नाहिं सिय शोधु लह्योहै॥जा कारण तजि लोकलाज तनु राखि वियोग सह्योहै ॥ ताको तो कपिराज आज लग कछु न काज निबह्योहै ॥ २॥ सुनि सुग्रीव सभीत नमित मुख उतरु न देन चह्योहै ॥ आइ गये हरि यूथ देखि उर पूर प्रमोद रह्योहै ॥ पठये वदि वदि अवधि दशहुँ दिशि चले बलु सबनि

गह्यौहै ॥ तुलसी सिय लगि भव दधि निधि मानो फिरि हरि चहत मह्यौहै ॥ २ ॥ २१८ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां किष्किधाकांडः समाप्तः ॥

अथ सुन्दरकाण्ड प्रारम्भः ॥

(राग केदारा)॥ रजायसु रामको जब पायो॥गाळमेलि मुद्रिका मुदित मन पवनपूत शिरनायो ॥ भालुनाथ नल नील साथ चले बली बालिको जायो ॥ फरकि सुअंग भये शकुन कहत मानो मग मुद मंगल छायो ॥ देखि विवरु सुधि पाइ गीधसों सबनि अपनो बलु मायो ॥ सुमिरि राम तकि तरकि तोयनिधि लंक लूकसों आयो ॥ खोजत घर घर जनु दरिद्र मन फिरत लागि धन धायो ॥ तुलसी सिय विलोकि पुलक्यो तनु भूरिभाग्य भयो भायो ॥ १ ॥ ॥ २१९ ॥ देखी जानकी जब जाइ ॥ परमधीर समीरसुतके प्रेम उर न समाइ ॥ कृशशरीर सुभाय शोभित लगी उड़ि उड़ि धूलि॥ मनहुँ मनसिज मोहनी मणि गयो भोरे भूलि ॥ रटति निशि वासर निरंतर राम राजिवनैन ॥ जात निकट न विरहिनी अरि अकनि ताते वैन ॥ नाथके गुणगाथ कहि कपि दई मुदरी डारि ॥ कथा सुनि उठि लई कर वर रुचिर नाम निहारि ॥ हृदय हरष विषाद अति पति मुद्रिका पहिचानि ॥ दास तुलसी दशा सो केहिभाँति कहै बखानि ॥ २ ॥ २२० ॥ (राग सोरठ)॥ बोलि बलि मूदरी सानुज कुशल कोशलपालु ॥ अमिय वचन सुनाइ मेटहि विरह ज्वाला जालु ॥ कहत हित अपमान मैं कियो होत हिय सोइ सालु ॥ रोष क्षमि सुधि करत कबहूँ ललित लछिमन लालु ॥ परस्पर पति देवरहि का होति चरचा चालु ॥ देवि कहु केहि हेत बोले विपुल वानर भालु ॥ शीलनिधि समरथ सुसाहिब दीन बंधु दयालु ॥ दास तुलसी प्रभुहि काहु न कह्यो मेरो हालु ॥ ३ ॥ ॥ २२१ ॥ सदल सलषणहैं कुशल कृपालु कोशल राउ ॥ शील सदन सनेह सागर सहज सरल सुभाउ ॥ नींद भूषण देवरहि

परिहरे को पछिताउ ॥ धीर धुर रघुवीरको नाहिं सपनेहूँ चित-
चाउ ॥ सोधु विनु अनरोधु ऋतुको वोध विहित उपाउ ॥ करतहैं
सोइ समय साधन फलति वनत बनाउ ॥ पठे कपि दिशि दशहुँ जे
प्रभुकाज कुटिल न काउ॥बोलि लियो हनुमान करि सनमान जा-
नि समाउ ॥ दईहों संकेत कहि कुशलात सियहि सुनाउ ॥ देखि
दुर्ग विशेषि जानकि जानि रिपु गति आउ॥ कियो सीय प्रवोध सु-
दरी दियो कपिहि लखाउ ॥ पाइ अवसर नाइशिर तुलसी सगुण
गण गाउ॥४।२२२॥सुवन समीर को धीर धुरीन वीर बड़ोइ॥ देखि
गति सिय मुद्रिका की वाल ज्यौं दियो रोइ ॥ अकनि कटुवाणी
कुटिलकी क्रोध विंधि बढ़ोइ ॥ सकुचि सम भयो ईश आयसु कल-
स भव जिय जोइ ॥ बुद्धि बल साहस पराक्रम अछत राखे गोइ॥ स-
कल साज समाज साधक समउ कहै सब कोइ ॥ उतारि तरुते
नमत पद सकुचात सोचत सोइ॥चुके अवसर मनहुँ सुजनहिं सुजन
सनमुख होइ ॥ कहे वचन विनीत प्रीति प्रतीति नीति निचोइ ॥ सी-
य सुनि हनुमान जान्यौ भली भाँति भलोइ ॥ देवि विनु करतूति
कहिवो जानिहै लघु लोइ॥कहोंगो मुखकी समरसरि कालि कारिख
धोइ ॥ करत कछू न वनत हारिहिय हरष शोक समोइ ॥ कहत
मन तुलसी सलंका करों सघन घमोइ ॥ ५ ॥ २२३ ॥ (राग के-
दारा ॥ हों रघुवंशमणिकोदूत ॥ मातु मानु प्रतीति जानकि
जानि मारुतपूत ॥ मैं सुनी वातैं असैली जे कही निशिचर नीच ॥
क्यों न मारै गाल वैठो काल डाढ़नि वीच ॥ निदारि आरि रघुवीर
बल लैजाउँ जो हठि आज॥ डरौं आयसु भंग ते अरु बिगरि है सुर-
काज ॥ बाँधि वारिधि साधि रिपु दिनचारि में दोउ वीर ॥ मिलहिं
गे कपि भालु दल सँग जननि उर धरु धीर ॥ चित्रकूट कथा कु-
शल कहि शीश नायो कीश ॥ सुहृद सेवक नाथको लखि दई अ-
चल अशीश॥ भये शीतल श्रवण तन मन सुने वचन पियूष ॥दासँ
तुलसी रही नयननि दरशही की भूख ॥ ६ ॥ २२४ ॥ तात तोहूँ
सों कहत होति हिये गलानि॥मनको प्रथम प्रण समुझि अछत तनु

लखि नई मति भई गति मलानि ॥ पियको वचन परिहरयो जियके भरोसे संग चली वन बड़ो लाभ जानि ॥ पीतम विरह तौ सनेह सरवसु सुत औसरको चूकिवो सरिस न हानि ॥ आरजसुवन के तौ दया दुअनहुँ पर मोहिं सोच मोते सब विधि नसानि ॥आपनी भलाई भलो कियो नाथ सबही को मेरे हिय दिन वश विसरी बानि ॥ नेम तौ पपीहाहीके प्रेम प्यारो मीनही के तुलसी कहीहै नीके हृदय आनि ॥ इतनी कही सो कही सीय ज्योहों त्यौंहीं रही प्रीति परी सही विधिसों न बसानि ॥ ७ ॥ २२५ ॥ मातु काहेको कहति अति वचन दीन ॥ तबकी तुहीं जानति अबकि होहीं कहत सबके जियकी जानत प्रभु प्रवीन ॥ ऐसे तो सोचहिं न्याय निठुर नायक रत सुलभ खग कुरंग कमल मीन ॥ करुणानिधानको तो ज्यों ज्यों तनु छीन भयो त्यों त्यों मनु भयो तेरे प्रेम पीन ॥ सियको सनेह रघुवरकी दशा सुमिरि पवनपूत देख्यो प्रीति लीन ॥ तुलसी जनको जननिहिं प्रबोध कियो समुझि तात जग विधि अधीन ॥ ८ ॥ २२६ ॥ (राग जयतश्री) ॥ कहो कपि कब रघुनाथ कृपा करि हरिहैं निज वियोग संभव दुख ॥ राजिवनयन मयन अनेक छवि रविकुल कुमुद सुखद मयंक मुख ॥ विरह अनल सहाय समीर निज तनु जरिबे कहँ रहि न कछू शक ॥ अति बल जल बरषत दोउ लोचन दिन अरु रैन रहत एकहिं तक ॥ सुहृद ज्ञान अवलंबी सुनहु सुत राखति प्राण विचारि दहन मत ॥ सगुण रूप लीला विलास सुख सुमिरत करत रहत अंतरगत ॥ सुनु हनुमंत अनंत बंधु करुणा सुभाव सुशील कोमल अति ॥ तुलसिदास यहि त्रास जानि जिय बरु दुख सहौं प्रगट कहि न सकति ॥ ९ ॥ २२७ ॥ (राग केदारा) कबहुँ कपि राघव आवहिंगे ॥ मेरे नयनचकोर प्रीतिवश राकाशशि मुख दिखरावहिंगे ॥ मधुप मराल मोर चातकह्वै लोचन बहु प्रकार धावहिंगे ॥ अंग अंग छवि भिन्न भिन्न सुख निरखि निरखि तहँ तहँ छावहिंगे ॥ विरह अगिनि जरिरही लता ज्यों कृपादृष्टि जल पलु

हावहिंगे ॥ निज वियोगदुख जानि दयानिधि मधुर वचन कहि समुझावहिंगे ॥ लोकपाल सुरनाग मनुज सब परे बंदि कब मुकता वहिंगे ॥ रावणवध रघुनाथ विमलयश नारदादि मुनिजन गावहिंगे ॥ यह अभिलाष रैनदिन मेरे राज्य विभीषण कब पावहिंगे ॥ तुलसिदास प्रभु मोहजनित भ्रम भेद बुद्धि कब बिसरावहिंगे ॥ ॥ १० ॥ २२८ ॥ सत्यवचन सुनु मातु जानकी ॥ जनके दुख रघुनाथ दुखित अति सहज प्रकृति करुणानिधान की ॥ तुव वियोग संभव दारुण दुख बिसरिगई महिमा सुबानकी ॥ नतकहुँ कहुँ रघुपति शायक रवि तम अनीक कहँ यातुधानकी ॥ २ ॥ कहँ हम पशु शाखामृग चंचल बात कहों मैं विद्यमानकी ॥ कहँ हरि शिव अज पूज्य ज्ञानघन नहिं बिसरति वह लगनि कानकी ॥ ३ ॥ तुव दरशन सँदेश सुनि हरिको बहुत भई अवलंब प्राणकी ॥ तुलसिदास गुण सुमिरि रामके प्रेम मगन नहिं सुधि अपानकी ॥ ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२९ ॥ (राग कान्हरा) ॥ रावण जौपै रामरण रोषे॥को कहिसकै सुरासुर समरथ विशिष काल सदननि ते चोषे॥ ॥ १ ॥ तप बल भुजबल कै सनेह बल शिव विरंचि नीकी विधि तोषे ॥ सोफल राज समाज सुवनजन आपुन नाश आपने पोषे ॥ २ ॥ तुला पिनाक साहु नृप त्रिभुवन भट बटोरि सबके बल जोषे ॥ परशुरामसे शूर शिरोमणि पलमें भये खेतके धोषे ॥ ३ ॥ कालिकी बात बालिकी सुधिकरि समुझिहि ताहित खोलि झरोषे ॥ कह्यो कुमंत्रिनको न मानिए बड़ी हानि जिय जानि त्रिदोषे ॥ ४ ॥ जासु प्रसाद जनमि जग पुरषनि सागर सृजे खने अरु सोखे ॥ तुलसिदास सो स्वामिन सूझ्यो नयन वीस मंदिरकेसे मोखे ॥ ५ ॥ ॥ १२ ॥ २३० ॥ (राग मारू) ॥ जोहों प्रभु आयसु लै चलतों॥ तौ यहि रिस तोहिं सहित दशानन यातुधान दल दलतो ॥ १ ॥ रावण सो रसराज सुभट रस सहित लंक खल खलतो ॥ कारि पुट पाक नाक नायकहित घने घने घर घलतो ॥ बड़े समाज लाज भाजन भयो बड़ो काज विनु छलतो ॥ लंकनाथ रघुनाथ वैरु तरु

आजु फैलि फूलि फलतो ॥ ३ ॥ कालकरम दिगपाल सकल जग जाल जासु करतलतो ॥ तारिपुसों पर भूमि रारि रण जीवन मरण सुथलतो ॥४॥ देखी मैं दशकंठ सभा सब मोते कोउ न सबलतो ॥ तुलसी अरि उर आनि एक अब एती गलानि न गलतो ॥५॥१३॥ ॥ २३१ ॥ तौलों मातु आपु नीके रहिबो ॥ जौलों हौं ल्यावों रघुवीरहिं दिन दश और दुसह दुख सहिबो ॥ १ ॥ सोखिकै खेतकै बाँधि सेतुकरि उतरिबो उदधि न बोहित चहिबो ॥ प्रबल दनुज दल दलि पल आधमें जीवत दुरित दशानन गहिबो ॥ २ ॥ वैरिवृंद विधवा वनितनिको देखिबो वारि विलोचन बहिबो ॥ सानुज सैन समेत स्वामिपद निरखि परममुद मंगल लहिबो ॥३॥ लंक दाह उर आनि मानिबो साँचु राम सेवकको कहिबो॥ तुलसी प्रभुको सुर सुयश गाइहैं मिटि जैहैं सबको सोचु दौ दहिबो ॥ ४।१४।२३२ ॥ कपिके चलत सियको मनु गहवरि आयो ॥ पुलक शिथिल भयो शरीर नीर नयनन्हि छायो ॥ १ ॥ कहन चह्यो संदेश नाहिं कह्यो पियके जियकी जानि हृदय दुसह दुख दुरायो॥ देखि दशा व्याकुल हरीश ग्रीषमके पथिक ज्यों धरणि तरणि तायो ॥ २ ॥ मीच ते नीच लगी अमरता छलको न बलको थल निरखि परुष प्रेम पायो ॥ कै प्रबोध मातु प्रीति सों मन अशीश दीन्ही ह्वैहै तिहारोइ भायो ॥ ३॥ करुणा कोप लाज भय भरचो कियो गौन मौनहीं चरण कमल शीश नायो ॥ यह सनेह सरवस समौ तुलसी रसना रूखी ताहीते परत गायो ॥ ४ ॥ १५ ॥ २३३ ॥ (राग वसंत) रघुपति देखो आयो आयो हनुमंत ॥ लंकेश नगर खेल्यो वसंत ॥ श्रीराम काजहित सुदिन सोधि ॥ साथी प्रबोधि लांघ्यो पयोधि॥१॥ सिय पाँय पूजि आशिषापाइ ॥ फल अमिय सरिस खाये अघाइ ॥ कानन दलि होरी रचि बनाइ ॥ हठि तेल वसन बालधि बधाइ ॥ ॥ २ ॥ दिये ढोल चले सँग लोग लागि॥ बरजोर दई चहुँ ओर आगि ॥ आखत आहुति किये यातुधान ॥ लखि लपट भभरि भागे विमान ॥ ३ ॥ नभतल कौतुक लंका विलाप ॥ परिणाम पचहि

पातकी पाप ॥ हनुमान हाँक सुनि बरषि फूल ॥ सुर वार वार वर-
णहिं लँगूल ॥ ४ ॥ भरि भुवन सकल कल्याण धूम ॥ पुर जारि
वारिनिधि बोरि लूम ॥ जानकी तोषि पोषेउ प्रताप ॥ जय पवन
सुवन दलि दुअन दाप ॥ ५ ॥ नाचहिं कूदहिं कपि करि विनोद ॥
पीवत मधु मधुवन मगन मोद ॥ यों कहत लषण गहे पाँय आइ ॥
मुनि सहित मुदित भेंट्यो उठाइ ॥ ६ ॥ लगे सजन सेन भयो हि-
ये हुलास ॥ जय जय यश गावत तुलसिदास ॥ ७ ॥१६॥ २३४॥
(राग जयतश्री) ॥ सुनहु राम विश्रामधाम हरि जनकसुता अ-
ति विपति जैसे सहति ॥ हे सौमित्र बंधु करुणानिधि मन महँ रट-
ति प्रगट नहिं कहति ॥ १ ॥ निजपदजलज विलोक शोकरत
नयननि वारि रहत न एकक्षण ॥ मनहुँ नील नीरज शशि संभव
रवि वियोग दोउ श्रवत सुधाकण ॥ २ ॥ वहु राक्षसी सहित तरुके
तर तुम्हरे विरह निज जनम विगोवति ॥ मनहुँ दुष्ट इंद्रिय संकट
महँ बुद्धि विवेक उदय मगु जोवति ॥ ३ ॥ सुनि कपि वचन वि-
चारि हृदय हरि अनपायनी सदा सो एकमन ॥ तुलसिदास दुख
सुखातीत हरि सोच करत मानहुँ प्राकृत जन ॥ ४ ॥ १७ ॥ २३५
(राग केदारा) ॥ रघुकुल तिलक वियोग तिहारे ॥ मैं देखी जब
जाइ जानकी मनहुँ विरहमूरति मन मारे ॥ १ ॥ चित्रसे नयन अ-
रु गढ़ेसे चरण कर मढ़ेसे श्रवण नहिं सुनति पुकारे ॥ रसना रट-
ति नाम कर शिर चिर रहै नित निजपद कमल निहारे ॥ २ ॥ द-
रशन आश लालसा मनमहँ राखे प्रभु ध्यान प्राण रखवारे ॥ तु-
लसिदास पूजति त्रिजटा नीके रावरे गुण गण सुमन सँवारे ॥
॥ ३ ॥ १८ ॥ २३६ ॥ अतिहि अधिक दरशनकी आरति ॥ रा-
म वियोग अशोक विटप तर सीय निमेष कलपसम टारति ॥ १ ॥
वार वार वर वारिजलोचन भरि भरि वरत वारि उर ढारति ॥ म-
नहुँ विरहके सद्य घाय हिये लखि ताकि तकि धरि धीरत तारति ॥
॥ २ ॥ तुलसिदास यद्यपि निशि वासर छिन छिन प्रभु मू-
रतिहि निहारति ॥ मिटति न दुसह ताप तउ तनुकी यह विचारि

अंतर्गत हाराति ॥ ३ ॥ १९ ॥ २३७ ॥ तुम्हरे विरह भई गति जौन ॥ चित दै सुनहु राम करुणानिधि जानो कछु पै सकौं कहि हौं न ॥ लोचन नीर कृपणके धन ज्यों रहत निरन्तर लोचन कौन ॥ हा धुनि खगी लाज पिंजरी महँ राखि हिये बड़े वधिक हठ मौन ॥ जेहि वाटिका वसति तहँ खग मृग तजि तजि भजें पुरातन भौन ॥ श्वास समीर भेंट भइ भोरेहुँ तेहि मगपगु न धर्यो तिहुँ पौन ॥ तुलसिदास प्रभु दशा सीयकी मुख करि कहत होति अति गौन ॥ दीजै दरश दूरि कीजै दुख हो तुम्ह आरत आरति दौन ॥ २० ॥ २३८ ॥ कपिके सुनि कल कोमल वैन ॥ प्रेम पुलकि सब गात शिथिल भये भरे सलिल सरसीरुह नैन ॥ सिय वियोग सागर नागर मनु बूड़न लग्यो सहित चित चैन ॥ लही नाव पवनज प्रसन्नता वरवशतहूँ गह्यो गुण मैन ॥ सकत न बूझि कुशल बूझे विन गिरा विपुल व्याकुल उर ऐन ॥ ज्यौं कुलीन शुचि सुमति वियोगिनि सन्मुख सहै विरह शर पैन ॥ धरि धरि धीर वीर कोशलपति किये जतन सके उतरु न दैन ॥ तुलसिदास प्रभु सखा अनुज सों सैनहिं कह्यो चलहु सजि सैन ॥ २१ ॥ २३९ ॥ (राग मारू) ॥ जब रघुवीर पयानो कीन्हो ॥ क्षुभित सिंधु डगमगत महीधर सजि शारंग कर लीन्हो ॥ सुनि कठोर टंकोर घोर अति चौंके विधि त्रिपुरारि ॥ जटापटल ते चली सुरसरी सकत न शंभु सँभारि ॥ भये विकल दिगपाल सकल भय भरे भुवन दशचारि ॥ खरभर लंक सशंक दशानन गर्भ श्रवहिं अरि नारि ॥ कटकटात भट भालु विकट मर्कट करि केहरिनाद ॥ कूदत करि रघुनाथ शपथ उपरी उपरावदिवाद ॥ गिरि तरुधर नख मुख कराल रद कालहु करत विषाद ॥ चले दश दिशि रिसभरि धरु धरु कहिकोवराक मनुजाद ॥ पवन पंगु पावक पतंग शशि दुरिगए थके विमान ॥ याचत सुर निमेष सुरनायक नयन भार अकुलान ॥ गए पूरिसर धूरि भूरि भय अगथल जलधि समान ॥ नभ निसान हनुमान हाँक सुनि समुझत

कोउ न अपान ॥ दिग्गज कमठ कोल सहसानन धरत धरणि धरि धीर ॥ वारहिं वार अमरषत करषत करकैं परी शरीर ॥ चली चमू चहुँ ओर सोर कछु वनै न वर्णत भीर ॥ किलकिलात कसमसत कोलाहल होत नीरनिधि तीर॥यातुधानपति जानि कालवश मिले विभीषण आइ॥शरणागत पालक कृपालु कियो तिलक लियो अपनाइ॥कौतुकहीं वारिधि बँधाइ उतरे सुवेल तट जाइ॥तुलसिदास गढ़ देखि फिरे कपि प्रभु आगमन सुनाइ ॥२२॥ २४० ॥ (राग आसावरी) ॥ आये देखि दूत सुनि सोच शठ मनमैं ॥ वाहर वजावैं गाल भालु कपि कालवश मोसे वीरसों चहत जीत्यो रारिरणमैं ॥ रामछाम लरिका लषण वालि वालकहि घालिको गनत रीछ जल ज्यौं न घनमैं ॥ काज को न कपिराज कायर कपि समाज मेरे अनुमान हनुमान हरिगनमैं ॥ समय सयानी रानी मृदुवानी कहै पिय पावक न होइ यातुधान वेनु वनमैं ॥ तुलसी जानकी दिये स्वामी सो सनेह किये कुशल नतरु सब ह्वैहैं छार छनमैं ॥ ॥ २३ ॥ २४१ ॥ आपनी आपनी भाँति सब काहू कही है ॥ मंदोदरी महोदर मालवान महामति राजनीति पाहुँच जहाँलौं जाकी रहीहै ॥ महामद अंध दशकंध न करत कान मीचुवश नीच हठि कुगहानि गहीहै ॥ हँसि कहै सचिव सयाने मोसों कहत चहत मेरु उड़न बड़ी बयारि बहीहै ॥ भालु नर वानर अहार निशिचर निको सोऊ नृप बालकनि माँगी धारि लहीहै ॥ देखो काल कौतुक पिपीलिकनि पंख लागे भाग्यमेरे लोगनिके भई चित चहीहै॥ तोसों न तिलोक आजु साहस समाज साजु महाराज आयसुभो जोई सोई सहीहै ॥ तुलसी प्रणामकै विभीषण विनती करै ख्याल वेधेताल कपिकेलि लंका दहीहै ॥ २४ ॥ २४२ ॥ दूसरो न देखतु साहिव सम रामैं ॥ वेदऊ पुराण कवि कोविद विरत रत जाको यश सुनत गावत गुण ग्रामैं ॥ माया जीव जग जाल सुभाउ करमकाल काल सबको शासकु सब मै सब जामैं ॥ विधिसे करनिहार हरिसे पालनिहार हरसे हरनिहार जपै जाके

नामैं ॥ सोई नरवेष जानि जनकी विनती मानि मतो नाथ सोई जातैं भलो परिनामैं ॥ सुभट शिरोमणि कुठारपाणि सारिखे हुँ लखी औलखाई इहाँ किये शुभसामैं ॥ वचन विभूषण विभीषण वचन सुनि लागे दुख दूषणसे दाहिनेउ वामैं ॥ तुलसी हुमुकि हिये हन्यो लात भलेतात चल्यो सुरतरु ताकि तजि घोर घामैं ॥ २५ ॥ २४३ ॥ जाय माय पाँय परि कथासो सुनाई है ॥ समाधान करति विभीषणको वार वार कहा भयो तात लात मारे वड़ो भाई है ॥ साहिव पितु समान यातुधानको तिलक ताके अपमान तेरी बाड़िए बड़ाई है ॥ गरत गलानि जानि सनमानि सिख देति रोष किये दोष सहें समुझें भलाई है ॥ इहाँते विमुख भये रामकी शरण गये भलो नेकु लोक राखे निपट निकाई है ॥ मातु पग शीशनाइ तुलसी अशीश पाइ चले भले शकुन कहत मन भाई है ।२६ ।२४४॥ भाईकोसो करों डरों कठिन कुफेरैं॥सुकृत संकट परचो जातु गलानिन्हगरचो कृपानिधिको मिलो पै मिलिकै कुवेरैं । जाइ गहे पाँय धाइ धनद उठाइ भेंटचो समाचार पाइ पोच सोचत सुमेरैं ॥ तहँई मिले महेश दियो हित उपदेश रामकी शरण जाहि सुदिनु नहेरै ॥ जाको नाम कुंभज कलेश सिंधु सोखिवेको मेरो कह्यो मानि तात बाँधे जिनिवेरै ॥ तुलसी मुदित चले पाये हें शकुन भले रंकलूटिवेको मानो मणिगण ढेरै ॥ २७ । २४५ (रागकेदारा)॥ शंकर सिख आशिष पाइकै ॥ चले मनहिं मन कहत विभीषण शीश महेशहि नाइकै ॥गये सोच भये शकुन सुमंगल दश दिशि देत देखाइकै ॥ सजल नयन सानंद हृदय तनु प्रेम पुलक अधिकाइकै॥अंतहु भाव भलो भाईको कियो अनभलो मनाइकै ॥ भइ कुवेरकी लात विधाता राखी वात बनाइकै ॥नाहित क्यों कुवेर घर मिलि हर हितुकहते चितलाइकै॥जो सुनि शरण राम ताकेमैं निज वामता विहाइकै॥ अनायास अनुकूल शूलधर मगमुद मूल जनाइकै ॥ कृपासिंधु सनमानि जानि जन दीन लियो अपनाइकै ॥ स्वारथ परमारथ कर तलगत श्रम पथगयो सिराइकै ॥ सपने कै सौतुक सुख शशि सुर

सींचत देत निराइकै ॥ गुरु गौरीश साँइ सीतापति हित हनुमान-हिं जाइकै ॥ मिलिहों मोहिं कहा कीवे अब अभिमत अवधि अघा-इकै ॥ मरतो कहाँ जाइको जानै लटि लालची ललाइकै ॥ तुलसि दास भजि हों रघुवीरहि अभय निसान बजाइकै ॥ २८ । २४६ ॥ पदपद्मगरीबनिवाजके ॥ देखिहों जाइ पाइ लोचन फल हित सुर साधु समाजके ॥ गईबहोर ओर निरवाहक साजक विगरे साजके ॥ शवरी सुखद गीध गतिदायक शमनशोक कपिराजके ॥ आरति-हरण शरण समरथ सब दिन अपनेकी लाजके॥तुलसी पाहि कहत नत पालक मोहुँसे निपट निकाजके ॥ २९ । २४७ ॥ महाराज राम पहँ जाउँगो ॥ सुखस्वारथ परिहरि करिहों सोइ ज्यों साहिबहि सुहाउँगो ॥ शरणागत सुनि वेगि बोलि हैं हों निपटहि सकुचाउँ गो॥ रामगरीबनिवाज निवाजिहैं जानिहैं ठाकुर ठाउँगो ॥ धरि हैं नाथ हाथ माथे एहिते केहि लाभ अघाउँगो ॥ सपनो सो अपनो न कछूलखि लघु लालच न लोभाउँगो॥कहिहों वलि रोटिहारा वरोबिनु मोलहि विकाउँगो ॥ तुलसी पट ऊतरे ओढ़ि हों उबरी जूठनि खा-उँगो॥३०।२४८॥ आइ सचिव विभीषणके कही ॥ कृपासिंधु दशकं-धवंधु लघु चरण शरण आयो सही॥विषम विषाद वारिनिधि बूड़त थाह कपीश कथा लही ॥ गये दुख दोष देखि पदपंकज अब न साध एको रही॥शिथिलसनेह सराहत नखशिख नीक निकाई निरवही ॥ तुलसी मुदित दूत भयो मानहुँ अमियलाहु माँगत मही ॥ ३१ ॥ ॥२४९॥विनती सुनि प्रभु प्रमुदित भये ॥ रीछराज कपिराज नील नल बोलि वालिनंदन लये ॥बूझिये कहा रजाइ पाइनय धरम सहि-त ऊतरदये ॥ बलीबंधु ताको जेहि विमोह वश वैर वीज वरवश बये ॥ बाँह पगार द्वार तेरे तैं सभय न कबहूँ फिरिगये ॥ तुलसी अ-शरण शरण स्वामिके विरद विराजत नितनये ॥ ३२ ॥ २५० ॥ हिय विहँसि कहत हनुमानसो ॥ सुमति साधु शुचि सुहृद विभीषण बूझि परत अनुमानसो॥हौं बलि जाउँ और को जानै कहि कपि कृपा निधानसों ॥ छली न होइ स्वामि सनमुख ज्यों तिमि रसातहय

जानसों ॥ खोटो खरो सभीत पालिये सो सनेह सनमानसों तुलसी प्रभुकी वोजो भलो सोइ बूझि शरासन वानसों ॥ ३३ ॥ २५१ ॥ साँचेहु विभीषण आयहै ॥ बूझतविहँसि कृपालु लषणसु नि-कहत सकुचि शिरनायहै ॥ ऐहैं कहा नाथ आयोह्यां क्यों कहि जाति बनायहै ॥ रावण रिपुहि राखि रघुवर विनु को त्रिभुवन पति पायहै॥ प्रभु प्रसन्न सब सभा सराहति दूत वचन मन भायहैं तुलसी बोलिये वेगि लषण सों भइ महाराज रजायहै ॥ ३४ ॥ २५२ ॥ चले लेन लषण हनुमानहैं ॥ मिले मुदित बूझि कुशल परस्पर सकुचत करि सनमानहैं ॥ भयो रजायसु पाँउ धारिये बोलत कृपानिधानहैं ॥ दूरिते दीनबंधु देखे जनु देत अभय वरदानहैं ॥ शील सहस हिम भानुतेज शतकोटि भानुहूके भानुहैं ॥ भगतनि को हित कोटि मातु पितु अरिन्हको कोटि कृशानुहैं ॥ जन गुण रजगिरि गणि सकुचत निज गुण गिरितर वर वानुहैं ॥ बाँहपमारु बोलको अविचल वेद करत गुणगानहैं ॥ चारु चाप तूणीर तामरस करनि सुधारत वानहैं॥चरचा चलति विभीषणकी सोइ सुनत सुचित दैकानहैं ॥ हरषत सुरवरषत प्रसून शुभ शकुन कहत कल्याणहैं ॥ तुलसीते कृतकृत्य जे सुमिरत समय सुहावनो ध्यानहैं ॥ ३५ ॥ २५३ ॥ रामहिं करत प्रणाम निहारिकै ॥ उठे उँमगि आनंद प्रेम परिपूरण विरद विचारिकै ॥ भयो विदेह विषण उत इत प्रभु अपनपौ विसारिकै ॥ भली भाँति भावते भरत ज्यों भेंटयौ भुजा पसारिकै ॥ सादर सबहिं मिलाइ समाजहिं निपट निकट बैठारिकै ॥ बूझत कुशल क्षेम सप्रेम अपनाइभरोसे भारिकै ॥ नाथ कुशल कल्याण सुमंगल विधि सुख सकल सुधारिकै ॥ देत लेत जे नाम रावरो विनय करत मुख चारिकै ॥ जो मूरति सपने न विलोकत मुनि महेश मन मारिकै ॥ तुलसी तेहिहों लियो अंक भरि कहत कछू न सँवारिकै ॥ ३६ ॥ २५४ ॥ करुणाकरकी करुणाभई॥ मिटी मीचु लहि लंक शंक गइ काहू सों न खुनिसभई॥दशमुख तज्यौ दूधमाखीज्यों आपु काढि साढी लई॥

भव भूषण सोइ कियो विभीषण मुद मंगल महिमामई॥ विधि हरि हर मुनि सिद्ध सराहत मुदित देव दुंदुभी दई॥ बारहिंवार सुमन बरषत हिय हरषत कहि जैजै जई ॥ कौशिक शिला जनक संकट हरि भृगुपतिकी टारी टई ॥ खग मृग सबर निशाचर सबकी पूँजी बिनु बाढ़ी सई ॥ युग युग कोटि कोटि करतब करणी न कछू बरणीनई ॥ राम भजन महिमा हुलसी हिय तुलसीहूकी बनि गई ॥ ॥ ३७ ॥ २५५ ॥ मंजुल मूरति मंगल मई ॥ भयो विशोक विलोकि विभीषण नेह देह सुधिसी गई ॥ उठि दाहिनी ओरते सन्मुख सुखद बागिबैठक लई ॥ नख शिख निरखि निरखि सुख पावत भावत कछू कछुऐभई ॥ बार कोटि शिरकाटि साटि लटि रावणशंकर पैलई ॥ सोइ लंका लखि अतिथि अनवसर राम तृणासन ज्यों दई ॥ प्रीति प्रतीति रीति शोभासरि थाहत जहँ जहँ तहँ घई ॥ बाहु बली बानैत बोलको बीरविश्व विजयी नई ॥ कोदयालु दूसरो दुनी जेहि जरनि दीन हियकी हई ॥ तुलसीकाको नाम जपत जग जगती जामति बिनुबई ॥ ३८ ॥ २५६ ॥ सभाँति विभीषणकी बनी ॥ कियो कृपालु अभय कालहुते गई संसृति सासति घनी ॥ सखा लषण हनुमान शंभु गुरु धनी रामकोशल धनी ॥ हियही और और कीन्ही विधि रामकृपा औरैठनी ॥ कलुष कलंक कलेश कोसभयो जो पदपाय रावण रनी ॥ सोइ पदपाय विभीषण भोभव भूषण दलि दूषण अनी॥ बाँह पगार उदार शिरोमणि नत पालक पावन पनी ॥ सुमन बरषि रघुवर गुणवर्णत हरषि देव दुंदुभी हनी ॥ रंक निवाज रंक राजा किये गए गरब गरि गरि गनी ॥ राम प्रणाम महा महिमा खानि सकल सुमंगल मनिजनी॥ होय भलो ऐसेही अजहुँ गये राम शरण परिहरि मनी॥ भुजा उठाइ साखि शंकर करि कसमखाइ तुलसी भनी ॥३९॥२५७॥ कहो क्यों न विभीषणकी बनै ॥ गयो छाँड़ि छल शरण रामकी जो फलचारि चारचौं जनैं ॥ मंगलमूल प्रणाम जासु जग मूल अमंगलके खनै ॥ तेहि रघुनाथ हाथ माथे दियो को ताकी महिमा

भनै ॥ नाम प्रताप पतित पावन किये जेन अघाने अघ अनै ॥को-
उ उलटो कोउ सूधो जपिभये राजहंस वायसतनै ॥ हुतो ललात
कृशगात खात खरि मोद पाइ कोदोकनै ॥ सो तुलसी चातक भ-
यो याचत राम श्याम सुंदर घनै ॥ ४० ॥ २५८ ॥ अतिभाग
विभीषणके भले ॥ एक प्रणाम प्रसन्न राम भये दुरित दोष दारिद
दले ॥ रावण कुंभकर्ण वरमाँगत शिव विरंचि वाचा छले ॥ राम
दरश पायो अविचल पद सुदिन शकुन नीके चले ॥ मिलनि वि-
लोकि स्वामि सेवककी उकठे तरु फूले फले ॥ तुलसी सुनि सनमा-
न बंधुको दशकंधर हँसि हिये जले ॥ ४१ ॥ २५९ ॥ गये राम शर-
ण सबको भलो ॥ गनी ग़रीब बड़ो छोटो बुध मूढ हीनबल अति
बलो ॥ पंगु अंध निर्गुणी निसंबल जो न लहै जाँचे जलो ॥ सो नि
बह्यौ नीके जो जनमि जग राम राज मारग चलो ॥ नाम प्रताप दि-
वाकर कर खर गरत तुहिन ज्यौं कलिमलो ॥ सुत हित नाम
लेत भवनिधि तरिगयो अजामिलसो खलो ॥ प्रभुपद प्रेम प्रणाम
कामतरु सद्य विभीषणको फलो ॥ तुलसी सुमिरत नाम सबनि
को मंगलमय नभ जलथलो ॥ ४२ ॥ २६० ॥ सुयश सुनि श्रवण
हों नाथ आयों शरन ॥ उपल केवट गीध शबरि संसृत शमन शोक
श्रमसीव सुग्रीव आरतिहरन ॥ रामराजीव लोचन विमोचन विप-
ति श्याम नवतामरस दाम वारिदवरन ॥ लसत जट जूट शिर चा-
रु मुनि चीर कटि धीर रघुवीर तूणीर शर धनु धरन ॥ यातुधाने-
श भ्राता विभीषण नाम बंधु अपमान गुरु ग्लानि चाहत गरन ॥
पतितपावन प्रणतपाल करुणासिंधु राखिये मोहिं सौमित्र सेवित
चरन ॥ दीनता प्रीति संकलित मृदुवचन सुनि पुलकितन प्रेम
जल नयन लागे भरन॥बोलि लंकेश कहि अंक भरि भेंटि प्रभु ति-
लक दियो दीन दुख दोष दारिद दरन ॥ रातिचर जाति आराति
सब भाँति गत कियो सो कल्याण भाजन सुमंगल करन॥दास तुल-
सी सदय हृदय रघुवंश मणि पाहि कहे काहि कीन्हो न तारनत-
रन ॥ ४३ ॥ २६१ ॥ दीनहित विरद पुराणनि गायो ॥ आरत

बंधु कृपालु मृदुल चित जानि शरण हौं आयो॥तुम्हरे रिपुकोहौं अ-
नुज विभीषण वंश निशाचर जायो ॥ सुनि गुण शील स्वभाउ नाथ
को मैं चरणनि चितुलायो॥जानत प्रभु दुख सुख दासनिको ताते कहि
न सुनायो ॥ करि करुणा भरि नयन विलोकहु तउ जानौं अपना-
यो ॥ वचन विनीत सुनत रघुनायक हँसि करि निकट बुलायो ॥
भेंट्यो हरि भरि अंक भरत ज्यौं लंकापति मन भायो ॥ कर पंक-
ज शिरपरसि अभय कियो जन पर हेतु दिखायो ॥तुलसिदास रघु-
वीर भजनकरिको न परमपद पायो ॥४४ ।२६२॥ राग धनाश्री ॥
सत्य कहौं मेरो सहज स्वभाउ ॥ सुनहु सखा कपिपति लंकापति
तुम्हसन कौन दुराउ ॥ सब विधि हीन दीन अति जड़ मति जा-
को कतहुँ न ठाउ ॥ आये शरण भजो न तजो तिहि यह जानत
ऋषिराउ ॥ जिन्हके हौ हित सब प्रकार चित नाहि न और
उपाउ ॥ तिनहिं लागि धरि देह करौ सब डरो न सुयश न
शाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाइ कहतहौं सकल सभापतिआउ ॥ न-
हिं कोऊ प्रिय मोहिं दास सम कपट प्रीति बहिजाउ ॥ सुनि रघु-
पतिके वचन विभीषण प्रेम मगन मन चाउ ॥ तुलसिदास तजि
आशत्रास सब ऐसे प्रभुकहँ गाउ ॥ ४५ । २६३ ॥ नाहिन भजिवे
योग वियो ॥ श्रीरघुवीर समान आनको पूरण कृपाहियो ॥
कहहु कौन सुर शिलातारि पुनि केवटमीत कियो ॥ कौने गीध
अधमको पितु ज्यों निजकर पिंड दियो ॥ कौन देव शवरीके फल-
करि भोजन सलिल पियो ॥ वालित्रास वारिधिबूड़तकपि केहि ग-
हि बाहँ लियो ॥ भजन प्रभाउ विभीषण भाष्यौ सुनि कपिकट-
कजियो ॥ तुलसिदासको प्रभु कोशलपति सबप्रकार वरियो ॥
४६ ॥ २६४ ॥ राग जयतश्री ॥ कब देखोंगी नयन वह मधुर
मूरति ॥ राजिवदलनयन कोमल कृपाअयन मयननि वह छवि-
अंगनिदूरति ॥ शिरसिजटाकलाप पाणि शायक चाप उरसिरु-
चिर वनमाल लूरति ॥ तुलसिदास रघुवीरकी शोभा सुमिरि भई
है मगन नहिं तनकी सूरति ॥ ४७॥ २६५ ॥ (राग केदारा)

कहु कबहुँ देखिहौं आय सुवन ॥ सानुज सुभग तनु जबतें विछुरे वन तबते दवसी लगी तीनिहूँ भुवन॥ मूरति सूरति किये प्रगट प्रीतमहिये मनके करन चाहैं चरण छुवन ॥ चित चढ़िगो वियोग दशा न कहिवेयोग पुलकगात लागे लोचन चुवन ॥ तुलसी त्रिजटा जानी सिय अति अकुलानी मृदुवानी कह्यौ ऐहैं दवन दुवन ॥ तमचिर तमहारी सुरकंज सुविकारी रविकुल रवि अब चाहत उवन ॥ ४८ ॥ २६६ ॥ अबलों मैं तोसों न कहेरी ॥ सुन त्रिजटा प्रिय प्राणनाथ विनु वासर निशि दुख दुसह सहेरी ॥ विरह विषम विष वेलि बढ़ी उरतें सुख सकल सुभाय दहेरी ॥ सोइ सींचिवे लागि मनसिजके रहट नयन नित रहत नहेरी॥सर शरीर सूखे प्राण वारिचर जीवन आश तजि चलनु चहेरी॥तैं प्रभु सुयश सुधा शीतल करि राखे तदपि न तृप्ति लहेरी ॥ रिपु रिस घोर नदी विवेक बल धीर सहितहुते जात बहेरी ॥ दै मुद्रिका टेक तेहि औसर शुचि समीर सुतपैरि गहेरी ॥ तुलसिदास सब सोच पोच मृग मन कानन भरि पूरि रहेरी ॥ अब सखि सिय सदेह परिहरुहिय आइ गए दोउवीर अहेरी ॥ ४९ ॥ २६७ ॥ (राग विलावल)॥ सोदिन सोनेको कहु कब ऐहै॥जादिन बँध्यो सिंधु त्रिजटा सुनु तू संभ्रम आनि मोहिं सुनैहै ॥ विश्वदवन सुर साधु सतावन रावन कियो आपनो पैहै ॥कनक पुरी भयो भूप विभीषण विबुध समाज विलोकन धैहै ॥ दिव्य दुंदुभी प्रशंसिहैं मुनिगण नभतल विमल विमाननि छैहैं ॥ वरषिहैं कुसुम भानुकुल मणि पर तब मोंको पवनपूत लै जैहै ॥ अनुज सहित सोभिहैं कपिनमहँ तनु छवि कोटि मनोजहितैहै ॥ इन नयनन्हि यहि भाँति प्राणपति निरखि हृदय आनंद न समैहै ॥ बहुरो सदल सनाथ सलछिमन कुशल कुशल विधि अवध देखैहै ॥ गुरु पुर लोग सास दोउ देवर मिलत दुसह उर तपति बुतैहै॥मंगल कलश बधावने घर घर पैहै माँगने जोजेहि भैहै॥विजयराम राजाधिराजको तुलसिदास पावन यश गैहै ॥ ५० ॥ २६८ ॥ सिय धीरज धरिये रावौ अब ऐहैं ॥ पवन

पूत पै पाइ तिहारी सुधि सहजकृपालु विलंब न लैहैं ॥ सैन साजि कपि भालु कालसम कौतुकही पाथोधि बधैहैं ॥ घेरोइपैदेखिवो लंकगढ विकल यातुधानी पछितैहैं ॥ निशिचर सलभ कृशानु रामशर उड़ि उड़ि परत जरत जडजैहैं ॥ रावण करि परिवार अगमनो यमपुर जात बहुत सकुचैहैं ॥ तिलकसारि अपनाय विभीषण अभय बाँहदै अमर बसैहैं ॥ जयधुनि मुनि बरषि हैं सुमन सुर व्योम विमान निसान बजै हैं ॥ बंधु समेत प्राणवल्लभपद परसि सकल परिताप नशै हैं ॥ राम वाम दिशि देखि तुमहिं सब नयनवंत लोचन फल पैहैं ॥ तुम अति हित चितैहो नाथतनु बारबार प्रभु तुमहिं चितैहैं ॥ यह शोभा सुख समय विलोकत काहूतो पलकै न हितैहैं ॥ कपिकुल लषण सुयश जय जानकि सहित कुशल निजनगर सिधैहैं ॥ प्रेम पुलकि आनंद मुदित मन तुलसिदास कलकीरति गैहैं ॥ ५१ ॥ २६१ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां सुंदरकांडः समाप्त ॥

अथ लंका काण्ड ॥

(राग मारू) मानु अजहूँ शिष परिहरि क्रोधु ॥ पियपूरो आयो अब काहि कहु करि रघुवीर विरोधु ॥ जेहि ताड़का सुबाहु मारि मख राखि जनायो आपु ॥ कौतुकही मारीच नीचमिस प्रगट्यौ विशिष प्रतापु ॥ सकल भूप बलगर्व सहित तोरयौ कठोर शिवचापु ॥ व्याही जेहि जानकी जीति जग हरयौ परशुधर दापु॥ कपट काक शासति प्रसादकरि विनु श्रम वध्यो विराधु ॥ खर दूषण त्रिशिरा कवंधहति कियो सुखी सुर साधु ॥ एकहि बाण बालि मारयो जेहि जो बल उदधि अगाधु ॥ कहुधों कंत कुशल बीतीकेहि किये राम अपराधु॥लांघि न सके लोक विजयी तुम जासु अनुज कृतरेषु॥उतारि सिंधु जारयो प्रचारि पुर जाको दूत विशेषु॥ कृपासिंधु खलवन कृशानु सम यश गावतश्रुति शेषु ॥ सोइ विरदैत वीरकोशलपति नाथ समुझि जिय देषु ॥ मुनि पुलस्त्यके यशम-

यंकमहँ कत कलंक हठि होहि ॥ और प्रकार उबार नहीं कहुँ मैं देख्यों जगुजोहि॥ चलु मिलु वेगि कुशल सादर सिय सहित अग्र करि मोहिं ॥ तुलसिदास प्रभु शरण शबद सुनि अभय करैंगे तोहि ॥ १ ॥ २७० ॥ (राग कान्हरा) ॥ तू दशकंठ भले कुल जायो ॥ तामहँ शिव सेवा विरंचिवर भुजबल विपुल जगत यश पायो ॥ खर दूषण त्रिशिरा कबंध रिपु जेहि वाली यमलोक पठायो॥ ताको दूत पुनीत चरित हरि शुभसंदेश कहनहों आयो ॥ श्रीमदनृप अभिमान मोहवश जानत अन जानत हरिलायो ॥ तजिव्यलीक भजु कारुणीक प्रभु दैजानकिहि सु नहिं समुझायो ॥ याते तव हित होइ कुशल कुल अचलराज चलिहै न चलायो ॥ नाहिंत रामप्रताप अनल महँ ह्वै पतंग परिहै शठ धायो॥ यद्यपि अंगद नीतिपरमहित कह्यौ तथापि न कछु मनभायो॥तुलसिदास सुनि वचन क्रोध अति पावक जरत मनहुँ घृतनायो २।२७१।तैं मेरो मरम कछू नहिं पायो॥रेकपि कुटिल ढीठ पशु पाँवर मोहिं दास ज्यौं डाटन आयो। भ्राता कुंभकरण रिपुघातक सुतसुरपतिहि वंदि कर ल्यायो॥निज भुजबल अति अतुल कहौं क्यौं कंदुक लौं कैलास उठायो ॥ सुर नर असुर नाग खग किन्नर सकल करत मेरे मन भायो ॥ निशिचर रुचिर अहार मनुज तनु ताको यश खल मोहिं सुनायो ॥ कहा भयो वानर सहाय मिलि करि उपाय जो सिंधु बँधायो॥जो तरिहै भुज वीस वोरनिधि ऐसो को त्रिभुवन में जायो ॥ सुनि दशशीश वचन कपि कुंजर विहँसि ईशमायहि शिरनायो ॥ तुलसिदास लंकेश कालवश गनत न कोटि यतन समुझायो ॥ ३ ॥ ॥ २७२ ॥ सुनु खल मैं तोहिं बहुत बुझायो ॥ एते मान शठ भयो मोहवश जानतहूँ चाहत विष खायो ॥जगत विदित अति वीर वालि बल जानत हौ किधौं अब बिसरायो ॥ विनु प्रयास सोउ हत्यौ एक शर शरणागतपर प्रेम देखायो ॥ पावहुगे निजकरम जनित फल भले ठौर हठि वैर बढ़ायो ॥ वानर भालु चपेट लपेटनि मारत तब ह्वैहै पछितायो ॥ होहीं दशन तोरिवेलायक कहा

करौं जो न आयसुपायो ॥ अब रघुवीर बाण विदलित उर सोवहि गो रणभूमि सुहायो॥अविचल राज्य विभीषणको सब जेहि रघुनाथ चरण चितलायो ॥ तुलसिदास यहि भाँति वचन कहि गर्जत चल्यो बालिनृपजायो ॥ ४ ॥ २७३ ॥ (राग केदारा) ॥ राम लषण उरलाय लयेहैं ॥ भरे नीर राजीव नयन सब अँग परिताप तयेहैं॥कहत सशोक विलोकि बंधु मुख वचन प्रीति गथयेहैं ॥ सेवक सखा भगति भायप गुण चाहत अब अथयेहैं ॥ निज कीरति करतूति तात तुम सुकृती सकल जयेहैं ॥ मैं तुम्ह विनु तनु राखि लोक अपने अपलोक लयेहैं ॥ मेरे पणकी लाज इहाँ लौं हाठि प्रियप्राण दयेहैं॥ लागत साँगि विभीषण ही परसीपर आपु भयेहैं ॥ सुनि प्रभु वचन भालु कपि गण सुर सोच सुखाइ गयेहैं ॥ तुलसी आइ पवनसुत विधि मानो फिरि निरमये नयेहैं ॥ ॥ ५ ॥ २७४ ॥ (राग सोरठ) ॥ मोपै तौ न कछू ह्वै आई ॥ और निवाहि भलीविधि भायप चल्यौ लषण सो भाई॥पुर पितु मातु सकल सुख परिहरि जेहि वन विपाति बटाई ॥ ता सँगहों सुरलोक शोकतजि सक्यौ न प्राण पठाई ॥ जानत हों या उर कठोर ते कुलिश कठिनतापाई ॥ सुमिरि सनेह सुमित्रासुतको दरकि दरार न जाई । तात मरण तिय हरण गीध वध भुज दाहिनी गँवाई ॥ तुलसी मैं सब भाँति आपने कुलहि कालिमालाई ॥ ६ ॥ २७५ ॥ मेरो सब पुरुषारथ थाको ॥ विपति बटावन बंधु बाहु विनु करौं भरोसो काको ॥ सुनु सुग्रीव साँचेहू मोपर फेरचो वदन विधाता॥ऐसे समय समर संकट हों तज्यों लषण सो भ्राता ॥ गिरिकानन जैहैं शाखामृग हों पुनि अनुज सँघाती ॥ ह्वैहै कहा विभीषणकी गति रही सोच भरि छाती ॥ तुलसी सुनि प्रभु वचन भालु कपि सकल विकल हिय हारे ॥ जाम्बवंत हनुमंत बोलि तब औसर जानि प्रचारे ॥ ७ ॥ २७६ ॥ (राग मारू) ॥ जोहौं अब अनुशासन पावौं ॥ तौ चंद्रमहिं निचोरि चैल ज्यों आनि सुधा शिरनावों ॥ कैपाताल दलौं व्यालावलि अमृत कुंड महि लावों ॥ भेदि भुवन करि भानु

वाहिरो तुरत राहु दै तावौं ॥ विवुध वैद बरबश आनौं धरि तौ प्रभु अनुग कहावौं ॥ पटकौं मीच नीच मूषकज्यों सबहि को पापु बहावौं ॥ तुम्हरिहि कृपा प्रताप तिहारेहि नेकु विलंव न लावौं ॥ दीजै सोइ आयसु तुलसी प्रभु जेहि तुम्हरे मन भावौं॥ ॥ ८ ॥ २७७ ॥ सुनि हनुमंत वचन रघुवीर ॥ सत्य समीर सुवन सब लायक कह्यो राम धरि धीर ॥ चाहिय बैद ईश आयसुधरि शीश कीश बलऐन ॥ आन्यो सदन सहित सोवतही जौलों पलक परैन ॥ जियै कुँवर निशि मिलै मूलि का कीन्ही विनय सुषेन ॥ उठ्यो कपीश सुमिरि सीतापति चल्यो सजीवनिलेन ॥ कालनेमिदलि वेगि विलोक्यौ द्रोणाचल जिय जानि ॥ देखी दिव्यौषधी जहाँ तहँ जरी न परी पहिचानि ॥ लियो उठाय कुधर कंदुक ज्यों वेग न जाइ बखानि ॥ ज्यों धाये गजराज उधारन सपदि सुदरशनपानि ॥आनि पहार जोहारे प्रभु कियो वैदराज उपचार ॥ करुणासिंधु बंधु भेंट्यो मिटि गयो सकल दुखभार ॥ मुदित भालु कपि कटक लह्यो जनु समर पयोनिधि पार ॥ बहुरि ठौरही राखि महीधर आयो पवन कुमार ॥ सेन सहित सेवकहि सराहत पुनि पुनि राम सुजान॥ वरषि सुमन हियहरषि प्रशंसत विवुध बजाइ निसान ॥ तुलसिदास सुधि पाइ निशाचर भये मनहुँ विनु प्रान॥परी भोरही रोर लंक गढ़ दई हाँक हनुमान ॥९॥२७८ ॥(राग केदारा)॥ कौतुकही कपि कुधर लियोहै ॥ चल्यो नभ नाइ माथ रघुनाथहि सरिसन वेग वियोहै ॥ देख्यो जात जानि निशिचर विनु फरसर हयो हियोहै ॥ पर्ख्यो कहि राम पवन राख्यो गिरि पुर तेहि तेज पियोहै ॥ जाइ भरत भरि अंक भेंटि निज जीवन दान दियोहै दुख लघु लषण मरम घायल सुनि सुख बड़ो कीश जियोहै ॥ आयसु इतहि स्वामि संकट उत परत न कछू कियोहै॥तुलसिदास विहर्यो अकास सो कैसेकै जात सियोहै ॥ १० ॥ २७९ ॥ भरत शत्रुसूदन विलोकि कपि चकित भयोहै ॥ राम लषण रण जीति अवध आये

कैधों मोहिं भ्रम कैधों काहू कपट ठयोहै ॥ प्रेम पुलकि पहिचानिकै पदपदुम नयोहै ॥ कह्यो न परत जेहि भाँति दुहूं भाइन सनेह सों सो उर लाय लयोहै ॥ समाचार कहि गहरुभो तेहि ताप तयोहै ॥ कुधर सहित चढ़ो विशिष वेगि पठवों सुनि हरिहि अगरव गूढ़ उपयोहै ॥ तीर ते उतारि यश कह्यो चहै गुण गण निज योहै ॥ धन्य भरत धन्य भरत करत भयो मगन मौन रह्यो मन अनुराग रयोहै॥यह जलनिधि खन्यो मथ्यो लँघ्यो बाँध्यो अँचयोहै॥तुलसिदास रघुवीर बंधु महिमाको सिंधु तरि को कवि पार गयोहै॥११।२८०॥ होतो नहिं जो जग जनम भरतको ॥ तौ कपि कहत कृपान धार मग चलि आचरत वरतको ॥ धीरज धरम धरणिधर धुरहुँते गुरु धुर धरणि धरतको ॥ सब सद्गुण सनमानि आनि उर अघ औगुण निदरतको ॥ शिवहु न सुगम सनेह रामपद सुजनानि सुलभ करतको॥सृजि निज यश सुरतरु तुलसी कहँ अभिमत फरनि फरतको ॥ १२।२८१ ॥ सुनि रण घायल लषण परेहैं ॥ स्वामि काज संग्राम सुभट सों लोहे ललकारि लरेहैं ॥ सुवन शोक संतोष सुमित्राहि रघुपति भगति वरेहैं ॥ छिन छिन मात सुखात छिनहिं छिन हुलसत होत हरेहैं ॥ कपि सों कहति सुभाय अंबके अंबक अंबु भरेहैं ॥ रघुनंदन विनु बंधु कुअवसर यद्यपि धनु दुसरेहैं ॥ तात जाहु कपि सँग रिपुसूदन उठि कर जोरि खरे हैं ॥ प्रमुदित पुलकि पैत पूरे जनु विधिवश सुढर ढरेहैं ॥ अंब अनुज गति लखि पवनज भरतादि गलानि गरेहैं ॥ तुलसी सब समुझाइ मातु तेहि समय सचेत करेहे ॥ १३ ॥ २८२ ॥ विनय सुनाइवी परि पाय॥ कहौं कहा कपीश तुम्ह शुचि सुमति सुहृद सुभाय॥ स्वामि संकट हेतुहों जड जननि जनम्यो जाय ॥ समो पाइ कहाइ सेवक घटचो तौन सहाय ॥ कहत शिथिल सनेह भो जनु धीर घायल घाय ॥ भरत गति लखि मातु सब रहि ज्यो गुडीं विनु वाय ॥ भेंट कहि कहिबो कह्योयों कठिन मानस माय ॥ लाल लोने लषण सहित सुललित लागत नाय ॥ देखि बंधु सनेह अंब सुभाउ

लषण कुठाय ॥ तपत तुलसी तरनि त्रासकु येहिनये तिहुँ ताय ॥ १४ ॥ २८३ ॥ हृदय घाउ मेरे पीर रघुवीरै ॥ पाइ सजीवन जागि कहत यों प्रेमपुलकि विसरे शरीरै ॥ मोहिं कहा बूझत पुनि पुनि जैसे पाठ अरथ चरचा कीरै ॥ शोभा सुख क्षति लाहु भूपकहँ केवल कांति मोलहीरै ॥ तुलसी सुनि सौमित्र वचन सब धारि न सकत धरो धीरै ॥ उपमा राम लषणकी प्रीतिकी क्यों दीजै पीरै नीरै ॥ १५ ॥ २८४ ॥ (राग कान्हरा) ॥ राजत राम काम शत सुंदर ॥ रिपुरण जीति अनुज सँग शोभित फेरत चाप विशिष वनरुहकर ॥ श्याम शरीर रुचिर श्रमसीकर शोणित कण विच वीच मनोहर ॥ जनु खद्योत निकर हरहित गण भ्राजत मर्कत शैल शिखरपर ॥ घायलवीर विराजत चहुँ दिशि हरषित सकल ऋच्छ अरु वनचर ॥ कुसुमित किंशुक तरु समूह महँ तरुण तमाल विशाल विटपवर ॥ राजिवनयन विलोकि कृपाकरि किये अभय मुनि नाग विवुध नर ॥ तुलसिदास यह रूप अनूपम हृदि सरोज वसि दुसह विपतिहर ॥ १६ ॥ २८५ ॥ (राग आसावरी) ॥ अवधि आजु किधों औरो दिनद्वैहैं ॥ चढ़ि धवरहर विलोकि दक्षिण दिशि बूझधों पथिक कहाँते आयेवैहैं ॥ बहुरि विचारि हारि हिय सोचति पुलकि गात लागे लोचन च्वैहैं ॥ निजवासरनि वरष पुरवैगो विधि मेरे तहाँ करम कठिन कृत कैहैं ॥ वन रघुवीर मातु गृह जीवति निलज प्राण सुनि सुनि सुखस्वैहैं ॥ तुलसिदास मोसी कठोर चित कुलिशशाल भंजिको न ह्वैहैं ॥ ॥ १७ ॥ २८६ ॥ आली अब राम लषण कितह्वैहैं ॥ चित्रकूट तज्यो तबते न लही सुधि वधूसमेत कुशल सुतद्वैहैं ॥ वारि वयारि विषम हिम आतप सहि विनु वसन भूमितल स्वैहैं ॥ कंद मूल फल फूल अशनवन भोजन समय मिलत कैसेवैहैं ॥ जिन्हहिं विलोकि सोचिहैं लता द्रुम खग मृग मुनि लोचन जल च्वैहैं ॥ तुलसिदास तिन्हकी जननीहों मोसी निठुर चित औरो कहुँ ह्वैहैं ॥ १८ ॥ २८७ ॥ (राग सोरठ) ॥ बैठी शकुन मनावति माता ॥ कब ऐहैं मेरे बाल कुशल घर कहहु

काग फुरिबाता ॥ दूधभातकी दोनी देहौं सोने चोंच मढ़ैहौं ॥ जब सिय सहित विलोकि नयन भरि राम लषण उर लैहौं ॥अवधि समीप जानि जननी जिय अति आतुर अकुलानी ॥ गणक बोला- इ पाँय पारि पूछति प्रेम मगन मृदुवानी ॥ तेहि अवसर कोउ भरत निकट ते समाचार लैआयो ॥ प्रभु आगमन सुनत तुलसी मानो मीन मरत जल पायो ॥ १९ ॥ २८८ ॥ (राग गौरी) ॥ क्षेम- करी बलि बोलि सुवानी ॥ कुशल क्षेम सिय राम लषण कब ऐहैं अंब अवध रजधानी ॥ शशिमुखि कुंकुम वरणि सुलोचनि मोच- नि सोचहुँ वेद वखानी ॥ देवि दयाकरि देहि दरशफल जोरि पा- नि विनवहिं सब रानी ॥ सुनि सनेहमय वचन निकटह्वै मंजुल मं- डलकै मड़रानी ॥ शुभ मंगल आनंद गगन धुनि अकनि अकनि उर जरनि जुड़ानी॥फरकन लगे सुअंग विदिशि दिशिमन प्रसन्न दुख दशा सिरानी ॥ करहिं प्रणाम सप्रेम पुलकि तनु मानि विविध ब- लि शकुन सयानी ॥ तेहि अवसर हनुमान भरतसों कही सकल कल्याण कहानी ॥ तुलसिदास सोइ चाह सजीवनि विषम वियोग विथा बड़ि भानी ॥ २० ॥ २८९ ॥ (राग धनाश्री) ॥ सुनियत सागरसेतु बँधायो ॥ कौशलपतिकी कुशल सकल सुधि कोउ इक दूत भरत पहँ ल्यायो ॥ वध्योविराध त्रिशिरा खर दूषण शूर्पणखा को रूप नशायो ॥हति कवंध बलअंध वालिदलि कृपासिंधु सुग्रीव वसायो ॥ शरणागत अपनाइ विभीषण रावण सकुल समूल बहा- यो॥विबुध समाज निवाजि बाँह दै वंदिछोरि वर विरद कहायो ॥ एक एक सों समाचार सुनि नगरलोग जहँ तहँ सब धायो॥घन धुनि अक- नि मुदित मयूर ज्यों बूड़त जलधि पार सो पायो ॥ अवधि आजु ये कहत परस्पर वेगि विमान निकट पुर आयो ॥ उतरि अनुज अनु- गनि समेत प्रभु गुरु द्विजगण चरणनि शिरनायो॥जो जेहि योग राम तेहि विधि मिलि सबके मन अतिमोद बढ़ायो ॥ भेंटी मातु भरत भरतानुज क्यों कहों प्रेम अमित अनुमायो ॥ तेही दिन मुनि वृंद अनंदित तुरत तिलकको साज सजायो ॥ महाराज रघुवंश

नाथको सादर तुलसिदास गुण गायो ॥ २१ ॥ २९० ॥ (राग जयतश्री) ॥ रण जीति राम राउ आये ॥ सानुज सदल ससीय कुशल आजु अवध अनंद बधाए ॥ अरिपुर जारि उजारि मारि रिपु विबुध सुवास बसाए ॥ धरणि धेनु महिदेव साधु सबके सब सींच नशाए ॥ दई लंक थिर थपे विभीषण वचन पियूष पिआए ॥ सुधा सींचि कपि कृपा नगर नर नारि निहारि जिआए ॥ मिलि गुरु बंधु मातु जन परिजन भए सकल मन भाए ॥ दरश हरष दशचारि वरषके दुख पल में विसराए ॥ बोलि सचिव शुचि सोधि सुदिन मुनि मंगल साज सजाए ॥ महाराज अभिषेक वरषि सुर सुमन निसान बजाए ॥ लैलै भेंट नृप अहिपलोकपाति अति सनेह शिरनाये ॥ पूजि प्रीति पहिचानि राम आदरे अधिक अपनाए ॥ दान मान समानि जानि रुचि याचक जन पहिराए ॥ गए शोक सर सूखि मोद सरिता समुद्र गहिराए ॥ प्रभु प्रताप रवि अहित अमंगल अघ उलूक तम ताए ॥ किये विशोक हित कोक कोकनद लोक सुयश शुभ छाये ॥ राम राज कुलि काज सुमंगल सबनि सबै सुख पाए ॥ देहिं अशीश भूमिसुर प्रमुदित प्रजा प्रमोद बढ़ाए ॥ आश्रम धरम विभाग वेद पथ पावन लोग चलाए ॥ धर्म निरत सिय राम चरण रत मनहुँ राम सिय जाए ॥ कामधेनु महि विटप कामतरु कोउ विधि वाम न लाए ॥ ते ते तब अब तुलसी तेउ जिन्ह हित सहित राम गुण गाए ॥ २२ ॥ ॥ २९१ ॥ (राग टोड़ी) ॥ आजु अवध आनंद वधावन रिपु रण जीति राम आए ॥ साजि सुविमान निशान बजावत मुदित देव देखन धाये ॥ घर घर चारु चौक चंदन मणि मंगल कलश सबनि साजे ॥ ध्वज पताक तोरण वितान वर विविध भाँति बाजन बाजे ॥ राम तिलक सुनि द्वीप द्वीपके नृप आए उपहार लिये ॥ सीय सहित आसीन सिंहासन निरखि जोहारत हरष हिए ॥ मंगल गान वेद धुनि जय धुनि मुनि अशीश धुनि भुवन भरे ॥ वरषि सुमन सुर सिद्ध प्रशंसत सबके सब संताप हरे ॥ राम राज भइ कामधेनु महि

सुख संपदा लोक छाए ॥ जनम जनम जानकीनाथके गुणगण तुलसिदास गाये ॥ २३ ॥ २९२ ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां लंकाकांडः समाप्तः ॥

अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भः ॥

(राग सोरठ)॥ वनते आइके राजाराम भये भुवाल॥मुदित चौदह भुवन सब सुख सुखी सब सबकाल ॥ मिटे कलुष कलेश कुलषन कपट कुपथ कुचाल ॥ गए दारिद दोष दारुण दंभ दुरित दुकाल ॥ काम धुक महिकाम तरु तरु उपल मणिगण लाल ॥ नारि नर तेहि समय सुकृती भरे भाग सुभाल ॥ वर्ण आश्रम धरमरत मन वचन वेष मराल ॥ राम सिय सेवक सनेही साधु सुमुख रसाल ॥ राम राज समाज वर्णत सिद्ध सुर दिगपाल ॥ सुमिरि सो तुलसी अजहुँ हिय हरष होत विशाल ॥ १ ॥ २९३ ॥ (राग ललित) ॥ भोर जानकीजीवन जागे ॥ सूत मागध प्रवीण वेणु वीणा धुनि द्वारे गायक सरसराग रागे ॥ श्यामल सलोने गात आलसवश जँभात प्रिया प्रेमरस पागे ॥ उनींदे लोचन चारु मुख सुखमा शृँगार हेरि हारे मार भूरि भागे॥ सहज सुहाई छवि उपमा न लहै कवि मुदित बिलोकन लागे॥तुलसिदास निशि वासर अनूप रूप रहत प्रेम अनुरागे ॥ २ ॥ २९४ ॥ (राग कल्याण) ॥ रघुपति राजीवनयन शोभातनु कोटिमयन करुणारस अयन चयन रूप भूप माई ॥ देखो सखि अतुलित छवि संत कंज कानन रवि गावत कल कीरति कवि कोविद समुदाई ॥ मज्जन करि सरयुतीर ठाढ़े रघुवंशवीर सेवत पद कमल धीर निर्मल चितलाई ॥ ब्रह्ममंडली मुनिंद्र वृंद मध्य इंदुवदन राजत सुखसदन लोक लोचन सुखदाई ॥ विथुरित सिररुह वरूथ कुंचित विच सुमन यूथ मणियुत शिशु फणि अनीक शशि समीप आई ॥ जनु सभीतदै अकोर राखे युग रुचिर मोर कुंडल छवि निरखि चोर सकुचत अधिकाई ॥ ललित भृकुटि तिलक भाल चिबुक अधर द्विज रसाल हास चारु तर क-

पोल नासिका सुहाई ॥ मधुकर युग पंकज विच शुकविलोकि नीरजपर लरत मधुप अवली मानो वीच कियो जाई॥ सुंदर पटपीत विशद भ्राजत वनमाल उरासि तुलसिका प्रसून रचित विविध विधि बनाई ॥ तरु तमाल अधविच जनु त्रिविध कीरपाँति रुचिर हेमजाल अंतरपरि ताते न उड़ाई ॥ शंकर हृदि पुण्डरीक निवसत हरि चंचरीक निर्व्यलीक मानस गृह संतत रहे छाई ॥ अतिशय आनंदमूल तुलसिदास सानुकूल हरण सकल शूल अवध मंडन रघुराई ॥ ३ ॥ २९५ ॥ राजत रघुवीर धीर भंजन भव भीर पीर हरण सकल सरयुतीर निरखहु सखि सोहैं ॥ संग अनुज मनुज निकर दनुज बल विभंग करन अंग अंग छवि अनंग अगणित मन मोहैं ॥ सुखमा सुख शील अयन नयन निरखि निरखि नील कुंचित कच कुंडल कल नासिक चित पोहैं ॥ मनहुँ इंदु बिंब मध्य कंजमीन खंजनलखि मधुप मकर कीर आए तकि तकि निजगोहैं॥ ललित गंड मंडल सुविशाल भाल तिलक झलक मंजुवर मयंक अंक रुचिर बंक भौहैं ॥ अरुण अधर मधुर बोल दशन दमक दामिनि द्युति हुलसति हिय हँसनि चारु चितवनि तिरछौहैं ॥ कंबु कंठ भुज विशाल उरसि तरुण तुलसिमाल मंजुल मुकुतावलि युत जागति जिय जोहैं ॥ जनु कलिंदनंदिनि मणि इंद्रनील शिखर परसि धसति लसति हंससे निसंकुल अधिकोहैं ॥ दिव्य तर दुकूल भव्य नव्य रुचिर चंपक चय चंचला कलाप कनक निकर अलि किधौंहैं ॥ सज्जन चख झख निकेत भूषण मणि गण समेत रूप जलधि वपुष लेत मन गयंदवोहैं ॥ अकनि वचन चातुरी तुरीय पेखि प्रेम मगन पगन परत इत उत सब चकित तेहि समोहैं ॥ तुलसिदास यह सुधि नहिं कौनकी कहाँते आई कौन काज काके ढिग कौन ठाउँकोहैं ॥ ४ ॥ २९६ ॥ देखु सखि आजु रघुनाथ शोभावनी ॥ नील नीरद वरण वपुष भवनाभरण पीत अंबर धरण हरण द्युति दामिनी ॥ सरयु मज्जनकिए संग सज्जन लिए हेतु जनपर हिये कृपा कोमल घनी ॥ सजनि आवत भवन मत्त गजवर

गवन नृपति मृगपति ठवनि कवन कौशलधनी ॥ सघन चिक्क-
न कुटिल चिकुर विलुलित मृदुल करनि विवरत चतुर सरस सुख
माजनी ॥ ललित अहि शिशु निकर मनहुँ शशि सन समर लरत
धरहरि करत रुचिर जनु युग फनी ॥ भाल भ्राजत तिलक जल-
ज लोचन पलक चारु भ्रूनासिका सुभग शुक आननी ॥ चिबुक
सुंदर अधर अरुण द्विज द्युति सधर वचन गंभीर मृदुहास भव
भाननी ॥ श्रवण कुंडल विमल गंड मंडित चपल कलित कल
कांति अति भाँति कछु तिन्हतनी ॥ युगल कंचन मकर मन-
हुँ विधुकर मधुर पियत पहिचानि करि सिंधुकीरति भनी ॥
उरसि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक माल सुविशाल चहुँ
पास बनि गज मनी ॥ श्याम नव जलद पर निरखि दिनकर कला
कौतुकी मनहुँ रही घेरि उडुगण अनी ॥ मंदिरनि पर खरी नारि
आनँद भरी निरखि वरषहिं विपुल कुसुम कुंकुम कनी ॥ दास तु-
लसी राम परम करुणाधाम काम शत कोटि मद हरत छवि आप-
नी ॥ ६ ॥ २९७ ॥ आजु रघुवीर छवि जाति नहिं कछु कही ॥ सु-
भग सिंहासनासीन सीतारमण भुवन अभिराम बहु काम शोभा-
सही ॥ चारु चामर व्यजन छत्र मणिगण विपुल दाम मुकुतावली
जोति जगमगिरही ॥ मनहुँ राकेश सँग हंस उडुगण वरहि मिलन
आये हृदय जानि निज नाथही ॥ मुकुट सुंदर सिरसि भाल वर
तिलक भ्रूकुटिल कच कुंडलनि परम आभा लही ॥ मनहुँ हर डर
युगुल मार ध्वजके मकर लागि श्रवणनि करत मेरु की बत-
कही ॥ अरुण राजीव दल नयन करुणाअयन वदन सुखमासद-
न हास त्रय तापही ॥ विविध कंकण हार उरसि गजमणि माल
मनहुँ वग पाँति युग मिलि चली जल दही ॥ पीत निर्मल चैल म-
नहुँ मरकत शैल पृथुल दामिनि रही छाइ तजि सहजही ॥ ललित
शायक चाप पीन भुज बल अतुल मनुजतनु दनुजवनु दहन मं-
डन मही ॥ जासु गुण रूप नहिं कलित निर्गुण सगुण शंभु सनका-
दि शुक भक्ति दृढ़ करि गही ॥ दास तुलसी राम चरण पंकज सदा

वचन मन कर्म चहै प्रीति नित निर्वेही ॥ ६ ॥ २९८ ॥ राम राज राजि मौलि मुनिवर मनु हरण शरण लायक सुखदायक रघुनायक देखोरी ॥ लोक लोचनाभिराम नील मणि तमाल श्याम रूप शील धाम अंग छवि अनंग कोरी ॥ भ्राजत शिर मुकुट पुरट निर्मित मणि रचित चारु कुंचित कच रुचिर परमशोभा नहिं थोरी ॥ मनहुँ चंचरीक पुंज कंज वृंद प्रीति लागि गुंजत कलगान तान दिनमणि रिझयोरी ॥ अरुण कंज दल विशाल लोचन भ्रू तिलक भाल मंडित श्रुति कुंडल वर सुंदर तर जोरी ॥ मनहुँ संवरारि मारि ललित मकर युग विचारि दीन्हे शशि कहँ पुरारि भ्राजत दुहुँ ओरी ॥ सुंदर नासा कपोल चिबुक अधर अरुण बोल मधुर दशन राजत जब चितवत मुख मोरी ॥ कंज कोश भीतर जनु कंज राग शिखर निकर रुचिर रचित विधि विचित्र तड़ित रंग बोरी ॥ कंबु कंठ उर विशाल तुलसिका नवीन माल मधुकर वर वास विव उपमा सुनु सोरी ॥ जनु कलिंदजात नील शैल ते धसी समीप कंद वृंद वरषत छवि मधुर घोरि घोरी ॥ निर्मल अति पीत चैल दामिनि जनु जलद नील राखी निज शोभाहित विपुल विधि निहोरी ॥ नयनन्हिको फल विशेषि ब्रह्म अगुण सगुण वेष निरखहु तजि पलक सफल जीवन लैखोरी॥सुंदर सीता समेत शोभित करुणानिकेत सेवक सुख देत लेत चितवत चित चोरी ॥ वर्णत यह अमित रूप थकित निगम नाग भूप तुलसिदास छवि विलोकि शारद भइ भोरी ॥ ७ ॥ २९९ ॥ (राग केदारा) ॥ सखि रघुनाथ रूप निहारु ॥ शरद विधु रवि सुवन मनसिज मान भंजनिहारु ॥ श्याम सुभग शरीर जनु मन काम पूर निहारु ॥ चारु चंदन मनहुँ मरकत शिखर लसत निहारु ॥ रुचिर उर उपवीत राजत पदिक गज मणि हारु ॥ मनहुँ सुरधनु नखतगण विच तिमिर गंजनिहारु ॥ विमल पीत दुकूल दामिनि द्युति विनिंदनिहारु ॥ वदन सुखमासदन शोभित मदन मोहनि हारु ॥ सकल अंग अनूप नहिं कोउ सुकवि वरणनि हारु ॥ दास तुलसी निरखताहि

सुखलहत निरखनि हारु ॥ ८ ॥ ३०० ॥ सखि रघुवीर मुख छवि देखु ॥ चित्त भीत सुप्रीति रंग सुरूपता अवरेखु ॥ नयन सुखमा निरखि नागरि सफल जीवन लेखु ॥ मनहुँ विधि युग जलज विरचे शशिसु पूरण मेखु ॥ भ्रुकुटि भाल विशाल राजत रुचिर कुंकुम रेखु ॥ भ्रमर द्वै रविकिरणि ल्याये करन जनु उनमेखु॥ सुमुखि केश सुदेश सुंदर सुमन संयुत पेखु ॥ मनहुँ उडुगन वाह आए मिलन तम तजि द्वेषु ॥श्रवण कुंडल मनहुँ गुरु कवि करत वाद विशेषु ॥ नासिका द्विज अधर जनु रह्यौ मदनु करि बहु वेषु ॥ रूप वरणि न सकत नारद शंभु शारद शेषु ॥ कहै तुलसी दास क्यों मतिमंद सकल नरेशु ॥ ९ ॥ ३०१ ॥ (राग जयतश्री) ॥ देखो राघो वदन विराजत चारु ॥ जात न वरणि विलोकतही सुख मुख किधौ छवि वर नारि शृंगारु ॥ रुचिर चिबुक रद ज्योति अनूपम अधर अरुण सितहास निहारु ॥ मनो शशि कर वसेउ चहत कमल महँ प्रगटत दुरत न बनत विचारु ॥ नासिक सुभग मनहुँ शुक सुंदर चितवत चकित अचरज अपारु ॥ कल कपोल मृबोल मनोहर रीझि चित चतुर अपनपो वारु ॥ नयनसरोज कुटिल कच कुंडल भ्रुकुटि सुभाल तिलक शोभा सारु ॥ मनहुँ केतु के मकर चाप शर गयो विसारि भयो मोहित मारु ॥ निगम शेष शारद शुक शंकर वर्णत रूप न पावत पारु ॥ तुलसिदास कहै कहौ धौं कौन विधि अति लघुमति जड़ कूर गँवारु ॥ १० ॥ ॥ ३०२ ॥ (राग ललित) ॥ आज रघुपति मुख देखत लागत सुख सेवक सुरुष शोभा शरद शशि सिहाई॥दशन वसन लाल विशद हास रसाल मानो हिमकर कर राखे राजीव मनाई ॥ अरुण नैन विशाल ललित भ्रुकुटि भाल तिलक चारु कपोल चिबुक नासा सुहाई ॥ विथुरे कुटिल कच मानहुँ मधु लालच अलिनलिन युगल उपर रहे लोभाई ॥ श्रवण सुंदर सम कुंडल कल युगम तुलसिदास अनूप उपमा कही न जाई॥ मानो मरकत सीप सुंदर शशि समीप कनक मकरयुत विधि विरची बनाई ॥ ११ ॥ ३०३ ॥

(राग भैरव) ॥ प्रातकाल रघुवीर वदन छवि चितै चतुर चित मेरे ॥ होहिं विवेक विलोचन निर्मल सुफल सुशीतल तेरे ॥ भाल विशाल विकट भ्रुकुटी विच तिलक रेख रुचिराजे ॥ मनहुँ मदन तम तकि मरकत धनु युगल कनक शर साजे ॥ रुचिर पलक लोचन युग तारक श्याम अरुण अति कोये ॥ जनु अलिनलिन कोश महँ बंधुक सुमन सयन सजि सोये ॥ विलुलित ललित कपोलनिपर कच मेचक कुटिल सुहाये ॥ मनो विधु महँ वनरुह विलोकि अलि विपुल सकौतुक आये ॥ शोभित श्रवण कनक कुंडल कल लंबित विवि भुज मूले ॥ मनहुँ केकि तकि गहन चहत युग उरग इंदु प्रतिकूले ॥ अधर अरुण तर दशन पाँति वर मधुर मनोहरहासा ॥ मनहुँ सोन सरसिज महँ कुलिशनि तड़ित सहित कृत वासा॥चारु चिबुक शुकतुंड विनिंदक सुभग सुउन्नत नासा॥ तुलसिदास छविधाम राममुख सुखद शमन भवत्रासा ॥ १२ ॥ ॥ ३०४ ॥(राग केदारा)॥ सुमिरत श्रीरघुवीरकी वाहैं॥ होत सुगम भव उदधि अगम अति कोउ लाँघत कोउ उतरत थाहैं॥सुंदर श्याम शरीर शैलते धसि जनु युग यमुना अवगाहैं ॥ अमित अमल जल बल परिपूरण जनु जनमी शृँगार सविताहैं॥ धारैं बाण कूल धनु भूषण जलचर भवर सुभग सब घाहैं ॥ विलसति वीचि विजय विरदावलि कर सरोज सोहत सुखमाहैं ॥ सकल भुवन मंगल मंदिरके द्वार विशाल सुहाई साहैं ॥ जे पूजी कौशिक मख ऋषयनि जनक गणप शंकर गिरिजाहैं॥ भव धनु दलि जानकी विवाही भये विहाल नृपाल त्रपाहैं॥ परशु पाणि जिन्ह किये महामुनि जे चितये कबहूँ न कृपाहैं॥ यातुधान तिय जानि वियोगिनि दुखई सीय सुनाइ कुचाहैं॥जिन्ह रिपु मारि सुरारि नारि तेइ शीश उघारि दिवाईधाहैं॥ दशमुख विवश तिलोक लोकपति विकल विना ये नाक चनाहैं ॥ सुवशबसे गावत जिन्हके यश अमर,नाग,नर सुमुखि सनाहैं॥ जे भुज वेद पुराण शेष सुख शारद सहित सनेह सराहैं॥ कलपलताहु कि कलपलतावर कामदुहाहुकि काम दुहाहैं॥

शरणागत आरत प्रणतनिको दैदै अभयपद और निबाहैं ॥ कारि आई कारिहैं करतीहैं तुलसिदास दासनिपर छाहैं ॥ १३ ॥ ३०५ ॥
॥ (राग भैरव) ॥ रामचंद्र करकंज कामतरु वामदेव हितकारी ॥ सियसनेह वर वेलि वलित वर प्रेमबंधु वरवारी ॥ मंजुल मंगल मूल मूल तनु करज मनोहर शाखा ॥ रोमपरण नख सुमन सुफल सव काल सुजन अभिलाषा ॥ अविचल अमल अनामय अविरल ललित रहित छल छाया ॥ शमन शकल संताप पापरुज मोह मान मद माया ॥ सेवहिं शुचि मुनि भृंग विहगमन मुदित मनोरथ पाये ॥ सुमिरतहिय हुलसति तुलसी अनुराग उमगि गुणगाये ॥
॥१४ ॥ ३०६॥ रामचरण अभिरामकामप्रद तीरथ राज विराजै ॥ शंकर हृदय भक्ति भूतलपर प्रेम अक्षयवट भ्राजै ॥ श्यामवरण पद पीठ अरुण तल लसति विशद नख श्रेणी ॥ जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिलि चली ललित त्रिवेणी ॥ अंकुश कुलिश कमलध्वज सुंदर भवँर तरंग विलासा ॥ मज्जहिं सुर सज्जन मुनिजन मन मुदित मनोहरवासा ॥ विनु विराग जप याग योग व्रत विनु तपविनु तनुत्यागे ॥ सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे ॥ १५ ॥ ३०७ ॥ (राग बिलावल) ॥ रघुवर रूप विलोकु नेकुमन ॥ सकल लोक लोचन सुखदायक नख शिख सुभग श्याम सुंदर तन ॥ चारु चरण तल चिह्न चारि फल चारि देत पर चारि जानिजन ॥ राजत नख जनु कमल दलनिपर अरुण प्रभारंजित तुषारकन॥जंघा जानु आनु के दलि उर काटि किंकिणि पटपीत सुहावन ॥रुचिर निषंग नाभि रोमावलि त्रिवलि वलित उपमा कछु आवन ॥भृगुपद चिह्न पदिक उर शोभित मुकुतमाल कुंकुम अनुलेपन ॥ मनहुँ परस्पर मिलि पंकज रवि प्रगटयो निज अनुराग सुयश घन॥ बाहु विशाल ललित शायक धनु कर कंकण केयूर महाधन ॥ विमल दुकूल दलन दामिनि द्युति यज्ञोपीत लसत अति पावन ॥ कंबुग्रीव छवि सींव चिबुक द्विज अधरकपोल बोल भय मोचन॥नासिक सुभग कृपापरिपूरण तरुण अरुण राजीव विलोच-

न॥कुटिल भ्रुकुटिवर भाल तिलक रुचि शुक सुंदरतर श्रवण विभू-
षण॥मनहुँ मारि मनसिज पुरारि दिय शशिहि चाप शर मकर अ-
दूषण ॥ कुंचित कच कंचन किरीट शिर जटित ज्योतिमय बहु वि-
धि मणिगण ॥ तुलसिदास रविकुल रवि छवि कवि कहि न सकत
शुक शंभु सहसफण ॥ १६ ॥ ३०८ ॥ (राग कान्हरा)॥ देखो
रघुपति छवि अतुलित अति ॥ जनु तिलोक सुखमा सकेलि विधि
राखी रुचिर अंग अंगनि प्रति ॥ पद्मराग रुचि मृदुपदतल ध्वज
अंकुश कुलिश कमल यहि सूरति॥रही आनि चहुँ विधि भगतनि
की जब अनुराग भरी अंतरगति ॥ सकल सुचिह्न सुजन सुखदा-
यक ऊरधरेख विशेष विराजति ॥ मनहुँ भानु मंडलहि सवाँरत
धरचो सूतविधि सुत विचित्र मति ॥ सुभग अंगुष्ठ अंगुली अविरल
कछुक अरुणनख ज्योति जगमगति ॥ चरण पीठ उन्नत
नत पालक गूढ गुलफ जंघा कदली जति ॥ काम तूण तल
सरिस जानु युग उरु करि कर करभहि विलखावति ॥ रसना
रचित रतन चामीकर पीत वसन कटिकसे सरवसति ॥ ना-
भि सरसि त्रिवली निसेनिका रोमराजि सैवल छवि पावति ॥ उर
मुकुतामणि माल मनोहर मनहुँ हंस अवली उड़ि आवति ॥ हृदय
पदिक भृगुचरणचिह्न वर बाहु विशाल जानु लगि पहुँचति ॥ क-
ल केयूर पूर कंचन मणि पहुँची मंजु कंजकर सोहति ॥ सुजव
सुरेख सुनख अंगुलियुत सुंदर पाणि मुद्रिका राजति ॥ अंगुलि
त्राण कमान बानछवि सुरनि सुखद असुरनि उर शालति ॥ श्याम
शरीर सुचंदन चर्चित पीत दुकूल अधिक छवि छाजति ॥ नील
जलद पर निरखि चंद्रिका दुरनि त्यागि दामिनि जनु दमकति ॥
यज्ञोपवीत पुनीत विराजत गूढ़जत्रुवनी पीन अंसतति ॥ सुगढ
पृष्ठ उन्नत कि काठिका कंबु कंठ शोभा मन मानति ॥ शरद स-
मय सरसीरुह निंदक मुख सुखमा कछु कहत नहिं बनति ॥ नि-
रखतहीं नयननि निरुपम सुख रवि सुत मदन सोम दुति निदरति॥
अरुण अधर दुजपाँति अनूपम ललित हँसनि जनु मन आकरष-

ति ॥ विद्रुम रचित विमान मध्य जनु सुरमंडली सुमन चय वर-षति ॥ मंजुल चिबुक मनोरम हनुथल कल कपोल नासा मन मो-हति॥पंकज मान विमोचन लोचन चितवनि चारु अमृत जल सीच-ति ॥ केश सुदेश गंभीर वचनवर श्रुति कुंडल डोलनि जिय जाग-ति ॥ लखि नव नील पयोदर सित सुनि रुचिर मोर जोरी जनु ना-चति ॥ भौंहैं बंक मयंक अंक रुचि कुंकुमरेख भाल भलि भ्राजति॥ सिरसि हेम हीरक माणिकमय मुकुट प्रभा सब भुवन प्रकाशति ॥ वरणत रूप पारनहिं पावत निगम शेष शुक शंकर भारति ॥ तुल-सिदास केहि विधि बखानि कहै यह मन वचन अगोचर मूरति ॥ १७।३०१॥(रागमलार)॥ आलीरी राघोके रुचिर हिंडोलना झूलन जै ए ॥ टेक ॥ फटिक भीति सुचारु चहुँ दिशि मंजु मणिमय पौं-रि ॥ गच कांचलखि मनु नाच सखि जनु पाँचसर सुफसौरि ॥ तोरण वितान पताक चामर ध्वज सुमन फलघोरि ॥ प्रतिछाँह छवि कवि साखि दै प्रति शोकहै गुर हौंरि ॥१॥ मदन जयके खंभसे रचे खंभ सरल विशाल ॥ पाटीर पाँटि विचित्र भँवरा वलित बेलना लाल॥डांड़ी कनक कुंकुम तिलक रेखैंसिमनासिज भाल ॥ पटुली पदिकरति हृदय जनु कलधौंत कोमल माल ॥ २ ॥ उनये सघन घनघोर मृदु झरि सुखद सावन लाग ॥ बग पाँति सुर धनु दमकदामिनि हरित भूमि विभाग ॥ दादुर मुदित भरे सरित सरम-हि उमग जनु अनुराग ॥ पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उप-वन वाग ॥३॥ सोसमौ देखि सुहावनो नवसत सँवारि सँवारि ॥ गुण रूप यौवन सींव सुंदरि चलीं झुंडनि झारि ॥हिंडोल साल विलोकि सब अंचल पसारि पसारि ॥ लागी अशीशन राम सीतहि सुख स-माजु निहारि ॥ ४ ॥ झूलहिं झुलावहिं ओसरिन्ह गावहिं सुहव गौड़ मलार ॥ मंजीर नूपुर वलय धुनि जनु काम करतल तार ॥ अति मचत श्रम कण मुखनि विथुरे चिकुर विलुलित हार ॥ तम त-ड़ित उडगण अरुण विधु जनु करत व्योम विहार॥ ५ ॥ हिय हर-षि वरषि प्रसून निरखति विबुध तिय तृण तूरि ॥ आनंद जललो-

चन मुदित मन पुलकततनु भरिपूरि ॥ सब कहहिं अविचल राज नित कल्याण मंगल भूरि ॥ चिरजियो जानकिनाथ जग तुलसी सजीवनि मूरि ॥१८।३१०॥ रागसूहो ॥ कोशलपुरी सुहावनि सरि सरयूके तीर ॥ भूपावली मुकुटमणि नृपति जहाँ रघुवीर॥पुरनर नारि चतुर अति धरम निपुण रत नीति॥सहज सुभाय सकल उर श्रीरघु वर पद प्रीति॥(छंद)॥श्रीरामपद जलजात सबके प्रीति अविरल पाव- नी ॥ जो चहत शुक सनकादि शंभु विरंचि मुनिमन भावनी ॥ स- बहीके सुंदर मंदिराजिर राउ रंक न लखिपरै ॥ नाकेश दुर्लभ भो- ग लोग करहिं न मन विषयनि हरै ॥१॥ सब ऋतु सुखप्रद सो पुरी पावस अति कमनीय ॥ निरखत मनहिं हरत हठि हरित अवनि र- मनीय ॥ वीर बहूटि विराजहि दादुर धुनि चहुँ ओर ॥ मधुर गराजि घन वरषहिं सुनि सुनि बोलत मोर ॥ (छंद) ॥ बोलत जो चातक मोर कोकिलकीर पारावत घने ॥ खग विपुल पाले बालकनि कूजत उड़ात सुहावने ॥ बक राजि राजति गगन हरि धनु तड़ित दिशि दिशि सोहहीं ॥ नभ नगरकी शोभा अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं ॥ २ ॥ गृह गृह रचे हिँडोलना महि गच काँच सुढार ॥ चित्र विचित्र चहूँ दिशि परदा फटिक पगार॥ सरल विशाल विरा- जहिं विद्रुम खंभ सुजोर ॥ चारु पाटिपटि पुरटकी झरकत मरकत भोर ॥ (छंद) ॥ मरकत भँवर डाँड़ी कनक मणि जटित द्युति ज- गमग रही ॥ पटुली मनहुँ विधि निपुणता निज प्रगट करि राखी सही ॥ बहुरंग लसत वितान मुकुता दाम सहित मनोहरा ॥ नव सु- मन माल सुगंध लोभे मंजु गुंजत मधुकरा ॥ ३ ॥ झुंड झुंड झूल त चलीं गजगामिनि वर नारि ॥ कुसुँभि चीर तनुसोहहिं भूषण विविध सँवारि ॥ पिकवयनी मृगलोचनी शारद शशि सम तुंड ॥ राम सुयश सब गावहिं सुस्वर सुसारंग गुंड ॥ (छंद) ॥ सारंग गुंड मलार सोरठ सुहव सुघर निबाजहीं ॥ बहु भाँति तान तरंग सु- नि गंधर्व किन्नर लाजहीं ॥ अति मचत छूटत कुटिल कच छवि अधिक सुंदरि पावहीं ॥ पट उड़त भूषण खसत हँसि हँसि अपर

सखी झुलावहीं॥४॥फिरि फिरि झूलहिं भामिनि अपनी अपनी वार॥ विबुध विमान थकित भये देखत चरित अपार॥ बरषि सुमन हरषहिं उर वरणहिं हरिगुण गाथ॥ पुनि पुनि प्रभुहि प्रशंसहिं जय जय जानकिनाथ॥ (छंद)॥ जय जानकीपति विशद कीरति सकल लोक मलापहा॥ सुरवधू देहिं अशीश चिरजीवहु राम सुख संपति महा॥ पावस समय कछु अवध वर्णत सुनि अघौघ नशावहीं॥ रघुवीरके गुण गण नवल नित दास तुलसी गावहीं ॥ ८॥ ॥ १९॥ ३११॥ (राग असावरी)॥ साँझ समै रघुवीर पुरीकी शोभा आजु बनी॥ ललित दीपमालिका विलोकहिं हितकारि अवध धनी॥ फटिक भीत शिखरनपर राजति कंचन दीप अनी॥ जनु अहिनाथ मिलन आयो मणि शोभित सहस फनी॥ प्रतिमंदिर कलशनि पर भ्राजहिं मणि गण द्युति अपनी॥ मानहुँ प्रगटि विपुल लोहित पुर पठइ दिये अवनी॥ घर घर मंगलचार एक रस हरषित रंक गनी॥ तुलसिदास कल कीरति गावहिं जो कलिमल शमनी॥ २०॥ ३१२॥ (राग गौरी)॥ अवध नगर अति सुंदर वर सरिताके तीर॥ नीति निपुण नर निवसहिं धरम धुरंधर धीर॥ सकल ऋतुन्ह सुखदायक तामहँ अधिक वसंत॥ भूप मौलि मणि जहँ वस नृपति जानकीकंत॥ वन उपवन नव किशलय कुसुमित नाना रंग॥ बोलत मधुर मुखर खग पिकवर गुंजत भृंग॥ समय विचारि कृपानिधि देखि द्वार अति भीर॥ खेलहु मुदित नारि नर विहँसि कहेउ रघुवीर॥नगर नारि नर हरषित सब चले खेलन फागु॥ देखि राम छवि अतुलित उमगत उर अनुरागु ॥ श्याम तमाल जलदतनु निर्मल पीत दुकूल ॥ अरुण कंज दल लोचन सदा दास अनुकूल॥ शिर किरीट श्रुति कुंडल तिलक मनोहर भाल ॥ कुंचित केश कुटिल भ्रू चितवनि भगत कृपाल॥ कल कपोल शुक नाशिक ललित अधर द्विज जोति ॥ अरुण कंजमहँ जनु युगपाँति रुचिर गज मोति ॥ वरदरग्रीव अमित वल वाहु सुपीन विशाल॥कंकण हार मनोहर उरसि लसति वनमाल॥

उर भृगु चरण विराजत द्विज प्रिय चरित पुनीत ॥ भगत हेतु नर विग्रह सुरवर गुण गोतीत॥ उदर त्रिरेख मनोहर सुंदर नाभि गँभीर ॥ हाटक घटित जटित मणि कटितट रट मंजीर॥ उरु अरु जानु पीन मृदु मरकत खंभ समान ॥ नुपुर मुनि मन मोहन करत सुकोमल गान ॥ अरुण वरण पदपंकज नख द्युति इंदु प्रकाश ॥ जनक सुताकर पल्लव ललित विपुल विलास ॥ कंज कुलिश ध्वज अंकुश रेख चरण शुभचारि ॥ जनु मन मीन हरण कहँ बनसी रची सँवारि ॥ अंग अंग प्रति अतुलित सुखमा वरणि न जाइ ॥ एहि सुख मगन होइ मन फिरि नाहिं अनत लोभाइ ॥ खेलत फागु अवधपति अनुज सखा सब संग ॥ वरषि सुमन सुर निरखहिं शोभा अमित अनंग ॥ ताल मृदंग झाँझ डफ बाजहिं पणव निसान ॥ सुघर सरस सहनाइन्ह गावहिं समय समान ॥ वीणा वेणु मधुर धुनि सुनि किन्नर गंधर्व ॥ निज गुण गरुअ हरुअ अति मानहिं मन तजि गर्व ॥ निज निज अटनि मनोहर गान करहिं पिक वैनि ॥ मनहुँ हिमालय शिखरनि लसहिं अमर मृग नैनि ॥ धवल धामते निकसहिं जहँ तहँ नारि वरूथ ॥ मानहुँ मथत पयोनिधि विपुल अपसरा यूथ ॥ किंशुक वरण सुअंशुक सुखमा मुखनि समेत ॥ जनु विधु निवहरहे करि दामिनि निकर निकेत ॥ कुंकुम सुरस अवीरनि भरहिं चतुर वर नारि ॥ ऋतु सुभाय सुठि शोभित देहिं विविध विधि गारि ॥ जो सुख योग याग जप तप तीरथते दूरि ॥ राम कृपाते सोइ सुख अवध गलिन्ह रह्यो पूरि ॥ खेलि वसंत कियो प्रभु मज्जन सरयूनीर॥ विविध भाँति याचक जन पाये भूषण चीर ॥ तुलसिदास तेहि अवसर माँगी भगति अनूप ॥ मृदु मुसुकाइ दीन्हि तब कृपादृष्टि रघु भूप ॥ २१ ॥ ३१२ ॥

(राग वसंत)॥ खेलत वसंत राजाधिराज ॥ देखत नभ कौतुक सुर समाज ॥ सोहैं सखा अनुज रघुनाथ साथ ॥ झोलिन्ह अबीर पिचकारि हाथ ॥ बाजहिं मृदंग डफ ताल वेणु ॥ छिरकैं सुगंध भरे मलय रेणु ॥ उत युवति यूथ जानकी संग ॥ भूषण पट समय

सरिस सुरंग ॥ लिये छरी वेत सोधैं विभाग॥ चाचरि झूमक कहैं सरसराग ॥ नूपुर किंकिणि धुनि अति सोहाइ ॥ ललना गण जब जेहि धरइँ धाइ ॥ लोचन आँजहिं फगुआ मनाइ ॥ छाड़हिं नचाइ हाहा कराइ ॥ चढ़े खरनि विदूषक स्वांग साजि ॥ करैं कूटि निपट गइ लाज भाजि ॥ नर नारि परसपर गारिदेत ॥ सुनि हँसत राम भाइन समेत ॥ वरषत प्रसून वर विबुध वृंद ॥ जय जय दिनकर कुल कुमुद चंद ॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध वास ॥ गावत कल कीरति तुलसिदास ॥ २२ ॥ ३१४ ॥ (राग केदारा) ॥देखत अवधको आनंद ॥ हरषि वरषत सुमन दिन दिन देवतनिको वृंद ॥ नगर रचना सिखनको विधि तकत बहु विधिवंद ॥निपट लागत अगम ज्यों जलचरहिं गमन सुछंद ॥ मुदित पुर लोगनि सराहत निरखि सुखमाकंद ॥जिन्हके सुअलि चख पियत राम मुखारविंद मरंद॥मध्य व्योम विलंबि चलत दिनेश उडुगण चंद॥राम पुरी विलोकि तुलसी मिटत सब दुख द्वंद ॥ २३ ॥ ३१५ ॥ (रागसोरठ)॥पालत राज यों राजाराम धरम धुरीन॥ सावधान सुजान सब दिन रह तनय लयलीन ॥ श्वान खग यति न्याउ देख्यो आपु बैठि प्रवीन॥नीचुहति महिदेव बालक कियो मीचुविहीन ॥ भरत ज्यों अनुकूल जग निरुपाधि नेह नवीन ॥ सकल चाहत रामही ज्यों जल अगाधहि मीन ॥ गाइ राज समाज याचत दास तुलसी दीन ॥ लेहु निज करि देहु निज पदप्रेम पावन पीन ॥२४ ॥३१६॥ संकट सुकृत को सोचत जानि जिय रघुराउ॥सहस द्वादश पंचशत में कछुकहै अब आउ॥ भोग पुनि पितु आयुको सोउ किए बनै बनाउ ॥परिहरे विनु जानकी नहिं और अनघ उपाउ ॥ पालिबे असिधार व्रत प्रिय प्रेम पाल सुभाउ ॥ होइ हित केहिभाँति नित सुविचारुनहिं चितचाउ ॥ निपट असमंजसहुँ विलसति मुख मनोहर ताउ ॥ परम धीर धुरीन हृदय कि हरष विसमय काउ ॥ अनुज सेवक सचिवहै सब सुमति साधु सखाउ ॥ जानकोउ न जानकी विनु अगम अलख लखाउ ॥ रामजोगवत सीय मनु प्रिय मनहि प्राण पियाउ ॥ परम

पावन प्रेम परमिति समुझि तुलसी गाउ ॥ २५ ॥ ३१७ ॥ राम विचारिकै राखी ठीक दै मन माहिं ॥ लोक वेद सनेह पालत पल कृपालहि जाहिं ॥ प्रियतमा पति देवता जिहि उमा रमा सिहाहिं॥ गुरुविनी सुकुमारि सियतियमणि समुझि सकुचाहिं ॥ मेरेही सुख सुखी सुख अपनो सपनेहूँ नाहिं ॥ गेहिनी गुण गेहनी गुण सुमिरि सोच समाहिं ॥ राम सीय सनेह वरणत अगम सुकवि सकाहिं॥ रामसीय रहस्य तुलसी कहत राम कृपाहिं ॥ २६ ॥ ३१८ ॥ चरचा चरनि सो चरची जानमणि रघुराइ ॥दूत मुख सुनि लोक धुनि घर घरनि बूझी आइ ॥ प्रिया निज अभिलाष रुचि कहि कहति सिय सकुचाइ ॥ तीय तनय समेत तापस पूजिहौं वन जाइ ॥ जानि करुणासिंधु भावी विवश सकल सहाइ ॥ धीर धरि रघुवीर भोरहि लिये लषण बोलाइ ॥ तात तुरतहि साजि स्यंदन सीय लेहु चढ़ाइ ॥ वालमीकि मुनीश आश्रम आइयहु पहुँचाइ ॥ भलेहि नाथ सुहाथ माथे राखि राम रजाइ ॥ चले तुलसी पालि सेवक धरम अवधि अघाइ ॥ २७ ॥ ३१९ ॥ आये लषण लै सौंपी सिय मुनीशहि आनि ॥ नाइ शिररहे पाइ आशिष जोरि पंकजपानि ॥ वालमीकि विलोकि व्याकुल लषण गरत गलानि ॥सर्वविद बूझत न विधिकी वामता पहिचानि ॥जानि जिय अनुमानही सिय सहस विधि सनमानि॥राम सदगुण धाम परमिति भई कछुक मलानि ॥ दीनवंधु दयालु देवर देखि आति अकुलानि ॥ कहति वचन उदास तुलसीदास त्रिभुवन रानि ॥ २८ ॥ ३२० ॥ तौलोंवलि आपुहीकीवी विनय समुझि सुधारि ॥ जौलोंहों सिख लेउ वन ऋषि रीति वसि दिनचारि॥तापसी कहि कहा पठवति नृपनिको मनुहारि ॥ बहुरि तिहि विधि आइ कहिहै साधु कोउ हितकारि।लषण लाल कृपाल निपटहि डारिवी न विसारि॥पालवी सब तापसनि ज्यों राजधरम विचारि॥सुनत सीतावचन मोचत सकल लोचन वारि॥ वालमीकि न सके तुलसी सो सनेह सँभारि।२९।३२१।मुनि व्याकुल भये उतरु कछु कह्यो न जाइ॥जानिजिय विधि वाम दीन्हो मोहिं सरुष सजाइ ॥ कहत

यहि मेरी कठिनई लखि गई प्रीति लजाइ ॥ आजु अवसर ऐसे हूँ जौं न चले प्राण बजाइ ॥ इतहि सीय सनेह संकट उतहि राम र-जाइ ॥ मौनहीं गहि चरण गौने सिख सुआशिष पाइ ॥ प्रेम नि-धि पितुको कहे मैं परुष वचन अघाइ ॥पाप तेहि परिताप तुलसी उचित सहे सिराइ ॥ ३० ॥ ३२२ ॥ गौने मौनही वारहि वार परि परि पायँ ॥ जात जनु रथ रचीकर लछिमन मगन पछितायँ ॥ अ-शन विनु वन वरम विनु रन बच्यौ कठिन कुघायँ ॥ दुसह सासति सहनको हनुमान ज्यायो जाय॥ हेतु हो सियहरणको तब अबहुँ भ-यो सहाय ॥ होत हठि मोहि दाहिनो दिन दैवदारुण दाय ॥ त-ज्यो तनु संग्राम जेहिं लगि गीधयशी जटाय ॥ ताहि हों पहुँचाइ कानन चल्यों अवध सुभाय ॥ घोर हृदय कठोर करतब सृज्योहों विधिवाय ॥ दास तुलसी जानि राख्यो कृपानिधि रघुराय ॥ ३१ ॥ ॥३२३॥पुत्रि न सोचिये आइहों जनक गृह जिय जानि॥कालिहीं क-ल्याण कौतुक कुशल तव कल्याणि ।राजऋषि पितु श्वशुर प्रभु पति तू सुमंगल खानि ॥ ऐसेहूँ थल वामता बड़ि वाम विधिकी वानि ॥ बोलि मुनि कन्या सिखाईं प्रीति गति पहिचानि ॥ आलसिन्ह की देवसरिसिय सेययहु मन मानि ॥ न्हाइ प्रातहि पूजिवो वट वि-टप अभिमत दानि ॥ सुवन लाहु उछाहु दिन दिन देवि अनहित हानि ॥ पाप ताप विमोचनी कहि कथा सरस पुरानि ॥ वाल्मीकि प्रबोधि तुलसी गई गरुइ गलानि ॥ ३२ ॥ ३२४ ॥ जबते जान-की रही रुचिर आश्रम आइ ॥ गगन जल थल विमल तबते सकल मंगलदाइ ॥ निरस भूरुह सरस फूलत फलत अति अधिकाइ ॥ कंद मूल अनेक अंकुर स्वाद सुधा लजाइ॥ मलय मरुत मराल म-धुकर मोर पिक समुदाइ ॥ मुदित मन मृग विहग विहरत विषम वैर विहाइ ॥ रहत रवि अनुकूल दिन शशि रजनि सजनि सुहाइ ॥ सीय सुनि सादर सराहति सखिन्ह भलो मनाइ ॥ मोद वि-पिन विनोद चितवत लेत चितहि चोराइ ॥ राम विनु सिय सुखद वन तुलसी कहै किमि गाइ ॥ ३३ ॥ ३२५ ॥ शुभ दिन शुभ घरी

नीको नखत लगन सुहाइ ॥ पूत जाये जानकी द्वै मुनिवधू उ-
ठि गाइ ॥ हरषि वरषत सुमन सुर गहगहे बधाये बजाइ ॥ भुवन
कानन आश्रमनि रहे मोद मंगल छाइ ॥ तेहि निशा तहँ शत्रुसूद-
न रहे विधि वश आइ ॥ माँगि मुनिसों विदा गवने भोर सोसुख
पाइ ॥ मातु मौसी बहिनिहूँते सासुते अधिकाइ ॥ करहिं तापस
तीय तनया सीयहित चितलाइ ॥ किये विधि व्यवहार मुनि वर
विप्रवृंद बोलाइ ॥ कहत सब ऋषि कृपा को फल भयो आजु अ-
घाइ॥सुरुष ऋषिसुख सुतनिको सिय सुखद सकल सहाइ॥शूल रा-
म सनेह की तुलसी न जियते जाइ ॥ ३४ ॥ ३२६॥ मुनिवर करि
छठी कीन्ही बारहें की रीति ॥ वन बसन पहिराइ तापस तोषि पोषे
प्रीति ॥ नामकरण सुअन्नप्रासन वेदबाँधी नीति ॥ समय सब ऋ-
षिराज करत समाज साज समीति ॥ बाल लालहिं कहहिं करिहैं
राज सब जगजीति ॥ राम सिय सुत गुरु अनुग्रह उचित अचल प्र-
तीति ॥ निरखि बाल विनोद तुलसी जात बासर वीति ॥ पिय च-
रित सिय चित चितेरो लिखत नित हित भीति ॥ ३५ ॥ ३२७॥
बालक सीयके विहरत मुदित मन दोउ भाइ ॥ नाम लव कुश रा-
म सिय अनुहरत सुंदरताइ ॥ देत मुनि मुनि शिशु खेलौना ते लै
धरत दुराइ ॥ खेल खेलत नृप शिशुन्हके बालवृंद बोलाइ ॥ भूप
भूषण बसन बाहन राज साज सजाइ ॥ बरम चर्म कृपाण शर धनु
तूण लेत बनाइ ॥ दुखी सिय पिय विरह तुलसी सुखी सुत सुख पा-
इ ॥ आँच पय उफनात सींचत सलिल ज्यों सकुचाइ ॥ ३६ ॥
॥३२८॥ कैकयी जौलों जियत रही ॥ तौलों बात मातुसों मुहँ भरि
भरत न भूलि कही ॥ मानी राम अधिक जननीते जननिहु ग-
सन गही ॥ सीय लषण रिपुदवन राम रुख लखि सबकी निबही ॥
लोक वेद मरजाद दोष गुण गति चित चखन चही ॥ तुलसी भरत
समुझि सुनि राखी राम सनेह सही ॥ ३७ ॥ ३२९ ॥ (राग रा-
मकली) ॥ रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावहिं सकल अवधवा-
सी ॥ अतिउदार अवतार मनुज वपु धरे ब्रह्म अज अविनासी ॥१॥

प्रथम ताडका हति सुबाहु वधि मखराख्यो द्विज हितकारी ॥ देखि दुखी अति शिला शापवश रघुपति विप्रनारि तारी ॥ सब भूपनको गरब हरचो हरि भंज्यो शंभु चाप भारी ॥ जनक सु-ता समेत आवत गृह परशुराम अति मदहारी ॥ तात वचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनिवेष धरचो ॥ एक नयन कीन्हो सुर-पतिसुत वधि विराध ऋषि शोक हरचो ॥ पंचवटी पावन राघव करि शूर्पणखा कुरूप कीन्ही ॥ खर दूषण संहारि कपट मृग गीध-राज कहँ गति दीन्ही॥हति कवंध सुग्रीव सखा करि वेधे ताल वा-लि मारचो ॥ वानर रीछ सहाय अनुज सँग सिंधु बाँधि यश वि-स्तारचो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दशानन मारि अखिल सुर दु-ख टारचो ॥ परमसाधु जिय जानि विभीषण लंकापुरी तिलक सारचो ॥ सीता अरु लछिमन सँग लीन्हे औरहु जिते दास आए॥ नगर निकट विमान आये सब नर नारी देखन धाए ॥ शिव विरंचि शुक नारदादि मुनि स्तुति करत विमल बानी ॥ चौदह भुवन च-राचर हरषित आये राम राजधानी ॥ मिले भरत जननी गुरु प-रिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह बियोग जनित दारुण दुख रामचरण देखत विसरे ॥ वेद पुराण विचारि लगन शुभ महाराज अभिषेक कियो ॥ तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भगति दान तब माँगि लियो ॥ ३८ ॥ ३३० ॥

इति श्रीरामगीतावल्यां उत्तरकाण्डः समाप्तः ॥

इति गीतावली समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना

बंबई.

श्रीराधाकृष्णाभ्यांनमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

श्रीकृष्ण गीतावली ।



जिसमें

श्रीकृष्णचरित्र परम पवित्र अनेक प्रकारके मनोहर मनहरन राग रागिनियोंमें कलिमल विनाशार्थ वर्णित है ।

जिसको

प्रथमवार

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

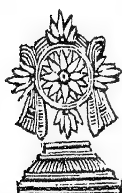
बंबई

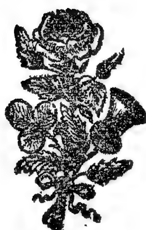
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें छापकर

प्रकट किया ।

आषाढ संवत् १९५१


राधा
कृष्ण
गोप







श्रीगणेशायनमः ।

श्रीजानकीवल्लभोविजयते ॥

श्रीकृष्णगीतावली ॥



राग विलावल ॥

माता लै उछंग गोविंदमुख वार वार निरखै । पुलकित तनु आनंदघन छन छन मन हरषै । पूछत तोतरात वात मातहि यदुराई । अतिशय सुख जाते तोहिं मोहिं कहु समुझाई । देखत तव वदन कमल मन अनंद होई । कहै कौन रसनमौन जानै कोइ कोई । सुंदर मुख मोहिं देखाउ इच्छा अति मोरे।मम समान पुण्यपुंज बालक नहिं तोरे । तुलसी प्रभु प्रेमवश्य मनुजरूप धारी । बालकेलि लीलारस ब्रजजन हितकारी ॥ १ ॥(राग ललित)॥ छोटी मोटी मीसी रोटी चिकनी चुपरिकै तू देरी मैया लै कन्हैया सो कब अबहिं तात॥सिगरियैहौंहीं खैहौं बलदाऊ को न देहौं सो क्यौं भटू तेरो कहा कहि इत उत जात । बालबोलि डहकि बिरावत चरित लखि गोपीगण महरि मुदित पुलकित गात॥नूपुरकी धुनि किंकिणीकी कलरव सुनि कूदि कूदि किलकि किलकि ठाढ़े ठाढ़े खात।तनिया ललित कटि विचित्र टेपारो शीश मुनि मन हरत वचन कहै तोतरात। तुलसी निरखि हरषत वरषत फूल भूरिभागी ब्रजवासी विबुध सिद्धसिहात ॥ २ ॥ ॥ (राग आसावरी) ॥ तोहिं श्यामकी शपथ यशोदा आइदेखु गृह मेरे॥ जैसी हाल करी यहि ढोटा छोटे निपट अनेरे ।गोरसहानि सहौं न कहौं कछु यह ब्रजवास बसेरे।दिनप्रति भाजन कौन वेसाहै घरनिधि काहूकेरे । किए निहोरो हँसत खिझते डाटत नयन तरेरे । अवहींते ए सीख कहाधौं चरित ललित सुत तेरे । बैठे सकुचि साधु भयो चाहत मातुवदन तन हेरे । तुलसिदास प्रभु कहौं ते बातैं जे कहि भजे सबेरे ॥ ३ ॥ मोकहँ झूठेहु दोष लगावहिं । मैया इन्हहिं वानि परगृहकी नाना युगुति बनावहिं । इन्हके लिये खेलिवो छाँ-

ड़यौ तऊ न उबरन पावहिं । भाजन फोरि बोरिकर गोरस देन उर-
हनो आवहिं । कबहुँक बाल रोवाइ पाणि गहि मिसकरि उठि उठि
धावहिं । करहिं आपु शिर धरहिं आनके वचन विरंचि हरावहिं॥मेरी
टव बूझि हलधरको संतत संग खेलावहिं । जे अन्याउ करहिं काहू-
को ते शिशु मोहिं न भावहिं । सुनि सुनि वचन चातुरी ग्वालिनि
हँसि हँसि वदन दुरावहिं । बाल गोपाल केलि कलकीरति तुलसि-
दास मुनि गावहिं ॥ ४ ॥ कबहूँ जात पराये धामहिं ॥ खेलतही
देखों निज आँगन सदा सहित बलरामहिं । मेरे कहा थाकु गोरस
को नवनिधि मंदिर यामहिं । ठाली ग्वालि ओरहनेके मिस आइब
कहि बेकामहिं । हों बलिजाउँ जाहु कितहूँजनि मातु सिखावति
इयामहिं । विनुकारण हठि दोष लगावति तात गये गृहतामहिं ।
हरिमुख निरखि परुषवानी सुनि अधिक अधिक अभिरामहिं ।
तुलसिदास प्रभु देख्योइ चाहति श्रीउरललित ललाम-
हि ॥ ५ ॥ अब सब साँची कान्ह तिहारी । जौं हम तजे पाइ
गौं मोहन गृह आए दैगारी । मुसुकि सभीत सकुचि रूखेमुख वा-
तैं सकल सवाँरी । साधुजानि हँसि हृदय लगाए परमप्रीति मह-
तारी । कोटिजतन करि शपथ कहैं हम माने कौन हमारी ॥ तुमहिं
विलोकि आनकी ऐसी क्यों कहिहै वरनारी । जैसे हौ तैसे सुखदा-
यक ब्रजनायक बलिहारी । तुलसिदास प्रभु मुखछवि निरखत मन
सब जुगुति बिसारी ॥६॥ (राग केदारा) ॥ महरि तिहारे पाँयपरौं
अपनो ब्रज लीजै। सहि देख्यो तुम्हसों कह्यो अब नाकहि आई कौ-
न दिनहु दिन छीजै।ग्वालिनि तौ गोरस सुखी ताविनु क्यों जीजै ॥
सुत समेत पाउँ धारिये आपुहि भवन मेरे देखिये जो न पतीजै ।
अतिअनीति नीकी नहीं अजहूं सिख दीजै । तुलसिदास प्रभुसों कहैं
उरलाइ यशोमति ऐसी बलि कबहूं नहिं कीजै ॥ ७ ॥ अबहिं ओर-
हनो देगई बहुरो फिरिआई । सुनु मैया तेरीसौं करौं याकी टेंव ल-
रनकी सकुच बेंचिसी खाई ॥ या ब्रजमें लरिका घने होंहिं अन्याई ।
मुँहलाये मूड़हि चढी अंतहु अहिरिनि तू सूधी करि पाई। सुनि सु-

तकी अतिचातुरी यशुमति मुसुकाई। तुलसिदास ग्वालिनि ठगी आयो न उतर कछु कान्ह ठगौरी लाई ॥ ८ ॥ (राग गौरी) ॥ अब ब्रजबास महरि किमि कीबो ॥ दूध दहिउ माखन ढारतहैं हुँतो पोसात दान दिन दीबो। अबतो कठिन कान्हके करतब तुम्हहो हँसति कहा कहि लीबो। लीजै गाँउ नाउँले रावरो है जग ठाउँ कहूँ ह्वै जीबो। ग्वालिवचन सुनि कहति यशोमति भलो न भूमि पर बादर छीबो। दैआहि लागि कहो तुलसी प्रभु अजहुँ न तजत पयोधर पीबो॥ ९ ॥ जानीहै ग्वालि परी फिरि फीके॥मातुकाज लागी लखि डाटत है बायनो दियो घरनीके। अब कहिदेउँ कहति किन यों कहि माँगत दहिउ धरयौ जो है छीके॥तुलसी प्रभुमुख निरखि रही चकि रह्यो न सयानप तन मन तीके ॥ १० ॥ जौलौं हौं कान्हरहौं गुणगोए। तौलौं तुम्हहिं पत्यात लोग सब सुसुकि सभीत साँचुसो रोए। हो भले नग फग परे गढीवे अब ए गढत महरि मुख जोए। चुपकि न रहत कह्यो कछु चाहत ह्वैहै कीच कोठिला धोए। गरजति कहा तरज जिन्ह तरजत वरजत सयन नयनके कोए ॥ तुलसी मुदित मातु सुत गति लखि विथकी है ग्वालि मैन मन मोए॥ ११॥ भूलि न जात हों काहूके काऊ। साखि सखा सब सुबल सुदामा देखिधौं बूझि बोलि बलदाऊ।यह तो मोहिं खिझाइ कोटि विधि उलटि विवादन आइ अगाऊ। याहि कहा मैया मुँह लावति गनति कि एक लँगरि झगराऊ। कहति परस्पर वचन यशोमति लखि नहिं सकति कपट सतिभाऊ। तुलसिदास ग्वालिनि अति नागरि नट नागरमणिनंदललाऊ॥ १२ ॥ छाँड़ो मेरे ललित ललन लरिकाई ॥ ऐहैं सुत देखुवार कालि तेरे बबै व्याहकी बात चलाई । डरिहैं सासु ससुर चोरी सुनि हँसिहै नई दुलहिया सुहाई । उबटौं न्हाहु गुहौं चोटिया बलि देखि भलो वर करिहिं बड़ाई। मातु कह्यो करि कहत बोलिदै भइ बडि वार कालितो न आई। जब सोइबो तात यों हाँकहि नयन मीचि रहे पौढ़ि कन्हाई। उठिकह्यो भोरभयो झँगुलीदै मुदित महरि लखि आतुरताई। बिहँसीग्वालि जानि तुलसी

प्रभु सकुचि लगे जननी उर धाई ॥ १३ ॥ (राग केदारा) ॥ हरि-को ललितवदननिहारु । निपटहिँ डाटति निठुर जौं लकुट करते डारु॥मंजु अंजन सहित जल कण चुवत लोचनचारु । श्यामसारस मग मनो शशि स्रवत सुधा शृंगारु । सुभग उर दधि बुंद सुंदर लखि अपनपौ वारु । मनहुँ मरकत मृदु शिखर पर लसत विशद तुषारु । कान्हहू परसतर भौहें महरि मनहिं विचारु । दासतुलसी रहति क्यों रिस निरखि नंदकुमारु ॥ १४ ॥ लेत भरि भरि नीर कान्ह कमलनैन । फरक अधर डर निरखि लकुट कर कहि न सकत कछु बैन । दुसह दावरी छोरि थोरी खोरि कहा कीन्हो चीन्होरी सुभाय तेरो आजु लगे माई गैन । तुलसिदास नंदललन ललित लखि रिस क्यों रहति उर ऐन ॥ १५ ॥ हाहारी महरि वारो कहा रिसवश भई कोखिके जाए सों रोषु केतो बड़ो कियोहै । ढीलीकरि दावरी बावरी साँवरेह देखि सकुचि सहमि शिशु भारी भय भियोहै । दूध दधि माखन भौ लाखन गोधन धन जबते जनम हलधर हरि लियोहै । खायो कै खवायो कै बिगारचो ढारचो लरिकारी ऐसे सुतपर कोहु कैसो तेरो हियोहै।सुनिकहैं सुकृती न नंद यशोमति सम न भयो न भावी नाहिं विद्यमान वियोहै।कौन जाने कौन तप कौने योग जाग जप कान्हसो सुवन तो को महादेव दियोहै । इन्हहींके आएते बधाये ब्रज नित नये नांदत बाढ़त सब सब सुख जियोहै । नंदलाल बालजस संत सुर सरवस गाइसो अमिय रस तुलसिहु पियोहै ॥ १६ ॥ ललित लाल निहारि महरि मन विचारि डारिदे घर वसी लकुट वेगि करते।कछु न कहि सकत सुसुकत सकुचत डर हूँको डर कान्ह डरै तेरे डरते॥कह्यौ मेरो मानि हित जानि तू सयानी बड़ी बड़ेभाग्य पायो पूत विधि हरि हरते॥ताहि बांधिवेकों धाई ग्वालिनी गोरस हाँई लै लै आईं बावरी दावरी घर घर ते ॥ कुलगुरु तियके वचन कमनीय सुनि सुधिभए वचन जे सुनि मुनिवरते। छोरि लिये लाये उर वरषै सुमन सुर मंगलहै तिहूँ पुर हरि हलधर ते । आनंद बधावनो मुदित गोप गोपीगण आजु परी कुश-

ल कठिन करवरते। तुलसी जे तोरे तरु किए देव दिये वरु कै न लह्यौ कौन फरु देव दामोदरते ॥१७॥(राग मलार)॥ब्रजपर घन घमण्ड करि आये॥अति अपमान विचारि आपनो कोपि सुरेश पठाए। दमकति दुसह दशहुदिशि दामिनि भयो तम गगन गँभीर। गरजत घोर वारिधर धावत प्रेरित प्रबल समीर॥ वार वार पविपात उपल घन वरषत बूंद विशाल। सीत सभीत पुकारत आरत गो गोसुत गोपी ग्वाल। राखहु राम कान्ह यहि अवसर दुसह दशा भइ आइ॥ नंद विरोध कियो सुरपतिसों सो तुम्हरो बलपाइ। सुनि हँसिउठ्यौ नंदको नाहरु लियो कर कुधर उठाइ॥ तुलसिदास मघवा अपने सों करिगयो गर्ब गँवाइ॥ १८ ॥ (राग गौरी)॥ टेरि कान्ह गोवर्धन चढ़ि गैया॥ मथि मथि पियो वारि चारिक में भूषण ज्योति अघाति न धैया॥शैल शिखर चढ़ि चितै चकित चित अति हित वचन कह्यो बलभैया। बाँधि लकुट पट फेरि बोलाई सुनि कलवेणु धेनु धुकि धैया। बलदाऊ देखियत दूरिते आवति छाक पठाई मेरी मैया॥ किलकि सखा सब नटत मोर ज्यों कूदत कपि कुरंगकी नैया। खेलत खात परस्पर डहँकत छीनत कहा करत रोगदैया। तुलसी बालकेलि सुख निरखत वरषत सुमन सहित सुरसैया॥ १९ ॥ (राग नट)॥ गावत गोपाल लाल नीके राग नटहैं। चलि री आली देखन लोयन लाहु पेखन ठाढ़े सुरतरु तर तटिनीके तटहैं। मोरचंदा चारु शिर मंजु गुंजा पुंज धरे वनि वनधातु तन ओढ़े पीतपटहैं। मुरली तान तरंग मोहे कुरंग विहंग जोहैं मूरति त्रिभंग निपट निकट हैं। अंबर अमर हरषत वरषत फूल सनेह सिथिल गोप गाइन्हके ठटहैं। तुलसी प्रभु निहारि जहाँ तहाँ ब्रजनारि ठगी ठाढ़ी मगलिये रीते भरे घटहैं॥ २० ॥ (राग विलावल)॥ देखु सखी हरिवदन इंदु पर॥ चिक्कन कुटिल अलक अवली छवि कहि न जाइ शोभा अनूप वर। बालभुअंगिनि निकर मनहुँ मिलि रही घेरि रस जानि सुधाकर। तजि न सकहिं नहिं करहिं पान कहो कारन कौन विचारि डरहिं डर। अरुण वनज

लोचन कपोल शुभ श्रुति मंडित कुंडल अतिसुंदर। मनहु सिंधु निज सुतहि मनावन पठए युगुल वसीठ वारिचर॥नँदनंदन मुखकी सुंदरता कहि न सकत श्रुति शेष उमावर। तुलसिदास त्रैलोक्य विमोहन रूप कपट नर त्रिविध शूलहर ॥ २१ ॥ आजु उनींदे आए मुरारी ॥ आलसवंत सुभग लोचन सखि छिन मूँदत छिन देत उघारी। मनहु इंदु पर खंजरीट दोउ कछुक अरुण विधि रचे सँवारी। कुटिल अलक जनु मार फंद कर गहे सजग ह्वै रह्यो संभारी। मनहुँ उड़न चाहत अति चंचल पलक पंखछिन देत पसारी॥ नासिक कीर वचन पिक सुनिकरि संगति मनु गुनि रहति विचारी। रुचिर कपोल चारु कुंडल वर भ्रुकुटि शरासन की अनुहारी। परमचपल तेहि त्रास मनहु खग प्रगटत दुरत न मानत हारी। यदुपति मुख छवि कलप कोटि लगि कहि न जाइ जाके मुखचारी। तुलसिदास जेहि निरखि ग्वालिनी भजीं तात पति तनय विसारी ॥२२॥ (राग गौरी)॥ गोपाल गोकुल वल्लवी प्रिय गोप गोसुत वल्लभं। चरणारविंद महं भजे भजनीय सुर मुनि दुर्लभं। घनश्याम काम अनेक छवि लोकाभिराम मनोहरं। किंजल्क वसन किशोर मूरति भूरि गुण करुणाकरं॥ शिर केकिपक्ष विलोल कुंडल अरुण वनरुह लोचनं। गुंजावतंश विचित्र सब अंग धातु भवभय मोचनं। कच कुटिल सुंदर तिलक भ्रू राका मयंक समाननं। अपहरण तुलसीदास त्रास विहार वृंदाकाननं॥ २३॥ (राग विलावल)॥ बिछुरत श्रीब्रजराज आजु इन नयनकी परतीति गई॥उड़ि न लगे हरि संग सहज तजि ह्वै न गए सखि श्याममई। रूपरसिक लालची कहावत सो करनी कछु तो न भई।साँचेहु कूर कुटिल सित मेचक बृथा मीनछवि छीनिलई। अब काहे सोचत मोचत जलसमय गए चित शूल नई। तुलसिदास तव अजहुँसे भए जड जब पलकनि हठि दगादई॥२४॥(राग कान्हरा)॥ नहिं कछु दोष श्यामको माई। जो दुख मैं पायो सुन सजनी सोतो सबै मनकी चतुराई॥निजहित लागि तबहिं ए वंचक सबअंगनि व-

सि प्रीति बढ़ाई।लियो जो सकल सुख हारि अंग संगको जहँ जीहि विधि तहँ सोइ बनाई।अब नंदलाल गवन सुनि मधुवन तनहिं तजत नहिं बार लगाई। रुचिर रूप जल मोर शेश ह्वै मिलि न फिरनकी बात चलाई। एहि शरीर वसि सखि वा सठकहु कहि न जाइ जो निधि फवि आई। तदपि कछू उपकार न कीन्हो निज मिलन्यो न-हिं मोहि सिखाई। आपु मिल्यो ओहि भाँति जाति ताजि तन मिलयो जल पयकी नाई। ह्वै मराल आयो सुफलकसुत लैगयो क्षीर नीर विलगाई। मन हौं तजी कान्ह हौ त्यागी प्राणो चलि हैं परमिति पाई। तुलसिदास रीतेहु तनु ऊपर नयनन की ममता अधिकाई॥ २५॥ (राग धनाश्री)॥ करीहै हरि बालक की सी केलि। हरष न रचत विषाद न विचरत डगरि चले हँसिखेलि। बई बनाइ वारि वृंदावन प्रीति सजीवनि बेलि। सींचि सनेहसुधा ख-नि काढ़ी लोक वेद पर हेलि। तृण ज्यों तजी पालितनु ज्यों हम विधि वासव बल पेलि। एतेहुँ पर भावत तुलसी प्रभु गए मोहनी मेलि॥ २६॥ आली अब कहो निज नेह निहारि। समुझे सदै ह-मारो है हित विधि वामता विचारि॥सत्यसनेह शील शोभा सुख स-ब गुण उदधि अघारि॥देख्यो सुन्यो न कबहुँ काहु कहुँ मीन वियो-गी वारि। कहियत काकु कूबरीहूँको सो कुवाणि वश नारि। विष ते विषम विनय अनहित की सुधासनेही गारि। मन फेरियत कुतर्क कोटि करि कुबल भरोसे भारि॥ तुलसी जग दूजो न देखियत कान्हकुवँर अनुहारि॥ २७॥ लागीये रहति नयननि आगेते न टरति मोहनमूरति॥ नीलनलिन श्याम शोभा अगणित काम पावन हृदय जेहि उर फूरति॥शारद अमित शेष नहिं कहि सकत अंग अंग सूरति॥तुलसिदास बड़े भाग्य मन लागेहुते सबसुख पूरति॥२८॥ जबते ब्रजताजिगए कन्हाई।तबते विरह रवि उदित एकरस सखि वि-छुरनि वृषपाई॥घटत न तेज चलत नाहिंन रथ रह्यो उर नभ पर छा ई॥इंद्रिय रूपराशि सोचहिं सुठि सुधि सबहीकी बिसराई।भए विशो-क शोक कोक कोकनद भ्रम भ्रमरनि सुखदाई। चित चकोर मनमोर

कुमुद मुद सकल विकल अधिकाई॥तनु तडाग बलवारि सूखनला-
ग्यो परि कुरूपता काई॥ प्राणमीन दिनदीन दूबरे दशा दुसह अब
आई॥तुलसीदास मनोरथ मनमृग मरत जहाँ तहँ धाई । रामश्या-
म सावन भादौं विनु जियकी जरनि न जाई ॥ २९ ॥ शशिते शी-
तल मोक लागै माइरी तरनि ॥ याके उए वरति अधिक अँग अँ-
ग दावाके उए मिटति रजनि जनित जरनि॥सब विपरीत भए मा-
धौ विनु हित जो करत अनहित सतकी करनि॥तुलसिदास श्याम
सुंदर विरहकी दुसह दशा सो मोपै परति नहीं वरनि ॥ ३० ॥ सं-
तत दुखद सखी रजनीकर ॥ स्वारथरत तव अबहुँ एकरस मोको
अब कबहुँ न भयो तापहर ॥ निज अंशिक सुख लागि चतुर अति
कीन्हींहै प्रथम निशा शुभ सुंदर॥अब विनु मन तन दहत दयातजि
राखत रवि ह्वै नयन वारिधर ॥ यद्यपिहै दारुण वड़वानल राख्योहै
जलधि गँभीर धीरतर॥ताहूते परम कठिन जान्यो शशि तज्यो पि-
ता तव भयो व्योम चर॥सकल विकार कोस विरहिनि रिपु काहेते
याहि सराहत सुर नर॥तुलसिदास त्रैलोक्य मान्य भयो कारण इहै
गह्यौ गिरिजावर ॥ ३१ ॥ (राग मलार) ॥ कोउ सखि नई चाह
सुनि आई॥यह ब्रजभूमि सकल सुरपति सों मदन मिलिक करिपाई॥
घन धावन वगपाँति पटोसिर वैरख तडित सोहाई॥बोलत पिक न-
कीब गरजनि मिस मानहुँ फिरति दोहाई॥चातक मोर चकोर मधु-
प शुक सुमन समीर सहाई॥चाहत कियो वास वृंदावन विधिसों क-
छु न बसाई ॥ सींव न चाँपि सकी काहू तब जब हुते राम कन्हाई॥
अब तुलसी गिरिधर विनु गोकुल कौनु करिहि ठकुराई ॥ ३२ ॥
॥ (राग सोरठ) ॥ ऊधौ या ब्रजकी दशा विचारो ॥ तापाछे यह
सिद्धि आपनी योगकथा विस्तारो ॥ जाकारन पठए तुव माधव सो
सोचहु मनमाहीं॥केतिक वीच विरह परमारथ जानतहौ किधौं नाहीं॥
परमचतुर निजदास श्यामके संतत निकट रहतहौ॥जलबूडत अव-
लंब फेन को फिरि फिरि कहा कहतहौ॥वह अतिललित मनोहर आ-
नन कौने जतन विसारौं । योग जुगुति अरु मुकुति विविध विधि

वा मुरलीपर वारों।जेहि उर वसत श्याम सुंदरघन तेहि निर्गुण कैसे आवै। तुलसिदास सो भजन बहावो जाहि दूसरोभावै ॥ ३३ ॥ मधुकर कहहु कहन जो पारो ॥ नाहिंन बलि अपराध रावरो सकुचि साध जनि मारो ॥ नहिं तुम ब्रजवासि नंदलालको बालविनोद निहारो ॥ नाहिंन रासरसिक रसचाख्यो तातें डेलसो डारो॥ तुलसी जौ न गए प्रीतमसँग प्राणत्यागि तनु न्यारो॥तौ सुनिबो देखिबो बहुत अब कहा कर्म सों चारो ॥ ३४ ॥ ऊधोजू कह्यो तिहारोइ कीबो।नीके जियकी जानि अपनपौ समुझि सिखावन दीबो। श्यामवियोगी ब्रजके लोगनि योग योग्य जो जानो । तौ सकोच परिहरि पालागौं परमारथहि बखानो । गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब रहत रूप अनुरागे । दीन मलीन छीन तनुडोलत मीन मजाँसो लागे ॥ तुलसी है सनेह दुखदायक नहिं जानत ऐसो कोहै । तऊ न होत कान्हको सो मन सबै साहिबहि सोहै ॥ ३५ ॥ (रागविलावल)॥ सो कहो मधुप जो मोहन कहि पठई । तुम सकुचत हौहीं नीके जानति नँदनंदन हो निपट करी शठई। हुतो न साँचो सनेह मिटयो मनको सँदेह हरि परे उघरि संदेशहु ठठई। तुलसिदास को न आश मिलनकी कहि गए सो तौ कछु एकौ न चितठई ॥ ३६ ॥ मेरे जान और कछु न मन गुनिए । कूवरीरवनकान्ह कही जो मधुप सों सोई सिख सजनी सुचित दै सुनिए।काहेको कराति रोष देहैं धों कौने को दोष निज नयननिको वयो सब लुनिए। दारु शरीर कीट पहिले सुख सुमिरि सुमिरि बासर निशि घुनिये॥ येसनेह शुचि अधिक अधिक रुचि वरज्यो न करत कितो शिर धुनिये॥तुलसिदास अब नंदसुवनहित विषम वियोग अनल तनु हुनिये ॥ ३७ ॥ भली कही आली हमहुँ पहिचाने । हरि निर्गुण निर्लेप निरापने निपट निठुर निज काज सयाने । ब्रजको विरह अरु संग महरको कुबरिहि वरत न नेकु लजाने। समुझि सो प्रीति कि रीति श्यामकी सोइ बावरि जो परेखो उर आने । सुनत न सिख लालची विलोचन एतेहु पर रुचि रूप लोभाने ॥ तुलसिदास इहै अधिक कान्हपहि नीकेइ लागत मन रहत समाने ॥ ३८ ॥ (राग मलार)॥ जोपै अलि अंत इहै करिबेहो॥तौ अतुलित अहीर अबलनिको हठि न हियो हरि-

वेहो।जो प्रपंच परिणाम प्रेम फिरि अनुचित आचरिवेहो।तौ मथुरहि महामहिमा लहि सकल ढरनि ढरिवेहो।दै कुवरिहि रूप ब्रजसुधि भये लौकिक डर डरिवेहो। ज्ञान विराग काल कृत करतव हमरेहि शिर धरिवेहो। उन्हहिं राग रवि नीरद जल ज्यों प्रभु परमित परिवेहो। हमहुँ निठुर निरुपाधि नेहनिधि निज भुजबल तरिवेहो । भलो भयो सब भाँति हमारो एकबार मरिवेहो ॥ तुलसी कान्हविरह नित नवजर जरि जीवन भरिवेहो ॥ ३९ ॥ ऊधो यह ह्यां न कछू कहिवेही ॥ ज्ञानगिरा कूवरीरवनकी सुनि विचारि गहिवेही ॥ पाइ रजाइ नाइ शिर गृहह्वै गति परमिति लहिवेही। मति मटुकी मृगजल भरि घृतहित मनहीं मन महिवेही॥ गाड़े भली उखारे अनुचित बनिआये बहिवेही। तुलसी प्रभुहिं तुम्हहिं हमहूँ हिय शासति सी सहिवेही॥ ४० ॥ मधुकर कान्ह कही ते न होहीं ॥ कै ये नई सिखी सिखई हरि निज अनुराग बिछोहीं । राखी सचि कूवरी पीठ पर ये बातें वकुचोहीं । श्यामसों गाहक पाइ सयानी खोलि देखाइहै गोही। नागरमणि शोभासागर जेहि जग युवती हँसि मोही । लियोरूप दै ज्ञान गांठरी भलो ठग्यो ठगु वोही॥है निर्गुन सारी वारिकवलि घरी करो हम जोही । तुलसी येनागरिन्ह योगपट जिन्हहिं आजु सब सोही॥४१॥मधुप तुम्ह कान्हहींकी कही क्यों न कहीहै ॥ यह बतकही चपल चेरीकी निपट चरेरीऐरहीहै ॥ कब ब्रज तज्यो ज्ञान कब उपज्यो कब विदेहता लहीहै ॥ गये बिसारि रीति गोकुलकी अब निर्गुन गति गहीहै ॥आयसु देहु करहिं सोइ शिर धरि प्रीति परमिति निरवहीहै ॥ तुलसी परमेश्वर न सहैगो हम अबलनि सब सहीहै ॥ ४२ ॥ दीन्हींहै मधुप सबहि सिख नीकी ॥ सोइ आदरो आश जाके जिय वारि विलोवत घीकी । बूझीबात कान्ह कुवरीकी मधुकरहू जनिपूछो। ठालीं ग्वालि जानि पठये अलि कह्योहै पछोरन छूछो। हमहूँ कछुक लखीही तबकी औरेवै नंदललाकी॥ येअबलही चतुर चेरीपै चोखी चालि चलाकी । गये करते घरते आँगनते ब्रजहूते ब्रजनाथ ॥ तुलसी प्रभु गयो चहत मनहुँते सोतोहै हमारे हाथ॥४३॥ताकी सिख ब्रज न सुनैगो कोउ भोरे॥जाकी कहनि रहनि अनमिल अलि सुनत समुझियत थोरे ॥ आपु कंजमकरंद

सुधाह्रद हृदय रहत नित बोरे ॥ हमसों कहत विरह श्रम जैहै गगन कूप खनि खोरे। धानको गाँव पयार जानियत ज्ञान विषय मनमोरे ॥ तुलसी अधिक किए न रहेगो रसगूलरि को सो फल फोरे ॥४४॥ आली अति अनुचित उतरु न दीजे ॥ सेवक सखा सनेही हरिके जो कछु कहें सो कीजे ॥ देश काल उपदेश सँदेसो सादर सब सुनिलीजे ॥ के समुझिवो किए समुझैहै हारेहु मानि सहीजे ॥ सखिसरोष प्रियदोष विचारत प्रेमपीनपन छीजे ॥ खग मृग मीन सलभ सरसिज गति सुनि पाहनौ पसीजै ॥ ऊधो परमहितू हित सिखवत परमिति पहुँचि पतीजे ॥ तुलसिदास अपराध आपनो नंदलाल विनु जीजै॥४५॥ऊधौहैं बड़े कहें सोइ कीजे ॥ अलि पहिचानि प्रेमकी परमिति उतरु फेरि नहिं दीजे ॥ जननी जनक जरठ जानै जन परिजन लोगु न छीजे । दै पठयो पहिलो विढतो ब्रज सादर शिर धरिलीजै ॥ कंस मारि यदुवंश सुखी कियो श्रवण सुयश सुनि जीजे ॥ तुलसी त्यों त्यों होइगी गरुई ज्यों ज्यों कामरि भीजे ॥ ४६ ॥ कान्ह अलि भए नए गुरु ज्ञानी ॥ तुम्हरे कहत आपने समुझत बात सही उर आनी ॥ लिए अपनाइ लाइ चंदनतन कछु कटु चाह उड़ानी ॥ जरीं सुघाइ कूवरी कौतुक करि योगीबधा जुडानी ॥ ब्रजबसि रासविलास मधुपुरी चेरीसों रतिमानी॥योग योग ग्वालिनीवियोगिनि जान शिरोमणि जानी ॥कहिबे कछू कछू कहि जैहे रहो आलि अरगानी ॥ तुलसी हाथ पराए प्रीतम तुम्ह प्रियहाथ विकानी ॥ ॥ ४७ ॥ सबमिलि साहस करिय सयानी ॥ ब्रज आनियहि मनाइ पाँयपरि कान्ह कूवरी रानी ॥ वसै सुवास सुपास होहि सब फिरि गोकुल रजधानी ॥ महरि महर जीवहिं सुख जीवन खुलहि मोदमणि खानी ॥ तजि अभिमान अनख अपनोहित कीजिय मुनिवर वानी ॥ देखिवो दरश दूसरेहु चौथेहु बड़ोलाभ लघुहानी ॥ पावक परत निषिद्ध लाकरी होत अनल जगजानी ॥ तुलसी सो तिहुँभुवन गाइवी नंदसुवन सनमानी ॥ ४८ ॥ कहीहै भली बात सबके मनमानी ॥ प्रियसम प्रियसनेह भाजन सखि प्रीति रीति जगजानी ॥ भूषण भूति गरल परिहरिकै हरमूरति उरआनी ॥ मज्जनपानकियो कै सुरसरि

कर्मनाश जल छानी॥पूछसों प्रेम विरोध सींग सों यहिविचार हितहा-
नी॥कीजे श्याम कूवरीसों नित नेह करम मन वानी ॥ तुलसी तजिय
कुचालि आलि अब सुधरै सबइ नसानी ॥आगेकारि मधुकर मथुराकहँ
सोधिय सुदिन सयानी ॥ ४९ ॥ (राग कान्हरा) ॥ हे हम समा-
चार सबपाए ॥ अब विशेष देखे तुम्ह देखेहैं कुवरी कहाँसे लाए ॥ म-
थुरा बड़ो नगर नागरजन जिन्हजातहि यदुनाथ पठाए ॥ समुझि रह-
नि सुनि कहनि विरह व्रण अनष अमिय ओषध सरुहाए ॥ मधुकर
रसिकशिरोमणि कहियत कौने यह रसरीति सिखाए ॥ विनु आषर
को गीतगाइगाइ चाहत ग्वालिनि ग्वाल रिझाए ॥ फल पहिलेही लह्यो
ब्रजवासिन्ह अब साधन उपदेशन आए ॥ तुलसी अलि अजहूँ
नहिं बूझत कौनहेतु नँदलाल पठाए ॥ ५० ॥ कौन सुनै अलिकी
चतुराई ॥ अपनिहि मति विलास अकाशमहँ चाहत सियनि चलाई ॥
सरल सुलभ हरिभक्ति सुधाकर निगम पुराणनि गाई॥ तजि सोइ सुधा
मनोरथ करिकरि को मरिहैरी माई ॥ यद्यपि ताके सोइ मारगप्रिय जा-
हि जहाँ बनिआई॥मैनके दशन कुलिशके मोदक कहतसुनत बौराई॥
सगुन क्षीरनिधि तीरवसत ब्रज तिहुँपुर विदित बड़ाई ॥ आक दुहन
तुम्ह कह्यो सो परिहरि हम यह मति नहिं पाई ॥ जानतहैं यदुनाथ
सबनकी बुधिविवेक जड़ताई।तुलसिदास जनि बकहिं मधुप शठ हठ
निशिदिन अवराई ॥५१॥ (राग केदारा) ॥ गोकुल प्रीति नितनई
जानि।जाइ अनत सुनाइ मधुकर ज्ञानगिरा पुरानि ॥ मिलहिं योगी
जरठ तिन्हहिं दिखाउ निरगुण खानि ॥ नवलनंदकुमारके ब्रज स-
गुन सुयश बखानि ॥ तूजो हम आदरयो सोतो नवकमलहीकी
कानि ॥ तजहिं तुलसी समुझि एह उपदेशिवेकी बानि ॥ ५२ ॥ का-
हेको कहत बचन सवाँरि ॥ ज्ञानगाहक नाहिंने ब्रज मधुप अनत
सिधारि ॥ जुगुति धूम बघारिवेको समुझिहैं न गँवाँरि ॥ योगिजन
मुनिमंडलीमें जाइ रीती ढारि ॥ सुनै तिन्हकी कौन तुलसी जिन्ह-
हिं जीति न हारि ॥ सकाति खारो कियो चाहत मेघहूको वारि ॥५३॥
ऐसे हौंहूँ जानति भृंग॥नाहिंने काहू लह्यो सुख प्रीतिकरि इक अंग ॥
कौनभीर जो नीरदहि जेहि लागि रटत विहंग ॥ मीन जलविनु

तलफि तनुतजै सलिल सहज असंग ॥ पीर कछू न मनहिं जाके विरह विकल भुअंग ॥ व्याध विशिष विलोक नहिं कलगान लुब्ध कुरंग॥ श्यामघन गुनवारि छबिमणि मुरलि तान तरंग॥ लग्यो मन बहुभाँति तुलसी होइ क्यों रसभंग ॥ ५४ ॥ ऊधो प्रीति करि निरमोहियनसों को न भयो दुखदीन ॥सुनत समुझत कहत हम सब भई अति अप्रवीन॥अहिकुरंग पतंग पंकज चोर चातक मीन॥ बैठि इन की पाँति अब सुख चहत मन मतिहीन ॥ निठुरता अरु नेहकी गति कठिन परति कहीन ॥ दास तुलसी सोचनित निजप्रेम जानि मलीन ॥ ५५ (रागगौरी) ॥ सुनत कुलिशसम वचन तिहारे॥ चितदै मधुप सुनहु सोउ कारण जाते जात न प्राणहमारे ॥ ज्ञान कृपान समान लगत उर विहरत छिन छिन होत निनारे॥अवधि जरा जोरति हठि पुनि पुनि याते तनु रहत सहत दुखभारे ॥ पावक विरह समीर श्वासतनु तूलमिले तुम्ह जारनिहारे॥तिन्हहिं निदरि अपनेहित कारण राखत नयननि पुनि रखवारे ॥ जीवत कठिन मरन की यह गति दुसह विपति ब्रजनाथ निवारे॥तुलसिदास यह दशा जानिजिय उचितहोइ सो कहो अलिप्यारे ॥ ५६ ॥ छपदसुनहु वर वचन हमारे ॥ विनुब्रजनाथ ताप नयननकी कौनहरै हरिअंतरकारे ॥ कनककुंभ भरि भरि पियूषजल बरषत शक्र कलपशत हारे॥ कदलि सीप चातकको कारज स्वाति वारिविनु कोउ न सँवारे ॥ सब अँग रुचिर किशोर श्यामघन जेहि हृदि जलज बसत हरिप्यारे॥ तेहिउर क्यों समात विराटवपु सोमहि सरित सिंधु गिरि भारे॥ बढ़्यौ अतिप्रेम प्रलयके वट ज्यौं विपुल योगजल बोरि न पारे ॥ तुलसिदास ब्रजवनितनको व्रत समरथको करि जतन निवारे ॥ ॥ ५७ ॥ मधुप समुझि देखहु मनमाहीं ॥ प्रेमपियूषरूप उड़पति विनु कैसे हौं अलि पैयत रविपाहीं ॥ यद्यपि तुमहितलागि कहत सुनि श्रवण वचन नाहिं हृदय समाहीं ॥ मिलहिं न पावक महँ तुषार कण जो खोजत शतकलप सिराहीं ॥ तुम कहिरहे हमहुँ पचिहारी लोचनहठी तजत हठनाहीं ॥ तुलसिदास सोइ जतन करहु कछु वारकश्याम इहाँ फिरि जाहीं ॥ ५८ ॥ मोको अब नयनभए रिपु

माई ॥ हरिवियोग तनुतजेहि परमसुख ए राखहिं सोइहै बरियाई ॥ वरु मनकियो बहुतहित मेरो बारहिंबार कामदव लाई ॥ बरषि नीर एतबहिं बुझावहिं स्वारथ निपुण अधिक चतुराई ॥ ज्ञानपरशु दै मधुप पठायो विरहवेलि कैसेहु कहिजाई॥सो थाक्यौ बरहचों एकहि तकदेखत इन्हकी सहज सिचाई ॥ हारतहू न हारिमानत सखि शठ सुभाव कंदुककी नांई ॥ चातक जलज मिनहुँते भीरे समुझत नहिं उन्हकी निठुराई ॥ एहठनिरत दरशलालचवश परे जहाँ बुधिबल न वसाई ॥ तुलसिदास इन्हिपर जो द्रवहिंहरि तौ पुनि मिलौं वयरु विसराई ॥ ५९ ॥ (राग आसावरी) ॥ कहाभयो कपटजुआँ जो हौं हारी॥ समरधीर महावीर पाँचपति क्यौं देहैं मोहिं होन उघारी ॥ राजसमाज सभासद समरथ भीषम द्रोण धर्मधुरधारी॥अबला अनघ अनवसर अनुचित होति हेरि करिहैं रखवारी ॥ यों मनगुनति दुशासन दुरजन तमक्यो तकि गहि दुहुँकर सारी ॥ सकुचि गात गोवति कमठी ज्यौं हहरी हृदय विकल भइ भारी ॥ अपनेनिको अपनो विलोकिबल सकल आश विश्वास विसारी ॥ हाथउठाइ अनाथ नाथसों पाहिपाहि प्रभु पाहि पुकारी ॥ तुलसी परखि प्रतीति प्रीतिगति आरतपाल कृपालुमुरारी ॥ वसनवेष राखी विशेषिलखि विरदावलि मूरति नरनारी ॥६०॥ गहगह गगनदुंदुभी बाजी ॥ बरषि सुमन सुरगण गावतयश हरष मगनमुनि सुजन समाजी ॥ सानुज सगण ससचिव सुयोधन भए मुखमलिन खाइखल खाजी ॥ लाज गाज उनवनि कुचालिकलि परी बजाइ कहूँकहुँ गाजी ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपदतनयाकी भली भूरि भय भभरि न भाजी ॥ कहि पारथं सारथिहि सराहत गई बहोरि गरीब निवाजी ॥ शिथिल सनेह मुदित मनहींमन वसन वीचविच वधूविराजी ॥ सभासिंधु यदुपति जयमयजनु रमाप्रगटि त्रिभुवनभरि भ्राजी ॥ युग युगजगसाके केशवके शमन कलेश कुसाज सुसाजी ॥ तुलसीको न होइ सुनि कीरति कृष्णकृपालु भगतिपथ राजी ॥ ६१ ॥

इति श्रीगुसाईंतुलसीदासजीविरचितंकृष्णगीतावलीसंपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ ॥

श्रीसीता रामचन्द्राभ्यांनमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

रामाज्ञा प्रश्न ।

जो

श्रीहरिपदपद्मपरागलुब्धक भगवतविश्वासी संत महंत गृहस्थ तथा सबी हरिभक्तजनोंको अपना २ शुभा शुभ फल जाननेके लिये आईना (दर्पण) है

जिसको

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

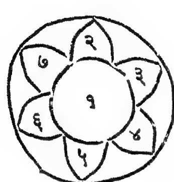
बंबई

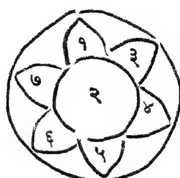
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें छापकर

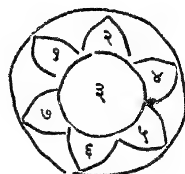
प्रकट किया ।

आषाढ संवत् १९५१

श्रीसीतारामजी।







१	२	३	४	५	६	७
२४	२५	२६	२७	२८	२९	८
२३	४०	४१	४२	४३	३०	९
२२	३९	४८	४९	४४	३१	१०
२१	३८	४७	४६	४५	३२	११
२०	३७	३६	३५	३४	३३	१२
१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३

सूचना।

इस प्रश्नके जानने की यह रीति है कि प्रथम ऊपर (अध्याय) के अंकचक्रमें किसी अंकपर अंगुली रक्खो पश्चात् नीचे (दोहा) के अंकचक्रमें किसी अंकपर अँगुली रक्खो तत्पश्चात् जिस अध्यायका जो दोहा हो उसका फल बाँचकर (अपना) हानि लाभ समझलो।

श्रीगणेशायनमः ।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते

रामाज्ञा प्रश्न ।



दोहा

वाणि विनायक अंब रवि, गुरु हर रमा रमेश ॥
सुमिरि करहु सबकाज शुभ, मंगल देश विदेश ॥ १ ॥
गुरु सरसइ सिंधुरवदन, शशि सुरसरि सुरगाइ ॥
सुमिरि चलहु मग मुदितमन, होइहि सुकृत सहाइ॥ २ ॥
गिरा गौरि गुरु गणप हर, मंगल मंगल मूल ॥
सुमिरत करतल सिद्धि सब, होइ ईश अनुकूल ॥ ३ ॥
भरत भारती रिपुदवन, गुरु गणेश बुधवार ॥
सुमिरत सुलभ सुधर्म फल, विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥
सुरगुरु गुरु सिय रामगण, राउ गिरा उर आनि ॥
जो कछु करिय सो होइ शुभ, खुलहिं सुमंगलखानि॥ ५ ॥
शुक्र सुमिरि गुरु शारदा, गणप लषण हनुमान ॥
करिय काज सब साज भल, निपटहि नीक निदान ॥ ६ ॥
तुलसी तुलसीराम सिय, सुमिरि लषण हनुमान ॥
काज विचारेहु सोकरहु, दिन दिन बड़ कल्यान ॥ ७ ॥
दशरथ राज न ईति भय, नहिं दुख दुरित दुकाल॥
प्रमुदित प्रजा प्रसन्न सब, सब सुख सदा सुकाल ॥ ८ ॥
कौशल्यापद नाइशिर, सुमिरि सुमित्रापाँय ॥
करहु काज मंगल कुशल, विधि हरि शंभुसहाय ॥ ९ ॥
विधिवश वन मृगया फिरत, दीन्ह अंध मुनि शाप॥
सोसुनि विपति विषाद बड़, प्रजहि शोक संताप॥ १० ॥
सुत हित विनती कीन्हि नृप, कुलगुरु कहा उपाउ ॥
होइहि भल संतान सुनि, प्रमुदित कोशलराउ ॥ ११॥

पुत्र यज्ञ करवाइ ऋषि, रजहिं, दीन्ह प्रसाद ॥
सकल सुमंगल मूलजग, भूसुर आशिरवाद ॥ १२ ॥
राम जन्म घर घर अवध, मंगल गान निसान ॥
शकुन सुहावन होइ सुत, मंगल मोद निधान ॥ १३ ॥
राम भरत सानुज लषण, दशरथ बालक चारि ॥
तुलसी सुमिरत शकुन शुभ, मंगल कहब प्रचारि ॥ १४ ॥
भूप भवन भाइन्ह सहित, रघुवर बाल विनोद ॥
सुमिरत सब कल्याण जग, पगपग मंगल मोद ॥ १५ ॥
करनवेध चूड़ाकरन, श्रीरघुवर उपवीत ॥
समय सकल कल्याणमय, मंजुल मंगल गीत ॥ १६ ॥
भरत शत्रुसूदन लषण, सहित सुमिरि रघुनाथ ॥
करहु काज शुभ साज सब, मिलहिं सुमंगल साथ॥ १७ ॥
राम लषण कौशिक सहित,सुमिरहु करहु पयान ॥
लक्षि लाभ जय जगत यश, मंगल शकुन प्रमान॥ १८ ॥
मुनि मखपाल कृपालु प्रभु, चरणकमल उर आनु ॥
तजहु सोच संकट मिटिहि,सत्य शकुन जिय जानु॥ १९ ॥
हानि मीचु दारिद दुरित, आदि अंत गत बीच ॥
रामविमुख अघ आपने, गए निशाचर नीच ॥ २० ॥
शिला शाप मोचन चरण, सुमिरहु तुलसीदास ॥
तजहु सोच संकट मिटिहि, पूजिहि मनकै आस ॥ २१ ॥
सीय स्वयंवर समउ भल,शकुन साध सब काज ॥
कीरति विजय विवाह विधि,सकल सुमंगल साज॥ २२ ॥
राजत राजसमाज महँ, राम भंजि भवचाप ॥
शकुन सुहावन लाभ बड़, जय पर सभा प्रताप ॥ २३ ॥
लाभ मोद मंगल अवधि, सिय रघुवीर विवाहु ॥
सकल सिद्धिदायक समउ,शुभ सब काज उछाहु ॥ २४ ॥
कोशलपालक बाल उर, सिय मेली जयमाल ॥
सुमउ सुहावन शकुन भल, मुद मंगल सब काल॥ २५ ॥

हरषि विबुध बरषहिं सुमन, मंगल गान निसान ॥
जय जय रविकुल कमल रवि, मंगल मोद निधान ॥ २६ ॥
सतानंद पठये जनक, दशरथ सहित समाज ॥
आए तिरहुति शकुन शुभ, भये सिद्ध सब काज ॥ २७ ॥
दशरथ पूरण परब विधु, उदित समय संयोग ॥
जनकनगर सर कुमुद गण, तुलसी प्रमुदित लोग ॥ २८ ॥
मन मलीन मानी महिप, कोककोकनद वृंद ॥
सुहृद समाज चकोर चित, प्रमुदित परमानंद ॥ २९ ॥
तेहि अवसर रावण नगर, अशकुन अशुभ अपार ॥
होहिं हानि भय मरन दुख, सूचक बारहिं बार ॥ ३० ॥
मधु माधव दशरथ जनक, मिलब राज ऋतुराज ॥
शकुन सुवन नव दल सुतरु, फूलत फलत सुकाज ॥ ३१ ॥
विनय पराग सुप्रेम रस, सुमन सुभग संवाद ॥
कुसुमित काज रसाल तरु, शकुन सुकोकिल नाद ॥ ३२ ॥
उदित भानुकुल भानु लखि, लुके उलूक नरेश ॥
गये गँवाइ गरूरपति, धनु मिस हये महेश ॥ ३३ ॥
चारि चारु दशरथ कुँवर, निरखि मुदित पुर लोग ॥
कोशलेश मिथिलेश को, समउ सराहन योग ॥ ३४ ॥
एक वितान विवाहि सब, सुवन सुमंगल रूप ॥
तुलसी सहित समाज सुख, सुकृत सिंधु दोउ भूप ॥ ३५ ॥
दाइज भयउ अनेक विधि, सुनि सिहाहिं दिशिपाल ॥
सुख संपति संतोष मय, शकुन सुमंगल माल ॥ ३६ ॥
वर दुलहिनि सब परस्पर, मुदित पाइ मन काम ॥
चारु चारि जोरी निरखिं, दुहुँ समाज अभिराम ॥ ३७ ॥
चारिउ कुँवर विवाहि पुर, गवने दशरथ राउ ॥
भये मंजु मंगल शकुन, गुरु सुर शंभु पसाउ ॥ ३८ ॥
पंथ परशुधर आगमन, समय सोच सब काहु ॥
राज समाज विषाद बड़, भयवश मिटा उछाहु ॥ ३९ ॥

रोष कलुष लोचन भ्रुकुटि, पाणि परशु धनु बान॥
काल कराल विलोकि मुनि, सब समाज बिलखान॥ ४० ॥
प्रभुहि सौंपि शारंग मुनि, दीन्ह सुआशिरवाद ॥
जय मंगल सूचक शकुन, राम राम संवाद ॥ ४१ ॥
अवध अनंद बधावनो, मंगल गान निसान ॥
तुलसी तोरन कलश पुर, चँवर पताक वितान ॥ ४२ ॥
साजि सुमंगल आरती, रहस विवस रनिवास ॥
मुदित मातु परिछन चली, उमगत हृदय हुलास ॥ ४३ ॥
करहिं निछावरि आरती, उमगि उमगि अनुराग ॥
वर दुलहिनि अनुरूप लखि, सखी सराहहिं भाग ॥ ४४ ॥
मुदित नगर नर नारि सब, शकुन सुमंगल मूल ॥
जय धुनि मुनि सुर दुंदुभी, बाजहिं बरषहिं फूल ॥ ४५ ॥
आए कोशलपाल पुर, कुशल समाज समेत ॥
समउ सुनत सुमिरत सुखद, सकल सिद्धि शुभदेत॥ ४६ ॥
रूपशील वय वंश गुण, सम विवाह भये चारि ॥
मुदित राउ रानी सकल, सानुकूल त्रिपुरारि ॥ ४७ ॥
विधि हरि हर अनुकूल अति, दशरथ राजहि आजु॥
देखि सराहत सिद्ध सुर, संपति समउ समाजु ॥ ४८ ॥
शकुन प्रथम उनचास शुभ, तुलसी अति अभिराम ॥
सब प्रसन्न सुर भूमिसुर, गोगण गंगा राम ॥ ४९ ॥

अथ द्वितीयोध्याय ॥ २ ॥

समउ राम युवराज कर, मंगल मोद निकेतु ॥
शकुन सुहावन संपदा, सिद्ध सुमंगल हेतु ॥ १ ॥
सुरमायावश कैकयी, कुसमय कीन्हि कुचालि ॥
कुटिल नारि मिस होइ छल, अनभल आजु कि कालि ॥ २ ॥
कुसमय कुशकुन कोटि सम, राम सीय वनवास ॥
अनरथ अनभल अवधि जग, जानब सरवस नास ॥ ३ ॥

शोचत पुर परिजन सकल, विकल राउ रीनवास ॥
छल मलीन मन तीयमिस, विपति विषाद विनाश ॥ ४ ॥
लषण राम सिय बनगमन, सकल अमंगल मूल ॥
सोच पोच संताप वश, कुसमय संशय शूल ॥ ५ ॥
प्रथम वास सुरसरि निकट, सेवा कीन्हि निषाद ॥
कहब शुभाशुभ शकुन फल, बिसमय हरष विषाद ॥ ६ ॥
चले नहाइ प्रयाग प्रभु, लषण सीय रघुराज ॥
तुलसी जानब शकुन फल, होइहि साधु समाज ॥ ७ ॥
सीय राम लोने लषण, तापस वेष अनूप ॥
तप तीरथ जप जाग हित, शकुन सुमंगल रूप ॥ ८ ॥
सीता लषण समेत प्रभु, यमुना उतरि नहाइ ॥
चले सकल संकट शमन, शकुन सुमंगल पाइ ॥ ९ ॥
अवध शोक संताप वश, विकल सकल नर नारि ॥
वाम विधाता राम विनु, माँगत मीचु पुकारि ॥ १० ॥
लषण सीय रघुवंश मणि, पथिक पाय उर आनि ॥
चलहु अगम मग सुगम शुभ, शकुन सुमंगल खानि ॥ ११ ॥
ग्राम नारि नर मुदित मन, लषण राम सिय देखि ॥
होइ प्रीति पहिचान विनु, मान विदेश विशेषि ॥ १२ ॥
वन मुनि गण रामहिं मिलहिं, मुदित सुकृत फल पाइ ॥
शकुन सिद्ध साधक दरश, अभिमत होइ अघाइ ॥ १३ ॥
चित्रकूट पयतीर प्रभु, वसे भानुकुल भानु ॥
तुलसी तप जप योगहित, शकुन सुमंगल जानु ॥ १४ ॥
हंसवंशअवतंश जब, कीन्ह वास पयपास ॥
तापस साधक सिद्ध मुनि, सब कहँ शकुन सुपास ॥ १५ ॥
विटप वेलि फूलहिं फलहिं, जल थल विमल विशेषि ॥
मुदित किरात विहंग मृग, मंगल मूरति देखि ॥ १६ ॥
सींचत सीय सरोज कर, बये विटप वट वेलि ॥
समउ सुकालु किसानहित, शकुन सुमंगल केलि ॥ १७ ॥

हयहाँके दक्षिण दिशा, हेरिहेरि हिहिनात ॥
भये निषाद विषाद वश, अवध सुमंतहि जात ॥ १८ ॥
सचिव सोच व्याकुल सुनत,अशकुन अवध प्रवेश ॥
समाचार सुनि शोकवश, माँगी मीचु नरेश ॥ १९ ॥
राम राम कहि राम सिय, रामशरन भये राउ ॥
सुमिरहु सीता राम अब, नाहिंन आन उपाउ ॥ २० ॥
राम विरह दशरथ मरन, मुनि मन अगम सुमीचु ॥
तुलसी मंगल मरण तरु, शुचि सनेह जल सींचु ॥ २१ ॥
धीर वीर रघुवीरप्रिय, सुमिरि समीरकुमारु ॥
अगम सुगम सब काज करु, करतल सिद्ध विचारु॥ २२ ॥
सुमिरि शत्रुसूदन चरण, शकुन सुमंगल मानि ॥
पर पुर वाद विवाद जय, जूझ जुआ जय जानि ॥ २३ ॥
सेवक सखा सुबंधु हित, शकुन विचारु विशेषि ॥
भरत नाम गुणगण विमल, सुमिरि सत्य सब लेषि ॥ २४ ॥
साहिब समरथ शीलनिधि, सेवत सुलभ सुजान ॥
राम सुमिरि सेइय सुप्रभु, शकुन कहब कल्यान ॥ २५ ॥
सुकृत शील शोभा अवधि, सीय सुमंगल खानि ॥
सुमिरि शकुन तिय धरम हित, कहब सुमंगल जानि॥ २६ ॥
ललित लषण मूरति हृदय, आनि धरे धनुबान ॥
करहु काज शुभ शकुन सब, मुद मंगल कल्यान ॥ २७ ॥
राम नाम पर रामते, प्रीति प्रतीति भरोस ॥
सो तुलसी सुमिरत सकल, शकुन सुमंगल कोस ॥ २८ ॥
गुरु आयसु आए भरत, निरखि नगर नर नारि ॥
सानुज सोचत पोच विधि, लोचन मोचत वारि ॥ २९ ॥
भूप मरन प्रभु वन गवन, सबविधि अवध अनाथ॥
रोवत समुझि कुमातु कृत, मींजि हाथ धुनिमाथ ॥ ३० ॥
वेद विहित पितु करम करि, लिए संग सब लोग ॥
चले चित्रकूटहिं भरत, व्याकुल राम वियोग ॥ ३१ ॥

राम दरश हिय हर्ष बड़, भूपति मरन विषाद ॥
सोचत सकल समाज सुनि, राम भरत संवाद ॥ ३२ ॥
सुनि शिष आशिष पावरी, पाइ नाइ पद माथ ॥
चले अवध संताप वश, विकल लोग सब साथ ॥ ३३ ॥
भरत नेम व्रत धर्म शुभ, रामचरण अनुराग ॥
शकुन समुझि साहस करिय, सिद्ध होइ जप जाग ॥ ३४ ॥
चित्रकूट सब दिन वसत, प्रभु सिय लषण समेत ॥
राम नाम जप जापकहि, तुलसी अभिमत देत ॥ ३५ ॥
पय पावनि वन भूमि भलि, शैल सुहावन पीठ ॥
रागिहि सीठ विशेषि थलु, विषय विरागिहि मीठ॥ ३६ ॥
फटिकशिला मंदाकिनी, सिय रघुवीर विहार ॥
राम भगत हित शकुन शुभ, भूतल भगति भँडार॥ ३७॥
शकुन सकल संकट शमन, चित्रकूट चलि जाहु॥
सीता राम प्रसाद शुभ, लघु साधन बड़ लाहु ॥ ३८॥
दिये अत्रितिय जानकिहि, बसन विभूषण भूरि ॥
रामकृपा संतोष सुख, होहिं, सकल दुखदूरि ॥ ३९॥
काक कुचालि विराध वध, देह तजी शरभंग ॥
हानि मरन सूचक शकुन, अनरथ अशुभ प्रसंग ॥ ४० ॥
राम लषण मुनि गण मिलन, मंजुल मंगल मूल ॥
सत समाज तब होइ जब, रमा राम अनुकूल ॥ ४१ ॥
मिले कुंभसंभव मुनिहि, लषण सीय रघुराज ॥
तुलसी साधु समाज सुख,सिद्ध दरश शुभ काज॥ ४२॥
सुनि मुनि आयसु प्रभुकियो, पंचवटी वसि वास॥
भइ महि पावनि परसि-पद, भा सबभाँति सुपास ॥ ४३ ॥
सरित सरोवर सजल सब, जलज विपुल बहुरंग ॥
समउ सुहावन शकुन शुभ, राजा प्रजा प्रसंग ॥ ४४ ॥
विटप वेलि फूलहिं फलहिं, शीतल सुखद समीर॥
मुदित विहग मृग मधुप गण, वन पालक दोउ वीर ॥ ४५ ॥

मोदाकर गोदावरी, विपिन सुखन सबकाल ॥
निर्भय मुनि जप तप करहिं, पालक राम कृपाल ॥ ४६ ॥
भेंट गीध रघुराज सन, दुहुँदिशि हृदय हुलास ॥
सेवक पाइ सुसाहिबहि, साहिब पाइ सुदास ॥ ४७ ॥
पढ़हिं पढ़ावहिं मुनितनय, आगम निगम पुरान ॥
शकुन सुविद्या लाभहित, जानब समय समान ॥ ४८ ॥
निजकर सींचति जानकी, तुलसी लाइ रसाल ॥
शुक दूती उनचास भलि, बरषा कृषी सुकाल ॥ ४९ ॥

अथ तृतीयोध्याय ॥ ३ ॥

दंडकवन पावन करन, चरण सरोज प्रभाउ ॥
ऊषर जामहिं खल तरहिं, होइ रंकते राउ ॥ १ ॥
कपटरूप मन मलिन गइ, शूपनखा प्रभुपास ॥
कुशकुन कठिन कुनारि कृत, कलह कलुष उपहास ॥ २ ॥
नाक कान बिनु विकल भइ, विकट कराल कुरूप ॥
कुशकुन पाउ न देब मग, पग पग कंटक कूप ॥ ३ ॥
खर दूषण देखी दुखित, चले साजि सब साज ॥
अनरथ अशकुन अघ अशुभ, अनभल अखिल अकाज॥४॥
कटु कुठाय करटारटहिं, फेकरहिं फेरु कुभाँति ॥
नीच निशाचर मीचु कस, अनी मोह मद माति ॥ ५ ॥
राम रोष पावक प्रबल, निशिचर शलभ समान ॥
लरत परत जरि जरि मरत, भये भसम जग जान॥ ६ ॥
सीता लषण समेत प्रभु, सोहत तुलसीदास ॥
हरषत सुर बरषत सुमन, शकुन सुमंगल वास ॥ ७ ॥
सुभट सहस चौदह सहित, भाइ कालवश जानि ॥
शूपणखा लंकहि चली, अशुभ अमंगल खानि ॥ ८ ॥
वसन सकल शोणित समल, विकट वदन गत गात॥
रोवति रावण की सभा, तात मात हा! भ्रात ॥ ९ ॥

कालकि मूरति कालिका, कालराति विकराल ॥
विन पहिचाने लंकपति, सभा सभय तेहि काल ॥ १० ॥
शूपनखा सब भाँति गत, अशुभ अमंगल मूल ॥
समयसाढ़साती सरिस, नृपहि प्रजहि प्रतिकूल ॥ ११ ॥
वरवश गवनत रावणहिं, अशकुन भये अपार ॥
नीच गनत नहिं मीचुवश, मिलि मारीच विचार॥ १२ ॥
इत रावण उत रामकर, मीचु जानि मारीच ॥
कपट कनक मृग वेष तब, कीन्ह निशाचर नीच ॥ १३ ॥
पंचवटी वट विटपतर, सीता लषण समेत ॥
सोहत तुलसीदास प्रभु, सकल सुमंगल देत ॥ १४ ॥
माया मृग पहिचानि प्रभु, चले सोयरुचि जानि ॥
वंचक चोर प्रपंचकृत, शकुन कहब हित हानि ॥ १५ ॥
सीयहरण अवसर शकुन, भय संशय संताप ॥
नारि काजहित निपट गत, प्रगट पराभव पाप ॥ १६ ॥
गीधराज रावण समर, घायल वीर विराज ॥
सूर सुयश संग्राम महि, मरण सुसाहिबकाज ॥ १७ ॥
राम लषण वनवन विकल, फिरत सीय सुधिलेत ॥
सूचत शकुन विषाद बड़, अशुभ अरिष्ट अचेत ॥ १८ ॥
रघुवर विकल विहंगलखि, सो बिलोकि दोउवीर ॥
सिय सुधि कहि सिय राम कहि, तजीदेह मतिधीर॥ १९ ॥
दशरथ ते दशगुणभगति, सहित तासु करि काज ॥
सोचत बंधुसमेत प्रभु, कृपासिंधु रघुराज ॥ २० ॥
तुलसी सहित सनेह नित, सुमिरहु सीताराम ॥
शकुन सुमंगल शुभसदा, आदि मध्य परिणाम ॥ २१ ॥
सकल काज शुभसमउ भल, शकुन सुमंगल जानु ॥
कीरति विजय विभूति भलि, हिय हनुमानहिं आनु॥ २२॥
सुमिरि शत्रुसूदन चरण, चलहु करहु सबकाज ॥
शत्रु पराजय निज विजय शकुन सुमंगल साज ॥ २३ ॥

भरत नाम सुमिरत मिटहिं, कपट कलेश कुचालि॥
नीति प्रीति परतीति हित, शकुन सुमंगल शालि ॥ २४ ॥
राम नाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कंद ॥
सुमिरत करतल सिद्धि जग, पग पग परमानंद ॥ २५ ॥
सीताचरण प्रणाम करि, सुमिरि सुनाम सनेम ॥
सुतिय होहिं पतिदेवता, प्राणनाथ प्रिय प्रेम ॥ २६ ॥
लषण ललित मूरति मधुर, सुमिरहु सहित सनेह ॥
सुख संपति कीरति विजय, शकुन सुमंगल गेह ॥ २७ ॥
तुलसी तुलसी मंजरी, मंगल मंजुल मूल ॥
देखत सुमिरत शकुन शुभ, कलपलता फल फूल ॥ २८ ॥
खलबल अंध कवंध वश, परे सुबंधु समेत ॥
शकुन सोच संकट कहब, भूत प्रेत दुख देत ॥ २९ ॥
पाई नीच सुमीचु भलि, मिटा महामुनि शाप ॥
विहग मरण सिय सोच मन; शकुन सभय संताप ॥ ३० ॥
कहि शबरी सब सीय सुधि, प्रभु सराहि फलखात॥
सोच समय संतोष सुनि, शकुन सुमंगल बात ॥ ३१ ॥
पवनसुवन सन भेंट भइ, भूमिसुता सुधिपाइ ॥
सोच विमोचन शकुन शुभ, मिला सुसेवक आइ॥ ३२ ॥
राम लषण हनुमान मन, दुहुँ दिशि परमउछाहु ॥
मिला सुसाहिब सेवकहि, प्रभुहि सुसेवक लाहु ॥ ३३ ॥
कीन्ह सखा सुग्रीव प्रभु, दीन्हि बाहँ रघुवीर ॥
शुभ सनेह हित शकुन फल, मिटइ सोच भयभीर॥ ३४ ॥
बली बालि बलशालि दलि, सखा कीन्ह कपिराज॥
तुलसी रामकृपालुको, विरद गरीब नेवाज ॥ ३५ ॥
बंधु विरोध न कुशल कुल, कुशकुन कोटि कुचालि॥
रावण रविको राहुसो, भयो कालवश बालि ॥ ३६ ॥
कीन्ह वास बरषा निरखि, गिरिवर सानुज राम ॥
काज विलंबित शकुन फल, होइहि भल परिणाम॥ ३७ ॥

सीयसोध कपि भालु सब, विदा किए कपिनाथ ॥
जतन करहु आलस तजहु, नाइ रामपद माथ ॥ ३८ ॥
हनूमान हियहरषि तब, राम जोहारे जाइ ॥
मंगल मूरति मारुतिहि, सादर लीन्ह बुलाइ ॥ ३९ ॥
डाटे वानर भालु सब, अवधिगये विनकाज ॥
जो आइहि सो कालवश, कोपि कहा कपिराज ॥ ४० ॥
जान शिरोमणि जानिजिय, कपि बल बुद्धिनिधान ॥
दीन्हि मुद्रिका मुदित प्रभु, पाइ मुदित हनुमान॥ ४१ ॥
तुलसी करतल सिद्धि सब, शकुन सुमंगल साज ॥
करि प्रणाम रामहिं चलहु, साहस सिद्ध सुकाज ॥ ४२ ॥
नाथ हाथ माथे धरेउ, प्रभु मुदरी मुहँ मेलि ॥
चलेउ सुमिरि शारंगधर, आनिहि सिद्धि सकेलि ॥ ४३ ॥
संग नील नल कुमुद गद, जाम्बवंत युवराज ॥
चले रामपद नाइ शिर, शकुन सुमंगल साज ॥ ४४ ॥
पैठि बिवर मिलितापसिहि,अचइ पानि फल खाइ॥
शकुन सिद्ध साधक दरश, अभिमत होइ अघाइ ॥ ४५ ॥
वनचर विकल विषाद वश,देखि उदधि अवगाह ॥
असमंजस बड़ शकुन गत,विधिवश होइ निबाह ॥ ४६ ॥
सब सभीत संपाति लखि, हहरे हृदय हरास ॥
कहत परस्पर गीध गति, परिहरि जीवन आस ॥ ४७ ॥
नव तनु पाइ देखाइ प्रभु, महिमा कथा सुनाइ ॥
धरहु धीर साहस करहु, मुदित सीय सुधि पाइ ॥ ४८ ॥
तुलसीराम प्रभाउ कहि, मुदित चले संपाति ॥
शुभ तीसर उनचास भल, शकुन सुमंगल पाँति ॥ ४९ ॥

अथ चतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

राम जनम शुभ शकुन भल, सकल सुकृत सुखसार ॥
पुत्र लाभ कल्याण बड़, मंगलचार विचार ॥ १ ॥

दशरथ कुलगुरुकी कृपा, सुतहित यज्ञ कराइ ॥
पायसपाइ विभाग करि, रानिन्ह दीन्ह बुलाइ ॥ २ ॥
सब सगरभ सोहहिं सदन, सकल सुमंगलखानि ॥
तेज प्रताप प्रसन्नता, रूप न जाहिं बखानि ॥ ३ ॥
देखि सुहावन स्वप्न शुभ, शकुन सुमंगल पाइ ॥
कहहिं भूपसन मुदित मन, हर्ष न हृदय समाइ ॥ ४ ॥
स्वप्न शकुन सुनि राउ कह, कुल गुरु आशिर्वाद ॥
पूजिहि सब मनकामना, शंकर गौरि प्रसाद ॥ ५ ॥
मास पाष तिथि योग शुभ, नखत लगन ग्रह वार ॥
सकल सुमंगल मूल जग, राम लीन्ह अवतार ॥ ६ ॥
भरत लषण रिपुदवन सब, सुवन सुमंगल मूल ॥
प्रगट भये नृप सुकृत फल, तुलसी विधि अनुकूल ॥ ७ ॥
घर घर अवध वधावने, मुदित नगर नर नारि ॥
वरषि सुमन हरषहिं विबुध, विधि त्रिपुरारि मुरारि ॥ ८ ॥
मंगल गान निसान नभ, नगर मुदित नर नारि ॥
भूप सुकृत सुरतरु निरखि, फरे चारुफल चारि ॥ ९ ॥
पुत्र काज कल्याण नृप, दिये दान वहु भाँति ॥
रहस विवश रनिवास सब, मुद मंगल दिन राति ॥ १० ॥
अनुदिन अवध वधावने, नितनव मंगलमोद ॥
मुदित मातु पितु लोगलखि, रघुवर बालविनोद ॥ ११ ॥
कर्णवेध चूड़ाकरन, लौकिक वैदिक काज ॥
गुरु आयसु भूपति करत, मंगल साज समाज ॥ १२ ॥
राजअजिर राजत रुचिर, कोशलपालक बाल ॥
जानु पानि चर चरित वर, शकुन सुमंगल माल ॥ १३ ॥
लहे मातु पितु भागवश, सुत जग जलधि ललाम ॥
पुत्रलाभ हित शकुन शुभ, तुलसी सुमिरहु राम ॥ १४ ॥
बाल विभूषण वसन धर, धूरि धूसरित अंग ॥
बालकेलि रघुवर करत, बाल बंधु सब संग ॥ १५ ॥

राम भरत लछिमन ललित, शत्रुशमन शुभ नाम ॥
सुमिरत दशरथसुवन सब, पूजिहिं सब मनकाम ॥ १६ ॥
नाम ललित लीला ललित, ललित रूप रघुनाथ ॥
ललित वसन भूषण ललित, ललित अनुज शिशु साथ॥१७॥
सुदिन साधि मंगल किये, दिये भूप व्रत बंध ॥
अवध बधाव विलोकि सुर, बरषत सुमन सुगंध ॥ १८ ॥
भूपति भूसुर भाट नट, याचक पुर नर नारि ॥
दिये दान सनमानि सब, पूजे कुल अनुहारि ॥ १९ ॥
सखी सुआसिनि विप्रतिय, सनमानी सबराय ॥
ईश मनाय अशीश शुभ, देहिं सनेह सुभाय ॥ २० ॥
राम काज कल्याण सब, शकुन सुमंगल मूल ॥
चिरजीवहु तुलसीश सब, कहि सुर बरषहिं फूल ॥ २१ ॥
रामजनम शुभकाज सब, कहत देवऋषि आइ ॥
सुनि सुनि मन हनुमानके, प्रेम उमँग न अमाइ ॥ २२ ॥
भरत श्याम तन राम सम, सब गुण रूपनिधान ॥
सेवक सुखदायक सुलभ, सुमिरत सब कल्यान ॥ २३ ॥
ललित लाहु लोने लषण, लोयन लाहु निहारि ॥
सुत ललाम लालहु ललित, लेहु ललकि फलचारि॥२४ ॥
मंगलमूरति मोदनिधि, मधुर मनोहर वेष ॥
राम अनुग्रह पुत्रफल, होइहि शकुन विशेष ॥ २५ ॥
सोधत मख माहिं जनकपुर, सीय सुमंगलखानि ॥
भूपति पुण्य पयोधि जनु, रमा प्रगट भइ आनि॥ २६ ॥
नाम शत्रुसूदन सुभग, सुखमा शील निकेत ॥
सेवत सुमिरत सुलभ सुख, सकल सुमंगल देत ॥ २७ ॥
बालक कोशलपालके, सेवकपाल कृपाल ॥
तुलसी मन मानस बसत, मंगल मंजु मराल ॥ २८ ॥
जनकनंदिनी जनकपुर, जबते प्रगटीं आई ॥
तबते सब सुख संपदा, अधिक अधिक अधिकाइ ॥ २९ ॥

सीय स्वयंवर जनकपुर, सुनि सुनि सकल नरेश ॥
आए साज समाज सजि, भूषण वसन सुदेश ॥ ३० ॥
चले मुदित कौशिक अवध, शकुन सुमंगल साथ॥
आए मुनि सनमानि गृह, आने कोशलनाथ ॥ ३१ ॥
सादर सोरह भाँति नृप, पूजि पहुनई कीन्हि ॥
विनय बड़ाई देखि मुनि,अभिमत आशिष दीन्हि॥ ३२ ॥
मुनि माँगे दशरथ दिये, राम लषण दोउ भाइ ॥
पाइ शकुन फल सुकृत फल, प्रमुदित चले लेवाइ॥ ३३ ॥
श्यामल गौर किशोर वर, धरेतूण धनुवान ॥
सोहत कौशिक सहित मग,मुद मंगल कल्यान ॥ ३४ ॥
शैल सरित सर बाग वन, मृग विहंग बहुरंग ॥
तुलसी देखत जात प्रभु, मुदित गाधिसुत संग ॥ ३५ ॥
लेत विलोचन लाभ सब, बड़भागी मगलोग ॥
रामकृपा दरशन सुगम, अगम जाग जप योग ॥ ३६ ॥
जलद छाँह मृदु मग अवनि, सुखद पवन अनुकूल॥
हरषत विबुध विलोकि प्रभु, बरषत सुरतरु फूल ॥ ३७ ॥
दले मलिन खल राखि मख, मुनि शिष आशिष दीन्हि ॥
विद्या विश्वामित्र सब, सुथल समरापित कीन्हि ॥ ३८ ॥
अभयकिये मुनि राखिमख, धरे बाण धनु भाथ ॥
धनु मख कौतुक जनकपुर, चले गाधिसुत साथ ॥ ३९ ॥
गौतमतिय तारन चरण, कमल आनिउर देषु ॥
सकल सुमंगल सिद्धि सब, करतल शकुन विशेषु॥ ४० ॥
जनक पाइ प्रिय पाहुने, पूजे पूजन योग ॥
बालक कोशलपालके, देखि मगन पुरलोग ॥ ४१ ॥
सनमाने आने सदन, पूजे अति अनुराग ॥
तुलसी मंगल शकुन शुभ, भूरि भलाई भाग ॥ ४२ ॥
कौशिक देखन धनुष मख, चले संग दोउभाइ ॥
कुँवर निरखि पुर नारि नर, मुदित नयनफल पाइ ॥ ४३ ॥

भूप सभा भवचाप दलि, राजत राजकिशोर ॥
सिद्धि सुमंगल शकुन शुभ,जय जय जय सब ओर॥४४ ॥
जय मय मंजुल माल उर, मंगल मूरति देषि ॥
गान निसान प्रसून झरि, मंगल मोद विशेषि ॥ ४५ ॥
समाचार सुनि अवधपति, आए सहित समाज ॥
प्रीति परस्पर मिलत मुद, शकुन सुमंगल साज ॥ ४६ ॥
गान निसान वितान वर, विरचे विविध विधान ॥
चारिविवाह उछाह बड़, कुशल काज कल्यान ॥ ४७ ॥
दाइज पाइ अनेक विधि, सुत सुतवधुन समेत ॥
अवधनाथ आए अवध, सकल सुमंगल लेत ॥ ४८ ॥
चौथ चारु उनचास पुर, घर घर मंगलचार ॥
सबदिन दाहिने, दशरथ राजकुमार ॥ ४९ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

रामनाम कलिकामतरु, रामभगति सुरधेनु ॥
शकुन सुमंगल मूल जग, गुरुपदपंकज रेनु ॥ १ ॥
जलधि पार मानस अगम, रावण पालित लंक ॥
सोच विकल कपि भालु सब, दुहुँदिशि शंकट संक ॥ २ ॥
जाम्बवंत हनुमंत बल, कहा प्रचारि प्रचारि ॥
राम सुमिरि साहसकरिय, मानिय हिये न हारि ॥ ३ ॥
रामकाज लगि जनमजग, सुनि हरषे हनुमान ॥
होइ पुत्र फल शकुन शुभ, राम भगत बलवान ॥ ४ ॥
कहत उछाहु बड़ाइ कपि, साथी सकल प्रबोधि ॥
लागत रामप्रसाद मोहिं, गोपदसरिस पयोधि ॥ ५ ॥
राखितोषि सब साथ शुभ, शकुन सुमंगल पाइ ॥
कूदि कुधर चढ़ि आनि उर, सीयसहित दोउभाइ ॥ ६ ॥
हरषि सुमन बरषत विबुध, शकुन सुमंगल होत ॥
तुलसी प्रभु लंघेउ जलधि, प्रभु प्रतापकरि पोत ॥ ७ ॥

राहु मातु माया मलिन, मारी मारुतपूत ॥
समय शकुन मारग मिलहिं, छल मलीन खलभूत ॥ ८ ॥
पूजा पाइ मिनाकपहँ, सुरसा कपि संवाद ॥
मारग अगम सहाय शुभ, होइहि रामप्रसाद ॥ ९ ॥
लंका लोलुप लंकिनी, काली काल कराल ॥
काल करालहि दीन्हिवलि, कालरूप कपिकाल ॥ १० ॥
मशकरूप दशकंध पुर, निशि कपि घर घर देषि ॥
सीयविलोकि अशोकतर, हरष विषाद विशेषि ॥ ११ ॥
फरकत मंगल अंगसिय, वाम विलोचन वाहु ॥
त्रिजटा सुनि कह शकुनफल, प्रिय सँदेश बड़लाहु॥ १२ ॥
शकुन समुझि त्रिजटा कहति, सुनि सिय अबहीं आज॥
मिलिहि रामसेवक कहिहि, कुशल लषण रघुराज ॥ १३ ॥
तुलसी प्रभु गुणगण वरणि, आपनि वात जनाइ ॥
कुशल क्षेम सुग्रीवपुर, रामलषण दोउ भाइ ॥ १४ ॥
सुरुष जानकी जानि कपि, कहे सकल संकेत ॥
दीन्हि मुद्रिका लीन्हिसिय, प्रीति प्रतीति समेत ॥ १५ ॥
पाइ नाथकर मुद्रिका, सियहिय हरष विषाद ॥
प्राणनाथ प्रियसेवकहि, दीन्ह सुआशिरवाद ॥ १६ ॥
नाथ शपथ पणरोपि कपि, कहत चरण शिरनाइ ॥
नहिं विलंब जगदंब अब, आइगए दोउभाइ ॥ १७ ॥
समाचार कहि सुनत प्रभु, सानुज सहित सहाय ॥
आए अब रघुवंशमणि, सोच परिहरिय माय ॥ १८ ॥
गये शोच संकट सकल, भये सुदिन जियजान ॥
कौतुक सागरसेतुकरि, आए कृपानिधान ॥ १९ ॥
सकल सदल यमराजपुर, चलन चहत दशकंध ॥
काल न देखत कालवश, वीस विलोचन अंध ॥ २० ॥
आशिष आयसु पाइ कपि, सीयचरण शिरनाइ ॥
तुलसी रावण बाग फल, खात वराइ वराइ ॥ २१ ॥

शूर शिरोमणि साहसी, सुमति समीरकुमार ॥
सुमिरत सब सुख संपदा, मुद मंगल दातार ॥ २२ ॥
शत्रुशमन पद पंकरुह, सुमिरि करहु सब काज ॥
कुशल क्षेम कल्याण शुभ, शकुन सुमंगल साज ॥ २३ ॥
भरत भलाई की अवधि, शील सनेह निधान ॥
धरमभगति भायप समय, शकुन कहब कल्यान ॥ २४ ॥
सेवकपाल कृपालुचित, रविकुल कैरवचंद ॥
सुमिरि करहु सब काज शुभ, पगपग परमानंद ॥ २५ ॥
सियपद सुमिरि सुतीयहित, शकुन सुमंगल जान ॥
स्वामि सोहागिल भागबड़, पुत्रकाज कल्यान ॥ २६ ॥
लछिमन पदपंकज सुमिरि, शकुन सुमंगल पाइ ॥
जय विभूति कीरति कुशल, अभिमत लाभ अघाइ ॥ २७ ॥
तुलसी कानन कमलवन, सकल सुमंगल वास ॥
राम भगतिहित शकुन शुभ, सुमिरत तुलसीदास ॥ २८ ॥
रूख निपातत खात फल, रक्षक अक्ष निपाति ॥
कालरूप विकराल कपि, सभय निशाचर जाति ॥ २९ ॥
वन उजारि जारेउ नगर, कूदि कूदि कपिनाथ ॥
हाहाकार पुकार सब, आरत मारत माथ ॥ ३० ॥
पूछ बुताइ प्रबोधि सिय, आइ गहे प्रभुपांय ॥
क्षेम कुशल जय जानकी, जय जय जय रघुराय ॥ ३१ ॥
सुनि प्रमुदित रघुवंशमणि, सानुज सेन समेत ॥
चले सकल मंगल शकुन, विजय सिद्धि कहि देत ॥ ३२ ॥
राम पयान निसान नभ, बाजहिं गाजहिं वीर ॥
शकुन सुमंगल समर जय, कीरति कुशल शरीर ॥ ३३ ॥
कृपासिंधु प्रभु सिंधुसन, माँगेउ पंथ न देत ॥
विनय न मानहि जीवजड़, डाटे नवहिं अचेत ॥ ३४ ॥
लाभ लाभलो वा कहत, क्षेम करी कह क्षेम ॥
चलत विभीषण शकुन सुनि, तुलसी पुलकत पेम ॥ ३५ ॥

पाहि पाहि अशरण शरण, प्रणतपाल रघुराज ॥
दियो तिलक लंकेश कहि, राम ग़रीबनेवाज ॥ ३६ ॥
लंक अशुभ चरचा चलति, हाट वाट घर घाट ॥
रावण सहित समाज अब, जाइहि वारहवाट ॥ ३७ ॥
ऊकपात दिकदाह दिन, फेकरहिं श्वान सियार ॥
उदित केतु गत हेतु महि, कंपति बारहि वार ॥ ३८ ॥
रामकृपा कपि भालु करि, कौतुक सागर सेतु ॥
चले पार वरषत विबुध, सुमन सुमंगल हेतु ॥ ३९ ॥
नीच निशाचर मीचु वश, चलें साजि चतुरंग ॥
प्रभु प्रताप पावक प्रबल, उड़ि उड़ि परत पतंग ॥ ४० ॥
साजि साजि वाहन चलहिं, यातुधान बलवान ॥
अशकुन अशुभ न गनहिं गत, आइ काल नियरान॥ ४१ ॥
लरत भालु कपि सुभट सब, निदरि निशाचर घोर ॥
शिरपर समरथ रामसो, साहिब, सब तुलसी तोर॥ ४२ ॥
मेघनाद अतिकाय भट, परे महोदर खेत ॥
रावण भाइ जगाइ तब, कहा प्रसंग अचेत ॥ ४३ ॥
उठि विशाल विकराल बड़, कुंभकरण जमुहान ॥
लखि सुदेश कपि भालु दल, जनु दुकाल समुहान॥ ४४ ॥
राम श्याम वारिद सघन, वसन सुदामिनि माल ॥
वरषत शर हरषत विबुध, दला दुकालु दयाल ॥ ४५ ॥
राम रावणहिं परस्पर, होति रारि रणघोर ॥
लरत प्रचारि प्रचारि भट, समर शोर दुहुँओर ॥ ४६ ॥
वीसबाहु दशशीश दलि, खंड खंड तनु कीन्ह ॥
सुभट शिरोमणि लंकपति, पाछे पाँउ न दीन्ह ॥ ४७ ॥
विबुध बजावत दुंदुभी, हरषत वरषत फूल ॥
राम विराजत जीति रण, सुर सेवक अनुकूल ॥ ४८ ॥
लंका थापि विभीषणहिं, विबुध बसाइ सुवास ॥
तुलसी जय मंगल कुशल, शुभ पंचम उनचास ॥ ४९ ॥

षष्ठमाध्याय ॥ ६ ॥

रघुवर आयसु अमरपति, अमिय सींचि कपि भालु ॥
सकल जिआये शकुन शुभ, सुमिरहु राम कृपालु ॥ १ ॥
सादर आनी जानकी, हनूमान प्रभुपास ॥
प्रीति परस्पर समउ शुभ, शकुन सुमंगल वास ॥ २ ॥
सीता शपथ प्रसंग शुभ, शीतल भयउ कृशानु ॥
नेम प्रेम व्रत धरम हित, शकुन सुहावन जानु ॥ ३ ॥
सनमाने कपि भालु सब, सादर साजि विमानु ॥
सीय सहित सानुज सदल, चले भानुकुल भानु ॥ ४ ॥
हरषत सुर वरषत सुमन, शकुन सुमंगल गान ॥
अवधनाथ गवने अवध, क्षेम कुशल कल्यान ॥ ५ ॥
सिंधु सरोवर सरित गिरि, कानन भूमि विभाग ॥
राम दिखावत जानकिहि, उमगि उमगि अनुराग ॥ ६ ॥
तुलसी मंगल शकुन शुभ, कहत जोरि युगहाथ ॥
हंस वंश अवतंस जय, जय जय जानकिनाथ ॥ ७ ॥
अवध अनंदित लोग सब, व्योम विलोकि विमानु ॥
मनहुँ कोकनद कोकमन, मुदित उदित लखि भानु॥ ८ ॥
मिले गुरुहि जन परिजनहिं, भेंटत भरत सप्रीति ॥
लषण राम सिय कुशल पुर, आये रिपु रणजीति ॥ ९ ॥
उदवश अवध अनाथ सब, अंबदशा दुख देखि ॥
राम लषण सीता सकल, विकल विषाद विशेखि ॥ १० ॥
मिलीं मातु हित मीत गुरु, सनमाने सब लोग ॥
शकुन समय विसमय हरष, प्रिय संयोग वियोग ॥ ११ ॥
अमर अनंदित मुनि मुदित, मुदित भुवन दशचारि ॥
घर घर अवध बधावने, मुदित नगर नर नारि ॥ १२ ॥
सुदिन सोधि गुरु वेद विधि, कियो राज अभिषेक ॥
शकुन सुमंगल सिद्धि सब, दायक दोहा एक ॥ १३ ॥
भाँति भाँति उपहार लइ, मिलत जुहारत भूप ॥

पहिराये सनमानि सब, तुलसी शकुन अनूप ॥ १४ ॥

भये राम राजा अवध, शकुन सुमंगल मूल ॥ १५ ॥
भालु विभीषण कीशपति, पूजे सहित समाज ॥
भलीभाँति सनमानि सब, विदा किये रघुराज ॥ १६ ॥
राम राज संतोष सुख, घर वन सकल सुपास ॥
तरु सुरतरु सुरधेनु महि, अभिमत भोग विलास॥ १७ ॥
राम राज सबकाज कहँ, नीक एकही आँक ॥
सकुल शकुन मंगल कुशल, होइहि वारु न बाँक॥ १८॥
कुंभकरण रावण सरिस, मेघनादसे वीर ॥
ढहे समूल विशाल तरु, काल नदीके तीर ॥ १९ ॥
सकल सदल रावण सरिस, कवलित काल कराल॥
सोच पोच अशकुन अशुभ, जाय जीव जंजाल ॥ २० ॥
अविचल राज विभीषणहिं, दीन्ह राज रघुराज ॥
अजहुँ विराजत लंकपर, तुलसी सहित समाज ॥ २१ ॥
मंजुल मंगल मोद मय, मूरति मारुतपूत ॥
सकल सिद्धिकरकमल तल, सुमिरत रघुवर दूत ॥ २२ ॥
शकुन समय सुमिरत सुखद, भरत आचरण चारु॥
स्वामि धरम व्रत प्रेम हित, नेम निवाहनिहारु ॥ २३ ॥
ललित लषण लघु बंधु पद, सुखद शकुन सबकाहु॥
सुमिरत शुभकीरति विजय, भूमि ग्राम गृह लाहु ॥ २४ ॥
रामचंद्रमुख चंद्रमा, चित चकोर जब होइ ॥
राम राज सब काज शुभ, समउ सुहावन सोइ ॥ २५ ॥
भूमिनंदिनी पदपदुम, सुमिरत शुभ सबकाज ॥
वरषा भलि खेती सुफल, प्रमुदित प्रजा सुराज ॥ २६ ॥
सेवक सखा सुबंधु हित, नाइ लषणपद माथ ॥
कीजिय प्रीति प्रतीति शुभ, शकुन सुमंगल साथ ॥ २७ ॥

रामनाम रति नामगति, राम नाम विश्वास ॥
सुमिरत शुभ मंगल कुशल, तुलसी तुलसीदास ॥ २८ ॥
विप्र एक बालक मृतक, राखेउ रामदुआर ॥
दंपति बिलपत शोकअति, आरत करत पुकार ॥ २९ ॥
राम शोच संकोच सब, सचिव विकल संताप ॥
बालक मीचु अकाल भइ, रामराज केहिपाप ॥ ३० ॥
विबुध विमल वाणी गगन, हेतु प्रजा अपचारु ॥
रामराज परिणाम भल, कीजिय वेगि विचारु ॥ ३१ ॥
कोशलपाल कृपालु चित, बालक दीन्ह जिआइ ॥
शकुन कुशल कल्याण शुभ, रोगी उठै नहाइ ॥ ३२ ॥
बालक जिया विलोकि सब, कहत उठा जनु सोइ॥
शोच विमोचन शकुन शुभ, राम कृपा भल होइ॥ ३३ ॥
शिला सुतिय भइ गिरि तरे, मृतक जिए जगजान॥
राम अनुग्रह शकुन शुभ, सुलभ सकल कल्यान ॥ ३४ ॥
केवट निशिचर विहँग मृग, किए साधु सनमानि ॥
तुलसी रघुवरकी कृपा, शकुन सुमंगलखानि ॥ ३५ ॥
रामराज राजत सकल, धरम निरत नर नारि ॥
राग न रोष न द्वेष दुख, सुलभ पदारथ चारि ॥ ३६ ॥
बक उलूक झगरत गये, अवध जहाँ रघुराउ ॥
नीक शकुन विवरिहि झगर, होइहि धरम निआउ॥ ३७ ॥
यती श्वान संवाद सुनि, शकुन कहब जिय जानि ॥
हंस वंश अवतंस पुर, विलग होत पय पानि ॥ ३८ ॥
राम कुचरचा करहिं सब, सीतहि लाइ कलंक ॥
सदा अभागी लोग जग कहत सकोच न शंक ॥ ३९ ॥
सती शिरोमणि सीय तजि, राखि लोग रुचि राम॥
सहे दुसह दुख शकुन गत, प्रिय वियोग परिणाम॥ ४० ॥
बरण धरम आश्रम धरम, निरत सुखी सब लोग ॥

राम राज मंगल शकुन, सुफल जाग जप योग ॥ ४१ ॥
वाजिमेध अगणित किये, दिये दान बहुभाँति ॥
तुलसी राजा राम जग, शकुन सुमंगल पाँति ॥ ४२ ॥
असमंजस बड़ शकुन गत, सीता राम वियोग ॥
गवन विदेश कलेश कलि, हानि पराभव रोग ॥ ४३ ॥
तिय मणि सिय अपराध विनु, प्रभु परिहरि पछितात ॥
सोच समाज न राजसुख, मन मलीन कृशगात ॥ ४४ ॥
पुत्र लाभ लव कुश जनम, शकुन सुहावन होइ ॥
समाचार मंगल कुशल, सुखद सुनावै कोइ ॥ ४५ ॥
रामसभा लव कुश ललित, किये राम गुण गान ॥
राज समागम शकुन शुभ, सुयश लाभ सनमान ॥ ४६ ॥
वालमीकि लव कुश सहित, आनी सिय सुनि राम ॥
हृदय हरष जानब प्रथम, शकुन शोक परिणाम ॥ ४७ ॥
अनरथ अशकुन अति अशुभ, सीता अवनि प्रवेश ॥
समय शोक संताप मय, कलह कलंक कलेश ॥४८ ॥
सुभग शकुन उनचास रस, रामचरितमय चारु ॥
राम भगत हित सफल सब, तुलसी विमल विचारु॥ ४९ ॥

अथ सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

राम लषण सानुज भरत, सुमिरत शुभ सब काज ॥
सहित प्रीति प्रतीति हित, शकुन सकल शुभकाज ॥ १ ॥
सुख मुद मंगल कुमुद विधु, शकुन सरोरुह भानु॥
करहु काज सब सिद्धि शुभ, आनि हिये हनुमानु ॥ २ ॥
राज काज मणि हेम हय, राम रूप रविवार ॥
कहब नीक जय लाभ शुभ, शकुन समय अनुसार॥ ३ ॥
रस गोरस खेती सकल, विप्र काज शुभसाज ॥
राम अनुग्रह सोमदिन, प्रमुदित प्रजा सुराज ॥ ४ ॥
मंगल मंगल भूमिहित, नृपहित जय संग्राम ॥

शकुन विचारब समय सम, करि गुरुचरण प्रणाम॥ ५ ॥
विपुल वनिज विद्या वसन, बुध विशेषि गृहकाज॥
शकुन सुमंगल कहब शुभ, सुमिरि सीय रघुराज॥ ६ ॥
गुरु प्रसाद मंगल सकल, रामराज सब काज ॥
यज्ञ विवाह उछाह व्रत, शुभ तुलसी सब साज ॥ ७ ॥
शुक्र सुमंगल काज सब, कहब शकुन शुभ देखि॥
यंत्र मंत्र मणि औषधी, साहस सिद्धि विशेषि॥ ८ ॥
रामकृपा थिर काज शुभ, शनि बासर विश्राम ॥
लोह महिष गज वनिज भल, सुख सुपास गृहग्राम॥ ९ ॥
राहु केतु उलटे चलहिं, अशुभ अमंगल मूल ॥
रुंड मुंड पाषंड प्रिय, असुर अमर प्रतिकूल ॥ १० ॥
समउ राहु रवि गहनु गत, राजहिं प्रजहिं कलेश ॥
शकुन सोच संकट विकट, कलह कलुष दुख देश॥ ११ ॥
राहु सोम संगम विषम, अशकुन उदधि अगाधु ॥
ईति भीति खल दल प्रबल, सीदहिं भूसुर साधु ॥ १२ ॥
सात पाँच ग्रह एक थल, चलहिं वाम गति वाम॥
राज विराजी समउ गत, शुभहित सुमिरहु राम ॥ १३ ॥
खेती वनि विद्या बनिज, सेवा शिलिप सुकाज ॥
तुलसी सुरतरु सरिस सब, सुफल रामके राज ॥ १४ ॥
सुधा साधु सुरतरु सुमन, सुफल सुहावनि बात ॥
तुलसी सीतापति भगति, शकुन सुमंगल सात ॥ १५ ॥
सिद्ध समागम संपदा, सदन शरीर सुपास ॥
सीतानाथ प्रसाद शुभ, शकुन सुमंगल वास ॥ १६ ॥
कौशल्या कल्याण मय, मूरति करत प्रणाम ॥
शकुन सुमंगल काज शुभ, कृपा करहिं सिय राम ॥ १७ ॥
सुमिरि सुमित्रा नाम जग, जे तिय लेहिं सुनेम ॥
सुवन लषण रिपुदवनसे, पावहिं पतिपद प्रेम ॥ १८ ॥

दशरथ नाम सुकामतरु, फलइ सकल कल्यान ॥
धरणि धाम धन धरम सुख, सुत गुण रूप निधान ॥ १९ ॥
कलह कपट कलिकैकयी, सुमिरत काज नशाइ ॥
हानि मीचु दारिद दुरित, अशकुन अशुभ अघाइ॥ २० ॥
राम वाम दिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥
ध्यान सकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ २१ ॥
मध्यमदिन मध्यमदशा, मध्यम सकल समाज ॥
नाइ माथ रघुनाथ पद, जानब मध्यम काज ॥ २२ ॥
हितपर बढ़ै विरोध जब, अनहित पर अनुराग ॥
राम विमुख विधि वाम गत, शकुन अघाइ अभाग ॥ २३ ॥
कृपण देइ पाइय परेउ, बिन साधन सिधि होइ ॥
सीतापति सनमुख समुझि, जो कीजिय शुभ सोइ ॥ २४ ॥
पहिले हित परिणाम गत, बीच बीच भलपोच ॥
शकुन कहब अस राम गति, कहवि समेत सकोच॥ २५ ॥
रमा रमापति गौरि हर, सीताराम सनेह ॥
दंपति हित संपति सकल, शकुन सुमंगल गेह ॥ २६ ॥
प्रीति प्रतीति न रामपद, बड़ी आश बड़ लोभ ॥
नहिं सपनेहुँ संतोष सुख, जहाँ तहाँ मन छोभ ॥ २७ ॥
पय नहाइ फल खाइ जपु, रामनाम षट मास ॥
शकुन सुमंगल सिद्धि सब, करतल तुलसीदास ॥ २८ ॥
बड़कलेश कारज अलप, बड़ी आश लहु लाहु ॥
उदासीन सीतारमण समय सरिस निरबाहु ॥ २९ ॥
दशदिशि दुख दारिद दुरित, दुसह दशा दिन दोष ॥
फेरे लोचन राम अब, सब सुख साज सरोष ॥ ३० ॥
खेती बनिज न भीख भलि, अफल उपाय कदंब ॥
कुसमय जानब वाम विधि, रामनाम अवलंब ॥ ३१ ॥
पुरुषारथ स्वारथ सकल, परमारथ परिणाम ॥

सुलभ सिद्धि सब शकुन शुभ, सुमिरत सीताराम ॥ ३२ ॥
भाग भागतजि भालतलु आलस ग्रसे उपाय ॥
अशुभ अमंगल शकुन सुनि शरण रामके पाय ॥ ३३ ॥
गइबरषा करषक विकल, सूखत सालि सुनाज ॥
कुसमय कुशकुन कलह कलि,प्रजहि कलेश कुराज॥ ३४ ॥
तुलसी तुलसीराम सिय ,सुमिरहु लषण समेत ॥
दिन दिन उदय अनंद अब, शकुन सुमंगल देत ॥ ३५ ॥
उदवस अवधनरेश विनु, देश दुखी नर नारि ॥
राज भंग कुसमाज बड़, गत ग्रह चालि विचारि ॥ ३६ ॥
अवध प्रवेश अनंद बड, शकुन सुमंगल माल ॥
राम तिलक अवसर कहब, सुख संतोष सुकाल ॥ ३७ ॥
राम राज बाधक विबुध, कहब शकुन सतिभाउ ॥
देखि दैवकृत दोष दुख,कीजिय उचित उपाउ ॥ ३८ ॥
मंद मंथरा मोहवश, कुटिल कैकई कीन्ह ॥
व्याधि विपाति सब दैव कृत, समय शकुन कहि दीन्ह॥३९॥
राम विरह दशरथ दुखित कहति कैकई काक ॥
कुसमय जाय उपाय सब, केवल करम विपाक ॥ ४० ॥
लषण राम सिय बसत बन, विरह विकलपुर लोग॥
समय शकुन कह करमवश, दुख सुख योग वियोग॥ ४१ ॥
तुलसी लाइ रसाल तरु, निजकर सींचति सीय ॥
कृषी सफल भल शकुन शुभ, समउ कहब कमनीय ॥४२॥
सुदिन साँझ पोथी नेवति, पूजि प्रभात सप्रेम ॥
शकुन विचारब चारु मति, सादर सत्य सनेम ॥ ४३ ॥
मुनि गनि दिन गनि धातु गनि, दोहा देखि विचारि ॥
देश करम करता बचन, शकुन समय अनुहारि ॥ ४४ ॥
शकुन सत्य शशि नयन गुण, अवधि अधिक नयवान॥
होइ सफल शुभ जासुजसि, प्रीति प्रतीति प्रमान ॥ ४५ ॥

गुरु गणेश हरगौरि सिय, राम लषण हनुमान ॥
तुलसी सादर सुमिरि सब, शकुन विचार विधान ॥ ४६ ॥
हनूमान सानुज भरत, राम सीय उर आनि ॥
लषण सुमिरि तुलसी कहत, शकुन विचार बखानि॥ ४७ ॥
जो जेहि काजहि अनुहरै, सो दोहा जब होइ ॥
शकुन समय सब सत्य सब, कहब राम गति गोइ॥ ४८ ॥
गुण विश्वास विचित्र मणि, शकुन मनोहर हार॥
तुलसी रघुवर भगत उर, बिलसत विमल विचार॥ ४९ ॥

हस्ताक्षर श्री गुसाईंजी सं० १६५५ रविवार ज्येष्ठशुक्ल १०

॥ इति श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास कृत
रामाज्ञाप्रश्न समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.
खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीवेङ्कटेश्वर छापखाना मुंबई.

श्रीगणेशायनमः।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

दोहावली।

जिसमें

अत्युत्तम सामयिक, राजनीतिके दोहा हैं

जिसको

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

बंबई

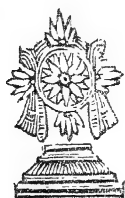
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें छापकर

प्रकट किया।

आषाढ संवत् १९५१

श्रीरामपंचायतन ॥





श्रीवेंकटेशायनमः ।

अथ

श्री मद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

दोहावली ।

दोहा ॥

रामवामदिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ सीता लषण समेत प्रभु, सोहत तुलसीदास ॥ हर्षतसुर वर्षत सुमन, सगुण सुमंगलवास ॥ २॥ पंचवटी वट विटपतरु, सीता लषण समेत ॥ सोहत तुलसीदास प्रभु, सकल सुमंगल देत ॥ ३ ॥ चित्रकूट सब दिन बसत, प्रभु सिय लषण समेत ॥ रामनाम जप जापकहि, तुलसी अभिमतदेत ॥ ४ ॥ पय अहार फल खाइ जो,रामनाम षटमास॥सकल सुमंगल सिद्धिसब, करतल तुलसीदास ॥ ५ ॥ रामनाम मणि दीपधरु, जीह देहरी द्वार ॥ तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार ॥ ६ ॥ हिय निर्गुण नयननसगुण, रसना राम सुनाम ॥ मनहुँ पुरट संपुट लसत, तुलसी ललित ललाम ॥ ७ ॥ सगुण वान रुचि सरसनहिं, निर्गुण मनते दूरि ॥ तुलसी सुमिरहु रामको, नाम सजीवन मूरि ॥ ८ ॥ एकछत्र इक मुकुटमणि, सब वर्णनपर जोइ ॥ तुलसी रघुवर नाम के, वरण विराजत दोइ ॥ ९ ॥ रामनामको अंकहै, सब साधनहै सून ॥ अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दशगून ॥ १० ॥ नाम रामको कल्पतरु, कलि कल्याण निवास ॥ जो सुमिरत भयो भागते, तुलसी तुलसीदास॥ ११ ॥ रामनाम जपि जीहजन, भये सुकृत सुख शालि ॥ तुलसी यहाँ जो आलसी, गयो आजुकी कालि ॥ १२ ॥ नाम गरीबानिवाजको, राजदेत जनजोन॥ तुलसी मन परिहरत नहिं, धुरबिनिआकीवोन ॥ १३ ॥ काशी विधि बसि तनुतजै, हठ तन

तजै प्रयाग ॥ तुलसी जो फल सो सुलभ, राम नाम अनुराग ॥१४॥ मीठो अरु कठुवतिभरो, रौताई अरु प्रेम ॥ स्वारथ परमारथ सुलभ, राम नामके प्रेम ॥ १५ ॥ रामनाम सुमिरत सुयश, भाजन भयो कुजात ॥ कुतरुकु सुरपुर राजमग, लहत भुवन विख्यात ॥ १६ ॥ स्वारथ सुख सपनेहुँ अगम, परमारथ परवेश ॥ रामनाम सुमिरत मिटहिं, तुलसी कठिन कलेश ॥ १७ ॥ मोर मोर सब कह कहसि, तूंको कहु निजनाम॥ कै चुप साधहि सुन समुझि, कै तुलसी जपु राम ॥ १८ ॥ तुम लखु हमहिं हमार लखु, हम हमारके बीच ॥ तुलसी अलखहि का लखहि, रामनाम जपनीच ॥ १९ ॥ रामनाम अवलंब बिनु, परमारथकी आश ॥ बर्षत वारिदबूंद गहि, चाहत चढ़न अकाश ॥ २० ॥ तुलसी हठि हठि कहत नित, चित सुन हितकर मान ॥ लाभ राम सुमिरन बड़ो, बड़ी बिसारे हान ॥ २१ ॥ बिगरी जन्म अनेककी, सुधरै अबहीं आजु ॥ होहिरामको रामजपु, तुलसी तजि कुसमाजु ॥ २२ ॥ प्रीति प्रतीति सुरीतिसों, रामनाम जपु राम ॥ तुलसी तेरो है भलो, आदि मध्य परिणाम ॥ २३ ॥ दंपति रस रसना दशन, परिजन बदनसगेह ॥ तुलसी हराहित वरण शिशु, संपति सहज सनेह ॥ २४ ॥ वर्षाऋतु रघुपति भगति, तुलसी शालि सुदास ॥ रामनाम वर, वरण जग, सावन भादोंमास ॥ ॥ २५ ॥ रामनाम नरकेशरी, कनककाशिपु कलिकाल ॥ जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालहिंदलि सुरसाल ॥ २६ ॥ रामनाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कंद ॥ सुमिरत करतल सिद्धिसब, पग पग परमानंद ॥ २७ ॥ रामनाम कलि कामतरु, रामभक्ति सुरधेनु ॥ सकल सुमंगल मूल जग, गुरुपद पंकज रेनु ॥ २८ यथा भूमिवश बीजमें, नखत निवास अकाश ॥ रामनाम सब धरममय, जानततुलसीदास ॥ २९ ॥ सकल कामना हीन जे, रामभक्त रसलीन ॥ नामप्रेम पीयूष ह्रद, तिनहुँ किये मनमीन ॥ ३० ॥ ब्रह्मरामते नामबड़, वरदायक वरदान॥ रामचरित शतकोटिमहँ, लिय महेश जियजान॥३१॥ शबरी गीध सुसेवकन, सुगति दीन्ह रघुनाथ ॥ नाम उधारे अमित

खल, वेद विदित गुणनाथ ॥ ३२ रामनाम परतापते, प्रीति प्रतीति भरोस ॥ सोतुलसी सुमिरत सकल, सगुण सुमंगल कोस ॥ ३३ ॥ लंक विभीषण राजकपि, पति मारुत खग मीच ॥ लहीराम सो नामरति, चाहत तुलसी नीच ॥ ३४ ॥ हरन अमंगल अघ अखिल, करन सकल कल्याण ॥ रामनाम नित कहत हर, गावत वेद पुराण ॥ ३५ ॥ तुलसी प्रीति प्रतीतिसों, रामनाम जप जागु ॥ किये होय विधि दाहिनो, देइ अगेही भागु ॥ ३६ ॥ जल थल नभ गति अमित अति, अग जग जीव अनेक ॥ तुलसी तोहिंसे दीनको, रामनाम गति एक ॥ ३७ ॥ राम भरोसो रामबल, रामनाम विश्वास ॥ सुमिरि नाम मंगल कुशल, माँगत तुलसीदास ॥ ३८ ॥ रामनाम रति राम गति, रामनाम विश्वास ॥ सुमिरत शुभ मंगल कुशल, चहुँदिशि तुलसीदास ॥ ३९ ॥ रसना साँपिनि बदनबिल, जे न जपहिं हरिनाम ॥ तुलसी प्रेम न रामसों, ताहि विधाता बाम ॥ ४० ॥ हिय फाटहु फूटहु नयन, जरउ ते तन केहि काम ॥ द्रवहिंश्रवण पुलकहिं नहीं, तुलसी सुमिरत राम ॥ ४१ ॥ रामहिं सुमिरत रण भिरत, देत परत गुरुपाय ॥ तुलसी जिनहिं न पुलकतनु, ते जगजीवत जाय ॥ ॥ ४२ ॥ (सोरठा) ॥ हृदय सो कुलिश समान, जो न द्रवहि हरिगुण सुनत ॥ कर न रामगुण गान, जीह सो दादुर जीह सम ॥ ४३ ॥ श्रवै न सलिल सनेहु, तुलसी सुनि रघुवीर यश ॥ ते नयना जनिदेहु, राम करहु बरु आंधरे ॥ ४४ ॥ रहै न जल भरिपूरि, राम सुयश सुन रावरी ॥ तिन आंखिनमें धूरि, भरभर मूठी मेलिये ॥ ४५ ॥ बारक सुमिरत तोहिं, होहिं तिनहिं सन्मुख सदा ॥ क्यों न सम्हारहि मोहिं, दयासिंधु समरत्थके ॥ ४६ ॥ साहिब होत सरोष, सेवकको अपराध सुनि ॥ अपने देखे दोष, राम न कबहूं उरधरे ॥ ४७ ॥ (दोहा) ॥ तुलसी रामहिं आपुते, सेवककी रुचि मीठ ॥ सीतापतिसे साहिबहि, कैसे दीजै पीठ ॥ ४८ ॥ तुलसी जाके होयगी, अंतर बाहरदीठ ॥ सोक्यों कृपालुहि देइगो, केवटपालहि पीठ ॥ ४९ ॥ प्रभुतरुतर कपि डार पर, ते किये आपु समान ॥ तुलसी कहूं न राम सों, साहिब शीलनि-

धान ॥५०॥ रेमन सबसों निरसकै, सरस रामसों होहि ॥ भलो सि- खावन देतहै, निशि दिन तुलसी तोहि ॥ ५१ ॥ हरो चरहिं तापहिं बरत, फरे पसारहिं हाथ ॥ तुलसी स्वारथ मीत सब, परमारथ रघु- नाथ ॥ ५२ ॥ स्वारथ सीतारामसों, परमारथ सियराम ॥ तुलसी तेरो दूसरे, द्वारकहाँ कहु काम ॥ ५३ ॥ स्वारथ परमारथसकल, सुलभ एकही ओर ॥ द्वार दूसरे दीनता, उचित न तुलसी तोर ॥ ॥ ५४ ॥ तुलसी स्वारथ रामहित, परमारथ रघुबीर ॥ सेवक जाके लषणसे, पवनतनय रणधीर ॥ ५५ ॥ ज्यों जग वैरी मीनको, आपु सहित परिवार ॥ त्यों तुलसी रघुबीर बिनु, गति आपनी विचार ॥ ॥ ५६ ॥ रामप्रेम बिन दूसरो, रामप्रेमही पीन ॥ रघुवर कबहूँ कर- हिंगे, तुलसी ज्यों जलमीन ॥ ५७ ॥ राम सनेही रामगति, रामचरण रतिजाहि ॥ तुलसी फल जग जन्मको, दियो विधाता ताहि ॥५८॥ आपु आपनेते अधिक, जेहि प्रिय सीताराम ॥ तेहिके पगकी पा- नहीं, तुलसी तनुको चाम ॥ ५९ ॥ स्वारथ परमारथ रहित, सीता- राम सनेह ॥ तुलसीसो फल चारिको, फल हमार मत एह ॥ ६० ॥ जेजन रूखे विषय रस, चिकने राम सनेह ॥ तुलसी ते प्रिय रामको, कानन बसहिं कि गेह ॥ ६१ ॥ यथा लाभ संतोष सुख, रघुवर चरण सनेह ॥ तुलसी ज्यों मन मूढ़सों, जस कानन तस गेह ॥ ६२ ॥ तुल- सी जोपै रामसों, नाहिंन सहज सनेह ॥ मूड़ मुड़ायो वादिही, भाँड़ भयो तजि गेह ॥ ६३ ॥ तुलसी श्रीरघुबीर तजि, करै भरोसा और ॥ सुख संपतिकी काचली, नरकहु नाहीं ठौर ॥ ६४ ॥ तुलसी परि- हरि हरि हरहि, पाँवर पूजहिं भूत ॥ अंत फजीहत होहिंगे, ज्यों गणि- काके पूत ॥ ६५ ॥ सेये सीताराम नहिं, भजे न शंकर गौरि ॥ जन्म गँवायो वादिही, रटत पराई पौंरि ॥६६॥ तुलसी हरि अपमानते, हो- इ अकाज समाज ॥ राजकरत रज मिलगये, सदल सकुल कुरुराज ॥ ६७ ॥ तुलसी रामहिं परिहरे, निपट हानि सुनिवेउ ॥ सुरसरिग- त सोई सलिल, सुरा सरिस गंगेउ ॥ ६८ ॥ राम दूरि माया बढ़ति, घटति जान मनमाँह ॥ धूरि होति रवि दूरि लखि, शिरपर पगतर छाँ- ह ॥ ६९ ॥ साहिब सीतानाथसों, जब घटिहै अनुराग ॥ तुलसी त-

वहीं भालते, भभारि आगिहै भाग ॥ ७० ॥ करिहौ कोशलनाथ त-
जि, जवहीं दूसरि आस ॥ जहाँ तहाँ दुखपाइहौ, तवहीं तुलसीदास
॥ ७१ ॥ लिंधनईंधन पाइये, सागर जुरै न नीर ॥ पड़ै उपास कुवेर
घर, जो विपक्ष रघुवीर ॥ ७२ ॥ वर्षाको गोवर भयो, कोचहै कोकरै
प्रीति ॥ तुलसी तू अनुभवहि अव, राम विमुखकी रीति ॥ ७३ ॥
सवहि समार्थहि सुखदप्रिय, अच्छम प्रिय हितकारि ॥ कवहुँ न
काहुहि रामपै, तुलसी कहाँ विचारि ॥ ७४ ॥ तुलसी उद्यम करम-
युग, तव जहँ राम सुडीठ ॥ होइ सफल सोइ ताहि सव, सन्मुख प्रभु त-
न पीठ ॥ ७५ ॥ प्रेमकाम तरु परिहरत, सेवत कलि तरु ठूंठ ॥
स्वारथ परमारथ चहत, सकल मनोरथ झूंठ ॥ ७६ ॥ निज दूषण
गुण रामके, समुझे तुलसीदास ॥ होय भलो कलिकालहू, उभय लो-
क अनयास ॥ ७७ ॥ कै तोहिं लागे रामप्रिय, कै तू प्रभु प्रिय होहि ॥
द्वैमहँ रुचै जो सुगमसो, कीवै तुलसी तोहि ॥ ७८ ॥ तुलसी
द्वै महँ एकही, खेल छाँड़ि छल खेलु ॥ कैकरु ममता राम सों,
कै ममता परहेलु ॥ ७९ ॥ निगम अगम साहेव सुगम, राम
साँचिली चाह ॥ अंबु अशन अवलोकियत, सुलभ सवै जग
माह ॥ ८० ॥ सन्मुख आवत पथिक ज्यों, दिये दाहिना वाम ॥
तैसोइ होत सुआपकी, त्योंहीं तुलसीराम ॥ ८१ ॥ रामप्रेम पथपे-
षिये, दिये विषय तनुपीठ ॥ तुलसी केंचुलि परिहरे, होत साँपहूंडीठ॥
॥ ८२ ॥ तुलसी जौलों विषयकी, सुधामाधुरीमीठ ॥ तौलों सुधा स-
हस्रसम, रामभगत सुठ सीठ ॥ ८३ ॥ जैसो तैसो रावरो, केवल को-
शलपाल ॥ तौ तुलसीको है भलो, तिहूँ लोक तिहुँकाल ॥ ८४ ॥ है
तुलसीके एकगुण, अवगुणनिधि कहैं लोग ॥ भलो भरोसो रावरो,
राम रीझिवे योग ॥ ८५ ॥ प्रीति राममो नीतपथ, चलियरागरिस-
जीत ॥ तुलसी संतनके मते, इहै भक्तिकी रीत ॥ ८६ ॥ सत्य वच-
न मानस विमल, कपटरहित करतूति ॥ तुलसी रघुवर सेवकहि, स-
कै न कलियुग धूति ॥ ८७ ॥ तुलसी सुख जो रामसो, दुखी सो नि-
ज करतूति ॥ करम वचन मन ठीक जेहि, तेहि न सकै कलि धूति ॥ ८८ ॥

नातो नाते रामके, राम सनेह सनेहु ॥ तुलसी माँगत जोरि कर, जन्म जन्म बुधिदेहु ॥ ८९ ॥ सब साधनको एकफल, जेहिजानै सोइ जान ॥ ज्यों त्यों मन मंदिर बसहिं, राम धरे धनु बान ॥९० ॥ जो जगदीश तौ अति भलो, जो महीश तौ भाग॥ तुलसी चाहत जन्मभरि, रामचरण अनुराग ॥ ९१ ॥ परहु नरक फल चार शिशु, मीचु डाँकिनी खाउ ॥ तुलसी राम सनेहको, जो फल सो जरिजाउ॥ ॥ ९२ ॥ हितसों हित रति रामसों, रिपुसों वैर तिहाउ ॥ उदासीन सबसों सरल, तुलसी सहज स्वभाउ ॥ ९३ ॥ तुलसी ममता रामसों, समता सब संसार ॥ राग न रोष न द्वेष दुख, दासभये भवभार ॥ ॥ ९४॥ रामहिं डरु करु रामसों, ममता प्रीति प्रतीत ॥ तुलसी निरुपधि रामको, भये हारिहूं जीत ॥ ९५ ॥ तुलसी राम कृपालुसों, कहि सुनाउ गुण दोष ॥ होय दूबरी दीनता, परम पीन संतोष ॥९६॥ सुमिरण सेवा रामसों, साहबसों पहिंचान ॥ ऐसेहु लाभ न ललकजो, तुलसी नित हितहान ॥९७॥ जाने जानत जोइये,विनु जाने को जान॥ तुलसी यह सुनि समुझि हिय,आनि धरे धनुबान ॥९८॥ करमठ कठमलिया कहै,ज्ञानी ज्ञान विहीन॥तुलसी त्रिपथ विहायगो, रामदुआरे दीन॥९९॥बाधक सब सबके भये,साधक भये न कोइ॥तुलसी राम कृपालुते,भलीहोय सो होइ॥१००॥ शंकरप्रिय ममद्रोही, शिवद्रोही मम दास ॥ ते नर करहिं कल्पभरि, घोर नरकमहँ बास ॥१०१॥ बिलग बिलग सुख संगदुख, जियन मरण सोइ रीति ॥ रहेते राखे रामके, भयेते उचित अनीति ॥ १०२ ॥ जाय कहब करतूति बिनु, जाय योग बिनुक्षेम ॥ तुलसी जाइ उपाय सब, विना रामपद प्रेम ॥ १०३ ॥ लोग मगनु सब योगही, योग जाय विनुक्षेम ॥ त्यों तुलसीके भावगतु, रामप्रेम बिनुनेम ॥ १०४ ॥ रामनिकाई रावरी, है सबहीकी नीक ॥ जो यह साँचीहै सदा, तौ नीको तुलसीक ॥ १०५ ॥ तुलसी राम जो आदरो, खोटो खरो खराइ ॥ दीपक काजर शिर धरो, धरो सुधरो धरोइ ॥ १०६ ॥ तनु विचित्र कायर वचन, अहि अहार मन घोर ॥ तुलसी हरि भये पक्ष धर, ताते कह सब मोर ॥ १०७ ॥

लहै न फूटीकौड़िहू,को चाहै क्यहि काज ॥ सो तुलसी महँगो कियो, राम गरीबनिवाज ॥ १०८ ॥ घर घर माँगे टूक पुनिं, भूपति पूजे पायँ ॥ ते तुलसी सब राम बिनु, ते अब राम सहायँ ॥ १०९ ॥ तुलसी राम सुदीठते, निबल होत बलवान ॥ बालि वैर सुग्रीवके, कहा कियो हनुमान ॥ ११० ॥ तुलसी रामहुते अधिक, रामभक्त जिय जान ॥ ऋणियाँ राजा रामसों, धनीभये हनुमान ॥ १११ ॥ कियो सो सेवक धर्म कपि, प्रभुकृतज्ञ जिय जान ॥ जोरि हाथ ठाढ़े भये, वरदायक वरदान ॥ ११२ ॥ भक्तहेतु भगवान प्रभु, राम धरो तनुभूप ॥ किय चरित्र पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥ ११३ ॥ ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया गुण गोपार ॥ सोई सच्चिदानंद घन, करत चरित्र उदार ॥ ११४ ॥ हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ॥ जेहि मारे सो अवतरचो, कृपासिन्धु भगवान ॥ ११५ ॥ शुद्ध सच्चिदानंद मय, कंद भानु कुलकेतु ॥ चरित करत नर अनुहरत, संसृत सागरसेतु ॥ ११६ ॥ बाल बिभूषण बसनवर, धूरिधूसरित अंग ॥ बालकेलि रघुवर करत, बाल बंधु सब संग ॥ ११७ ॥ अनुदिन अवध बधावने, नितनव मंगल मोद ॥ मुदित मातु पितु लोग लखि, रघुवर बाल बिनोद ॥ ११८ ॥ राज अजिर राजत रुचिर, कोशलपालक बाल ॥ जानु पाणि चर चरितवर, सगुण सुमंगल माल ॥ ११९ ॥ नाम ललित लीला ललित, ललित रूप रघुनाथ ॥ ललित बसन भूषण ललित, ललित अनुज शिशुसाथ ॥ १२० ॥ राम भरत लक्ष्मण ललित, शत्रुशमन शुभनाम ॥ सुमिरत दशरथ सुवन सब, पूजहिं सब मनकाम ॥ १२१ ॥ बालक कोशलपालके, सेवक बाल कृपाल ॥ तुलसी मन मानस बसत, मंगल मञ्जुमराल ॥ १२२ ॥ भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुर हित लागि कृपाल ॥ करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटहिं जञ्जाल ॥ १२३ ॥ निज इच्छा प्रभु अवतरैं, सुर गो द्विज हितलागि ॥ सगुण उपासक संगतहँ, रहे मोक्ष सब त्यागि ॥ १२४ ॥ परमानंद कृपायतन, मनपरिपूरणकाम ॥ प्रेमभक्ति अनपावनी, हमहिं देहु श्रीराम ॥ १२५ ॥ वारि मथे घृत

होय बरु, सिकताते बरु तेल ॥ बिनु हरि भजन न भवतरै, यह सि-
द्धान्त अपेल ॥ १२६ ॥ हरिमाया कृत दोष गुण, बिनु हरि भजन
न जाहिं ॥ भजिय राम सब काम तजि, अस विचारि मनमाहिं॥१२७॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़ै करहि चैतन्य॥ अस समर्थ रघुनायकहि
भजहिं जीव ते धन्य॥१२८॥ श्रीरघुवीर प्रतापते, सिंधु तरे पाषान॥
ते मतिमंद जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभु आन ॥ १२९ ॥ लवणमेष
परमान युग, वर्षकल्प शरचण्ड ॥ भजहि न मन त्यहि राम कहँ,
काल जासु कोदण्ड ॥१३०॥ तब लगि कुशल न जीवकहँ, सपन्यहुँ
मन विश्राम॥ जबलगि भजत न रामपद,शोकधाम तजिकाम॥१३१॥
बिनुसतसंग न हरिकथा, त्यहि बिनु मोह न भाग ॥ मोहगये बिनु
रामपद, होय न दृढ़ अनुराग ॥१३२॥बिनु विश्वासे भक्ति नाहिं,तेहि
बिनु द्रवाहिं न राम ॥ रामकृपा बिनु सपन्यहुँ,जीव न लह विश्राम ॥
॥ १३३ ॥ (सोरठा) ॥ अस विचारि मन धीर, तजि कुतर्क संशय स-
कल ॥ भजहु राम रघुवीर, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥ १३४॥ भाव
वश्य भगवान, सुखनिधान करुणाभवन ॥ तजि ममता मदमान, भ-
जिय सदा सीतारमन ॥ १३५॥कहहिं विमल मति सन्त, वेद पराण
विचारि सब ॥ द्रवैं जानकीकन्त, तब छूटै संसार दुख ॥ १३६ ॥
बिनु गुरु होइ न ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग बिनु ॥ गावहिं वेद पुरान,
सुख कि लहिय हरिभक्ति बिनु ॥१३७॥ (दोहा) ॥ रामचंद्रके भजन
बिनु, जो चह पद निर्वान ॥ ज्ञानवंत अपि सोइ नर, पशु बिन पूँछ
बखान ॥१३८॥ जरो सो संपति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाइ ॥
विमुखहोत जो रामपद, करै न सहज सहाइ ॥ १३९ ॥ सोइ साधु
सुनि समुझि कर, रामभक्ति थिरताइ ॥ लरिकाइंको पैरिबो, तुलसी
विसरि न जाइ ॥ १४० ॥ सबै कहावत रामके, सबहि रामकी आस ॥
रामकहैं ज्यहि आपनो, त्यहि भजु तुलसीदास ॥ १४१ ॥
ज्यहि शरीर रति रामसों, सोइ आदरै सुजान ॥ रुद्रदेह त-
जि नेह वश, वानर भे हनुमान ॥१४२॥ जानि रामसेवा सरस, समुझि
करब अनुमान ॥ पुरुखाते सेवकभये, हरते भये हनुमान॥१४३तुल-

सी रघुबर सेवकहि, खल ढांढस मन माख॥बाजराजके बालकहि, लवा दिखावत आँख ॥ १४४ ॥ रावण रिपुके दास सों, कायर करहिं कुचालि ॥ खर दूषण मारीच ज्यों, नीच जाहिंगे कालि ॥ १४५ ॥ पुण्य पाप यश अयशके, भावी भाजन भूरि॥ संकट तुलसीदासको रामकरहिंगे दूरि ॥ १४६ ॥ खेलत बालक व्यालसँग, मेलत पावक हाथ ॥ तुलसी शिशु पितु मातु ज्यों, राखत सिय रघुनाथ ॥ ॥ १४७ ॥ तुलसी दिनभल शाहकहँ, भली चोर कहँ राति ॥ निशि बासर ताकहँ भलो, मानै रामइताति ॥ १४८ ॥ तुलसी जनि सुनि समुझिये, कृपासिंधु रघुराज ॥ महँगेमणि कंचन किये, सोधो जग जल नाज ॥ १४९ ॥ सेवा शील सनेह वश, करि परिहरि प्रियलोग ॥ तुलसी ते सब रामसों, सुखद सुयोग वियोग ॥१५०॥ चारि चहत मानस अगम, चनक चारिको लाहु॥चारि परिहरे चारिको, दानि चारि चख चाहु ॥ १५१ ॥ सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब करतूति ॥ तुलसी सूधी सकलविधि, रघुबर प्रेम प्रतीति ॥१५२॥ वेषविशद बोलनि मधुर, मन कटु हृदय मलीन ॥ तुलसी राम न पाइये, भये विषय जल मीन॥१५३॥वचन वेषते जो बनै,सो बिगरै परिणाम॥ तुलसी मन ते जो बनै, बनी बनाई राम॥१५४ ॥ नीच मीचुलै जाइ जो, राम रजायसु पाइ॥ तो तुलसी तेरो भलो, नत अनभलो अघाइ॥१५५॥ जातिहीन अघजन्म महि, मुक्तिकीनि असनारि ॥ महामन्द मन सुख चहहिं, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ १५६ ॥ बंधु बधू रत कयहि कियो, वचन निरुत्तरबालि ॥ तुलसी प्रभु सुग्रीवकी, चितै न कछू कुचालि ॥ १५७ ॥ बाली बलि बलशालि दल, सखा कीन्ह कपिराज ॥ तुलसी राम कृपालु को,विरद गरीबनिवाज ॥ १५८ ॥ कहा विभीषण लै मिलो,कहा बिगारो बालि ॥ तुलसी प्रभु शरणागतहि, सब दिन आयो पालि ॥ १५९ ॥ तुलसी कोशलपालसों, को शरणागत पाल ॥ भज्यो विभीषण बन्धु भय, भंज्यो दारिद काल ॥ १६० ॥ कुलिशहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ॥ चित खगेश अस रामकर, समुझि परै कहुकाहि॥ १६१ ॥ वल्कल भूषण फल अ-

शन,विन शय्या द्रुम प्रीति ॥ तेहि समय लंका दई, यह रघुवरकी रीति ॥ १६२॥ जोसंपति शिव रावणहि, दीन दिये दशमाथ ॥ सोइ संपदा विभीषणहिं, सकुचि दीन रघुनाथ ॥ १६३ ॥ अविचल राज विभीषणहिं, दीन राम रघुराज ॥ अजहुँ विराजत लंकपर, तुलसी सहित समाज ॥ १६४ ॥ कहा विभीषण ले मिल्यो, कहादियो रघुनाथ ॥ तुलसी यह जाने बिना, मूढ मीजिहैं हाथ ॥ १६५ ॥ वैरि बंधु निशिचर अधम, तजो न भरे कलंक ॥ झूंठे अघ सिय परिहरी, तुलसी सोय अशंक ॥ १६६॥ त्यहि समाजकियो कठिनपण, जेहि तौल्यो कैलास ॥ तुलसी प्रभु महिमा कहौं, सेवकको बिश्वास ॥ १६७ ॥ सभा सभासद निरखि पट, पकरि उठाये हाथ ॥ तुलसी किये इगारहौं, बसन वेष यदुनाथ ॥ १६८ ॥ त्राहि तीन कहि द्रौपदी, तुलसी राजसमाज ॥ प्रथम बढेपट चित विकल, चहत चकित निजकाज ॥ ॥ १६९ ॥ सुखजीवन सबकोउ चहत, सुखजीवन हरिहाथ ॥ तुलसी दाता माँगन्यो, देखियत अबुधअनाथ ॥ १७० ॥ कृपणदेइ पाँइय परो, बिनु साधन सिधिहोय ॥ सीतापतिसंमुख समुझि, जो कीजै शुभसोइ ॥ १७१ ॥ दंडकवन पावन करन, चरण सरोज प्रभाउ ॥ ऊसर जामहि खलतरहि, होइ रंकते राउ ॥ १७२ ॥ विनहीं ऋतु तरुवर फरहिं, शिला द्रवहिं जलजोर ॥ राम लषण सिय करि कृपा,जब चितवहिं जेहि ओर॥१७३॥शिला सो तियभइ गिरितरे, मृतक जिये जगजान ॥ राम अनुग्रह शकुन शुभ, सुलभ सकल कल्यान ॥ १७४ ॥ शिलाशापमोचनचरण, सुमिरहु तुलसीदास ॥ तजहु शोच संकट मिटहिं, पूजहिं मनकी आस ॥ १७५ ॥ मरे जिआये भालु कपि, अवध विप्रकोपूत ॥ सुमिरहु तुलसी ताहितू, जाको मारुत दूत॥१७६॥ काल करम गुण दोष जग, जीव तिहारे हाथ ॥ तुलसी रघुवर रावरो, जान जानकी नाथ ॥ १७७ ॥ रोग निकर तनु जरठपन, तुलसी संगको लोग ॥ राम कृपालय पालिये, दीनपालिवे योग ॥ १७८ ॥ मोसम दीन न दीनहित, तुम समान रघुवीर ॥ अस विचारि रघुवंशमणि, हरहु विषम भवभीर ॥ १७९ ॥

भव भुवंग तुलसी नकुल, डसत ज्ञान हरिलेत ॥ चित्रकूट इक औ-
षधी, चितवत होत सचेत ॥ १८० ॥ हौंहुँ कहावत सब कहत, राम
सहत उपहास ॥ साहब सीताराम सों, सेवक तुलसीदास ॥ १८१ ॥
राम राज राजत सकल, धरम निरत नर नारि ॥ राग न रोष न द्वेष
दुख, सुलभ पदारथ चारि ॥ १८२ ॥ रामराज संतोष सुख, घर वन
सकल सुपास ॥ सुरतरु तरु सुरधेनु महि, अभिमत भोग बिलास
॥१८३॥खेती बणि विद्या बणिज, सेवा शिल्प सोकाज ॥ तुलसी सु-
रतरु सहित सब, सफल रामके राज ॥ १८४ ॥ दंडयतिनकरभेदजहँ,
नरतक नृत्य समाज ॥ जीतहु मनहि सुनिय अस, रामचंद्रके राज
॥ १८५॥ कोपे शोचत पोचकर, करिय निहारन काज ॥ तुलसी पर-
मित प्रीतिकी, रीते रामके राज ॥१८६ ॥ सुकुर निरखि मुख रामभ्रू,
गनत गुणहिं दै दोष ॥ तुलसीसे शठ सेवकनि, लखि जिन परहि
सरोष ॥ १८७ ॥ सहसनाम सुनि भनित सुनि, तुलसी वल्लभ नाम॥
सकुचतहिय हँसि निरखि सिय, धरमधुरंधर राम ॥ १८८ ॥ गौतम
तिय गति सुरति करि, नहिं परसति पगपानि ॥ हियहर्षे रघुवंशमणि,
प्रीति अलौकिकजानि ॥ १८९ ॥ तुलसी बिलसतनखत निशि, श-
रद सुधाकर साथ ॥ मुक्ताझालरझलकजनु, राम सुयश शिशुहाथ ॥
॥ १९० ॥ रघुपति कीरति कामिनी, क्यों कहै तुलसीदास ॥ शरद
प्रकाश अकाश छबि, चारुचिबुक तिलजास ॥ १९१ ॥ प्रभु गुणग-
ण भूषण बसन, विशद विशेष सुदेश ॥ राम सुकीरति कामिनी, तु-
लसी करतब केश ॥ १९२ ॥ रामचरित राकेशकर, सरिस सुखद
सब काहु॥सज्जन कुमुद चकोरचित,हित विशेष बड़लाहु॥१९३॥रघु-
बरकीरतिसज्जननि, शीतलखलनि सुताति॥ज्यों चकोर चपचक्कवनि,
तुलसी चाँदनिराति॥१९४॥रामकथा मंदाकिनी,चित्रकूट चित चारु॥
तुलसी सुभग सनेह वन,सिय रघुवीर विहारु॥१९५॥श्याम सुरभि प-
य विशद अति, गुणद करहिं तेहि पान ॥ गिराग्राम सियराम यश,
गावहिं सुनहिं सुजान ॥ १९६ ॥ हरि हर यश सुर नर गिरन, वर्णहिं
सुकवि समाज ॥ हाटी हाटक घटित चरु, रांधे स्वाद सुनाज ॥१९७॥

तिलपर राख्यो सकल जग, विदित विलोकत लोग ॥ तुलसी महिमा रामकी, कोउ न जानि वियोग ॥ १९८॥ (सोरठा) ॥ रामस्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिपर ॥ अविगति अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह ॥ १९९॥ (दोहा) ॥ मायाजीव स्वभाव गुण, काल करम महदाद ॥ ईश अंकते बढ़त सभ, ईशअंक विनुवाद ॥ २००॥ हित उदास रघुवर विरह, विकल सकल नर नारि ॥ भरत लषण सियगति समुझि, प्रभु चख सदा सुवारि ॥ २०१ ॥ सीय सुमित्रासुवनगति, भरत सनेह सुभाउ ॥ कहिबेको शारद सरस, जनिबेको रघुराउ ॥ २०२ ॥ जानहिं राम न कहि सके, भरत लषण सियप्रीति ॥ सो सुनि समुझि तुलसी कहत, हठ शठताकी रीति ॥ ॥ २०३ ॥ सब विधि समरथ सकल कहि, सहि शासन दिन राति ॥ भलो निबाहो सुनि समुझि, स्वामिधर्म सब भाँति ॥ २०४ ॥ भरतहि होइ न राजमद, विधि हरि हर पदपाइ ॥ कबहुँक काजी सीकरनि, क्षीरसिंधु विनशाय ॥ २०५ ॥ संपति चकई भरत चक, मुनि आयसु खिलवार ॥ तेहि निशि आश्रमपींजरा, राखे भा भिनुसार ॥ ॥ २०६ ॥ सधन चोर सँग मुदित मन, धनी गहै ज्यों फेंट ॥ त्यों सुग्रीव विभीषणहिं, भई भरतकी भेंट ॥ २०७ ॥ राम सराहे भरत उठि, मिले राम सम जानि ॥ तदपि विभीषणकीशपति, तुलसी गरन गलानि ॥ २०८॥ भरतश्यामतन रामसम, सब गुण रूपनिधान ॥ सेवक सुखदायक सुलभ, सुमिरत सब कल्यान ॥ २०९ ॥ लसत लषण मूरति मधुर, सुमिरहु सहित सनेह ॥ सुखसंपति कीरति विजय, शकुन सुमंगल गेह ॥ २१० ॥ नाम शत्रुसूदन शुभग, सुखमाशील निकेत ॥ सेवत सुमिरत सुलभ सुख, सकल सुमंगल देत ॥ ॥२११॥ कौशल्या कल्याणमय, मूरति करति प्रणाम ॥ शकुन सुमंगल काज शुभ, कृपा करहिं सियराम ॥ २१२॥ सुमिरि सुमित्रानाम जग, जेतिय लेहिं सुनेम ॥ सुवन लषण रिपुदमनसे, पावहिं पति पद प्रेम ॥ २१३ ॥ सीता चरण प्रणामकरि, सुमिरि सुनाम सुनेम ॥ सोतिय होहिं पतिदेवता, प्राणनाथ प्रियप्रेम ॥ २१४ ॥ तुलसी केवल काम-

तरु, रामचरित्र अराम ॥ कलितरु कपि निश्चर कहत, हमहिं किये बिधिवाम ॥ २१५ ॥ मातु सकल सानुज भरत, गुरु पुरलोग सुभाउ ॥ देखत देखत कैकयिहि, लंकापति कपिराउ ॥ २१६ ॥ सहज सरल रघुबर वचन, कुमति कुटिल करि जान ॥ चलै जोंक जल वक्रगति, यद्यपि सलिल समान ॥ २१७ ॥ दशरथ नाम सुकामतरु, फलै सकल कल्यान ॥ धरणि धाम धन धरमसुत, सद्गुण रूपनिधान ॥ ॥ २१८ ॥ तुलसी जान्यो दशरथहि, धर्म न सत्य समान ॥ राम तजे ज्यहि लागि वन, आपु परिहरे प्रान ॥ २१९ ॥ रामविरह दशरथ मरण, मुनिमन अगम सुमीचु ॥ तुलसी मंगल मरण तरु, शुचि सनेह जल सींचु ॥ २२० ॥ (सोरठा) ॥ जीवन मरण समान, जैसे दशरथ रायको ॥ जियत खिलाये राम, रामविरह तनु परिहरेउ ॥ २२१ ॥ (दोहा) ॥ प्रभुहि विलोकत गीधगति, सिय हित घायल नीचु ॥ तुलसी पाई गीधपति, मुक्ति मनोहर मीचु ॥ २२२ ॥ बिरत कर्मरत भरत मुनि, सिद्ध ऊंच अरु नीच ॥ तुलसी सकल सिहात सुनि, गीधराजकी मीच ॥ २२३ ॥ मुये मरत मरिहै सकल, घरी पहरके बीच ॥ लही न काहू आजुलौं, गीधराजकी मीच ॥ २२४ ॥ मुये मुक्तजीवित मुकत, मुकत मुकतहूं बीच ॥ तुलसी सबहीते अधिक, गीधराज की मीच ॥ २२५ ॥ रघुबर विकल विहंग लखि, सो बिलोकि दोउ बीर ॥ सिय सुधि कहि सियराम कहि, तजी देह मतिधीर ॥ २२६ ॥ दशरथते दशगुण भगति, सहित तासु कर काजु ॥ शोचत बंधु समेत प्रभु, कृपासिंधु रघुराज ॥ २२७ ॥ केवट निशिचर बिहँग मृग, किये साधु सनमानि ॥ तुलसी रघुवरकी कृपा, सकल सुमंगलखानि ॥ ॥ २२८ ॥ मंजुल मंगल मोदमय, मूरति मारुतपूत ॥ सकल सिद्धिकर कमलतल, सुमिरत रघुवर दूत ॥ २२९ ॥ धीर वीर रघुबीर प्रिय, सुमिरि समीर कुमार ॥ अगम सुगम सब काजकर, करतल सिद्धिविचार २३० सुखमुद मंगलकुमुद विधु, शकुन सरोरुह भानु ॥ करहु काज सबसिद्धि शुभ, आनि हिये हनुमानु ॥ २३१ ॥ सकल काज शुभ समउ भल, शकुन सुमंगल जानु ॥ कीरति विजय विभूति भलि, हिय

हनुमानहि आनु ॥ २३२ ॥ शूर शिरोमणि साहसी, सुमति समीरकुमार ॥ सुमिरत सब सुख संपदा, मुदमंगल दातार ॥ २३३ ॥ तुलसी तनु सर सुख जलज, भुजरुजगज बरजोर ॥ दलत दयानिधि देखिये, कपि केशरीकिशोर ॥ २३४ ॥ भुजतरु कोटर रोग अहि,बरबश कियो प्रवेश ॥ विहँगराज बाहन तुरत, काढ़िय मिटै कलेश ॥ ॥ २३५ बाहु विटप सुख विहंग थल,लगी कुपीर कुआगि ॥ रामकृपा जल सींचिये, वेगिहि दिनहितलागि॥२३६॥ (सोरठा) ॥ मुक्तिजन्म महि जानि,ज्ञानखानि अघहानि कर ॥ जहँ बस शंभु भवानि, सोकाशी सेइय कस न ॥ २३७ ॥ जरत सकल सुरवृंद, विषम गरल जेहि पानकिय ॥ तेहि न भजसि मतिमंद, को कृपालु शंकर सरिस ॥ ॥ २३८ ॥ (दोहा) ॥ वासर ढासनिकेढका,रजनीचहुँदिशि चोर ॥ शंकर निज पुर राखिये, चितै सुलोचन कोर ॥ २३९ ॥ अपनीबीसीआपुही, पुरिहि लगाये हाथ ॥ क्यहिविधि विनती विश्वकी, करौंविश्वकेनाथ ॥ २४० ॥ और करे अपराध कोउ, और पाव फल भोग ॥ अति विचित्र भगवंतगति, कोउ न जानिबे योग ॥ २४१ ॥ प्रेमसरी परपंच रुज,उपजीअधिक उपाधि ॥ तुलसी भलो सबै दई वेगिबांधिये व्याधि ॥२४२॥हम हमार आचारबड़,भूरिभार धरशीश ॥ हठि शठ परवश परत जिमि, कीर कोश कृमि कीश ॥ २४३॥ क्यहि मग प्रविशत जातिकेहि, ज्यों दर्पणमें छांह॥ तुलसीत्योंजगजीवगति, करी जीहकेनांह ॥ २४४ ॥ सुखसागर सुखनीदवश, सपने सब करतार ॥ माया मायानाथकी, को जग जाननहार॥ २४५॥ जीव शीव सम सुख शयन, सपने कछु करतूति ॥ जागत दीन मलीन सोइ, विकल विषाद विभूति॥ २४६॥सपनेहोय भिखारि नृप, रंक नाकपति होय॥ जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जियजोय ॥२४७॥ तुलसी देखत अनुभवत,सुनत न समुझत नीच ॥चपरि चपेटे देत नित, केशग हेकरमीच॥२४८॥करमखरीकरमोहथल, अंक चराचर जाल॥ हनत गुनत गनिगुणि हनत, जगतज्योतिषीकाल ॥ २४९॥ कहिबे कहँ रसना रची, सुनिबे कहँ किय कान ॥ धरिके चित हित सहित

सुनि, परमारथहि सुजान ॥ २५० ॥ ज्ञान कहै अज्ञान विन, तमवि-
नु कहै प्रकाश ॥ निरगुणकहै जो सगुण विनु, सो गुरु तुलसीदास ॥
॥ २५१ ॥ अंकअगुण आखर सगुण, समुझिय उभय अपार ॥ खो-
ये राखे आप भल, तुलसी चारु विचार ॥ २५२ ॥ परमारथ पहिं-
चानि मति, लसति विषय लपटानि ॥ निकसि चिताते अधजराति,
मानहुँ सती परानि ॥ २५३॥ शीश उघारन किन कहेउ, बरजि रहे
प्रियलोग ॥ घरहीं सती कहावती, जरती नाह वियोग ॥ २५४ ॥
खरि आखरी कपूर सब, उचित न पियातिय त्याग ॥ कैखरिया मोहिं
मेलिकै, विमल विवेक विराग ॥ २५५ ॥ घरकीन्हे घरजातहै, घर-
छांड़े घरजाइ ॥ तुलसी घर वन बीचही, राम प्रेमपुर छाइ ॥२५६॥
दियेपीठि पाछे लगै, सन्मुख होत पराय ॥ तुलसी संपति छांह ज्यों,
लखि दिन बैठि गँवाय ॥ २५७ ॥ तुलसी अद्भुत देवता, आशादे-
वी नाम ॥ सेये शोक समर्पई, विमुखभये अभिराम ॥ २५८ ॥ सोई
सेंवर तेइ सुवा, सेवत सदा बसंत ॥ तुलसी महिमा मोहकी, सुनत स-
राहत संत ॥ २५९ ॥ करत न समुझत झूंठ गुण, सुनत होत मति-
रंक ॥ पारद प्रकट प्रपंच मय, सिद्धिहि नाउ कलंक ॥ २६० ॥ ज्ञा-
नी तापस शूर कवि, कोविद गुण आगार ॥ केहिके लोभ विडंबना
कीन्ह न यहि संसार ॥ २६१ ॥ श्रीमद वक्र न कीन केहि, प्रभुता
वधिर न काहि ॥ मृगनयनीके नयन शर, को अस लागि न जाहि ॥
॥ २६२ ॥ व्यापि रहेउ संसार महँ, माया कटक प्रचंड ॥ सेनापति
कामादि भट, दंभ कपट पाषंड ॥ २६३ ॥ तात तीनि अति प्रबल
खल, काम क्रोध अरु लोभ ॥ मुनि विज्ञान सुधाम मन, करहिं नि-
मिषमहँ क्षोभ ॥ २६४ ॥ लोभके इच्छा दंभ बल, कामके के-
वल नारि ॥ क्रोधके परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥
॥ २६५ ॥ काम क्रोध लोभादिमद, प्रबल मोहके धारि ॥ तिनमहँ
अति दारुण दुखद, मायारूपी नारि ॥ २६६ ॥ कानहिं पावक ज-
रिसकै, का न समुद्र समाइ ॥ का न करै अबला प्रबल, क्याहि जग
काल न खाइ ॥ २६७ ॥ जन्मपत्रिका वर्तिकै, देखहु मनहिं विचारि ॥

दारुण वैरी मीचुके, बीच विराजति नारि ॥ २६८ ॥ दीपशिखा सम युवतितन, मन जन होसि पतंग ॥ भजहि राम तजि काम मद, करहि सदा सतसंग ॥ २६९ ॥ काम क्रोध मद लोभरत, गृहाशक्त दुखरूप ॥ ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ़ परे भवकूप ॥ २७० ॥ गृह गृहीत पुनि वातवश, त्यहि पुनि बीछीमार ॥ ताहि पियाई वारुणी, कहहु कौन उपचार ॥ २७१ ॥ ताहि कि संपति शकुन शुभ, सपनेहु मन विश्राम ॥ भूतद्रोह रत मोहवश, राम विमुख रतिकाम ॥ ॥ २७२ ॥ कहत कठिन समुझत कठिन, साधत कठिन विवेक ॥ होइ घुनाक्षर न्यायजो, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ २७३ ॥ खल प्रबोध जगशोध मन, को निरोध कुल शोध ॥ करहिं ते फोकट पचिमरहिं, सपनेहु सुख न सुबोध ॥ २७४ ॥ (सोरठा) ॥ कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिनु ॥ चले कि जल बिनु नाव, कोटियतन पचिपचि मरिय ॥ २७५ ॥ सुर नर मुनि कोउनाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल ॥ अस विचारि मनमाहिं, भजिय महामायापतिहि ॥ २७६ ॥ ॥ (दोहा) ॥ एक भरोसो एक बल, एक आश विश्वास ॥ एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास ॥ २७७ ॥ जो घन बरषै समय शिर, जो भरिजन्म उदास ॥ तुलसी याचित चातकहि, तऊ तिहारी आस ॥ २७८ ॥ चातक तुलसीके मते, स्वातिहु पियै न पानि ॥ प्रेमतृषा बाढ़ति भली, घटे घटैगी कानि ॥ २७९ ॥ रटत रटत रसना लटी, तृषा सूखि गये अंग ॥ तुलसी चातक प्रेमको, नितनूतन रुचिरंग ॥ ॥ २८० ॥ चढ़त न चातक चितकबहुँ, प्रिय पयोदके दोष ॥ तुलसी प्रेम पयोधिकी, ताते नाप न जोष ॥ २८१ ॥ बरषि परुष पाहन पयद, पंख करौ टुक टूक ॥ तुलसी परी न चाहिये, चतुर चातकहि चूक ॥ २८२ ॥ उपल बरषि गरजत तरजि, डारत कुलिश कठोर ॥ चितौ कि चातक मेघतजि, कबहुँ दूसरी ओर ॥ २८३ ॥ पवि पाहन दामिनि गरज, झरि झकोर खरि खीझि ॥ रोष न प्रीतम दोष लखि, तुलसी रागहिं रीझि ॥ २८४ ॥ मानराखिबो मांगिबो, पियसों नित नव नेहु ॥ तुलसी तीनिउ तब फबै, जो चातक मत लेहु ॥ २८५ ॥

तुलसी चातकही फबै, मान राखिबो प्रेम ॥ वक्र बूंद लखि स्वातिहू, निदरि निबाहत नेम ॥ २८६ ॥ तुलसी चातक माँगने, एक २ घनि दानि ॥ देत जो भूभाजन भरत, लेत जो घूंटक पानि ॥ २८७॥ तीनिलोक तिहुँकालमें, चातकहीके माथ ॥ तुलसी जासु न दीनता, सुनी दूसरे नाथ ॥ २८८ ॥ प्रीति पपीहा पैदकी, प्रकट नई पहिंचानि ॥ याचक जगति कनाउड़ो, कियो कनौड़ो दानि ॥ २८९ ॥ नहिं याचत नहिं संग्रही, शीशनाइ नहिंलेइ ॥ ऐसे मानिहि मांगनेहि, को वारिद बिनदेइ ॥ २९०॥ किन किन ज्यायो जगतमें, जीवत दायकदानि ॥ भयो कनौड़ो याचकहि, पयद प्रेम पहिचानि ॥ ॥ २९१ ॥ साधन सांसत सब सहत, सबहिं सुखद फल लाहु ॥ तुलसी चातक जलदकी, रीति बूझि बुधकाहु ॥ २९२ ॥ चातक जीवन दायकहि, जीवन समय सुरीति ॥ तुलसी अलख न लखिपरै, चातक प्रीति प्रतीति ॥ २९३ ॥ जीव चराचर जहँलगे, है सबको हित मेह ॥ तुलसी चातक मन बस्यो, घनसों सहज सनेह ॥ २९४ ॥ डोलत विपुल विहंग वन, पियत पोषरिन वारि ॥ सुयश धवल चातक नवल, तुही भुवन दशचारि ॥ २९५ ॥ मुख मीठे मानस मलिन, कोकिल मोर चकोर ॥ सुयश धवल चातक नवल, रह्यो भुवन भरितोर ॥ २९६ ॥ वास वेष बोलनि चलनि, मानस मंजु मराल ॥ तुलसी चातक प्रेमकी, कीरति विशद विशाल ॥ २९७ ॥ प्रेम न परखिय पुरुष पन, पयद सिखावन एह ॥ जग कहै चातक पातकी, ऊसर बरषै मेह ॥ २९८ ॥ होइ न चातक पातकी, जीवनदानि न मूढ़ ॥ तुलसी गति प्रहलादकी, समुझि प्रेमपयगूढ॥ २९९॥ गरज आपनी सबनको, गरज करत उर आनि ॥ तुलसी चातक चतुरभो, याचक जानि सुदानि॥३००॥चरग चंगु गत चातकहि, नेम प्रेमकी पीर ॥ तुलसी परवश हाड़पर, परिहै पुहुमी नीर ॥ ३०१ ॥ वध्यो वधिक पर्यो पुण्यजल, उलटि उठाई चोंच ॥ तुलसी चातक प्रेम पट, मरतहु लगी न खोंच ॥३०२॥ अंडफोरि कियो चेटुवा, तुष परो नीर निहारि ॥ गहि चंगु-

ल चातक चतुर, डारचो बाहिर वारि ॥ ३०३ ॥ तुलसी चातक देख शिख, सुतहि बारही बार ॥ तात न तर्पण कीजिये, बिना वारि-धरधार ॥ ३०४॥ (सोरठा) ॥ जियत न नाई नारि, चातकवनताजि दूसरहि ॥ सुरसरिहूंकी वारि, मरत न माँगेउ अरघ जल ॥ ३०५ ॥ सुनरे तुलसी दास, प्यास पपीहहि प्रेमकी ॥ परिहरि चारिउमास, जो अँचवै जल स्वातिको ॥ ३०६ ॥ याचै बारहमास, पियै पपीहा स्वातिजल ॥ जान्यो तुलसीदास, जोगवत नेही नेहमन ॥ ३०७ ॥ तुलसीके मत चातकहि, केवल प्रेमपियास॥ पियत स्वातिजल जा-नजग, याचक बारहमास ॥ ३०८ ॥ आलबाल मुक्ताहलनि, हिय सनेह तरु मूल ॥ होइ हेतु चित चातकहि, स्वाति सलिल अनुकूल ॥ ३०९ बिबिरसना तनु श्यामहैं, वंक चलनि विषखानि ॥ तुलसी यश श्रवणनि सुन्यो, शीश समरप्यो आनि ॥ ३१० ॥ उष्णकाल अरुदेहषित, मगपंथी तन ऊख ॥ चातक बतियाँ ना रुची अन जल सींचे रूख ॥ ३११ अन जल सींचे रूखकी, छायाते बरु घाम ॥ तुलसी चातक बहुतहै, यह प्रवीनको काम ॥ ३१२ ॥ एक अंग जो सनेहता, निशि दिन चातकनेह॥ तुलसी जासों हितलगै, वहि अहार वो देह ॥ ३१३ ॥ आपु व्याधको रूपधरि, कुहौ कुरंगहि राग ॥ तुलसी जो मृगमन मुरै, परै प्रेम पट दाग ॥ ३१४ ॥ तुलसी मणिनि-ज द्युति फणिहि, व्याधहि देउ दिखाय ॥ बिछुरत होइ न आँधरो, ताते प्रेम न जाय ॥ ३१५ ॥ जरत तुहिन लखि वनजवन, रविदै पी-ठि पराउ ॥ उदय विकश अथवत सकुच, मिटै न सहज सुभाउ ॥ ॥ ३१६ ॥देउ आपने हाथ जल, मीनहि माहुर घोरि ॥ तुलसी जिय जो वारिविनु, तौ तुदेहि कविखोरि ॥ ३१७ ॥ मकर उरग दादुर कमठ, जलजीवन जलगेह ॥ तुलसी एकै मीनको, है साँचिलो सनेह ॥ ॥ ३१८ ॥ तुलसी मिटै न मारिमिटेहु, साँचो सहज सनेह ॥ मोर शिखाविनु मूरिहू, गरजत पलुहत मेह ॥ ३१९ सुलभ प्रीति प्रीतम सबै, कहत करत सब कोइ ॥ तुलसी मीन पुनीतते, त्रिभुवन बड़ो न कोइ ॥ ३२० ॥ तुलसी जप तप नेम व्रत, सब

सबहीते होइ ॥ लहै बड़ाई देवता, इष्ट देव जब होइ ॥ ३२१ ॥ कुदिन हितूसों हित सुदिन, हित अनहित किन होइ ॥ शशि छवि हर रविसदन तउ, मित्र कहत सब कोइ ॥ ३२२ ॥ कै लघु कै बड़मीत भल, सम सनेह दुखसोइ ॥ तुलसी ज्यों घृत मधु सरिस, मिले महाविषहोइ ॥ ३२३ ॥ मान्यमीतसों सुख चहै, सो न छुये छलछाँह ॥ शशि त्रिशंकु कैकयी गति, लखि तुलसी मन माँह ॥ ३२४ ॥ कहीं कठिन कृत कोमलहुँ, हित हठि होइ सहाइ ॥ पलक पानि पर ओड़िअत, समुझि कुघाइ सुघाइ ॥ ३२५ ॥ तुलसी वैर सनेह दोउ, रहित विलोचन चारि ॥ सुरहिं सेवरा आदरहिं, निंदहिं सुरसरि वारि ॥ ३२६॥ रुचै मांगनेहि मांगिबो, तुलसी दानिहि दानु ॥ आलस अनख न आचरज, प्रेम पिहानी जानु ॥ ३२७॥ अमिय गारि गारेउ गरल, मारि करे करतार ॥ प्रेम वैर कीजननि युग, जानहि बधन गँवार ॥३२८॥ सदा न जे सुमिरत रहहिं,मिलिन कहैं प्रियवैन ॥ तेपै तिन्हके जायवर, जिनके हिये न नैन ॥ ३२९॥ हित पुनीत सब स्वारथहि, अरि अशुद्ध बिनु चांड ॥ निजमुख माणिक सम दशन, भूमि परेते हांड॥३३०॥ माखी काक उलूक वक, दादुरसे भयेलोग ॥ भले ते शुक पिक मोरसे, कोउ न प्रेमपथ योग ॥ ३३१॥ हृदय कपट वर वेषधरि, वचन कहैं गढ़ि छोलि॥ अबके लोग मयूरज्यों,क्यों मिलिये मन खोलि ॥ ३३२ ॥ चरण चोंच लोचन रँगो,चलो मराली चाल ॥ क्षीर नीर विवरन समै, बक उघरत तेहिकाल ॥ ३३३ ॥ मिलै जो सरलहि सरलहै, कुटिल न सहज विहाइ ॥शीत हेतु ज्यों वक्रगति, व्याल न बिलै समाइ ॥३३४॥ कृपधन सखहि न देवदुख, मुयहु न मांगब नीच॥ तुलसी सज्जनकी रहनि, पावक पानी बीच ॥ ३३५ ॥ संग सरल कुटिलहि भये, हरि हर करहिं निबाहु ॥ ग्रहगनती गनि चतुरविधि, कियो उदर बिनु राहु ॥ ३३६ ॥ नीच निचाई नहिं तजै, सज्जनहूके संग ॥ तुलसी चंदन विटप बसि, बिनु विष भये न भुअंग॥३३७॥ भलो भलाई पै लहै, लहै निचाई नीच ॥ सुधासराही अमरता, गरल सराही मीच ॥ ३३८ ॥

मिथ्या माहुर सज्जनहि, खलहि गरल सम सांच ॥ तुलसी छुवत पराइ ज्यों, पारद पावक आंच ॥ ३३९ ॥ संत संग अपवर्ग कर, कामी भवकर पंथ ॥ कहहिं साधु कवि कोविद, श्रुति पुराण सदग्रं-थ ॥ ३४०॥ सुकृत न सुकृती परिहरै, कपट न कपटी नीच ॥ मर-त सिखावन सोदियो, गीधराज मारीच ॥ ३४१ ॥ सुतरु सुजन वन ऊष सम, खल टंकिकारुखान ॥ परहित अनहित लागि सब, सास-ति सहत समान ॥ ३४२ ॥ पिअहिं सुमन रस अलि विटप, का-टि कोलि फल खात ॥ तुलसी तरु जीवै युगल, सुमति कुमति की बात ॥ ३४३ ॥ अवसर कौड़ी जो चुकै, बहुरिदियेका लाख ॥ दुइज न चंदा देखिये, उदय कहा भरिपाख ॥ ३४४ ॥ ज्ञान अनभलेको सबहि, भलो भलेहू काउ ॥ सींग शूंड़ रद लूम नख, करत जीव जड़ घाउ ॥ ३४५ ॥ तुलसी जगजीवन अहित, कतहूं कोउ हितजानि ॥ शोषक भानु कृशानु महि, पवन एक घनदानि ॥ ३४६ ॥ सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल॥ जहँ तहँ काक उलूक वक, मानस सुकृत मराल ॥ ३४७॥ जलचर थलचर गगनचर, देव दनु-ज नर नाग ॥ उत्तम मध्यम अधम खल, दश गुण बढ़त विभाग ॥ ॥ ३४८ ॥ बलि मिस देखे देवता, करमिस मानव देव ॥ मुये मार अविचारहत, स्वारथ साधन एव ॥ ३४९ ॥ सुजन कहत भल पोच पथ, पाप न परखे भेद ॥ कर्मनाश सुरसरित मिस, विधि निषेध वद वेद ॥ ३५० ॥ माणि भाजन मधु पारई, पूरण अमी निहारि ॥ का छांडिय का संग्रही, कहहु विवेक विचारि ॥ ३५१ ॥ उत्तम मध्यम नीचगति, पाहन शिकता पानि ॥ प्रीति परीक्षा तिहुँनकी, वैर विति-क्रम जानि ॥ ३५२ ॥ पुण्य प्रीति पति प्रापतिउ, परमारथ पथ पां-च ॥ लहहिं सुजन परिहरहिं खल, सुनहु सिखावन सांच ॥ ३५३ ॥ नीच निरादरहीसुखद, आदर सुखद विशाल ॥ कदली बदली विटप गति, पेखहु पनस रसाल ॥ ३५४ ॥ तुलसी अपनो आचरण, भ-लो न लागत कासु ॥ तेहि न बसात जो खात नित, लहसुनहूको बासु ॥ ३५५ ॥ बुधसों विवेकी विमलमति, जिनके रोष न राग ॥ सुहृद

सराहत साधु जेहि, तुलसी ताको भाग ॥ ३५६ ॥ आपु आपुकहँ सब भलो, आपनकहँ कोइ कोइ ॥ तुलसी सबकहँ जो भलो, सुजन सराहिय सोइ ॥ ३५७ ॥ तुलसी भलो सुसंगते, पोच कुसंगति होइ ॥ नाउ किन्नरी तीर असि, लोह बिलोकहु लोइ ॥ ३५८ ॥ गुरुसंगति गुरु होइ सो, लघु संगति लघु नाम ॥ चार पदारथमें गनै, नेकद्वारहू काम ॥ ३५९ ॥ तुलसी गुरु लघुता लहत, लघु संगति परिनाम ॥ देवी देव पुकारियत, नीच नारि नर नाम ॥ ३६० ॥ तुलसी किये कुसंगथिति, होइ दाहिनो बाम ॥ कहि सुनि सकुचिय सूम खल, गत हरि शंकर नाम ॥ ३६१ ॥ बसि कुसंग चह सुजनता, ताकी आश निरास ॥ तीरथहूको नाम भो, गया मगहके पास ॥ ३६२ ॥ राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान ॥ जोजल परै जो जन मिलै, कीजै आपु समान ॥ ३६३ ॥ ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग॥ होइ कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग ॥ ३६४ ॥ जन्म योगमैं जानियत, जग विचित्र गतिदेखि ॥ तुलसी आखर अंकरस, रंग विभेद विशेखि ॥ ३६५ ॥ आखर जोरि विचार करु, सुमति अंक लिखि लेखु ॥ योग कुयोग सुयोग मय, जगगति समुझि विशेखु ॥ ३६६ ॥ करु विचार चलु सुपथ भल, आदि मध्य परिनाम ॥ उलटे जपै जरामरा, सूधे राजा राम ॥ ३६७ ॥ होइ भलेके अनभलो, होइ दानिके सूम ॥ होइ कुपूत सुपूतके, ज्यों पावकमें धूम ॥ ३६८ ॥ जड़ चेतन गुण दोष मय, विश्व कीन्ह करतार ॥ संतहंस गुण गहहिंपै, परिहरि वारि विकार ॥ ३६९ ॥ ॥ (सोरठा) ॥ पाट कीटते होइ, ताते पाटंबर रुचिर ॥ कृमि पालै सबकोइ, परम अपावन प्राणसम ॥ ३७० ॥ (दोहा) ॥ जो जो जेहि जेहि रसमगन, तहँ सो मुदित मन मानि ॥ रसगुण दोष विचारिबो, रसिकरीति पहिंचानि ॥ ३७१ ॥ सम प्रकाश तम पाख दुहु, नाम भेद विधि कीन्ह ॥ शशिपोषक शोषक समुझि, जगयश अपयश दीन्ह ॥ ३७२ ॥ लोक वेदहूं लोदगी, नाम भलेको पोच ॥ धर्मराज यमराज पवि, कहत सकोच न शोच ॥ ३७३ ॥ बिरुचि परखियहि सुजनजन,

राखिपरखि यह मंद ॥ बड़वानल शोषत उदधि, हर्ष बढ़ावत चंद ॥ ३७४ ॥ प्रभु सम्मुख भय नीच नर, निपट तोत विकराल ॥ रवि रुख लखि दर्पण फटिक, उगिलत ज्वालाजाल॥३७५॥ प्रभु समीप गत सुजन जन, होत सुखद सु विचारि ॥ लवण जलधि जीवन जलद, वर्षत सुधा सुवारि ॥ ३७६ ॥ नीच निरावहिं निरसतरु, तुलसी सींचहिं ऊख ॥ पोषत पयद समान सब, विष पियूषके रूख ॥ ३७७ ॥ बर्षि विश्व हर्षित करत, हरत ताप अघ प्यास ॥ तुलसी दोष न जलदको, जो जल जरै जवास ॥ ३७८ ॥ अमरदानि याचक मरहिं, मरि मरि फिरि फिरि लेहिं ॥ तुलसी याचक पातकी, दातहि दूषण देहिं ॥ ३७९ ॥ लखि गयंद लै चलहिं भजि, श्वान सुखानो हाड़ ॥ गज गुण मोल अहार बल, महिमा जानकि राड़ ॥ ३८० ॥ कै निदरहु कै आदरहु, सिंहहिं श्वान सियार ॥ हर्ष विषाद न केशरिहि. कुंजर गंजनिहार ॥ ३८१ ॥ ठाढ़ो द्वार न देसकै, तुलसी जे नरनीच ॥ निंदहिं बलि हरिचंदको, काकियो करण दधीच ॥ ३८२ ॥ ईश शीश विलसत विमल, तुलसी तरल तरंग ॥ श्वान सरावगके कहे, लघुता लहे न गंग ॥ ३८३ ॥ तुलसी देवल देवकी, लागे लाख करोरि ॥ काक अभागे हगि भर्यो, महिमा भई कि थोरि ॥३८४॥ निजगुण घटत न नागनग, परखि परिहरत कोल ॥ तुलसी प्रभु भूषणकिये, गुंजा बढ़ै न मोल ॥ ३८५ ॥ राकापति षोड़श उवहिं, तारागण समुदाइ ॥ सकल गिरिन दव लाइये बिनु रवि राति न जाइ ॥ ३८६ ॥ भलो कहै बिन जानेहिं, बिनु जाने अपवाद ॥ तेनर गादुर जानि जिय, करिय न हर्ष विषाद॥३८७॥ परसुख संपति देखि सुख, जरहिं जेजड़ बिनु आगि ॥ तुलसी तिनके भागते, चलै भलाई भागि ॥ ३८८ ॥ तुलसी जे कीरति चहहिं, परकी कीरति खोइ ॥ तिनके मुँहमसि लागिहै, मिटिहि न मरिहैं धोय ॥ ३८९ ॥ तनु गुण धन महिमा धरम, जेहि बिनु जो अभिमान ॥ तुलसी जियत बिडंबना, परिणामहि गतजान ॥ ३९० ॥ सासु श्वशुर गुरु मातु पितु, प्रभु भयो चहै सबकोइ ॥ होनो दूजी ओरको,

सुजन सराहिय सोइ ॥३९१॥ शठ सहि सांसति पति लहत, सुजन कलेश न काय ॥ गढ़ि गुढ़ि पाहन पूजिये,गंडकि शिलासुभाय ३९२ बड़े विबुध दरबारते, भूमि भूप दरबार ॥ जापक पूजक पेखियत, सहत निरादर भार ॥ ३९३ ॥ बिनु प्रपंच छल भीख भलि, लहिय न किये कलेश ॥ बावन बलिसों छल कियो, दियो उचित उपदेश ॥ ॥ ३९४ ॥ भलो भलेसों छलकिये, जन्म कनोड़ो होइ ॥ श्रीपति शिर तुलसी लसति, बलि बावनगति सोइ ॥ ३९५ ॥ विबुध काज बावन बलिहिं,छलो भलो जिय जानि ॥ प्रभुता तजि वश भे तदपि, मन की गई न ग्लानि ॥ ३९६ ॥ सरल वक्रगति पंचग्रह, चपरि न चितवत काहु ॥ तुलसी सूधे शूर शशि, समय विडंबित राहु ॥३९७॥ खल उपकार विकार फल, तुलसी जान जहान ॥ मेंढुक मर्कट बनिक बक, कथा सत्य उपखान ॥ ३९८ ॥ तुलसी खल वाणी मधुर सुनि समुझिय हिय हेरि ॥ रामराज बाधक भई, मूढ़ मंथरा चेरि ॥ ॥ ३९९ ॥ जोंक सूधि मन कुटिलगति, खल विपरीति विचारु ॥ अनहित सो नित सोषसो, सोहित शोषनहारु ॥ ४०० ॥ नीच गुणी ज्यों जानिबो, सुनि लखि तुलसीदास ॥ ढीलि दिये गिरिपरतमहि, खैंचत चढ़त अकास ॥ ४०१ ॥ भर दर वर्षत कोशशत, बचै जे बूंद बराइ ॥ तु[illegible]सी त्यों खल वचन शर, हिये गये न पराइ ॥ ॥ ४०२ ॥ पेरत कोल्हू मेलितिल, तिली सनेहीजानि ॥ देखि प्रीतिकी रीति यह,अब देखिबीरिसानि॥४०३॥ सहवासी काचोगिलहि,पुरजन पाक प्रवीन ॥ कालक्षेप केहि मिल करहिं, तुलसी खग मृग मीन ॥ ४०४ ॥ जासु भरोसे सोइये, राखि गोदपर शीश ॥ तुलसी तासु कुचालते, रखवारो जगदीश ॥ ४०५ ॥ मारि खोजलहि सोहकरि, करि मत लाज न त्रास ॥ सुये नीचते मीचबिनु, जे इनके विश्वास ॥ ॥ ४०६ ॥ परद्रोही परदार रत, परधन पर अपवाद ॥ तेनर पांवर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥ ४०७ ॥ वचन वेष क्यों जानिये, मन मलीन नरनारि ॥ शूर्पणखा मृग पूतना, दशमुख प्रमुख विचारि ॥ ४०८ ॥ हँसनि मिलनि बोलनि मधुर, कटु करतब मन

माँह ॥ छुवत जो सकुचै सुमति सो, तुलसी तिन्हकी छाँह ॥४०९॥
कपटसार सूची सहस, बाँधि वचन परवास, कियो दुराउ चहैं चातुरी
सो शठ तुलसीदास॥४१०॥वचन विचार अचार तन, मन करतब छ-
ल छूति ॥ तुलसी क्यों सुख पाइये, अंतर्य्यामिहि धूति ॥ ४११ ॥
शारदूलको स्वांगकर, कूकरकी करतूति ॥ तुलसी तापर चाहिये,
कीरति विजय विभूति ॥ ४१२ ॥ बडेपाप बाढ़े किये, छोटे किये
लजात ॥ तुलसी तापर सुख चहत,विधिसों बहुत रिसात ॥४१३॥देश
काल करता करम, वचन विचार विहीन ॥ ते सुरतरु तर दारिदी,
सुरसरि तीर मलीन ॥ ४१४ ॥ साहसहीके कोपवश, किये क-
ठिन परिपाक ॥शठ संकट भाजन भये, हठि कुजाति कपि काक ॥
॥ ४१५ ॥ राजकरत बिनु काजही, करै कुचालि कुसाज ॥ तुलसी
ते दशकंध ज्यों, जैहैं सहित समाज ॥ ४१६ ॥ राज करत बिनु का-
जही, ठटहिंजे कूरकुठाट ॥ तुलसी ते कुकुराज ज्यों, जैहैं बारहबाट
॥ ४१७ ॥ सभा सुयोधनकी शकुनि, सुमति सराहन योग ॥ द्रोण
विदुर भीषम हरिहि, कहैं प्रपंची लोग ॥ ४१८ ॥ पांडुसुवनकी स-
दसिते, नीको रिपु हित जानि ॥ हरि हर सम सब मानियत, मोह
ज्ञानकी बानि ॥ ४१९ ॥ हितपर बढ़ै विरोध जब, अनहित पर अ-
नुराग ॥ राम विमुख विधि वामगति,सगुण अघाय अभाग॥४२०॥
सहज सुहृद गुरु स्वामि शिख, जो न करै शिरमानि ॥ सो पछताय
अघाय उर, अवशि होइ हितहानि ॥ ४२१ ॥ भरुहाये नट भाट
के, चपरि चढ़े संग्राम ॥ कै वै भाजे आयहैं, कै बांधे परिणाम ॥
॥४२२॥लोकरीति फूटी सहै,आंजीसहै न कोइ ॥ तुलसी जो आंजी
सहै,सो आँधरो न होइ॥४२३॥भागेभल आड़ेहु भलो, भलो न घाले
घाउ ॥ तुलसी सबके शीशपर, रखवारो रघुराउ ॥ ४२४ ॥ सुमति
विचारहिं परिहरहिं, दल सुमनहुँ संग्राम ॥ सकुलगये तनु बिनुभये,
साखी यादौ काम॥ ४२५ ॥ कलह न जानब छोट करि, कलह क-
ठिन परिणाम ॥ लगति अगिन लघु नीच गृह, जरत धनिक धन
धाम ॥ ४२६ ॥ रोष क्षमाके दोष गुण, सुनि मनु मानहिं शीख ॥

अविचल श्रीपति हरिभये, भूसुर लहे न भीख ॥ ४२७ ॥ कौरव पांडव जानिये, क्रोध क्षमाके सीम ॥ पांचाहि मारि न सौ सके सवो सँहारे भीम॥४२८॥बोल न मोटे मारिये,मोटी रोटी मारु॥ जीति सहस समहारिबो,जीते हारि निहारु ॥४२९॥जो परिपायँ मनाइये तासों रूठि विचारि ॥ तुलसी तहाँ न जीतिये, जहँ जीतेहू हारि ॥ ॥ ४३० ॥ जूझेते भल बूझिबो, भली जीतिते हारि ॥ डहकेते डहकाइबो, भलो जो करिय विचारि ॥ ४३१ ॥ जा रिपुसों हारेहु हँसी जिते पाय परितापु ॥ तासों रारि विचारिये, समय सम्हारे आपु ॥ ॥ ४३२ ॥ जो मधु मरै न मारिये, माहुर देइ जु काउ ॥ जगजित हारे परशुधर, हारि जिते रघुराउ४३३ वैर मूल हरहित वचन,प्रेममूल उपकार ॥ दोहा शुभ संदोहसो, तुलसी किये विचार ॥ ४३४ ॥ रोष न रसना खोलिये, बरु खोलिय तरवारि॥ सुनत मधुर परिणाम हित, बोलिय वचन विचारि ॥ ४३५ ॥ मधुर वचन कटु बोलिबो, विनु श्रम भाग अभाग ॥ कुहू कुहू कलकंठरव, काका कररत राग ॥ ४३६ ॥ पेट न फूलत विनु कहे, कहत न लागे ढेरु ॥ सुमति विचारे बोलिये, समुझि कुफेर सुफेरु ॥ ४३७॥ छिद्यो न तरुणि कटाक्ष शर, करेउ न कठिन सनेहु ॥ तुलसी तिनकी देहकी, जगत कवच करिलेहु ॥ ४३८ ॥ शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आपु ॥ विद्यमान रण पाय रिपु, कायर करहिं प्रलापु ॥ ४३९॥ वचन कहे अभिमानके, पारथ पेषत सेतु ॥ प्रभु तिय लूटत नीच नर, जय न मीचु तेहि हेतु ॥४४०॥ राम लषण विजयी भये, वनहु गरीब निवाज॥मुखर बालि रावण गये, घरही सहित समाज॥४४१॥ खग मृग मीत पुनीत किय, वनहु राम नयपाल॥ कुमति बालि दशकंठ घर, सुहृद बंधुकिये काल ॥४४२॥ लखय अघाने भूख ज्यों, लखै जीतिमें हारि ॥ तुलसी सुमति सराहिये, मग पग धरै विचारि ॥ ॥ ४४३ ॥ लाभ समयको, पालिबो, हानि समयकी चूक ॥ सदा विचारहिं चारुमति, सुदिन कुदिन दिनढूक ॥ ४४४ ॥ सिंधुतरण कपि गिरिहरण, काज साइँ हित दोउ॥ तुलसी सम यहि सब बड़ो,बू-

झत कहुँ कोउ कोउ ॥ ४४५ ॥ तुलसी मीठी अमीते, मांगी मिलै जो मीच ॥ सुधा सुधाकर समय बिनु, कालकूटते नीच ॥ ४४६॥ तुलसी असमयके सखा, धीरज धर्म विवेक ॥ साहित साहस सत्यब्रत, राम भरोसो एक ॥ ४४७ ॥ समरथ कोउ न रामसों, सीय हरण अपराधु ॥ समयहि साधे काज सब, समय सराहहिं साधु ॥ ४४८ ॥ तुलसी तीरहुके चले, समय पाइबीथाइ ॥ धाइ न जाइ थहाइबी, सर सरिता अवगाह ॥ ४४९ ॥ तुलसी जसि भावित व्यता, तैसी मिलै सहाय ॥ आपु न आवै ताहिपै, कि ताहि तहाँ लै जाय ॥ ४५० ॥ कैजुझिबो, कैबूझिबो, दान कि काय कलेश ॥ चारि चारु परलोक पथ, यथायोग उपदेश ॥ ४५१ ॥ पात पातको सींचिबो, नकरु सरग तरु हेत ॥ कुटिल कटुक फर फरैगो, तुलसी करत अचेत ॥ ४५२ ॥ गाठिबँधते परतीति बड़ि, जेहि सबको सबकाज ॥ कहब थोर समुझब बहुत, गाड़े बढ़त अनाज ॥ ४५३ ॥ अपनो ऐपन निजहथा, तिय पूजहिं लिखभीत ॥ फलै सकल मनकामना, तुलसी प्रीति प्रतीत ॥ ४५४ ॥ वर्षत कर्षत आपुजल, हर्षत अर्थनि भानु॥ तुलसी चाहत साधु सुर, तव सनेह सनमानु॥४५५॥ श्रुति गुणकर गुण पुजुगमृग, है रेवती सखाउ ॥ देहि लेहि धन धरणिधरु, गयेहु न जाइहि काउ ॥ ४५६ ॥ ऊगुन पूगुन बिरज क्रम, आभ अमूगुण साथ॥हरो धरो गाड़ो, दियो, धन फिर चढ़ै न हाथ॥ ॥ ४५७ ॥ रवि हर दिशि गुणरस नयन, मुनि प्रथमादिक बार ॥ तिथि सब काज नशावनी, होइ कुयोग विचार ॥ ४५८ ॥ शशि सर नव दुइ छद शकुन, मुनिफल बसु हर भानु ॥ मेषादिक क्रमतें गनहि, घात चंद्र जिय जानु ॥ ४५९ ॥ नकुल सुदरशन दरशनी, क्षेमकरी चखचाख ॥ दश दिशि देख न शकुनशुभ, पूजहि मन अभिलाष ॥ ४६० ॥ सुधा साधु सुरतरु सुमन, सफल सुहावनि बात॥ तुलसी सीतापति भगति,शकुन सुमंगल सात॥४६१॥ भरत शत्रुसूदन लषण, सहित सुमिरि रघुनाथ ॥ करहु काज शुभ साजसब, मिलहि सुमंगल साथ ॥ ४६२ ॥ राम लषण कौशिक स-

हित, सुमिरहु करहु पयान ॥ लक्षलाभ लै जगत यश, मंगल शकुन प्रमान ॥ ४६३ ॥ अतुलित महिमा वेदकी, तुलसी किये विचार ॥ जो निन्दित निन्दित भयो, विदित बुद्ध अवतार ॥४६४ ॥ बुध किसान सरवेद निज, मतेखेत सब सींच ॥ तुलसी कृषि लखि जानिबो, उत्तम मध्यम नीच ॥४६५॥ साहि कुबोल सांसति सकल, अँगइ अनट अपमान ॥ तुलसी धर्म न परिहरिय कहिकरि गये सुजान ॥ ४६६ ॥ अनहित भय परहित किये, पर अनहित हितहानि ॥ तुलसी चारु विचारभल, करिय काज सुनिजानि ॥ ४६७ ॥ पुरुषारथ पूरब करम परमेश्वर परधाम ॥ तुलसी पैरत सरित ज्यों, सबहि काज अनुमान ॥ ४६८ ॥ चलब नीति मग राम पग, नेह निबाहब नीक ॥ तुलसि पहिरिय सो बसन, जो न पखारे फीक ॥ ४६९ ॥ दोहा चारु विचारु चलु, परिहरि वाद विवाद ॥ सुकृतसींव स्वारथ अवधि, परमारथ मर्य्याद ॥ ४७० ॥ तुलसीसो समरथ सुमति सुकृती साधु सयान ॥ जो विचारि व्यवहरइजग, खरच लाभ अनुमान ॥ ॥ ४७१ ॥ जाइ योग जग क्षेमविनु, तुलसीके हित राखि ॥ विनु ऽपराध भृगुपति नहुष, वेनु बकासुर साखि ॥ ४७२ ॥ बढ़ि प्रतीत गाठि बंधते, बड़ो योग ते क्षेम ॥ बड़ो सुसेवक सांइते, बड़ो नेमते प्रेम ॥ ४७३ ॥ शिष्य सखा सेवक सचिव, सुतिय सिखावन साँच॥ सुनि समुझहु पुनि परिहरिय, परम निरंजन पाँच ॥ ४७४ ॥ नारि नगर भोजन सचिव, सेवक सखा अगार ॥ सरस परिहरे रंगरस, निरस विषाद विकार ॥ ४७५ ॥ टूटहिं निजरुचि काजकरि, रूठहिं काज बिगारि ॥ तीय तनय सेवक सखा, मनके कंटक चारि ॥४७६॥ दीरघ रोगी दारिदी, कटुवच लोलुप लोग ॥ तुलसी प्राण समानते, होइँ निरादर योग ॥ ४७७ ॥ पाही खेती लगन बढ़, ऋणकुब्याज मग खेत ॥ वैर बढ़े सो आपने, किये पाँच दुख हेत ॥ ४७८ ॥ धाय लगै लोहा ललकि, खीच लेइ नइ नीचु ॥ समरथ पापीसों बयर, जानि बिसाही मीचु ॥ ४७९ ॥ शोचिय गृही जो मोहवश, करै कर्मपद त्याग ॥ सोचिय यती प्रपंच रत, विगत विवेक विराग ॥ ४८० ॥

तुलसी स्वारथ सामुहो, परमारथ तनु पीठि ॥अंध कहे दुख पाइहै, डिठियारो केहि डीठि ॥ ४८१॥ बिनु आंखिनकी पानहीं, पहिचान त लखिपाइ ॥ चारिनयनके नारि नर, सूझत मीच न माइ॥ ४८२ ॥ जोपै मूढ़ उपदेशको, होतो योग जहान ॥ क्यों न सुयोधन बोधकै, आये श्यामसुजान॥४८३॥ (सोरठा) ॥ फूलै फरै न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ॥मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलैं विरंचि शिव॥४८४॥ (दोहा) ॥रीझि आपनी बूझपर, खीझि विचार विहीन॥ते उपदेश न मानहीं,मोह महदोधि मीन॥४८५॥अनुसमुझे अनशोचनो,अवशि समुझिअहि आपु॥तुलसी आपु न समुझिये,पलपलपर परितापु ॥४८६॥ कूप खनत मंदिर जरत, आये धारि बबूर॥बवहिं नवहिं निज काज शिर, कुमति शिरोमणि कूर ॥ ४८७ ॥ निडर ईशते बीसकै, बीसबाहु सो होइ॥ गयो गयो कहै सुमतिसब, भयो कुमति कह कोइ॥४८८॥ जो सुनि समुझि अनीतिरत, जागतरहै जुसोइ॥ उपदेशिबो जगाइबो, तुलसी उचित न होइ ॥ ४८९ ॥ बहुसुख बहुरुचि बहु वचन, बहु अचार व्यवहार ॥ इनको भलो मनाइबो, यह अज्ञान अपार ॥ ॥ ४९० ॥ लोगनि लोभ मनाइबो, भलो होनकी आश ॥ करत गगनको गेडुआ, सो शठ तुलसीदास॥ ४९१ ॥ अपयशयोग कि जानकी, मणिचोरी कब कान्ह ॥ तुलसी लोग रिझाइबो, कर्षि कातिबो नान्ह ॥ ४९२ ॥ तुलसी जुपै गुमानको, होतो कछू उपाउ ॥ तौ कि जानिकिहि जानिजिय, परिहरते रघुराउ ॥ ४९३ ॥ माँगि मधुकरी खातते, सोवत गोड़ पसारि ॥ पाय प्रतिष्ठा बढ़िपरी, ताते बाढ़ी रारि ॥ ४९४ ॥ तुलसी भेड़ीकी धसनि, जड़ जनता सनमान ॥ उपजतही अभिमानभा, खोवत मूढ़ अयान ॥ ४९५ ॥ लही आँखि कब आँधरे, बाँझ पूत कब ल्याय ॥ कब कोढ़ी काया लही, जग बहराइच जाइ ॥४९६॥ तुलसी निर्भय होत नर,सुनियत सुरपुर जाइ॥ सो गति देखियत अछत तनु, सुख संपति गतिपाइ ॥ ४९७ ॥ तुलसी तोरत तीरतरु, बकहित हंस बिडारि॥ विगत नलिन आलि मलिन जल, सुरसरिहूं बढ़ियारि ॥४९८ ॥ अधिकारी सब औसरा,भ-

लेउ जानिबे मंद ॥ सुधासदन बसुबारहो, चउथिव चउथो चंद ॥ ॥ ४९९ ॥ त्रिविध एक विधि प्रभु अनुग, अवसर कराहिं कुठाट ॥ सूधे टेढ़े सम विषम, सब महँ बारहबाट ॥ ५०० ॥ प्रभुते प्रभु गुण दुखद लखि, प्रजहिं सँभारे राउ ॥ करतेहोत कृपाणकी, कठिन घोर घन घाउ ॥ ५०१ ॥ ब्यालहुते बिकराल बड़, ब्यालफेन जिय जानु ॥ ओहके खाये मरतहै, उहखाये बिनु प्रान ॥ ५०२ ॥ कारण से कारज कठिन, होइ दोष नाहिं मोर ॥ कुलिश अस्थिते उपलते, लोह कराल कठोर ॥ ५०३ ॥ काल बिलोकत ईश रुख, भानुकाल अनुहारि ॥ रविहि राउ राजहि प्रजा, बुध ब्यवहराहिं बिचारि ॥ ५०४ ॥ यथा कमल पावन पवन, पाइ कुसंग सुसंग ॥ कहिअ कुवास सुवास तिमि, काल महीश प्रसंग ॥ ५०५ ॥ भलेहु चलत पथपोचभय, नृपति योग नय नेम ॥ सुतिय सुभूपति भाषियत, लोह पवारितहेम ॥ ५०६ ॥ माली भानु किसानसम, नीति निपुण नरपाल ॥ प्रजा भागवश रोहिंगे, कबहुँ कबहुँ कलिकाल ॥ ५०७ ॥ वर्षत हर्षत लोग सब, कर्षत लखै न कोइ ॥ तुलसी प्रजा सुभागते, भूप भानु सो होइ ॥ ५०८ ॥ सुधासुनाज कुनाज पल, आम अशन सम जानि ॥ सुप्रभु प्रजाहित लेहिकर, सामादिक अनुमानि ॥ ५०९ ॥ पाके पकये विटपदल उत्तम मध्यम नीच ॥ फल नरलैहैं नरेशत्यों, करि बिचार मनबीच ॥ ५१० ॥ रीझि खीझि गुरुदेत शिख, सखा सुसाहब साध ॥ तोरि खाय फलहोइ भल, तरुकाटे अपराध ॥ ५११ ॥ धरणि धेनु चारित चरित, प्रजासु बच्छ पन्हाइ ॥ हाथ कछू नहिं लागि है, किये गोडकी गाइ ॥ ५१२ चढ़े बधूरे चंग ज्यों, ज्ञान ज्यों शोक समाज ॥ कर्म धर्म सुख संपदा, त्यों जानिबे कुराज ॥ ५१३ ॥ कंटक करि करि परत गिरि, शाखा सहस खजूरि ॥ मरहिं कुनृप करि करि कुनप सो कुचाल भव भूरि ॥ ५१४ ॥ काल तोपची तुपक महि, दारू अनय कराल ॥ पाप पलीता कठिन गुरु, गोला पुहुमीपाल ॥ ॥ ५१५ ॥ भूमि रुचिर रावण सभा, अंगद पदमहिपाल ॥ धर्म रावणहि सीयबल, अचल होत शुभकाल ॥ ५१६ ॥ प्रीति रामपद

नीतिरत, धर्म प्रतीति सुभाइ ॥ प्रभुहि न प्रभुता परिहरे, कबहुँ वचन मन काइ॥ ५१७॥ करके कर मनुके मनाहिं, वचन वचन गुणजानि ॥ भूपहि भूलि न परिहरे, विजय विभूति सयानि ॥ ॥ ५१८॥ गोली बाण सुमंत्र शर, समुझि उलटि मन देखु ॥ उत्तम मध्यम नीच प्रभु, वचन विचारि विशेखु ॥ ५१९ ॥ शत्रु सयानो सलिल ज्यों, राखि शीश रिपुनाउ ॥ बूडत लखि पगडगत लखि, चपरि चहूँदिशि धाउ ॥ ५२० ॥ रैयतराज, समाज घर, तन धन धर्म सुभाहु ॥ शांत सुसचिवन सौंपि सुख, बिलसहिं नित नरनाहु ॥ ५२१॥ मुखिया मुखसों चाहिये, खान पानको एक॥पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥ ५२२ ॥ सेवक कर पद नयनसे, मुखसों साहव होइ ॥ तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ ॥ ५२३ ॥ मंत्री गुरु अरु वैद्यजो, प्रिय बोलहिं भय आश ॥ राज धर्म तन तीनिकर, होइ वेगहीनाश ॥ ५२४ ॥ रसना मंत्री दशन जन, तोष पोष निज काज॥प्रभु करसेन पदादिका, बालक राज समाज ॥ ५२५ ॥ लकड़ी डौआ करछुली, सरस काज अनुहारि ॥ सु प्रभु संगृहहि परिहरहि, सेवक सखा विचारि ॥५२६ ॥ प्रभु समीप छोटे बड़े, निबल होत बलवान ॥ तुलसी प्रकट विलोकिये, कर अँगुली अनुमान ॥५२७ ॥ साहेबते सेवक बड़ो, जो निज धर्म सुजान ॥ राम बाँधि उतरे उदधि, लाँघि गये हनुमान ॥ ५२८ ॥ तुलसी भल बरतरु बढ़त, निज मूलहि अनुकूल ॥ सबहिभाँति सबकहँ सुखद, दलनि फलनि बिनुफूल ॥ ५२९ ॥ सघन सगुण सधरम सगन, सबल समाइ महीप॥ तुलसी जे अभिमानबिनु, ते त्रिभुवनके दीप ॥ ५३० ॥ तुलसी निजकरतूति बिनु, मुक्त जात जबकोइ ॥ गयो अजामिल लोकहरि, नाम सक्यो नाहिं धोइ ॥ ५३१ ॥ बड़ो गहेते होत बड़, ज्यों बावनकर दंड ॥ श्रीप्रभुके संगसो बढ़ी, गयो अखिलब्रह्मंड ॥ ५३२ ॥ तुलसी दान जो देतहैं, जलमें हाथ उठाय ॥ प्रतिगृही जीवै नहीं, दाता नरकै जाय ॥ ५३३ ॥ आनन छोड़ो साथ जब, तादिन हितू न कोइ ॥ तुलसी अंबुज अंबुबिन,-

तरणि तासु रिपुह्वोइ ॥ ५३४ ॥ उरवी परि कुलहीनहै, ऊपर कला प्रधान ॥ तुलसी देखु कलापगति, साधन धर्म पहिंचान ॥ ५३५ ॥ तुलसी संगति पोचकी, सुजन होति भयदानि ॥ योहरि रूप सुता-हिते, कीनोगो हरिआनि ॥ ५३६ ॥ कलि कुचालि शुभगति हरणि, सरलै दंडै चक्र ॥ तुलसी यह निश्चय भई,बाढ़ीलेत न वक्र ॥५३७॥ गोखग खेखग वारिखग, तीनों माह विशेक ॥ तुलसीपीवैफिरिचलै, रहै फिरै सँग एक ॥ ५३८ ॥ साधन समय सु सिद्धिलहि, उभै मूल अनुकूल ॥ तुलसी तीनिउ समयसम, ते महिमंगल मूल ॥ ५३९ ॥ मातु पिता गुरु स्वामि शिख, शिरधरि करहिं सुभाय ॥ लहेउ लाभ तिन जन्मकर, न तरु जन्म जग जाय ॥ ५४० ॥ अनु-चित उचित विचारतजि, जेपालहिं पितुबैन ॥ तेभाजन सुख सुयश के, बसहिं अमरपति ऐन ॥ ५४१ ॥ (सोरठा)॥ सहज अपावनिनारि, पति सेवत शुभगति लहै ॥ यश गावत श्रुति चारि, अजहुँ तुलसि का हरिहि प्रिय ॥ ५४२ ॥ (दोहा)॥ शरणागत कहँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि ॥ तेनर पाँवर पापमय, तिन्हैं विलोकत हानि ॥ ॥ ५४३ ॥ तुलसी तृण जल कूलको, निर्धन निपट निकाज ॥ कै राखै कै सँग चलै, बाँह गहेकी लाज ॥ ५४४ ॥ रामायण अनुहरत शिख, जगभयो भारत रीति ॥ तुलसी शठकी को सुनै, कलिकुचालि परप्रीति ॥ ५४५ ॥ पातपातके सींचबे, बरी बरीके लोन ॥ खोटे चतुरपन, कलिडहके कहु कौन ॥ ५४६ ॥ प्रीति सगाई सकल गुण, वणिज उपाय अनेक ॥ कलबल छल कलिमल मलिन, डहकत एकहि एक ॥ ५४७ ॥ दंभ सहित कलिधर्म सब, छल समेत व्यवहार ॥ स्वारथ सहित सनेह सब, रुचि अनुहरत अचार ॥ ५४८ ॥ चोर चतुर बटपार नट, प्रभु प्रिय भरुआ भंड ॥ सब भक्षक परमार्थी, कलि सुपंथ पाषंड ॥ ५४९ ॥ अशुभ वेष भूषण धरैं, भक्ष अभक्ष जे खाहिं ॥ ते योगी ते सिद्धनर, पूजित कलियुग माहिं ॥ ५५० ॥ (सोरठा) ॥ जे अपकारी चार, तिनकर गौरव

मान्य तेइ ॥ मन वच कर्म लवार, ते वक्ता कलिकाल महँ ॥५५१॥ (दोहा)॥ ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात ॥ कौड़ी लागिते मोहवश, करहिं विप्र गुरु घात ॥ ५५२ ॥ वादहिं शूद्र द्विजनसन, हम तुमते कछु घाटि? ॥ जानहिं ब्रह्मसो विप्रवर, आँखि दिखावहिं डाटि ॥ ५५३ ॥ साखी शबदी दोहरा, कहि केहनी उपखान ॥ भगति निरूपहिं भगतकलि, निंदहिं वेद पुरान ॥ ५५४ ॥ श्रुति संमत हरि भक्तिपथ, संयुत विरति विवेक ॥ तेहि परिहरहिं विमोहवश, कल्पहिं पंथ अनेक ॥ ५५५ ॥ सकल धर्म विपरीत कलि, कल्पित कोटि कुपंथ ॥ पुण्य पराय पहारबन, दुरेपुराण शुभग्रंथ ॥ ५५६ ॥ धातुवाद निरुपाधि सब, सद्गुरु लाभ सुमीत ॥ देव दरश कलिकालमें, पोथिन दुरे सभीत ॥ ५५७ ॥ सुरसदननि तीरथ पुरनि, निपट कुचालि कुसाज ॥ मनहुँ मवासे मारिकलि, राजत सहित समाज ॥ ५५८ ॥ गोड़ गँवार नृपाल महि, यमन महा महिपाल ॥ साम न दाम न भेदकलि, केवल दंडकराल॥५५९॥फोरहिं शिर लोढ़ासदन, लागे अढुक पहार॥कायर कूर कुपूत कलि, घर घर सहस डहार ॥५६०॥ प्रगट चारि पद धर्म के, कलिमहँ एक प्रधान ॥ येनकेन विधि दीन्हहूं, दान करै कल्यान ॥ ५६१ ॥ कलियुग सम युग आननहिं, जो नर कर विश्वास ॥ गाइरामगुण गुण विमल, भवतर बिनहिं प्रयास॥ ५६२॥ श्रवण घटहु पुनि दृगघटहु, घटौ सकल बलदेह ॥ इतेघटे घटिहै कहा, जो न घटै हरिनेह ॥ ५६३ ॥ तुलसी पावसके समय, धरी कोकिलन मौन ॥ अबतौ दादुर बोलिहैं, हमैं पूछिहै कौन ॥ ५६४ ॥ कुपथ कुतर्क कुचालि कलि, कपट दंभ पाषंड ॥ दहन रामगुण ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड ॥ ५६५ ॥ (सोरठा)॥ कलि पाषंड प्रचार,प्रबल पाप पाँवर पतित ॥ तुलसी उभै अधार, रामनामसुरसरि सलिल ॥ ५६६ ॥ (दोहा) ॥ रामचंद्र मुख चंद्रमा, चित चकोर जब होइ ॥ राम राज सब काजशुभ, समय

सुहावन सोइ ॥ ५६७ ॥ बीजराम गुणगण नयन, जल अंकुर पुल-
कालि ॥ सुकृती सुतन सुखेत बर, बिलसत तुलसी शालि ॥५६८॥
तुलसी सहित सनेहनित, सुमिरहु सीताराम ॥ शकुन सुमङ्गल
शुभसदा, आदि मध्य परिनाम ॥ ५६९ ॥ पुरुषारथ स्वारथ सकल
परमारथ परिनाम॥सुलभ सिद्धि सबसाहिबी, सुमिरत सीताराम५७०
मणिमय दोहा दीप जहँ, उरघर प्रगटप्रकाश॥ तहँ न मोह भयतम
तमी, कलिकज्जलीविलाश ॥ ५७१ ॥ का भाषा का संस्कृत, प्रेम
चाहिये साँच ॥ काम जु आवै कामरी, का लै करै कुमाच ॥ ५७२ ॥
मणि माणिक महँगी कियो, सहगोतृण जल नाज ॥ तुलसी एहे ज-
निये, रामगरीब नेवाज ॥ ५७३ ॥

इति श्रीगोसाईं तुलसी दासकृत
दोहावलीसंपूर्णम्.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना
खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना बंबई.



इति

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

दोहावली समाप्त ॥



श्रीगणेशायनमः ।

कवित्तावली रामायण ।

जिसको

प्राचीन प्रख्यात कवि श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजीने परम मनोहर लोकहितार्थ सुललित कवित्तोंमें रामायणका ज्ञान, भक्ति, करुणा, वीररसादि वर्णन किया ।

वही

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

बंबई

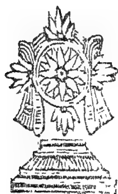
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५१ शके १८१६

श्रीरामदर्शन।





श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-

कवित्तरामायण ।



बालकाण्ड ।

अवधेशके द्वारे सकारेगई सुतगोदकै भूपतिलै निकसे ॥ अवलोकिहौं सोचविमोचनको ठगिसीरहि जे नठगे धिकसे ॥ तुलसी मनरंजन रंजितअंजन नयन सुखंजन जातकसे ॥ सजनी शशिमें समशील उभै नवनील सरोरुहसे विकसे ॥ १ ॥ पगनूपुर औ पहुँची करकंजनि मंजुवनी मणिमालहिये॥नवनीलकलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृप गोदालिये ॥ अरविंदसों आनन रूपमरंद अनंदित लोचन भृंगपिये ॥ मनमें न बस्यौ असबालक जो तुलसी जगमें फल कौन ॥ २ ॥ तनकी द्युति श्यामसरोरुह लोचन कंजाकि मंजुलताई हरैं ॥ अतिसुंदर सोहत धूरिभरे छविभूरि अनंगकी दूरि धरैं ॥ दमकैंदँतियाँ द्युति दामिनि जौं किलकैं कलवाल विनोदकरैं ॥ अवधेशके बालक चारि सदा तुलसीमनमंदिरमें विहरैं॥३॥कवहूं शशि मागत आरिकरैं कवहूं प्रतिविंब निहारिडरैं ॥ कवहूं करताल बजाइकै नाचत मातुसबै मनमोद भरैं ॥
के पुनिलेत सोई जेहि लागि अरैं ॥ अवधेशकेबालक चारि सदा तुलसी मनमंदिरमें विहरैं ॥ ४ ॥ वरदंतकि पंगति कुंदकली अधराधर पल्लव खोलनकी ॥ चपला चमकै घनवीच जगै छवि मोतिन माल अमोलनकी ॥ घुंघुरारिलटैं लटकैं मुखऊपर कुंडललोल कपोलनकी ॥ निवछावरि प्राणकरै तुलसी बलिजाउँ लला इन बोलनकी ॥ ५ ॥ पदकंजनि मंजुवनी पनहीं धनुहीं शर पंकजपाणि लिये ॥ लरिका सँग खेलत डोलतहैं सरयूतट चौहट हाटहिये ॥ तुलसी अस

बालकसोंनहिंनेह कहा जप योग समाधिकिये ॥ नरते खर शूकर श्वानसमान कहो जगमें फल कौन जिये ॥ ६ ॥ सरयूवर तीरहितीर सखा अरु वीर सबै ॥ करतीर निषगकस कटि पीतदुकूल नवीन फबै ॥ तुलसी त्यहिऔसर लावणता दशचारि तौ तीनि इकीस सबै ॥ मति भारति पंगुभई जो निहारि विचारि फिरी उपमान फबै॥७॥(कवित्त) ॥छोनीमेकेछोनीपति छाजै तिन्हें छत्रछाया छोनीछोनी छाएछिति आए निमिराजके॥ प्रबलप्रचंड बरबंड बरवेषबपु बरवेको बोले वैदेही बरकाजके ॥ बोले बंदीविरद बजाइ वर बाजनेऊ बाजे बाजे वीरबाहु धुनतसमाजके ॥ तुलसीमुदितमन पुरनर नारि जेते बारबारहेरैं मुख अवधमृगराजके ॥ ८ ॥ सीयके स्वयंवर समाज जहाँ राजनके राजनके राजा महाराजा जान नामको ॥ पवन पुरंदर कृशानु भानु धनदसे गुणकेनिधान रूपधाम सोमकामको ॥ बाण बलवान यातुधानपति सारिखेसे जिन्हके गुमान सदा सालिमसंग्रामको ॥ तहाँ दशरत्थके समर्थनाथ तुलसीके चपरि चढायो चापचंद्रमा ललामको ॥९॥ मयनमहन पुरदहन गहनजानि आनिकैसबै को सार धनुषचढ़ायोहै ॥ जनकसदासि जेते भलेभले भूमिपाल किये बलहीन बल आपनो बढ़ायोहै ॥ कुलिशकठोर कूर्म पीठते कठिन अति हठि न पिनाक काहू चपरि चढ़ायोहै॥ तुलसी सो रामके सरोजपाणि परसेते टूट्यौ मानों बारेते पुरारिहीं पढ़ायोहै ॥ १० ॥ (छप्पय) डिगति उर्वि अतिगुर्वि सर्वपर्वै समुद्रसर ॥ व्यालबधिर त्यहि काल विकल दिगपाल चराचर ॥ दिगगयंद लरखरत परत दशकंध मुक्खभर ॥ सुरविमान हिमवान भानुसंघटित परस्पर ॥ चौंके विरंचि शंकर सहित कोल कमठ अहि कलमल्यो ॥ ब्रह्मांड खंडकियो चंडधुनि जबहिं राम शिवधनु दल्यौ ॥ ११ ॥ (घनाक्षरी) ॥ लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु सखीकहैं सखीसोंतु प्रेमपय पालिरी॥बालक नृपालजूके ख्यालही पिनाक तोर्‍यौ मंडलीकमंडली प्रतापदाप दालिरी॥ जनकको सियाको हमारो तेरो तुलसीको सबको भावतो ह्वैहै मैंजो कह्यो कालिरी॥कौशिला की

कौशिक परतोषि तन वारियेरी रायदशरत्थकी बलाय लीजे आलिरी ॥ १२ ॥ दूब दधि रोचना कनकथार भरिभरि आरती सँवारि वर नारि चलीं गावतीं ॥ लीन्हे जयमाल करकंज सोहै जानकीके पहिरावो राघोजीको सखियां सिखावतीं ॥ तुलसी मुदितमन जनक नगरजन झांकनी झरोखेलागीं शोभा रानी पावतीं ॥ मनहुँ चकोरी चारु बैठीं निजनिज नीड चंदकी किरण पीवें पलकैं न लावतीं ॥ ॥ १३ ॥ नगर निसान वर बाजैं व्योम दुंदुभी विमान चढ़गान कैकै सुरनारि नाचहीं ॥ जयजयतिहूं पुर जयमाल रामउर बरषै सुमन सुर रूरेरूप राचहीं ॥ जनकको पण जयौ सभको भावतो भयो तुलसी मुदित रोम रोम मोदमाचहीं ॥ साँवरो किशोर गोरी शोभापर तृणतोरि जोरी जियौ युगयुग युवतिजन यांचहीं ॥ १४ ॥ भले भूप कहत भले भदेस भूपनिसों लोकलखि बोलिये पुनीत रीतिमारषी ॥ जगदंबा जानकी जगतपितु रामभद्र जानिजिय जोहो जो न लागे मुँह कारषी ॥ देखेहैं अनेक व्याह सुनेहैं पुराणवेद बूझेहैं सुजान साधु नर नारि पारषी ॥ ऐसे समसमधी समाज ना विराजमान रामसे न बर दुलही न सीय सारषी ॥ १५ ॥ वाणी विधि गौरी हर शेषहूं गणेश कही सहीभरी लोमश भुशुंडि बहुबारिषो ॥ चारिदश भुवन निहारि नर नारि सब नारदको परदा न नारदसो पारिषो ॥ तिनकही जगमें जगमगति जोरी एक दूजीको कहैया औ सुनैया चषचारिषो ॥ रामरमारमण सुजान हनुमान कही सीयसी न तीय न पुरुष रामसारिषो ॥ १६ ॥ (सवैया) ॥ दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सियसुंदर मंदिरमाहीं ॥ गावतिगीत सभैमिलि सुंदरि वेद युवायुव विप्र पढ़ाहीं ॥ रामकोरूप निहारति जानकी कंकणके नगकी परछाहीं ॥ याते सबै सुधिभूलिगई करटेकिरही पलटारति नाहीं ॥ १७ ॥ (कवित्त) ॥ भूपमंडलीप्रचंड चंडीशको दंडखंडयौ चंडबाहुदंडजाको ताहीसों कहतहौं ॥ कठिन कुठार धार धरिवेकी धीरताहि वीरता विदित ताकी देखिए चहतुहौं ॥ तुलसी समाज राज तजिसो विराजै आजु गाज्यौ मृगराज गजराज

ज्यों गहतुहौं॥छोनीमें न छांड्यौ छप्यौ छोनिपको छोना छोटो छोनि-
प छपन बांको बीरुद बहतुहौं ॥ १८ ॥ निपट निदरि बोले वचन
कुठारपानि मानी त्रास औनिपन मानौ मौनता गही ॥ रोषमाखे
लषण अकनि अनखाहि बातैं तुलसी विनीत वाणी विहँसि ऐसी
कही ॥ सुयश तिहारे भरे भुवनानि भृगु तिलक प्रगट प्रताप
आपु कहो सो सबै सही ॥ टूट्यो सो न जुरैगो शरासन महेशजी-
को रावरी पिनाकमें सरीकता कहांरही ॥१९॥ (सवैया) ॥ गर्भके
अर्भक काटनको पटु धार कुठार कराल है जाको ॥ सोई हौं बूझत
राजसभा धनुके दलिहैं दलिहौं बल ताको ॥ लघु आनन उत्तर
देत बड़े लरिहैं मरिहैं करिहैं कछु साको ॥ गोरो गरूर गुमान भ-
र्यौ कहो कौशिक छोटोसो ढोटोहै काको ॥ ॥ २० ॥ (घनाक्षरी) ॥
मख राखिवेके काज राजा मेरे संग दये दले यातुधान जे जितैया
विबुधेशके ॥ गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरि भारी लोचन अ-
तिथि भए जनक जनेशके॥चंड बाहुदंड बल चंडीशको दंड खंड्यौ
ब्याही जानकीजी ते नरेश देश देशके ॥ साँवरे गोरे शरीर धीर महा
वीर दोऊ नाम राम लषण कुमार कोशलेशके ॥ २१ ॥ (सवैया)॥
काल कराल नृपालनके धनु भंग सुने फरसा लिये धाये ॥ लक्ष्मण
राम विलोकि सप्रेम महा रिसहा फिरि आँखिदिखाये॥धीर शिरोम-
णि वीर बड़े विनयी विजयी रघुनाथ सुहाये ॥ लायक हौ भृगुनायक
सोधनुशायक सौंपि सुभाय सिधाये ॥ २२ ॥ इति श्रीकवित्तावली
रामायणे बालकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ अयोध्याकाण्ड ॥

सवैया ॥ कीरके कागर ज्यौं नृपचीर विभूषन उपमा अंगनिपाई ॥
औध तजी मग वासके रूख ज्यौं पंथके साथ ज्यौं लोगलुगाई ॥
संग सुबंधु पुनीत प्रिया मनौं धर्मक्रिया धरिदेह सोहाई ॥ राजिव
लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊ कि नाई ॥ २३ ॥ का-
गर कीर ज्यौं भूषण चीर शरीर लस्यो तजि नीर ज्यौं काई ॥ मातु

पिता प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाई सनेह सगाई ॥ संग सुभामिनि भाइ भलो दिनद्वै जनु औधहुँते पहुँनाई ॥ राजिव लोचन रामचले तजि बापको राज बटाऊ किनाई ॥ २४ ॥ (घनाक्षरी)॥ सिथिलसनेह कहै कौशिला सुमित्रा जीसों मैं न लखी सौतिसखी भगिनि ज्यों सेईहै ॥ कहैं मोहिं मैया कहो मैं न मैया भरतकी बलैया लेहौं मैया तेरी मैया कैकेयीहै ॥ तुलसी सरल भाय रघुराय मायमानी काय मन बानी हूं न जानिके मतेईहै ॥ वाम विधि मेरो सुख सिरिससुमन सम ताको छल छुरी कोह कुलिश ले टेईहै ॥ २५ ॥ कीजे कहा जीजीजू सुमित्रा परि पाँयकहै तुलसी सहावै विधि सोई सहियतुहै ॥ रावरो सुभाव राम जन्मतहीते जानियत भरतकी मातुको कीबो सो चहियतुहै ॥ जाई राजघर ब्याहिआई राजघर महाराज पूतपायेहूं न सुख लहियतु है ॥ देहसुधा गेह ताहि मृगने मलीन कियो ताहुपर चाहबिनु राहु गहियतुहै ॥ २६ ॥ (सवैया) ॥ नाम अजामिलसे खलकोटि अपार नदी भव बूड़त काढ़े ॥ जो सुमिरे गिरि मेरु शिला कणहोत अजा खुर वारिधि बाढ़े॥ तुलसी ज्यहिके पदपंकजते प्रकटी तटनी जो हरे अघ गाढ़े ॥ ते प्रभु या सरिता तरबेकहँ माँगत नाव करारे ह्वै ठाढ़े ॥ २७ ॥ एहि घाटते थोरिक दूरि अहै कटिलौं जल थाह देखाइहौं जू ॥ परसे पगधूरि तरै तरणी घरणी घर क्यों समुझाइहौं जू ॥ तुलसी अवलंब न और कछू लरिका क्यहि भाँति जिआइहौं जू ॥ बरु मारिए मोहिं बिना पगधोये हों नाथ न नाव चढाइहौं जू ॥ २८ ॥ रावरे दोष न पायनको पगधूरिको भूरि प्रभाउ महाहै ॥ पाहनते बरु बाह न काठको कोमलहै जलखाइ रहाहै ॥ तुलसी सुनि केवट के बरबैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहाहै ॥ पावन पाय पखारिके नाव चढ़ाइहौं आयसु होत कहाहै ॥ २९ ॥ (घनाक्षरी) ॥ पातभरी सहरी सकलसुतवारे वारे केवटकी जाति कछु वेद न पढ़ाईहौं ॥ सब परिवार मेरो याही लागि राजाजी हों दीन वित्तहीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं ॥ तुलसीके ईश राम रावरेसों साँची कहों बिना पग-

धोए नाथ नाव न चढ़ाइहौं ॥ गौतमकी घरणी ज्यौं तरणी तरेगी मेरी प्रभुसों निषाद ह्वैके बाद ना बढ़ाइहौं ॥ ३० ॥ जिनको पुनीतवारि शिर शिवहै पुरारि त्रिपथगामिनी अस वेदकहैं गाइके ॥ जिनको योगींद्र मुनिवृन्ददेवदेहधरि करतविविधयोगजप मनलाइके ॥ तुलसी जिन की धूरि परसि अहल्या तरी गौतम सिधारे गृह गौनोसो लिवाइकै ॥ तेई पाँय पाइके चढ़ाय नाव धोएविनु ख्वैहौं न पठावनी कैहौं न हँसाइ कै ॥ ३१ ॥ प्रभुरुखपाइकै बोलाइ बाल घरनिहिं वंदि कै चरण चहूँदिशि बैठे घेरि घेरि ॥ छोटो सो कठौता भरि आनि पानी गंगाजूको धोइ पाँय पियत पुनीत वारि फेरि फेरि ॥ तुलसी सराहे ताको भाग सानुराग सुर वरषैं सुमन जय जय कहैं टेरि टे-रि ॥ विविध सनेह सानी बानी अस थानी सुनि लषण तन हेरि हेरि ॥ ३२ ॥ (सवैया) ॥ पुरते निकसी रघुवीर व-धू धरि धीर दये मगमें डगद्वै ॥ झलकी भरिमाल कनी जलकी पटु सूखिगए मधुराधरवै ॥ फिर बूझत हैं चलनोव किता पिय प-र्ण कुटी करिहैं कितह्वै ॥ तियकी लखि आतुरता पियकी अखि-यां अतिचारु चलीं जलच्वै ॥ ३३ ॥ जलको गये लक्ष्मणहैं लरि का परिखौं पिय छांह घरीक ह्वै ठाढ़े ॥ पोंछि पसेउ बयारि करौं अरु पाय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े ॥ तुलसी रघुवीर प्रिया श्रमजानिकै बैठि बिलंबसो कंटक काढ़े ॥ जानकी नाहको नेह लख्यौ पुलकी तनु वारि विलोचन बाढ़े ॥ ३४ ॥ ठाढ़े हैं नवद्रुम डार गहे धनु कांधे धरे कर सायक लै ॥ विकटी भ्रुकुटी बड़री अखियाँ अनमोल कपो-लन की छबिहै ॥ तुलसी ऐसी मूरति आनु हिये जड डारु धौं प्राण निछावरि कै ॥ श्रम सीकर साँवरि देह लसैं मनो राशि महातम ता-रकमै ॥ ३५ ॥ (घनाक्षरी) ॥ जलजनयन जलजानन जटाहैं शिर यौवन उमंग अंग उदित उदारहैं ॥ साँवरे गोरेके बीच भामिनी सु-दामिनिसी मुनिपटधेरे उर फूलनिके हारहैं ॥ करनि शरासन सिलीमु-ख निषंग कटि अतिही अनूप काहू भूपके कुमारहैं ॥ तुलसी विलो-कि कै तिलोकके तिलक तीनि रहे नर नारि ज्यों चितेरे चित्रसार

हैं ॥३६॥ आगे सोहैं साँवरा कुवँर गोरो पाछे आछे आछे मुनि वेष धरे लाजत अनंगहैं ॥बाण विशिखासन वसन वनहीके कटि कसीहैं बनाइ नीके राजत निषंगहैं ॥ साथ निशिनाथ मुखी पाथ नाथ नंदिनी सी तुलसी विलोके चित लाइलेत संगहैं ॥ आनँद उमंग मन यौवन उमंग तनरूपकी उमंग उमगत अंग अंगहैं॥३७॥ (कवित्त)॥ सुंदर वदन सरसी रुह सोहाएनैन मंजुल प्रसून माथेमुकुट जटिनके ॥ अंशनि शरासन लसत शुचि शरकर तूणकटि मुनिपट लूट कपटिनके ॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटिकै विधि विरचे वरूथ विद्युच्छटनिके ॥ गोरेको वरण देखे सोनो न सलोनो लागे साँवरो विलोकै गर्व घटत घटनिके॥३८॥वलकल वसन धनुबाणपाणि तूणकटि रूपके निधान घन दामिनीवरनहैं ॥ तुलसी सुतीय संग सहज सोहाए अंग नवल कमलहूते कोमल चरनहैं॥ और सो वसंत औरे रति औरे रतिपति मूरति विलोके तन मनके हरनहैं ॥ तापस वेषै बनायेपथिक पंथै सोहाये चले लोक लोचनानि सुफल करनहैं ॥ ३९ ॥ (सवैया)॥ बनिता बनी श्यामल गोरेके बीच विलोकहु री सखी मोहिसी ह्वै ॥ मग जोग न कोमल क्यों चलिहैं सकुचात मही पदपंकज छ्वै ॥ तुलसी सुनि ग्रामवधू विथकी पुलकी तन औ चलै लोचन च्वै ॥ सबभाँति मनोहर मोहन रूप अनूपहैं भूपके बालकद्वै ॥ ४० ॥ साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जित मैन लियोहै ॥ बान कमान निषंग कसे शिर सोहैं जटा मुनिवेष कियोहै ॥ संग लिए विधुवैनी वधू रतिको जेहि रंचक रूप दियोहै ॥ पाँयनतो पनहीं न पयादेहि क्यों चलिहैं सकुचात हियोहै ॥ ४१ ॥ रानी मैं जानी सयान महा पवि पाहनहूं ते कठोर हियोहै ॥ राजहु काज अकाज न जान्यो कह्यो तियको ज्यहि कान कियोहै ॥ ऐसी मनोहर मूरति ए बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियोहै ॥ ४२ ॥ आँखिनमें सखि राखिवे योग इन्हैं किमि कै वनवास दियोहै ॥ शीश जटा उर बाहु विशाल विलोचन लाल तिरीछी सि भौंहैं ॥ तूण शराशन बाण धरे तुलसी वन मारगमें सुठि सोहैं ॥ सादर बारहि बार सुभाय चितै तुम त्यों हम-

रो मनमोहैं ॥ पूंछति ग्रामवधू सियसों कहौ साँवरोसो सखि रावरो कोहैं ॥ ४३ ॥ सुनि सुंदर बैन सुधारस साने सयानी है जानकी जान भली ॥ तिरछे करि नैन दे सैन तिन्हैं समुझाइ कछू मुसुकाइ चली ॥ तुलसी त्यहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली ॥ अनुरागतडागमें भानु उदै विकसी मनों मंजुल कंजकली ॥ ॥ ४४ ॥ धरि धीर कहैं चलु देखिय जाइ जहाँ सजनी रजनी रहिहैं॥ कहिहैं जग पोच न शोचकछू फल लोचन आपन तौ लहिहैं ॥ सुख पाइहैं कान सुने बतियां कल आपुसमें कछुपै कहिहैं ॥ तुलसी अति प्रेम लगी पलकैं पुलकी लखि रामहिये महिहैं॥ ४५ ॥ पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाए ॥ कर बाण शरासन शीश जटा सरसीरुह लोचन सो न सोहाए ॥ जिन देखे सखी सतभावहुते तुलसी तिनतो मन फेरि न पाए ॥ यहि मारग आजु किशोर वधू विधुवैनी समेत सुभाव सिधाए ॥ ४६ ॥ मुखपंकज कञ्ज विलोचन मंजु मनोज शरासनसी बनी भौंहैं ॥ कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं ॥ तुलसी कटि तूण धरे धनु बाण अचानक दृष्टि परी तिरछोहैं ॥ केहि भाँति कहौं सजनी तोहि सों मृदु मूरति द्वै निवसी मनमोहैं ॥ ४७ ॥ प्रेमसों पीछे तिरीछे प्रियाहि चितै चितुदै चले लैं चितचोरे ॥ श्याम शरीर पसेऊ लसै हुलसै तुलसी लखि सो मन मोरे ॥ लोचन लोल चलैं भ्रुकुटी कल काम कमानहुसो तृण तोरे॥ राजत राम कुरंगके संग निषंग कसे धनुलों शर जोरे ॥ ४८ ॥ शर चारिक चारु बनाइ कसे कटि पाणि शरासन शायकलै ॥ वन खेलत राम फिरैं मृगया तुलसी छबिसो वरणै किमिकै ॥ अवलोकि अलौकिक रूप मृगी मृग चौंकि चकै चितवै चितदै ॥ न डगै न भगै जियजानि शिलीमुखपंच धरे रतिनायकहै ॥ ४९ ॥ विंध्यके बासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिननारि दुखारे ॥गौतमतीय तरी तुलसी सो कथा सुनिभे मुनिवृन्द सुखारे ॥ ह्वैहैं शिला सब चन्द्रमुखी परशे पद मंजुल कंज तिहारे ॥

कीन्ही भली रघुनायकजी करुणाकरि काननको पगुधारे ॥ ५० ॥
इति श्रीकवित्तावलीरामायणे अयोध्याकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

अथारण्यकाण्डः ॥

पंचवटी वर पर्णकुटी तर बैठेहैं राम सुभाय सुहाये ॥ सोहप्रिया प्रियबंधु लसै तुलसी सब अंग घने छबिछाये ॥ देखि मृगा मृगनैनी कहै प्रियबैन ते प्रीतमके मनभाये ॥ हेमकुरंगके संग शरासन शायकलै रघुनायक धाये ॥ ॥ ५१ ॥ इति श्रीकवित्तावली रामायणे आरण्यकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ किष्किन्धाकाण्डः ॥

जब अंगदादिनकी मनोगति मंदभई पवनके पूतको न कूदिबेको पलुगो॥साहसीह्वै शैलपर सहससकेलिआइ चितवत चहूंघा ओर औरनको कलुगो ॥ तुलसी रसातलको निकासि सलिल आयो कोल कलमल्यो अहि कमठको बलुगो ॥ चारिहू चरणके चपेट चापे चिपिटिगो उचकि उचकि चारि अंगुल अचलुगो ॥ ५२ ॥
इति श्रीकवित्तावलीरामायणे किष्किंधाकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ सुंदरकाण्डः ॥

बासव वरुण विधिबनते सोहावनो दशाननको कानन वसंतको शृँगारसो ॥ समय पुराने पात मरत डरत वात पालत लालत रति मारको विहारसो ॥ देखे वर वापिका तड़ाग बागको बनाव रागवश भो विराग पवनकुमारसो ॥ सीयकी दशा विलोकि विटप अशोक तर तुलसी विलोक्यो सो तिलोक शोकसारसो ॥ ५३ ॥ माली मेघ माल बनपाल विकराल भट नीके सब कालसींचैं सुधासार नीरको॥ मेघनादते दुलारो प्राणते पियारो बाग अति अनुराग जिय यातुधान धीरको ॥ तुलसी सो जानि सुनि सीयको दरशपाइ पैठोवाटिका

बजाइ बल रघुवीरको॥विद्यमान देखत दशाननको काननसो तहस नहस कियो सहसी समीरको॥५४॥वसनबटोरि बोरिबोरि तेलतमीच-र खोरि खोरि धाइ आइ बाँधत लँगूरहैं ॥ तैसो कपिकौतुकी डरात ढी-ले गात कैकै लातके अघातसहै जीमें कहै कूरहैं ॥ बालकिलकारी कै-कै तारीदैदै गारी देत पाछे लागे बाजत निशान ढोल तूरहैं ॥ बालधी बढ़नलागी ठौर ठौर दीन्ही आगि विन्धकी दवारि कैधों कोटिशत सूरहैं ॥ ५५ ॥ लाइ लाइ आगि भागे बालजात जहाँ तहाँ लघुहै निबुकि गिरिमेरुते विशालभो ॥ कौतुकी कपीश कूदि कनककँगूरा चढ़्यो रावण भवनचाढ़ि ठाढ़ो त्यहि कालभो ॥ तुलसी विराज्यो व्यो-म बालधी पसारि भारि देखे हहरात भट कालसों करालभो॥तेजको निधान मानो कोटिक कृशानुभानु नख विकराल मुख तैसो रिसला-लभो ॥ ५६ ॥ बालधी विशाल विकराल ज्वाल जाल मानौं लंक लीलिबेको काल रसना पसारी है ॥ कैधों व्योमवीथिका भरेहैं भूरि धूमकेतु वीररस वीर तरवारिसी उघारीहै ॥ तुलसी सुरेश चाप कैधों दामिनी कलाप कैधौं चली मेरुते कृशानु सरि भारीहै ॥ देखें यातु-धान यातुधानी अकुलानी कहैं कानन उजारेउ अब नगरप्रजारी है॥५७॥ जहाँ तहाँ बुबुक विलोकी बुबुकारी देत जरतनिकेतधा-वो धावो लागी आगिरे ॥ कहाँ तात मात भ्रात भगिनी भामिनी भाभी ढोटा छोटे छोहरा अभागे भोरे भागिरे ॥ हाथी छोरो घोरा छोरो महिष वृषभ छोरो छेरी छोरो सोवै सो जगावो जागि जागिरे ॥ तुलसी विलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं बार बार कह्यो पिय क-पिसों न लागिरे ॥ ५८ ॥ देखि ज्वालाजाल हाहाकार दशकन्ध सु-नि कह्यो धरो धरो धाये वीर बलवानहैं । लिये शूल शैल पाश प-रिघ प्रचंड दंड भाजनसनीर धीरधरे धनुबानहैं ॥ तुलसी समिध सौंज लंकयज्ञ कुण्ड लखि यातुधान पुङ्गीफल यव तिल धानहैं॥स्रुवा सो लँगूलबलमूल प्रतिकूल हवि स्वाहा महा हाँकि हाँकि हुनै हनुमान हैं ॥ ५९ ॥ गाजो कपिगाज ज्यों विराज्यो ज्वाला जालयुत भाज्यो वीर धीर अकुलाइ उठ्यो रावनो ॥ धावो धावो धरो सुनि धाये

यातुधानधारी वारिधारा उलदैं जलद ज्यों नशावनो ॥ लपट झपट झहराने हहराने वात भहराने भट परेउ प्रबल परावनो ॥ ढकनिढ-केलिपेलि सचिव चलेलै ठेलि नाथ न चलैगो बल अनल भयावनो ॥ ॥ ६० ॥ बड़ो विकराल देखि सुनि सिंहनाद उठयो मेघनाद सहित विषादकहै रावनो ॥ वेग जीतो मारुत प्रताप मारतण्डकोटि कालऊ करालता बड़ाई जितो बावनो ॥ तुलसी सयाने यातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसो दूत सोतो साहेब अबै आवनो ॥ काहेकीकुशलरोषे राम वाम देवहूंकी विषम बलीसों वादि वैरको बढ़ावनो ॥ ६१ ॥ पानी पानी पानी सबरानी अकुलानी कहैं जातिहैं परानी गतिजानी ग-जचालिहै ॥ वसन विसारैं मणि भूषण सँभारत न आनन सुखाने कहैं क्योंहूं कोऊ पालिहै ॥ तुलसी मँदोवै मींजिहाथ धुनिमाथ कहै काहू कान कियो न मैं कह्यों केतो कालिहै ॥ बापुरो विभीषण पुकारि बारबार कह्यो वानर बड़ीबलाइ घने घरघालिहै ॥ ६२ ॥ कानन उजा-रेउ तौ उजारेउ न बिगारेउ कछु वानर विचारो बाधि आन्यो हठि हारसों ॥ निपट निडर देखि काहूना लख्यो विशेषि दीन्होना छोड़ाइ कहि कुलके कुठारसों ॥ छोटे औ बड़ेरे मेरे पूतऊ अनेरे सब साँप-निसों खेलैं मेलैं गरे छुराधारसों ॥ तुलसीमँदोवै रोइरोइके विगोवै आपु बार बार कह्यों मैं पुकारि दाढ़ीजारसों॥६३॥रानी अकुलानी सब डा-ढ़त परानी जाहिं सकैं ना विलोकि वेष केशरीकुमारको॥मींजि मींजि हाथ धुनिमाथ दशमाथ तिय तुलसी तिलो न भयो बाहिर अगार को॥ सब असबाव डाढ़ो मैं न काढ़ा तै न काढ़ो जियकी परी सँभारै सहन भँडारको॥खीझत मँदोवै सविषाद देखि मेघनाद बयो लुनियत सब याही दाढीजारको॥६४॥रावणकी रानी विलखानी कहै यातुधानी हाहा कोऊ कहै बीसबाहु दशमाथसों ॥ काहे मेघनाद काहे काहेरे महोदरतू धीरज न देत लाइलेत क्यों न हाथसों ॥ काहे अतिकाय काहे काहेरे अकंपन अभागे तिय त्यागे भोंडे भागेजात साथसों ॥ तुलसी बढ़ाय बादशालते विशालवहैं याहिबल बालिसों विरोध रघु-नाथसों ॥ ६५ ॥ हाट बाट कोट ओट अट्टनि अगार पौंरि खोरि

खोरि दौरि दौरि दीन्ही अति आगिहै ॥ आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काहू व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागिहै ॥ बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरै बूँदियासी लंक पघिलाइ पाग पागिहै॥ तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं चित्रहूके कपिसों निशा-चर न लागिहै ॥ ६६ ॥ लागि लागि आगि भागि भागि चले जहाँ तहाँ धीयको नमाय बाप पूत न सँभारही ॥ छूटे बार बसन उघारे धूम धुंद अंध कहैं बारे बूढ़े बारि बारि बार बारहीं ॥ हय हिहिनात भागेजात घहरात गज भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारहीं ॥ नामलै चिलात बिललात अकुलात अति तात तात तौसियत झौं-सियत झारही॥६७॥लपट कराल ज्वालजालमाल दहूँदिशि धूम अ-कुलाने पहिंचाने कौन काहिरे ॥ पानीको ललात बिललात जरे गात जात परे पाइ माल जात भ्रात तू निबाहिरे ॥ प्रियातू पराहि नाथ नाथ तू पराहि बाप बाप तू पराहि पूत पूत तू पराहिरे॥तुलसी बिलोकिलोक व्याकुल बिहाल कहैं लेहि दशशीश अब बीस चख चा-हिरे॥६८॥बीथिका बजार प्रति अटनि अगारप्रति पवँरि पगार प्रति बानर बिलोकिये॥अर्द्ध उर्द्ध बानर बिदिशि दिशि बानरहै मानो रह्यो भरि बानर तिलोकिये॥मूँदे आँख हीयमे उघारे आँखि आगे ठाढ़ो धाइ जाइ जहाँ तहाँ और कोऊ कोकिये॥लेहु अब लेहु तब कोऊ न सिखावो मानों सोई सतराइ जाइ जाहि जाहिरो किये ॥६९ ॥ एक करै धौज एक कहै काढो सौज एक औजि पानी पीकै कहै बनत न आवनो ॥ एक परे गाढ़े एक डाढ़तहीं काढ़े एक देखतहैं ठाढ़े कहैं पावक भ-यावनो ॥ तुलसी कहत एक नीके हाथ लाये कपि अजहूं न छांड़ै बाल गालको बजावनो ॥ धावरे बुझावरे कि बावरे जिआवरेहो औरै आगिलागी न बुझावै सिंधुसावनो ॥ ७० ॥ कोपि दशकन्ध तब प्र-लयपयोदबोले रावण रजाइधाइ आये यूथ जोरिकै ॥ कह्यो लंकप-ति लंक बरत बुतावो बेगि बानर बहाइ मारौ महा बारि बोरिकै ॥भले नाथनाइमाथ चले पाथ प्रदनाथ बरषैं मुशलधार बार बार घोरि-कै ॥ जीवनते जागी आगि चपरि चौगुनी लागी तुलसी भभरि मेघ

भागे मुख मोरिकै ॥ ७१ ॥ इहाँ ज्वाल जरेजात उहाँ ग्लानि गरे गात सूखे सकुचात सब कहत पुकारहै ॥ युग षटभानु देखे प्रलय कृशानु देखे शेष मुख अनल बिलोके बार बार है ॥ तुलसी सुना न कान सलिल सर्पी समान अतिअचरज कियो केशरीकुमारहै ॥ वारिद वचन सुनि धुनै शीश सचिवन्ह कहै दश शीश ईश वामता विकारहै ॥ ७२ ॥ पावक पवन पानी भानु हिम वान यम काल लोकपाल मेरे डर डांवाडोलहै ॥ साहव महेश सदा शंकित रमेश मोहिं महातप साहस विरंचि लीन्हे मोलहै ॥ तुलसी त्रिलोक आजु दूजो न विराजै राजा बाजे बाजे राजनिके बेटा बेटी बोलहै ॥ कोहै ईशनामको जो वाम होत मोहूसेको मालवान रावरे के बावरेसे बोलहै॥७३॥भूमि भूमिपाल व्यालपालक पताल नाकपाल लोकपाल जेते सुभट समाजहै ॥ कहै मालवान यातुधानपति रावरेको मनहुँ अकाज आने ऐसो कौन आजहै ॥ रामकोह पावक समीर सीय श्वास कीश ईश वामता विलोकि वानरको व्याजहै ॥ जारत प्रचारि फेरि फेरि सो निशंक लंक जहाँ बाँकोवीर तोसों शूर शिरताजहै ॥ ७४ ॥ पान पकवान विधि नानाके सँधानो सीधो विविधविधान धान बरत बखारही ॥ कनक किरीट कोटि पलँग पेटारे पीठ काढ़त कहार सब जरेभरे भारही ॥ प्रवल पावक बाढ़े जहाँ काढ़े तहाँ डाढ़े झपटलपटभरे भवन भँडारही ॥ तुलसी अगार न पगार न बजारबच्यो हाथी हथिसार जरे घोरे घोरसारही ॥ ॥ ७५ ॥ हाट बाट हाटक पिघिलि चलो घीसो घनो कनक कराही लंक तलफत जायसों ॥ नाना पकवान यातुधान बलवान सब पागि पागि ढेरी कीन्ही भलीभाँति भायसों ॥ पाहुने कृशानु पवमानसो परोसो हनुमान सनमानिकै जेंवाये चितचायसों ॥ तुलसी निहारि अरिनारि दैदै गारिकहैं बावरे सुरारि वैर कीन्हो रामरायसों ॥ ७६ ॥ रावणसों राज रोग बाढ़त विराट उर दिनदिन विकल सकल सुख राँकसो ॥ नाना उपचार करि हारे सुर सिद्ध मुनि होत न विशोक औ तपावै नमनाकसो ॥ रामकी रजायते रसायनी समीर-

सूनु उतरि पयोधिपार शोधि सरवांकसो ॥ यातुधान बुटपुट पाक लंकजात रूप रतन यतन जारि कियोहै मृगांकसो ॥ ७७ ॥ जारि वारिकै विधूम वारिधि बुताइ लूम नाइमाथो पगनि भो ठाढ़ो कर जोरिकै ॥ मातुकृपाकीजै सहिदान दीजै सुनिसीय दीन्हींहै अशीष चारु चूड़ामणि छोरिकै ॥ कहा कहौं तात देखे जात जो बिहान दिन बड़ी अवलंबही सो चले तुम तोरिकै ॥ तुलसी सनीर नैन नेहसों शिथिल बैन बिलकि बिलोकि कपि कहत निहोरिकै ॥७८॥ दिवस छसात जात जानबे न मातुधरु धीर अरि अंतकी अवधिरही थोरिकै ॥ वारिधि बँधाय सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु सानुज कुशल कपि कटक बटोरिकै ॥ वचन विनीत कहि सीताको प्रबोध करि तुलसी त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरिकै ॥ जैजै जानकीश दशशीश करि केशरी कपीश कूद्यो बात घात उदधि हलोरिकै ॥ ७९ ॥ साहसीसमीरसूनु नीरनिधि लंघि लखि लंक सिद्धि पीठ निशि जागो है मशानसो ॥ तुलसी बिलोकि महा साहस प्रसन्न भई देवी सियसारिषी दियोहै वरदानसो ॥ वाटिका उजारि अच्छ धारि मारि जारि गढ़ भानुकुल भानुको प्रताप भानु भानुसो ॥ करत विशोक लोक कोकनदकोक कपि कहै जामवंत आयो आयो हनुमानसो ॥८० ॥ गगन निहारि किलकारी भारी सुनि हनुमान पहिचानि भए सानँद सचेतहैं ॥ बूड़त जहाज बच्यो पथिक समाज मोना आजु जाये जानि सर्व अंकमाल देतहैं ॥ जयजय जानकीश जयजय लषण कपीश कहि कूदे कपि कौतुकी नटत रेतरेतहैं ॥ अंगद मयन्द नल नील बलशील महा बालधी फिरावै मुख नानागति लेतहैं ॥ ८१ ॥ आयो हनुमान प्राणहेतु अंकमालदेत लेत पगधूरि यक चूमत लँगूरहैं ॥ एक बूझै बार बार सीय समाचार कहे पवनकुमारभो विगत श्रम शूलहैं ॥ एकभूखे जानि आगे आनि कंद मूल फल एक पूजे बाहुबल मूलतोरि फूलहैं ॥ एक कहै तुलसी सकल सिधि ताके जाके कृपापाथ नाथ सीतानाथ सानुकूलहैं ॥ ८२ ॥ सीयको सनेहशील कथा तथा लंककी चले कहत चायसों सिरानो पथ छनमें ॥

कह्यो युवराज बोलि वानर समाज आजु खाहु फल सुनि पेलि पैठे मधुवनमें ॥ मारे बागवान ते पुकारत देवानगे उजारे बाग अंगदादि खाए घाय तनमें ॥ कहैं कपिराज करिकाज आए कीश तुलसीश की शपथ महामोद मेरे मनमें ॥८३॥ नगर कुवेरको सुमेरुकी बराबरी विरंचि बुद्धिको विलास लंक निरमाणभो ॥ ईशहि चढ़ाय शीश बीसबाहु वीरतहाँ रावणसो राजा रज तेजको निधानभो॥तुलसी त्रिलोककीसमृद्धिसौज संपदा सकेलि चाकि राखी राशिजांगर जहानभो॥ तीसरे उपास वनवास सिंधु पास सो समाज महाराज जीको एकदिन दानभो॥८४॥इतिश्री कवित्तरामायणे सुन्दरकाण्डःसमाप्तः ॥५॥

अथ लङ्काकाण्डः ॥

बड़े विकराल भालु वानर विशाल बड़े तुलसी खड़े पहार लै पयोधि तोपिहैं ॥ प्रबल प्रचण्ड बरिवण्ड बहु दण्डखण्डि मण्डि मेदिनीको मण्डलीक लीक लोपिहैं ॥ लंकदाहुदेखे न उछाहु रह्यो काहुनको कहत सब सचिव पुकारि पाँव रोपिहैं ॥ बाचि है न पाछे त्रिपुरारिहू मुरारिहूके कोहै रण रारिको जो कोशलेश कोपिहैं ॥ ८५ ॥ त्रिजटा कहत वार वार तुलसीश्वरीसों राघव बाणएकही समुद्र सातों सोखिहैं ॥ सकुल सँहारि यातुधान धारि जंबुकादि योगिनीजमाति कालिका कलाप तोषिहैं ॥ राज दै निवाजिबो बजाइकै विभीषणै बजैंगे व्योमबाजने विबुध प्रेम पोषिहैं ॥ कौन दशकंध कौन मेघनादवापुरोको कुम्भकर्ण कीट जब राम रण रोखिहैं ॥ ८६ ॥ विनय सनेहसों कहति सिया त्रिजटासों पाये कछु समाचार आरजसुवनके॥ पायेजू बँधाये सेतु उतरे भानुकुलकेतु आये देखि देखि दूत दारुण दुवनके ॥ वदनमलीन बलहीन दीन देखि माने मिटे घटे तमीचर तिमिर भुवनके ॥ लोकपति शोक कोक मूंदे कपि कोकनद दण्ड द्वै रहैहैं रघु आदित उवनके ॥८७॥ (झूलना) ॥ सुभुज मारीच खर त्रिशिर दूषण बालि दलत जेहि दूसरो शर न सांध्यो ॥ आनि परवाम विधिवाम तेहि रामसो सकत संग्राम दशकन्ध कांध्यो ॥ समुझि तुलसीश कपि कर्म घर घर घैरु विकल सुनि सकल पाथोधिबांध्यो॥

बसत गढ़ लंक वंकेश नायक अछत लंक नहिं खात कोउ भात रां-
ध्यो॥ ८८ ॥(सवैया)॥ विश्वजयी भृगुनायक से बिन हाथ भये ह-
निहाथ हजारी॥ बातुल मातुल की न सुनी सिख का तुलसी कपि
लंक न जारी॥ अजहूँ तौ भलो रघुनाथ मिले फिरि बूझिहैको गज कौन
गजारी॥ कीर्त्ति बड़ो करतूति बड़ो जन बात बड़ोसो बड़ोई बजारी
॥ ८९ ॥ जब पाहन भे वन वाहनसे उतरे बनरा जय राम रढ़े॥ तु-
लसी लिय शैल शिला सब सोहत सागर ज्यों बल वारिबढ़े ॥ करि
कोपकरैं रघुबीरको आयसु कौतुकही गढ़ कूदिचढ़े॥ चतुरङ्ग चमू
पलमें दलिकै रणरावण रांड़के हाड़गढ़े ॥९०॥ (घनाक्षरी)॥ विपुल
विशाल विकराल कपि भालुमाने काल बहु वेष धरे धाये कि-
ये करषा॥ लिये शिला शैल शाल ताल औ तमाल तोरि तोपै तो-
यनिधि सुरको समाज हरषा॥ डगे दिग कुंजर कमठ कोल कलम-
ले डोलै धराधर धारि धराधर धरषा॥ तुलसी तमकि चलै राघव
की शपथकरै को करै अटक कपि कटक अमरषा ॥ ९१ ॥ आये
शुकसारन बोलायेते कहन लागे पुलकि शरीर सेनाकरत फहामही॥
महाबली बानर विशाल भालुकालसे करालहैं रहे कहां समाहिंगे क-
हांमही॥ हँस्यो दशकन्ध रघुनाथको प्रताप सुनि तुलसी दुरावै मु-
ख सूखत सहमही॥ रामके विरोधे बुरो विधि हरिहरहूको सबको
भलोहै राजा रामके रहमही॥ ९२ ॥ आयो आयो आयो सोई बा-
नर बहोरिभयो शोर चहुँओर लंका आये युवराजके॥ एक काढ़ै सौ-
ज एक धौज करै कहा ह्वैहै पोच भई महा शोच सुभट समाजके॥
गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथ करि मूंदैकान यातुधान मानों
गाजे गाजके॥ सहमि सुखात बात जातकी सुरति करि लवा ज्यों
लुकात तुलसी झपेटे बाजके॥ ९३ ॥ तुलसी सबल रघुबीरजीको
बालिसुत वाहि न गनत बात कहत करेरीसी॥ बखशीश ईशजी-
की खीस होत देखियत रिस काहे लागत कहतहौं मैं तेरीसी॥ च-
ढ़ि गढ़मढ़दृढ़कोटके कँगूरे कोपि नेकु धका दैहैं ढैहैं ढेलनकी ढेरी-
सी॥ सुनु दशमाथ नाथ साथके हमारे कपि हाथलंका लाइहै तोरहै

गी हथेरीसी ॥ ९४ ॥ दूषण विराध खर त्रिशिरा कबन्ध वधे तालऊ विशाल वेधे कौतुकहै कालिको ॥ एकही विशिष वश भये वीरबाँकुरे सो तोहूहै विदित बल महाबली वालिको ॥ तुलसी कहत हित मान तन नेकु शंक मेरो कहाजैहै फलपैहै तू कुचालिको ॥ वीर करि केशरी कुठार पानि मानि हारि तेरी कहा चली बूड़ तोसे गने घालिको ॥ ९५ ॥ (सवैया) ॥ तोसों कहौं दशकंधररे रघुनाथ विरोध न कीजिय बौरे ॥ वालि बली खर दूषण और अनेक गिरे जे जे भीतिमें दौरे ॥ ऐसिय हाल भई तोहिंको नतो लै मिलु सीय चहै सुख जौरे ॥ रामके रोष न राखिसकै तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे ॥ ९६ ॥ तूरजनीचरनाथ महारघुनाथके सेवकको जनहौं ॥ बलवानहै श्वान गली अपनी तोहिं लाज न गाल बजावत सौहौं ॥ बीस भुजा दशशीश हरौं न डरौं प्रभु आयसु भंगते जौहौं ॥ खेतमें केहरि ज्यों गजराज दलौं दल बालिको बालक तौहौं ॥ ९७ ॥ कोशलराजके काजहौं आजु त्रिकूट उपारिलै वारिधि बोरौं ॥ महाभुज दंड द्वै अंड कटाह चपेटक चोट चटाकदै फोरौं ॥ आयसु भंगते जो न डरौं सब मींजि सभासद शोणित घोरौं ॥ वालिको बालक जो तुलसी दशहूमुखके रणमें रद तोरौं ॥ ९८ ॥ अति कोपसों रोप्योहै पाँवसभा सबलंक सशंकित शोरमचा ॥ तमके घननादसे वीर प्रचारिकै हारि निशाचर सैन पचा ॥ न टरै पग मेरुहु ते गरुभो सोमनों महिसंग विरंचिरचा ॥ तुलसी सब शूर सराहतहैं जगमें बलशालि है वालिबचा ॥ ९९ ॥ (घनाक्षरी)॥ रोप्यो पाँव पैजकै विचारि रघुवीर बल लागे भट सिमिट न नेकु टसकतुहै ॥ तज्यो धीर धरणि धरणिधर धसकत धराधर धीर भार सहि न सकतु है ॥ महाबली बालिको दबत दलकतु भूमि तुलसी उछलि सिंधु मेरु मसकतु है ॥ कमठ कठिन पीठि घेठा परो मंदरको आयो सोई काम पै करेजा कसकतु है ॥ १०० ॥ (झूलना)॥ कनकगिरि शृंग चढ़ि देखि मर्कट कटक वदत मंदोदरी परम भीता ॥ सहसभुज मत्त गजराज रणकेशरी परशुधर गर्व देखि बीता ॥ दास तुलसी समर सबल कोशलधनी ख्यालही

वालि बलशालि जीता ॥ ऐकंत तृण दंतगहि शरण श्रीराम कहि अजहुँ यहिभाँति लै सौंपु सीता ॥ १ ॥ ऐनीच मारीच विचलाइ हति ताडका भंजि शिवचाप सुख सबहिदीन्ह्यौ॥सहस दशचारि खल सहित खर दूषणहि पठै यमधाम तै तउ न चीन्ह्यौ ॥ मैजुकहुँकंत सुनुमंत भगवंत सौं विमुख ह्वैबालि फल कौन लीन्ह्यौ ॥ बीस भुज शीश दश खीशगये तबहिं जब ईशके ईशसों वैर कीन्ह्यौ ॥ २ ॥ बालि दलि काल्हि जलयान पाषान किय कंत भगवंत तैं तब न चीन्हे॥ विपुल विकराल भट भालु कपिकालसे संग तरु तुंग गिरिशृंग लीन्हे ॥ आइगे कोशलाधीश तुलसीश जेहि छत्रमिस मौलि दशदूरिकीन्हे ॥ ईश बकशीश जनि खीश करु ईश सुनु अजहुँ कुल कुशल वैदेहि दीन्हे ॥ ३ ॥ जाके सैन समूह कपि कोगनै अर्बुद महाबल वीर हनुमान जानी ॥ भूलि है दशदिशा शीश पुनि डोलि है कोपि रघुनाथ जब बाणतानी ॥ वालिहू गर्व जियमाहिं ऐसो कियो मारि दहपट कियो यमकिवानी ॥ कहतमंदोदरी सुनहि रावण मतो वेगि लै देहि वैदेहि रानी ॥ ४ ॥ गहन उजारि पुरजारि सुत मारि तब कुशलगो कीशवर वैरिजाको॥दूसरो दूत पणरोपि कोपेउ सभा खर्व कियो सर्वको गर्वथाको ॥ दास तुलसी सभय वदत मयनंदिनी मंदमति कंत सुनु मंतम्हाको ॥ तौलौं मिलुवेगि नहिं जौलौं रण रोष भयो दाशरथि वीर विरदैत बांको ॥ ५ ॥ (घनाक्षरी) ॥ कानन उजारि अक्ष मारि धारि धूरिकीन्ही नगर प्रजारचो सोविलोक्यो बल कीशको ॥ तुम्हैं विद्यमान यातुधान मंडलीमें कपि कोपि रोप्यो पाँडसो प्रभाव तुलसीशको ॥ कंत सुनु मंतकुल अंत किय अंतहानि हातो कीजे हीयते भरो सो भुज बीशको ॥ तौलौं मिलुवेगि जोलौं चाप न चढ़ायो राम रोषि बाण काढ़चोना दलैया दशशीशको ॥ ६ ॥ पवनको पूत देखो दूत वीर बाँकुरो जो बंकगढ़ लंक सो ढकाढकेलि ढाहिगो ॥ वालि बल शालिको सो काल्हि दाप दलि कोपि रोप्यो पाँड चपरि चमूको चाउ चाहिगो ॥ सोई रघुनाथ कपि साथ पाथनाथ बांधि आये नाथ भागेते खिरीर खेह खाहिगो ॥

तुलसी गरबतजि मिलिबेको साज सजि देहि सीय नतो पिय पाइ-
माल जाहिगो ॥ ७ ॥ उदधि अपार उतरत नहिं लागी वार केशरी-
कुमारसो अदंडकैसो डांड़िगो ॥ वाटिका उजारि अक्ष रक्षकनि
मारि भट भारी भारी रावरेके चाउर सों कांड़िगो ॥ तुलसी तिहारे
विद्यमान युवराज आजु कोपि पाँव रोप्यौ बसकै छुवाइ छांड़िगो ॥
कहेकी न लाज पिय अजहूं न आये वाज सहित समाज गढ़रांड़ कै-
सो मांड़िगो ॥ ८ ॥ जाके रोष दुसह त्रिदोष दाह दूरिकीन्हे पैयत
न क्षत्री खोज खोजत खलकमें ॥ महिषमतीको नाथ साहसी सहस-
बाहु समर समर्थ नाथ हेरिये हलकमें ॥ सहित समाज महाराज सोज
हाजराज बूड़ि गयो जाके बल वारिधि छलकमें ॥ टूटत पिनाक
के मनाक वाम राम सेते नाक विनुभये भृगुनायक पलकमें ॥ ९ ॥
कीन्हीछोनी क्षत्री विनु छोनिप छपनहार कठिन कुठार पानि वीर
वान जानिकै ॥ परमकृपालु जो नृपाल लोकपालनपै जब धनुहाई
ह्वैहै मन अनुमानिकै ॥ नाक मैं पिनाक मिसि वामता विलोकि राम
रोक्यो परलोक लोक भरी भ्रम भानिकै ॥ नाइ दशमाथ महि जोरि
बीस हाथ पिय मिलिये पै नाथ रघुनाथ पहिचानिकै ॥ ११० ॥
कह्यो मत मातुल विभीषणहु बार बार आंचल पसारि पिय पांइ
लैलै हौं परी ॥ विदित विदेह पुरनाथ भृगुनाथ गति समय सया-
नीकीन्ही जैसी आइ गौंपरी ॥ वायस विराध खर दूषण कवंध
बालि बैर रघुवीरके न पूरी काहुको परी ॥ कन्त बीस लोचन वि-
लोकिए कुमन्त फल ख्याल लंका लाई कपि रांड़कीसी झोपड़ी
॥ ११ ॥ (सवैया) रामसो साम किए नितहै हित कोमल काजनकी-
जियटांठे ॥ आपनि सूझि कहौं पिय बूझिये जूझिबे योग न ठाहरु
नाठे ॥ नाथ सुनी भृगुनाथ कथा बलि बालि गये चलि बातके साठे ॥
भाइ विभीषण जाइ मिल्यो प्रभु आइ परे सुनि सायर काठे ॥ १२ ॥
पालिबेको कपि भालु चमू यमकाल करालहु कोप हरी है ॥ लंक-
से बंक महागढ़ दुर्गम ढाइबे दाहिबेकोकहरी है ॥ तीतर तोम तमीचर
सैन समीरको सूनु बड़ोबहरी है ॥ नाथ भलो रघुनाथ मिले रजनी-

चर सैन हिये हहरी है ॥ १३ ॥ (घनाक्षरी) ॥ रोषे रण रावण बोलाये वीर बानइत जानत जे रीति सब संयुग समाजकी ॥ चली चतुरंग चमू चपरि हने निशान सेना सराहन योग राति-चर राजकी ॥ तुलसी विलोकि कपि भालु किलकत ललकत ज्यों कँगाल पातरी सुनाजकी ॥ राम रुख खि हरषि हिय हनुमान मानों खेलवार खोली शीश ताज बाजकी ॥ १४ ॥ साजिके सनाह गज गाह स उछाह दल महाबली धाये वीर यातुधान धीरके ॥ इहाँ भालु बन्दर विशालमेरु मंदरसे लिये शैल साल तोरि नीरानिधि तीरके ॥ तुलसी तमकि ताकि भिरे भारी युद्ध क्रुद्ध सेनप सराहैं निज निज भटभीरके ॥ रुंडनके झुंड झूमि झूमि झूकरे से नाचैं समर शुमार शूर मारे रघुवीरके॥१५॥(सवैया) ॥ तीखे तुरंग कुरंग सुरंगनि साजिचढ़े छटि छैल छबीले ॥ भारी गुमान जिन्हैं मनमें कबहूं न भये रणमें तनु ढीले ॥ तुलसी गजले लखिके हरिलौं झपटे पटके सब शूरसलीले ॥ भूमिपरे भट घूमि कराहत हाँ-कि हने हनुमान हठीले ॥ १६ ॥ शूर सजोयल साजि सुबाजि सु-शैल धरे बगमेल चलेहैं ॥ भारी भुजा भरि भारी शरीर बली विज-यी सब भाँति भले हैं ॥ तुलसी जिन्हैं धाय धुकै धरणीधर धौरि ध-कानिसों मेरु हलेहैं ॥ ते रण तीक्षण लक्ष्मण लाखन दानि ज्यों दारिद दाबिदलेहैं ॥ १७ ॥ गहिमंदर बंदर भालु चले सो मनो उनये घन सावनके ॥ तुलसी उत झुण्ड प्रचण्ड झुके झपटैं भट जे सुरदावन के ॥ बिरुझे बिरदैत जे खेत अरे न टरे हठि बैर बढ़ावनके॥रण मार मची उपरी उपरा भले वीर रघूपति रावनके ॥ १८ ॥ शर तोमर शेल समूह पँवारत मारत वीर निशाचरके ॥ इतते तरु ताल तमाल चले खर खण्ड प्रचंड महीधरके ॥ तुलसी करि केहरि नाद भिरे भ-ट खड्ग खगे खपुवा खरके ॥ नख दंतनसों भुज दंड विहंडत मुण्ड सों मुण्ड परे झरके ॥ १९ ॥ रजनीचर मत्त गयंद घटा बिघटै मृगराजके साथलरै ॥ झपटैं भट कोटि मही पटकैं गरजैं रघु-वीरकी सौंहकरै ॥ तुलसी उतहांक दशानन देत अचेतभे वीरको

धीर धरै ॥ विरुझो रण मारुतको विरुदैत जो कालहु कालसो बू-
झिपरै ॥ १२० ॥ जे रजनीचर वीर विशाल कराल विलोकत काल
नखाये ॥ तेरण रोर कपीश किशोर बड़े बरजोर परे फलपाये ॥ लू-
म लपेटि अकाश निहारिकै हांक हठी हनुमान चलाये ॥ सूखिगे
गात चले नभ जात परे भ्रम वातन भूतल आये ॥ १२० ॥ जो द-
शशीश महीधर ईशको वीस भुजा खुलिखेलनहारो ॥ लोकप दि-
ग्गज दानवदेव सबै सहमैं सुनि साहस भारो ॥ वीर बड़ो विरदैत
बली अजहूं जग जागत जासु पँवारो ॥ सोहनुमान हन्यो मुठिका गि-
रिगो गिरिराज ज्यों गाजको मारो ॥ २१ ॥ दुर्गम दुर्ग पहारते भा-
रे प्रचंड महाभुज दंड बनेहैं ॥ लक्खमें पक्खर तिक्खन तेज जे शूर
समाजमें गाज गनेहैं ॥ ते विरुदैत बली रण बांकुरे हाँकि हठी ह-
नुमान हनेहैं ॥ नामलै राम देखावत बंधुको घूमत घायल घाय घ-
नेहैं ॥ २२ ॥ (घनाक्षरी) ॥ हाथिन सों हाथी मारे घोड़े घोड़े सों सँ-
हारे रथनिसों रथ विदरनि बलवानकी ॥ चंचल चपेट चोट चरण च-
कोट चाहैं हहरानी फ़ौजें महरानी यातुधानकी ॥ बारबार सेवक
सराहना करत राम तुलसी सराहें रीति साहेब सुजानकी ॥ लांबी
लूम लसत लपेटी पटकत भट देखो देखो लषण लरनि हनुमानकी ॥
॥ २३ ॥ दबकि दबोरे एक वारिधिमें बोरे एक मगन महीमें ए-
क गगन उड़ातहैं ॥ पकरि पछारे कर चरण उखारे एक चीरि फारि
डारे एक मींजि मारे लातहैं ॥ तुलसी लषण राम रावण विविध वि-
धि चक्रपाणि चंडीपति चंडिका सिहातहैं ॥ बड़े बड़े बानइत वीर ब-
लवान बड़े यातुधान यूथप निपाते वातजातहैं ॥ २४ ॥ प्रबल प्र-
चंड बरिबंड बाहुदंड वीर धाये यातुधान हनुमान लियो घेरिकै ॥
महाबल पुंज कुंजरारि ज्यों गरजि भट जहाँ तहाँ पटके लंगूर फेरि
फेरिकै ॥ मारे लात तोरे गात भागे जात हाहाखात कहै तुलसी
सराहि रामकी सों टेरिकै ॥ ठहर ठहर परे कहरि कहरि उठै हहर
हहर हरसिद्ध हँसे हेरिकै ॥ ॥ २५ ॥ जाकी बाँकी वीरता सुनत स-
हमत शूर जाकी आंच अबहूं लसत लंक लाहसी ॥ सोई हनुमान ब-

लवान बाँको बानइत जोहै यातुधान सेना चले लेतथाहसी ॥ कंपत अकंपन सुखाय अतिकाय काय कुंभऊकरण आइ रह्यो पाइ आहसी॥ देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजि धायो वीर रघुवीरको समीरसूनु साहसी॥ २६ ॥ (झूलना) ॥ मत्तभट मुकुट दशकंध साहस शैल शृंग विद्दरनि जनु वज्रटांकी ॥ दशन धरि धरणि चिक्करत दिग्गज कमठ शेष संकुचित शंकित पिनाकी ॥ चलित महि मेरु उच्छलत सागर सकल विकल विधि वधिर दिशिविदिशि झांकी ॥ रजनिचर घरनिघर गर्भ अर्भक श्रवत सुनत हनुमानकी हांक बाँकी ॥ २७ ॥ कौनकी हांकपर चौंकि चंडीश विधि चंडकर थकित फिरि तुरँग हांके ॥ कौन के तेजबल सीम भट भीमसे भीमता निरखि करि नयन ढांके ॥ दास तुलसीशके विरदवरणत विदुष वीर विरुदैत वर वैरि धांके ॥ नाक नरलोक पाताल कोउ कहत किन कहां हनुमानसे वीरबांके ॥ २८ ॥ यातुधानावली मत्त कुंजर घटा निरखि मृगराज जनु गिरि ते टूटयो ॥ विकट चटकन चोट चरण गहि पटकि महि निघटि गये सुभट सत सटन छूटयो ॥ दास तुलसी परत धरणि धरकत झुकत हाटसी उठत जंबुकनि लूटयो ॥ धीर रघुवीरके वीर रण बांकुरे हांकि हनुमान कुलि कटक कूटयो ॥ ॥ २९ ॥ (छप्पय) ॥ कतहुँ विटप भूधर उपारि अरिसैन वरक्खत ॥ कतहुँ वाजि सों वाजि मर्दि गजराज करक्खत ॥ चरण चोट चटकन चकोट अरि उर शिर वज्जत ॥ विकट कटक विद्दरत वार वारिद ॥ लंगूर लपेटत पटकि भट जयति राम जय उच्चरत ॥ तुलसीश पवननंदन अटल युद्ध क्रुद्ध कौतुक करत ॥ ३० ॥ (घनाक्षरी) ॥ अंग अंग दलित ललित फूले किंशुकसे हने भट लाखन लषण यातुधानके ॥ मारिकै पछारिकै उपारि भुज दंड चंड खंडि खंडिडारेते विदारे हनुमानके ॥ कूदत कवन्ध के कदंब बंबसीकरत धावत देखावतहैं लाघौ राघौबानके ॥ तुलसी महेश विधि लोकपाल देवगण देखत विमान चढ़े कौतुक मशानके ॥ ३१ ॥ लोथिनसों लोहूके प्रवाह चले जहां तहां मानहुँ

गिरिन गेरु झरना झरतहैं ॥ शोणित सरित घोर कुंजर करारे भारे कूलते समूल वाजि विटपपरतहैं ॥ सुभट शरीर नीरचारी भारी भारी तहाँ शूरनि उछाह कूर कादर डरतहैं ॥ फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेट खात काक कंकबालक कोलाहल करतहैं ॥ ३२ ॥ ओझरी अझोरी कांधे आँत निकी सेल्ही बांधे मूँडके कमण्डलु खपर किये फोरिकै ॥ योगिनी जमाति जोरि झुंड बनी तापसीसी तीर तीर बैठीसो समर सरिखोरिकै ॥ शोणितसों सानि सानि गूदा खात सतुआसे प्रेतएक पियत बहोरि घोरि घोरिकै ॥ तुलसीबैतालभूत साथलिये भूतनाथ हेरि हेरि हँसतहैं हाथ हाथ जोरिकै ॥ ॥ ३३ ॥ (सवैया) ॥ राम शरासनते चलेतीर रहे न शरीर हड़ावरि फूटी ॥ रावन धीर न पीरगनी लखि लैकर खप्पर योगिनि जूटी ॥ शोणित छींटि छटानि छुटी तुलसी प्रभुसोहै महाछबि छूटी । मानौ मरकत शैल बिशालमें फैलि चली बर बीरवहूटी ॥ ३४ ॥ (घ०)॥ मारि मेघनादसो प्रचारि भिरेभारी भट आपने आपने पुरषारथ न ढीलकी ॥ घायल लषणलाल सुनि बिलखाने राम भई आशशिथिल जगनिवासदीलकी ॥ भाई को न मोह छोह सीयको न तुलसीश कहैं मैं विभीषणकी कछु न सबीलकी ॥ लाजबांह बोलकी नेवाजेकी सँभारसार साहेब न रामसे बलाइ लेउँ शीलकी ॥३५॥ (स०) ॥ कानन वास दशाननसों रिपु आनन श्रीशशि जीति लियौहै । बालि महाबल शालि दल्यो कपि पालि बिभीषण भूपकियोहै ॥ तीय हरी रण बंधुपरचौ पै भयो शरणागत शोच हियोहै॥ बांह पगार उदार कृपालु कहां रघुबीर सो वीर बियोहै ॥ ३६ ॥ लीन्ह उखारि पहार विशाल चल्यो तेहिकाल बिलंब न लायो ॥ मारुतनंदन मारुत कोमन को खगराजको वेग लजायो ॥ तीखी तुरा तुलसी कहतो पै हिये उपमाको समाउ न आयो ॥ मानो प्रतक्षण पर्वतकी न भली कलसी कपिज्यों धुकिधायो॥३७॥ (घना०)॥ चल्यो हनुमान सुनिया-तुधान कालनेमि पठयो सो मुनिभयो पायो फल छलिकै॥ सहसाउखारोहै पहार बहु योजनको रखवारे मारे भारे भूरि भट दलिकै ॥

बेगबल साहस सराहत कृपालु राम भरत की कुशल अचलल्यायो चलिकै । हाथ हरिनाथके बिकाने रघुनाथ जनु शीलसिंधु तुलसीश भलो मान्यो भलिकै ॥ ३८ ॥ बापु दियो काननभो आनन शुभाननसों बैरी भो दशानन सो तीयको हरनभो ॥ घोर शरि हेरि त्रिपुरारि विधि हारेहिये घायल लषण वीर बानर मरनभो ॥ बालिबलशालि दलि पालि कपिराजको बिभीषण नेवाजि सेतुसागर तरनभो ॥ ऐसे शोकमें तिलोकके विशोक पलहीमें सबहीके तुलसीके साहिब शरनभो ॥३९॥(स०)॥ कुम्भकरण्ण हन्यो रणराम दल्यो दशकंधर कंधर तोरे ॥ पूषण वंश विभूषण पूषण तेज प्रताप गरे अरि ओरे ॥ देव निशान बजावत गावत धावतगे मन भावत भोरे ॥ नाचत बानर भालुसबै तुलसी कहिहारे हहा भयहोरे ॥ ४० ॥ (घना०) मारे रण रातिचर रावण सकुल दल अनुकूल देव मुनि फूलबरसतु हैं ॥ नाग नर किन्नर विरंचि हरि हर हेरि पुलक शरीर हिये हेतु हरषतुहैं ॥ वाम ओर जानकी कृपानिधानके विराजैं देखत विषाद मिटे मोद सरसतुहैं ॥ आयसु भो लोकनि सिधारे लोकपाल सब तुलसी निहारिकै दियो सो सरखतुहैं ॥ ४१ ॥ इति श्री कवित्तरामायणे लंकाकाण्डःसमाप्तः ॥ ६ ॥

अथ उत्तरकाण्डः ।

सवैया ॥ वालिसे वीर विदारि सुकंठ थप्यो हरषे सुर बाजने बाजे ॥ पलमें दल्यो दाशरथी दशकंधर लंक बिभीषण राज बिराजे ॥ राम स्वभाव सुने तुलसी हुलसे अलसी हमसे गलगाजे ॥ कायर क्रूर कपूतनकी हदतेऊ गरीब नेवाज नेवाजे ॥ १ ॥ वेदपढैं विधि शंभुसभीत पुजावन रावण सों नित आवैं ॥ दानव देव दयावने दीन दुखी दिन दूरिहिते शिरनावैं ॥ ऐसेउ भाग भगे दशभालले जो प्रभुता कवि कोविद गावैं ॥ रामसे वाम भये तेहि वामहि वामसबै सुख संपति लावैं ॥ २ ॥ वेद विरुद्ध मही मुनि साधु सशोक किये सुरलोक उजारयौ ॥ और कहा कहौं तीय हरी तबहूं करुणा-

कर कोप न धारयो ॥ सेवक छोहते छांड़ी क्षमा तुलसी लख्यो राम स्वभावहि हारयो ॥ तौलौं न दाप दल्यो दशकन्धर जौलौं विभीषण लात न मारयो ॥ ३ ॥ शोक समुद्र निमज्जत काढ़ि कपीश कियो जग जानत जैसो ॥ नीच निशाचर वैरीको बंधु विभीषणकीन्हपुरन्दर ऐसो ॥ नाम लिये अपनाइ लियो तुलसी सो कहो जग कौन अनैसो ॥ आरत आरति भञ्जन राम गरीबनेवाज न दूसर ऐसो ॥ ४ ॥ मीत पुनीत कियो कपि भालुको पाल्यो ज्यो काहु न बाल तनूजो ॥ सज्जन सींव विभीषणभा अजहूं विलसै वर बंधु वधू जो ॥ कोशलपाल विना तुलसी शरणागतपाल कृपालु न दूजो ॥ कूर कुजाति कपूत अघी सबकी सुधरै जो करै नर पूजो ॥ ॥ ५ ॥ तीय शिरोमणि सीयतजी जेहिं पावककी कलुखाई दहीहै । धर्म धुरन्धर बंधुतज्यो पुरलोगनिकी विधि बोलि कहीहै ॥ कीश निशाचरकी करनी न सुनी न विलोकि न चित्त रहीहै ॥ राम सदा शरणागतकी अनखौंही अनैसी स्वभाय सहीहै ॥ ६ ॥ अपराध अगाध भये जनते अपने उर आनत नाहिंनजू ॥ गणिका गज गीध अजामिलके गणि पातक पुञ्ज सराहिनजू ॥ लिये वारक नाम सुधाम दिये जिहि धाम महामुनि जाहिं न जू ॥ तुलसी भजु दीनदयालुहिरे रघुनाथ अनाथहि दाहिनजू ॥ ७ ॥ प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रकटे नरकेहरिखम्भ महा ॥ झखराज ग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल विलम्ब किये न तहां ॥ सुरसाखी दैराखीहै पाण्डुवधू पट लूटत कोटिक भूपजहां ॥ तुलसी भजु शोच विमोचनको जनको पण राख्यो न राम कहां ॥ ८ ॥ नरनारि उघारि सभामहँ होत दिये पट शोच हरयो मनको ॥ प्रहलाद विषाद निवारण वारण तारण मीत अकारनको ॥ जो कहावत दीनदयालु सही जेहि भीर सदा अपने पनको ॥ तुलसी तजि आन भरोस भजे भगवान भलो करिहैं जनको ॥ ९ ॥ ऋषिनारि उधारि कियो शठकेवट मीत पुनीत सुकीर्त्तिलही । निज लोक दियो शबरी खगको कपिथाप्यो सो मालुम है सबही ॥ दशशीश विरोध सभीत विभीषण भूप कियो

जगलीक रही॥ करुणानिधि को भजरे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथसही॥ १०॥ कौशिक विप्रवधू मिथिलाधिपके सब शोच दल्यो पलमाहैं॥ बालि दशानन बंधु कथा सुनि शत्रुसुसाहिब शील सराहैं॥ ऐसी अनूपकहै तुलसी रघुनायक की अगुणी गुणगा हैं॥ आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करैं निज हाथ कि छाहैं॥ ११॥ तेरे बेसाहे बेसाहत औरनि और बेसाहिके बेचन हारे॥ व्योम रसातल भूमि भरे नृप कूरकुसाहिबसे तिहुँखारे॥ तुलसी तेहि सेवत कौन मरे रजते लघुको करे मेरुते भारे॥ स्वामी सुशील समर्त्थ सुजान सो तोसों तुहीं दशरत्थ दुलारे॥१२॥(घ०)॥यातुधान भालु कपि केवट विहंग जो जो पालो नाथ सद्य सो सो भयो काम काजको॥ आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे अपनायसो स्वभाव महाराजको॥ नाम तुलसी पै भोंडे भागसों कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दग़ाबाज को॥ साहेब समर्थ दशरथके दयालु देव दूसरो न तोसों तुही आपने के लाजको॥ १३॥ महाबली बालि दलि कायर सुकंठ कपि सखाकिये महाराज हौं नकाहूकामको॥ भ्रात घात पातकी निशाचर शरण आये किये अंगीकार नाथ एते बड़े बामको॥ राय दशरत्थके समर्त्थ तेरे नाम लिये तुलसीसे क्रूर को कहत जग रामको॥ आपने निवाजे की तौ लाज महाराजको स्वभाव समुझत मन मुदित गुलामको॥ १४॥ रूपशीलसिंधु गुणसिंधु बंधु दीनको दयानिधान जान मणि वीर बाहु बोलको॥ श्राद्ध कियो गीधको सराहे फल शबरीके शिलाशाप शमन निबाह्योनेह कोलको॥तुलसी उराउहोत रामको स्वभाव सुनि को न बलि जाइ न बिकाइ बिनमोलको॥ ऐसेहु सुसाहब सों जाको अनुराग नसो बड़ोई अभागी भाग भागो लोभ लोलको॥ १५॥ शूर शिरताज महाराजनिके महाराज जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो॥ साहब कहाँ जहाँ न जानकीश सों सुजान सुमिरे कृपालुके मराल होत खूसरो॥ केवट पषाण यातुधान कपि भालु तारे अपनायो तुलसी सों धींग धमधूसरो॥

बोलको अटल बाहको पगार दीनबंधु दूबरेको दानं निधान दूसरो ॥ १६ ॥ कीबेको विशोक लोक लोक पालहूते सब- कहूं कोऊ भो न चरवाहो कपि भालुको ॥ पविको पहार कि- यो ख्यालही कृपालु राम बापुरो विभीषण घरोंधी हुतो बाल- को ॥ नाम वोटलेतहीं निखोट होत खोटेखल चोविन मोट पाइ भ- योन निहालको ॥ तुलसीकी बारबडी ढील होति शीलसिंधु बिगरि सुधारिबे को दूसरो दयालुको॥१७॥नाम लिये पूतको पुनीत कियो पातकीश आरति निवारे प्रभु पाहि कहे पीलकी॥छलिनकी छौडी सो- निगोडी छोटी जाति पाँति कीन्हीं लीन आपुमें भामिनी भौंडे भील- की॥तुलसी ओ तारिबो विसारिबो न, अन्त मोहूं नीकेहै प्रतीति रावरे स्वभाव शीलकी ॥ देवतौ दयानिकेत देत दादि दीनन की मेरी बार मेरेही अभाग नाथ ढीलकी ॥ १८ ॥ आगेपरे पाहन कृपा किरात कोलनी कपीश निशिचर अपनाये नाये माथजू॥सांची सेव- काई हनुमानकी सुजान राइ ऋणियां कहायेहौ विकाने ताके हाथजू ॥ तुलसीसे खोटे खरे होत ओट नामहीकी महँगी माटी मगहूकी मृगमद साथजू ॥ बात चले बातको न मानिबो बि- लग बलि काकी सेवा रीझिको निवाजो रघुनाथजू ॥ १९ ॥ कौशिककी चलत पषाणकी परसपाइ टूटत धनुष बनिगई है जनककी ॥ कोल पशु शवरी विहंग भालु रातिचर रतिनके लालचिन प्रापति मननकी ॥ कोटि कला कुशल कृपा लुनत- पाल बलि बातहु कितक तृण तुलसी तनककी ॥ राइ दशरत्थके समत्थराम राजमणि तेरे हेरे लोपै लिपि विधिहू गनक- की॥२०॥(घनाक्षरी) ॥शिला शाप पाप गुह गीधको मिलाप शवरी के पास आप चलिगयेहौ सो सुनी मैं ॥ सेवक सराह कपिनायक विभीषणको भरत सभा सादर सनेह शिरधुनी मैं ॥ आलसी अभा गी अघी आरत अनाथपाल साहेब समर्त्थ एक नीके मन गुनीमैं ॥ दोष दुख दारिद दलैया दीनबंधु राम तुलसी न दूसरो दयानिधान दुनीमैं ॥ २१ ॥ मीत बालि बंधु पूत दूत दशकंध बंधु सचिव सरा-

धकियो शबरी जटाइको ॥ लंकजरी जोहै जिये शोचसो विभीषणको कहो ऐसे साहेबकी सेवा न खटाइको ॥ बड़े एकएकते अनेक लोक लोकपाल अपने अपनेकोतौ कहै गो घटाइको ॥ सांकरेको सेइबो सराहिबे सुमिरबेको रामसों न साहिब न कुमति कटाइको ॥ २२ ॥ भूमिपाल व्यालपाल नाकपाल लोकपाल कारण कृपालु मैं सबैके जीकी थाहली ॥ कागज़को आदर काहूके नाहिं देखियत सबनि सोहातहै सेवासुजानि टाहली ॥ तुलसी स्वभावकहै नहीं कछू पक्षपात कौने ईश किये कीश भालु खास माहली ॥ रामहीके द्वारेपै बोलाइ सनमानियत मोसेदान दूबरे कुपुत कूरकाहली ॥ २३ ॥ सेवा अनुरूप फलदेत भूप कूप ज्यों विहीनगुण पथिक पियासे जात पथके । लेखे जोखे चोखे चित तुलसी स्वारथहित नीके देखे देवता देवैया घने गथके । गीधमानो गुरु कपि भालु मानो मीतके पुनीत गीत साके सब साहेब समर्त्थके । और भूप परखि सुलाखि तौलि ताइलेत लसमके खसम तुहीपै दशरत्थके ॥ २४ ॥ रीति महाराजकी नेवाजिये जो माँगनोसो दोष दुख दारिद दरिद्रकैके छोड़िये ॥ नाम जाको कामतरु देत फल चारि ताहि तुलसी विहाइकै बबूर रेंड गोडिये ॥ याचैको नरेश देशदेशके कलेशकरै देहै तौ प्रसन्नह्वै बड़ाई बड़ी बोड़िये ॥ कृपापाथनाथ लोकनाथनाथ सीतानाथ तजि रघुनाथ हाथ और काहि ओडिये ॥ २५ ॥ (सवैया) ॥ जाके विलोकत लोकपहोत विशोक लहैं सुरलोक सुठौरहि ॥ सो कमलातजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवै शिरमौरहि ॥ ताको कहाय कहै तुलसी तुल जाहिनामांगत कूकर कौरहि ॥ जानकीजीवनको जनह्वै जरिजाउ सो जीह जो यांचत औरहि ॥ २६ ॥ जड़ पंच मिलै जेहि देहकरी करनी लघुधा धरणीधरकी ॥ जनकी कहु क्यों करिहै न सँभार जो सारकरै सचराचरकी ॥ तुलसी कहु रामसमानको आनहै सेवकि जासु रमा घरकी ॥ जगमें गति जाहि जगत्पतिकी परवाहहै ताहि कहा नरकी ॥ २७ ॥ जगयाचिये कोऊ न याचिये याचिये जोजिय जानकीजानहिरे॥जेहियांचत याचक-

ता जरिजाइ जो जारति जोर जहानहिरे॥गतिदेखु विचारि विभीषणकी अरु आनु हिये हनुमानहिरे॥तुलसी भजु दारिद दोष दवानल संकट कोटि कृपानुहिरे ॥ २८ ॥ सुनु कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहिके गुणगाथहिरे॥सुखमन्दिर सुंदररूप सदा उरआनि धरे धनुभाथहिरे ॥ रसना निशि वासर सादरसो तुलसी जपु जानकीनाथहिरे ॥ करुसंग सुसन्तनसों तजिकूर कुपंथ कुचालि कुसाथहिरे ॥ २९ ॥ सुत दार अगार सखा परिवार विलोकु महाकुसमाजहिरे ॥ सबकी ममता तजिकै समता सजिसंतसभा न विराजहिरे ॥ नरदेह कहाकरि देखु विचारि बिगारु गँवार न काजहिरे ॥ जनि डोलहि लोलुप कूकर ज्यों तुलसी भजु कोशलराजहिरे ॥ ३० ॥ विषया परनारि निशा तरुणाई सुपाइ परयो अनुरागहिरे ॥ यमके पहरू दुखरोग वियोग विलोकतहू न विरागहिरे ॥ ममतावशते सबभूलिगयो भयो भोर महा भय भागहिरे जरठाइ दिशा रविकाल उग्यो अजहूं जड़ जीवन जागहिरे ॥ ३१ ॥ जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया सुखलागिकरी न परै बरनी ॥ जगमें जनकादि हितूभये भूरि बहोरि भई उरकी जरनी ॥ तुलसी अब रामको दासकहाइ हियेधरु चातककी धरनी ॥ करि हंसको वेष बड़ो सबसों तजिदे बकवायसकी करनी ॥ ३२ ॥ भलि भारतभूमिं भलेकुलजन्म समाज शरीर भलो लहिकै ॥ ममता करखा तजिकै वरखा हिम मारुत घाम सदासहिकै ॥ जो भजै भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै ॥ नत और सबै विष बीज बये हरहाटक कामदुकानहिकै ॥३३॥ सो सुकृती शुचिमन्त सुसंत सुजान सुशील शिरोमणिस्वै ॥ सुर तीरथ तासु मनावन आवन पावनहोतहै तातनछ्वै ॥ गुणगेह सनेहको भाजनसो सबहीसों उठाइ कहौं भुजद्वै ॥ सतिभाय सदा छलछाँड़ि सबै तुलसी जो रहै रघुबीरको ह्वै ॥ ३४ ॥ सो जननी सो पिता सोइ भ्रात सो भामिनि सो सुत सोहित मेरो ॥ सोई सगो सो सखा सोइ सेवक सो गुरु सोसुर साहिबचेरो ॥ सो तुलसी प्रिय प्राणसमान कहाँलौं बनाइकहौं बहुतेरो ॥ जो तजिदेहको गेह सनेहसो रामको सेवक होइ सबेरो ॥३५॥ रामहैं मातु पिता गुरु बं-

धु औ संगी सखा सुत स्वामि सनेही ॥ रामकी सौंह भरोसोहै राम को रामरँग्यो रुचि राच्यो न केही ॥ जीवतराम मुये पुनि राम सदा-रघुनाथहिकी गति जेही ॥ सोई जियै जगमें तुलसी नतु डोलत और मुये धरिदेही ॥ ३६ ॥ सियरामस्वरूप अगाधअनूप विलोचन मीननको जलुहै ॥ श्रुतिरामकथा मुख रामको नाम हिये पुनिराम-हिको थलुहै ॥ मतिरामहिसों गति रामहिसों रति रामसों रामहिको-बलुहै ॥ सबकीनकहै तुलसीके मते यतनो जगजीवनको फलु है॥३७॥दशरत्थके दानि शिरोमणि राम पुराणप्रसिद्ध सुन्यो जसमैं॥ नर नाग सुरासुर याचक जो तुमसो मनभावत पायो न कैं॥ तुलसी करजोरि करै विनती जो कृपा करि दीनदयालु सुनै ॥ जेहि देह सनेह न रावरे सों ऐसी देह धराइकै जाय जियै ॥ ३८ ॥ झूठो है झूठो है झूठो सदा जग सन्त कहन्त जे अन्त लहाहै ॥ ताको कहै शठ शंकट कोटिक काढ़त दन्त करन्त हहाहै ॥ जानपमीको गुमान बड़ो तुलसीके विचार गँवार महाहै ॥ जानकीजीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जान कहाहै ॥ ३९ ॥ तिन्हते खर शूकर श्वान भले जड़ता वशतें न कहैं कछु वै ॥ तुलसी जेहि राम-सों नेह नहीं सो सही पशु पूछ विखाननद्वै ॥ जननी कत भार मुई दश मास भई कि न बाँझ गई कि न च्वै ॥ जरि जाउ सो जीवन जानकी नाथ जिये जगमें तुम्हरो विनहै ॥ ४० ॥ गज बाजि घटा भले भूरि भटा वनिता सुत भौंह तकैं सबकै ॥ धरणी धन धाम शरीर भलो सुरलोकहु चाहि इहै सुख स्वै॥सब फोकट साटक है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिनद्वै ॥ जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो बिनुहै॥४१॥ सुरराजसों राज समाज समृद्धि विरंचि धनाधिपसो धनभो ॥ पवमानसों पावक सों यम सोम-सो पूषनसों भवभूषन भो ॥ करि योग समीरन साधि समाधिकै धीर बड़ो वशहू मन भो ॥ सब जाइ स्वभाइ कहै तुलसी जो न जानकीजीवनको जनभो ॥ ४२ ॥ कामसे रूप प्रताप दिनेशसे सोमसे शील गणेशसे माने ॥ हरिचन्द्रसे साँचे बडे विधिसे मघवासे म-

द्वीप विषै सुखसाने ॥ शुकसे मुनि शारदसे वकता चिरजीवन लो-
मश ते अधिकाने ॥ ऐसे भये तौ कहा तुलसी जुपै राजिवलोचन
राम न जाने ॥ ४३ ॥ झूमत द्वार अनेक मतंग जँजीर जरे मद-
अंबु चुचाते ॥ तीखे तुरंग मनोगति चंचल पौनके गौनहुँते बढ़ि
जाते ॥ भीतर चन्द्रमुखी अवलोकत बाहर भूप खड़े न समाते ॥
ऐसे भये तौ कहा तुलसी जुपै जानकीनाथके रंग न राते ॥ ४४ ॥
राज सुरेश पचाशक को विधिके करको जो पटो लिखि पाये ॥ पूत
सुपूत पुनीत प्रिया निज सुंदरता रतिको मदनाये ॥ संपति सिद्धि
सबै तुलसी मनकी मनसा चितवैं चितलाये ॥ जानकी जीवन जा-
ने बिना नर ऐसेऊ जीवन जीव कहाये ॥ ४५ ॥ कृशगात ललात
जो रोटिनको घर बात घरे खुरपाखरिया ॥ तिन सोनेके मेरुसे ढेर
लहे मनतौ न भरो घरपै भरिया ॥ तुलसी दुख दूनो दशा दुहुँ देखि
कियो मुख दारिदको करिया ॥ तजि आशभो दास रघूपतिको द-
शरत्थको दानि दया करिया॥४६॥को भरिहै हरिके रितये रितवै पुनि-
को हरिजौं भरिहै॥उथपैतेहिको जेहिरामथपै थपिहैतेहिको हरिजाटरि
है ॥ तुलसी यह जानि हिये अपने सपने नहिं कालहुते डरिहै ॥
कुमया कछु हानि न औरनकी जोपै जानकीनाथ कृपा करिहै ॥
॥ ४७ ॥ व्याल कराल महाविष पावक मत्तगयंदहुके रद तोरे ॥
शासति शंकिचली डरपेहुते किंकरते करनी मुख मोरे ॥ नेकु वि-
षाद नहीं प्रहलादहि कारण केहरि केवल होरे ॥ कौन की त्रास करै
तुलसी जोपै राखिहै रामतौ मारिहै कोरे ॥ ४८ ॥ कृपा जेहिकी क-
छु काज नहीं न अकाज कछू जेहिके मुखमोरे ॥ करै तिनकी प-
रवाहिको जाहि विषानन पूछ फिरै दिन दोरे ॥ तुलसी जेहिके र-
घुवीरसे नाथ समर्थ सुसेवत रीझत थोरे ॥ कहा भव भीर परी
तेहि धौं विचरै धरणी तिनसों तृण तोरे ॥ ४९ ॥ कानन भूधर
वारि बयारि महाविष व्याधि दवा अरि घेरे ॥ संकट कोटि जहाँ
तुलसी सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥ राखिहै राम कृपालु तहाँ
हनुमानसे सेवकहैं जेहिं केरे ॥ नाक रसातल भूतलमें रघुनायक ए-

क सहायक मेरे ॥ ५० ॥ जबै यमराज रजायसुते मोहिं लै चलिहैं भट बाँधि नटैया ॥ तात न मात न स्वामि सखा सुत बंधु बिशाल विपत्ति बटैया ॥ शासति घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँ वोर डटैया ॥ ॥ एक कृपालु तहाँ तुलसी दशरत्थको नंदन बंदिकटैया ॥ ५१ ॥ जहाँ यमयातन घोर नदी भट कोटि जलच्चर दंतटेवैया ॥ जहँ धार भयंकर वार न पार न बोहित नाव न नीक खेवैया ॥ तुलसी जहँ मातु पिता न सखा नहिं कोऊ कहूं अवलंब देवैया ॥ तहाँ विनु कारण राम कृपालु विशाल भुजागहि काढ़िलेवैया ॥ ५२ ॥ जहाँ हित स्वामि न संग सखा वनिता सुत बंधु न बापु न मैया ॥ काय गिरा मनके जनके अपराध सबै छल छाँड़िक्षमैया ॥ तुलसी तेहि काल कृपालु बिना दूजो कौनहै दारुण दुःखदमैया ॥ जहाँ सब संकट दुर्घट शोच तहाँ मेरो साहबराखैरमैया ॥ ५३ ॥ तापसको वरदायक देव सबै पुनि वैर बढ़ावत बाढे॥थोरहिकोपकृपा पुनि थोरेहि बैठिकै जोरत तोरत ठाढ़े ॥ ठोंकि बजाय लखे गजराज कहाँ लौं कहौं केहि सों रद काढ़े ॥ आरत कोहित नाथ अनाथको राम सहाय सही दिन गाढ़े॥५४॥जप योग विराग महा मख साधन दान दया दम कोटि करै ॥ मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेशसे सेवत जन्म अनेक मरै ॥ निगमागम ज्ञान पुराण पढ़ै तपसानलसे युग पुंज जरै ॥ मनसों प्रण रोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै ॥ ॥ ५५ ॥ पातक पीन कुदारिद दीन मलीन धरे कथरी करवाहै ॥ लोक कहै विधिहू न लिख्यो स्वपनेहूं नहीं अपने बरवाहै ॥ रामको किंकरसो तुलसी समुझेही भलो कहिबोनरवाहै॥ऐसे को ऐसो भयो कबहूं न भजे बिन वानर कोचरवाहै५६मातु पिता जगजाय तज्यो विधिहू न लिखी कछुभाल भलाई॥नीच निरादर भाजनकादर कूकुरटूकामिलागिललाई ॥ राम स्वभाव सुन्यो तुलसी प्रभु सों कह्यो वारक पेट खलाई ॥ स्वारथको परमारथ को रघुनाथ सों साहब खोरि न लाई ॥ ५७ ॥ पाप हरै परिताप हरै तन पूजि भो हीतल शीतल ताई ॥ हंस कियो बकते बलि जाऊँ कहाँ लौं कहौं करुणा अधिकाई ॥ का-

ल विलोकि कहै तुलसी मनमें प्रभुकी परतीति अघाई ॥ जन्म ज-
हाँ तहँ रावरे सों निबहै भरि देह सनेह सगाई ॥ ५८ ॥ लोग कहैं
अरु हौंहूं कहौं जन खोटो खरो रघुनायक हीको ॥ रावरी राम बड़ी
लघुता यश मेरोभयो सुखदायक हीको ॥ कै यह हानि सहौं बलि-
जाउँ कि मोहूं करौं निज लायकहीको ॥ आनि हिये हित जानि क-
रो ज्यों हौं ध्यान धरौं धनुशायक हीको ॥ ५९ ॥ आपुहौं आपुको
नीके कै जानत रावरो राम भरायो गढायो॥कीर ज्यों नामरटै तुल-
सी सो कहै जग जानकीनाथ पढ़ायो ॥ सोईहै खेद जो वेद कहै न-
घटै जन जो रघुवीर बढ़ायो ॥ हौं तौं सदा खरको असवार तिहा-
रोई नाम गयंद चढ़ायो ॥ ६० ॥ (घनाक्षरी) ॥ छारते सँवारिकै
पहाड हूते भारी कियो गारो भयो पाँचमें पुनीत पक्ष पाइकै ॥ हौं-
तौ जैसो तब तैसो अब अधमाईकैकै पेट भरों राम रावरोई गुण
गाइकै ॥ आपने निवाजे कीपै कीजै लाज महाराज मेरी ओर हेरि-
कै न बैठिये रिसाइकै ॥ पालिकै कृपालु व्याल बाल को न मारिये
औ काटिये न नाथ विषहूको रूखलाइकै ॥ ६१ ॥ वेद न पुराण गान
जानों न विज्ञान ज्ञान ध्यान धारणा समाधि साधन प्रवीणता ॥
नाहिंनविराग योग याग भाग तुलसीके दया दान दूबरो हौं पापही-
की पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोषको पमोसों कौन कलिहू-
जो सिखिलईमेरिये मलीनता ॥ एकही भरोसो राम रावरो कहाव-
तहौं रावरे दयालु दीनबन्धुमेरी दीनता ॥ ६२ ॥ रावरो कहावों
गुणगावों राम रावरोई रोटी द्वैहौं पावों राम रावरोहिकानिहौं ॥ जा-
नत जहान मन मेरेहू गुमान बड़ो मान्यो मैं न दूसरो न मानत
न मानिहौं ॥ पाँचकी प्रतीति न भरोसो मोहिं आपनोई तुम अप-
नाइहौ तबैही परिजानिहौं ॥ गढि गुढि छोलि छालि कुंद कीसी भा-
ई बातैं जैसी मुख कहौ तैसी जीय जबै आनिहौं ॥ ६३ ॥ वचन वि-
कार करतबउखुआर मन विगत विचार कलि मलको निधानुहै ॥
रामको कहाइ नाम वेचि वेचि खाइ सेवा संगति न जाइ पाछिले
को उपखानुहै ॥ तेहू तुलसीको लोग भलो भलो कहै ताको दूसरो

न हेतु एक नीकेकै निदानुहै ॥ लोकरीति विदित विलोकियत जहाँ तहाँ स्वामीके सनेह श्वानहूको सनमानुहै ॥ ६४ ॥ स्वारथको साजन समाज परमारथको मोसों दगावाज दूसरो न जगजालहै ॥ कैन आयों करौं न करौं गो करतूति भलि लिखी न विरंचिहू भलाई भूलि भालहै ॥ रावरी शपथ राम नामहींकी गतिमेरे इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूं कालहै ॥ तुलसी को भलोपै तुम्हारेही किये कृपालुकीजे न विलंब वलि पानीभरी खालहै ॥ ६५ ॥ रागको न साजन विराग योग याग जिय काया नहिं छाँडि देत ठाटिबो कुठाटको ॥ मनो राजकरत अकाजभयो आजु लगि चाहै चारु चीरपै लहैन टूक टाटको ॥ भयो करतार बडे कूरको कृपालु पायों नाम प्रेम पारसहौं लालची बराटको ॥ तुलसी बनीहै रामरावरे बनाये नातौ धोवी कैसो कूकर न घरको न घाटको ॥ ६६ ॥ ऊंचोमन ऊंचीरुचि भागनीचो निपटही लोकरीति लायक न लँगर लवारुहै ॥ स्वारथ अगम परमारथकी कहाँचली पेटको कठिन जग जीवको जवारुहै ॥ चाकरी न आकरी न खेती न बणिज भीख जानत न कूर कछु किसम कवारुहै ॥ तुलसीकी बाजी राखी रामहींके नाम नत भेद पितरनसों न मूडहू में वारुहै ॥ ६७ ॥ अपत उतार अपकारको अगार जग जाको छाँहछुये सहमत व्याध बाधको ॥ पातक पुहुँमि पालिबेको सहसाननसों कानन कपटको पयोधि अपराधको ॥ तुलसी से वामको भो दाहिनो दयानिधान सुनत सिहात सब सिद्ध साध साधको ॥ रामनाम ललित ललाम कियो लाखनिको बडो कूर कायर कपूत कौड़ी आधको ॥ ६८ ॥ सब अंगहीन सब साधन विहीन मन वचन मलीन हीन कुल करतूतिहौं ॥ बुधि बलहीन भाव भगति विहीन दीन गुण ज्ञानहीन हीन भागहू विभूतिहौं ॥ तुलसी गरीबकी गई बहार रामनाम जाहि जपजीह रामहूको बैठो धूतिहौं ॥ प्रीति रामनामसों प्रतीति रामनामके प्रसाद रामनामके पसारि पाइँसूतिहौं ॥ ६९ ॥ मेरेजान जबतेहौं जीवह्वै जनम्यो जग तबते बेसाह्यो दाम लोभ कोह कामको ॥ मन तिनहींकी सेवा तिनहीं

सों भाव नीको वचन बनाइ कहौं हौं गुलाम रामको॥नाथहू न अप-
नायो लोकझूठीह्वै परीपै प्रभुहूते प्रबल प्रताप प्रभुनामको ॥ अप-
नी भलाई भलो कीजै तौ भलोई भलो तुलसी को खुलैगो खजानौ
खोटे दामको॥७०॥योग न विराग जप याग तप त्याग व्रत तीरथ न
धर्मजानों वेद्‌विधि किमिहै॥तुलसीसों पोच न भयो न ह्वैहै नहीं कहूं
सोचै सब याके अघ कैसे प्रभु क्षमिहै॥मेरेतौ न डरु रघुबीर सुनो सां-
ची कहौं खल अनखैहैं तुम्हैं सज्जन निगमिहै॥भले सुकृतीके संग मोहू
तुला तौलिये तौ नामके प्रसाद भार मेरी ओर नमिहै ॥ ७१ ॥ जाति
के सुजातिके कुजातिके पेटागिवश खाये टूक सबके विदित बात
दुनीसो ॥मानस वचन काय किये पाप सतिभाय रामको कहाय दास
दगाबाज पुनीसो॥रामनामको प्रभाउ पाउ महिमा प्रताप तुलसीको
जगमानियत महामुनीसो॥अतिही अभागे अनुराग तन रामपद मूढ
येतो बड़ो अचरज देखी सुनीसो ॥ ७२ ॥ जायो कुल मंगन वधावनो
बजायो सुनि भयो परिताप पाप जननी जनकको ॥ बारेते ललात
बिललात द्वार द्वार दीन जानतहौं चारिफल चारिहि चनकको ॥
तुलसी सो साहिब समर्थको सुसेवकहि सुनत सिहात शोच विधिहू
गनकको ॥ नाम राम रावरो सयानो किधौं बावरो जो करत गिरीते
गरु तृणते तनकको ॥ ७३ ॥ वेदहू पुराण कही लोकहू विलोकिय-
त राम नामही सों रीझे सकल भलाईहै ॥ काशिहू मरत उपदेशत
महेश सोइ साधन अनेक चितइन चितलाई है॥छाछीको ललात जेते
राम नामके प्रसाद खात खुनसात सोधे दूध की मलाईहै ॥ रामराज
सुनियत राजनीतिकी अवधि नाम राम रावरे तौ चामकी चलाई है
॥७४॥शोच संकटनि शोच संकट परत जर जरत प्रभाव नाम ललि-
त ललामको ॥ बूडियो तरत विगरियो सुधरति बात होत देखि दा-
हिनो स्वभाव विधि वामको ॥ भागत अभाग अनुरागत विराग-
भाग जागत आलसि तुलसीहू से निकामको ॥ धाइ धारि फिरिकै
गोहारि हितकारी होत आई मीचु मिटत जपत राम नामको॥७५॥
आंधरो अधम जड़ जाजरोजराजवन शूकरके शावक ढका ढकेलो

मगमै ॥ गिरो हिये हहरि हराम हो हराम हन्यो हाइ हाइ करत प-
रीगो कालफगमै ॥ तुलसी विशोकहै त्रिलोकपति लोक गयो ना-
मके प्रताप बात विदितहै जगमै ॥ सोई राम नाम जो सनेहसों
जपत जन ताकी महिमा क्यों कहीहै जात अगमै ॥ ७६ ॥
जापकी न तप खप कियो न तमाइ योग याग न विराग त्याग
तीरथ न तनको ॥ भाईको भरोसो न खरोसो बैर बैरीहूसों बल
अपनों नहीं तू जननी न जनको ॥ लोकको न डर परलोकको न
शोच देव सेवा न सहाय गर्व धामको न धनको ॥ रामहीके
नामते जोहोइ सोई नीको लागै ऐसोई स्वभाव कछु तुलसीके मन
को ॥ ७७ ॥ ईश न गणेश न दिनेश न धनेश न सुरेश सुर गौरि
गिरापति नहिं जपने ॥ तुम्हरेई नामको भरोसो भव तरिवेको बैठे
उठे जागत बागत सोये सपने ॥ तुलसी है बावरो सो रावरोई रावरी
सो रावरेउ जानि जियकीजियेजु अपने ॥ जानकी जीवन मेरे रा-
वरे बदन फेरे ठाऊँ न समाऊँ कहूं सकल निरपने ॥ ७८ ॥ जा-
हिर जहानमें जमानो एक भाँति भयो वेंचिये विबुध धेनु रासभी
बेसाहिये ॥ ऐसेउ कराल कलिकालमें कृपालु तेरे नामके प्रताप
न त्रिताप तनदाहिये ॥ तुलसी तिहारो मन वचन करम जेहि नातो
नेमनेहू निज ओर ते निबाहिये ॥ रंकके निवाज रघुराज राजा
राजनिके उमरि दराज महाराज तेरी चाहिये ॥ ७९ ॥ स्वारथ
सयानप प्रपंच परमारथ कहायो रामरावरोहौं जानत जहानहै ॥ ना-
मके प्रताप बाप आजु लौं निबाही नीके आगेको गोसाईं स्वामी
सबल सुजानहै ॥ कलिको कुचालि पेखि दिन दिन दूनी देव पाह
रोई चोर हेरि हिय हहरातुहै ॥ तुलसीकी बलि बार बारही सँभार
कीवी यदपि कृपानिधान सदा सावधानहै ॥ ८० ॥ दिन दिन
दूनी देखि दारिद दुकाल दुख दुरित दुराज सुख सुकृत सकोचुहै ॥
मांगेपै न पावत प्रचारि पातकी प्रचंड कालकी करालता भलेको
होत पोचुहै ॥ आपने तो एक अवलंब अंब डिंभ ज्यों समर्थ सीता
नाथ सब संकट बिमोचुहै ॥ तुलसीकी साहसी सराहिये कृपालु

राम नामके भरोसे परिणामको निशोचुहै ॥ ८१ ॥ मोह मद मा-
त्यो रात्यो कुमति कुनारिसों बिसारि वेद लोक लाज आकरो अ-
चेतुहै ॥ भावै सो करत मुँह आवै सो कहत कछु काहूकी सहत
नाहिं सरकस हेतुहै ॥ तुलसी अधिक अधमाईहू अजामिलते
ताहूमें सहाय कलि कपट निकेतु है ॥ जैवेको अनेक टेक एकटेक
हैवेकी सो पेट प्रिय पूत हित राम नाम लेतुहै ॥ ८२ ॥ जागिये न
सोइये बिगोइये जनमजाय दुख रोग रोइये कलेश कोह कामको ॥
राजा रंक रागी न विरागी भूरि भागी ये अभागी जीव जरत प्रभाव
कलि बामको ॥ तुलसी कबंध कैसो धाइवो विचारु अंध धंध देखियत
जग शोच परिणामको ॥ सोइबो जो रामके सनेहकी समाधि सुख जा-
गिबो जो जीह जपै नीके राम नामको॥८३॥वरण धरम गयो आश्रम
निवास तजो त्रास न चकृतसों परावनो परोसोहै ॥ करम उपासना
कुवासना बिनासो ज्ञान वचन विराग वेष जगत हरोसोहै ॥ गोरख
जगायो योग भगति भगाये लोग निगम नियोग तैसो कलिहि क्षरो
सो है ॥ काय मन वचन स्वभाय तुलसीहै जाहि राम नामको भरो
सो ताहिको भरोसोहै ॥ ८४ ॥ (सवैया) ॥ वेद पुराण विहाइ सुपंथ
कुमारग कोटि कुचाल चलीहै ॥ काल कराल नृपाल कृपालन राज
समाज बड़ोई छली है ॥ वर्ण विभाग न आश्रम धर्म दुनी दुख दोष
दरिद्र दलीहै ॥ स्वारथको परमारथको कलि रामको नाम प्रतापबली
है॥८५॥ न मिटै भव संकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो॥
कलिमें न विराग न ज्ञान कहूं सब लागत फोकट झूठ जटो ॥ नट ज्यों
जनि पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो॥ तुलसी जो सदा
सुख चाहिय तौ रसना निशि वासर राम रटो ॥ ८६ ॥ दम दुर्गम दान
दया मख कर्म सुधर्म अधीन सबै धनको ॥ तप तीरथ साधन योग वि-
राग सो होइ नहीं दृढ़ता तनको ॥ कलिकाल करालमें राम कृपालु यहै
अवलंब बड़ो मनको॥तुलसी सब संयमहीन सबै यक नाम अधार सदा
जनको ॥८७॥ पाइ सुदेह विमोह नदी तरणी न लही करणी न कछू
की ॥ राम कथा वरणी न बनाइ सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रूकी ॥

अब जोर जरा जरि गात गयो मन मानि गलानि कुबानि न मूकी ॥ नीकेकै ठीकदई तुलसी अवलंब बड़ी उर आखर दूकी ॥ ८८ ॥ राम विहाय मरा जपते विगरी सुधरी कवि कोकिलहूकी ॥ नामहिते गज की गणिकाहु अजामिलकी चलिगै चलचूकी ॥ नाम प्रताप बड़े कुसमाज बजाइ रही पति पांडु वधूकी ॥ ताकोभलो अजहूं तुलसी जेहि प्रीति प्रतीतिहै आखर दूकी॥८९॥नाम अजामिलसे खल तारण तारण वारण बार बधूको ॥ नाम हरे प्रहलाद विषाद पिता भय शासति सागर सूको॥नामसों प्रीति प्रतीति विहीन गिल्यो कलिकाल कराल सो चूको ॥ राखिहैं राम सो जासुहिये तुलसी हुलसै बल आखरदूको॥ ९० ॥ (घनाक्षरी)॥ खेती न किसानको भिखारिको न भीख बलि बणिकको वणिज न चाकरको चाकरी ॥ जीविका विहीन लोग सिद्ध मान शोचवश कहे एक एकनसों कहाँ जाइका करी॥ वेदहू पुराण कही लोकहू विलोकियत साँकरे सबैको राम रावरी कृपाकरी ॥ दारिद दशानन दबाई दुनी दीनबंधु दुरित दहत देखि तुलसी हहाकरी॥ ९१॥ कुल करतूति भूति कीरति स्वरूप गुण यौवन ज्वरजरत परे न कल कही ॥ राज काज कुपथ कुसाज भोग रोगहीके वेद बुध विद्या पाई विवश बलकही ॥ गति तुलसीशकी लखत नहीं जो तुरत पविते करत छार पवै सोपलकही ॥ कासों कीजै रोष दोष दीजै काहि पाहि राम कियो कलि काल कुलि खलल खलकही ॥ ९२ ॥ बबुर बहेरेको बनाय बाग लाइयत रूंधवेको सोऊ सुरतरु काटियतहै॥गारी देत नीच हरिचंदहू ———को आपने चना चबाइ हाथ चाटियत है ॥ आपमहा पातकी हँसत हरि हरहूको आपुहै अभागी भूरिभागी डाटियतहै॥ कलिको कलुष मन मलिन किये महंत मशककी पांसुरी पयोधि पाटियतहै ॥ ९३ ॥ सुनिये कराल कलिकाल भूमिपाल तुम जाहि घालो चाहिये कहौ धौं राखै ताहिको ॥ हौंतौ दीन दूबरौ विगारो ढारो रावरो न ताको हहु तुमहुँ सकल जग जाहि को ॥ कामको हलाइ कै देखाइयत आंखि मोहिं येते मान अकस कीबेको आखु

आहिको ॥ साहिब सुजान जिन श्वानहू को पक्ष कियो राम बोला नाम- हौं गुलाम राम साहिको ॥ ९४ ॥ (सवैया) साँची कहौं कलिकाल करालमें ढारो बिगारो तिहारो कहा है ॥ कामको कोहको लोभको मोहको मोहि सों आनि प्रपंच रहाहै ॥ हौजगनायक लायक आजुपै मेरी यो टेंव कुटेव महाहै ॥ जानकीनाथ बिना तुलसी जगदूसरे सों करिहौंनह हाहै ॥ ९५ ॥ भागीरथी जल पान करौं अरु नाम द्वै रामके लेत नितैं- ॥ मोसों न लेनो न देनो कछू कलि भूलि न रावरी ओर चितैहौं ॥ जानिकै जोर करो परिणाम तुम्हैं पछितैहो पै मैंन भितैहौं ॥ ब्राह्म- ण ज्यों उगिल्यो उरगारिहौं त्योंहीं तिहारे हिये न हितैहौं ॥ ९६ ॥ राज मरालके बालक पेलिकै पालत लालत खूसरको ॥ शुचि सुं- दर सालि सकेलि सुवारिकै बीज बटोरत ऊसरको ॥ गुण ज्ञान गुमा- न भभेरि बड़ो कल्पद्रुम काटत मूसरको ॥ कलिकाल विचार अ- चार हरी नहिं सूझै कछू धमधूसरको ॥ ९७ ॥ कीबे कहा पढ़िबेको कहा फल बूझि न वेदको भेद विचारयो ॥ स्वारथको परमारथ को कलि कामद रामके नाम बिसारयो ॥ वाद विवाद विषाद बढ़ाइकै छाती पराई औ आपनि जारयो ॥ चारिहुको छहु को नवको दश आठको पाठ कुकाठ ज्यों भारयो ॥ ९८ ॥ आगम वेद पुराण ब- खानत मारग कोटिक जाहिं न जाने ॥ जे मुनिते पुनि आपुहि आ- पुको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने ॥ को करि शोच मरै तुलसी हम जान- किनाथके हाथ बिकाने ॥ ९९ ॥ धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ ॥ काहू की बेटिसों बेटा न व्याहब काहूकी जाति बिगारन सोऊ ॥ तुलसी सरनाम गुलाम है रामको जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ॥ मांगिकैखैबो मसीदको सोइबो लेबे को एक न देबे- को दोऊ ॥ १०० ॥ मेरे जाति पाँति न चहौं काहूकी जाति पाँति मेरे कोऊ कामको न हौं काहूके कामको ॥ लोक परलोक रघुना- थहीके हाथ सब भारीहै भरोसो तुलसीके एक नामको ॥ अतिही अयाने उपखानो नहिं बूझैं लोग साहबको गोत गात होतहै गुलाम

को ॥ साधुके असाधुके भलोके पोच शोचकहा काकाहूके द्वार परों जोहौं सोहौं रामको ॥ १०१ ॥ कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बडो कोऊ कहै रामको गुलाम खरो खूबहै ॥ साधु जानैं महासाधु खल जानैं महाखल बानी झूंठी सांची कोटि उठत हबूबहै ॥ चहत न काहूसों कहत न काहूकी कछू सबकी सहत उर अंतर न ऊबहै॥ तुलसीको भलो पोच हाथ रघुनाथहीके रामकी भगति भूमि मेरी मति दूबहै ॥ १०२ ॥ जागैं योगी जंगम यती समाज ध्यान धरैं डरैं उर भारी लोभ मोह कोह कामके॥जागैं राजा राज काज सेवक समाज साज शोचैं सुनि समाचार बड़े वैरी वामके॥ जागैं बुध विद्याहित पंडित चकित चित जागैं लोभी लालची धरणि धन धामके॥जागैं भोगी भोगही वियोगी रोगी रोगवश सोवै सुख तुलसी भरोसे एक रामके॥१०३॥(छप्पय)॥ राम मातु पितु बंधु सुजन गुरु पूज्य परमहित ॥ साहेब सखा सहाय नेह नाते पुनीत चित ॥ देश कोश कुल कर्म धर्म धन धाम धरणिगति ॥ जाति पाँति सबभाँति लागि रामहिं हमारिपति ॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ रामते सकलफल ॥ कहतुलसिदास अब जब कबहुँ एक रामते मोरभल ॥ ॥ १०४ ॥ महाराज बलिजाउँ रामसेवक सुखदायक ॥ महाराज बलिजाउँ राम सुन्दर सब लायक ॥ महाराज बलिजाउँ राम सब संकट मोचन ॥ महाराज बलिजाउँ राम राजीव विलोचन ॥ बलिजाउँ राम करुणायतन प्रणतपाल पातकहरण ॥ बलिजाउँ राम कलि भय विकल तुलसि दास राखिय शरण ॥ १०५ ॥ जय ताडका सुबाहु मथन मारीचमानहर ॥ मुनिमख रक्षण दक्ष शिलातारण करुणाकर ॥ नृपगण बलमदसहित शंभुकोदंड विहंडन ॥ जयकुठाधर दर्पदलन दिनकरकुलमंडन ॥ जयजनकनगर आनंदप्रद सुखसागर सुखमाभवन॥ कह तुलसिदास सुरमुकुटमणि जयजयजय जानकिरमण ॥ १०६ ॥ जयजयंत जयकर अनंत सज्जनजनरंजन ॥ जय विराध बध विदुष विबुध मुनिगण भयभंजन ॥ जय निशिचरी विरूप करन रघुवंशविभूषण ॥ सुभट चतुर्दशसहस दलन

त्रिशिरा खर दूषण ॥ जयदण्डकवन पावनकरन तुलसिदास संशय शमन ॥ जगविदित जगतमणि जयति जय जय जय जय जानकिरमन ॥ १०७ ॥ जय मायामृगमथन गीध शवरी उद्धारण ॥ जय कबन्धसूदन विशाल तरुताल विदारण ॥ दवन वालिबलशालि थपनसुग्रीव सन्तहित ॥ कपिकरालभट भालुकटक पावन कृपालुचित ॥ जय सियवियोग दुखहेतुकृत सेतुबन्ध वारिधिदमन ॥ दशशीश विभीषण अभयप्रद जय जय जय जानकिरमन ॥ १०८ ॥ कनक कुधरकेदार बीज सुंदर सुरमणिवर ॥ सींचि काम धुकधेनु सुधामय पयविशुद्धतर ॥ तीरथपति अंकुर स्वरूप यक्षेश रक्षतेहि ॥ मरकत मय शाखा सुपत्र मंजरि अलक्षजेहि ॥ कैवल्य सकल फलकल्पतरु शुभस्वभाव सबसुख बरिस॥कहतुलसिदास रघुवंशमणि तौकिहोहि तवकर सरिस ॥ १०९ ॥ जाइ सो सुभट समर्थ पाइ रण रारि न मंडै ॥ जाइ सो यती कहाय विषय बासना न छंडै ॥ जाइ धनिक बिनदान जाइ निर्धन विनु धर्महिं ॥ जाइ सो पंडित पढिपुराण जो रत सुकर्महिं ॥ सुतजाइ मातु पितु भक्तिबिनु तिय सो जाइ जेहि पति न हित ॥ सब जाइ दास तुलसी कहै जौ न रामपद नेहनित ॥ ११० ॥ को न क्रोध निरदह्यो काम वश केहि नहिं कीन्हों ॥ को न लोभ दृढ़फंद बाँधि त्रासनकरि दीन्हों ॥ कवन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारिनयनशर ॥ लोचनयुत नहिं अंध भयो श्रीपाइ कवन नर ॥ सुर नाग लोक महिमंडलहु कोजु मोह कीन्हों जयन ॥ कह तुलसिदास सो ऊबरै जेहिराख राम राजिवनयन ॥ १११ ॥ (सवैया) भौंह कमान सँधान सुठान जेनारि विलोकनि बाणते बाचे ॥ कोप कृशानु गुमान अवाँघट ज्यों जिनके मन आँचन आँचे ॥ लोभ सबै नटके वशहै कपि ज्यों जगमें बहु नाचन नाचे ॥ नीके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुवीरके सेवकसाँचे॥११२॥(कवित्त)भेष सुबनाय भले बचनकहैं चुवाइ जाइ तौ न जरनि धरणि धन धामकी ॥कोटिक उपाय करि लालि पालियतदेह मुख कहियत गति रामहीके नामकी ॥ प्रगटै उपासना दु-

रावै दुर्वासनाहिं मानस निवास भूरि लोभ मोह कामकी ॥ रा-
ग रोष ईर्षा कपट कुटिलाई भरे तुलसीसे भगत भगति चहै राम
की ॥ ११३ ॥ कालिहही तरुण तन कालिहही धरणि धन कालिह-
ही जितौंगो रण कहत कुचालिहै ॥ कालिहही साधौंगो काज का-
लिहही राजा समाज मसकहै कहै भार मेरे मेरुहालिहै ॥ तुलसी
यही कुभाँति घने घर घालि आये घने घर घालत है घने घ-
र घालिहै ॥ देखत सुनत समुझतहू न सूझै सोई कवहूं कह्यो न
काहूको काल कालिह है ॥ ११४ ॥ भयो न तिकाल तिहूं लोक तु-
लसीसों मन्द निंदै सब साधु सुनि मानौं न सकोचुहौं ॥ जानत न
योग हिय हानि मानै जानकीश काहेको परेखोहौ पापी प्रपंची पो-
चुहौं ॥ पेटभरिवेके काज महाराजको कहायों महाराजहू कह्यो है
प्रणत विमोचुहौं ॥ निज अघ जाल कलिकालकी करालता विलो-
कि होत व्याकुल करत सोई शोचुहौं ॥ ११५ ॥धरमको सेतु जगमं-
गलको हेतु भूमि भारहरिवेको अवतार लियो नरको ॥ नीति औ
प्रतीति प्रीति पालचालि प्रभु मान लोक वेद राखिवेको प्रण रघुव-
रको ॥ वानर विभीषणकी ओरको कनावडो है सो प्रसंग सुने अंगजरे
अनुचरको॥राखेरीति आपनी जो होइ सोई कीजै बलि तुलसी ति-
हारो घर जाय वाही घरको ॥ ११६ ॥ नाम महाराजके निवाही
नीकी कीजै उर सबही सोहात मैं न लोगनि सोहात हौं ॥ कीजै
राम वार यहि मेरी ओर चखकोर ताहि लगि रंक ज्यों सनेहको ल-
लातहौं ॥ तुलसी विलोकि कलिकालकी करालता कृपालुको स्व-
भाव समुझत सकुचातहौं ॥ लोक एक भांतिको त्रिलोक नाथलो-
क वश आपनो न शोच स्वामी शोचही सुखातहौं॥११७॥ तौ लों
लोभ लोलुप ललात लालची लवार वार वार लालच धरणि धन धा-
मको॥ तवलों वियोग रोग शोग भोग यातनाके युग सम लागत जी-
वन याम यामको ॥ तौलों दुख दारिद दहत अति नित तनु तुलसी
है किंकर विमोहकोह कामको॥सब दुख आपने निरापने सकल सु-
खजौलों जनभयो न वजाइ राजारामको ॥ ११८ ॥ तवलौं मलीन

हीनदीन सुख सपने न जहाँ तहाँ दुखीजन भाजन कलेशको ॥ तब लों उवैने पायँ फिरत पेटौखलाय बायेमुख सहत पराभव देश देशको ॥ तबलों दयावनो दुसह दुखदारिदको साथरीको सोइबो ओढ़िबो झूनेखेशको ॥ तुलसी जौलौं न यांच्यो जानकी जीवन-राम राजनकोराजा सोतौ साहब महेशको ॥ ११९ ॥ ईशनकेईश महाराजनके महाराज देवनकेदेव देव प्राणहूंके प्राणहौ ॥ कालहू-के काल महाभूतनके महाभूत कर्महूकेकर्म निदानहूके निदानहौ ॥ निगमको अगम सुगम तुलसीहूसेको येते मान शीलसिंधु करुणा निधानहौ ॥ महिमा अपार काहू बोलको न वारापार बडीसाहिबी में नाथ बड़े सावधानहौ ॥ १२० ॥ (सवैया) ॥ आरतपाल कृपा-लु जोराम जेही सुमिरे तेहिको तहँ ठाढ़े ॥ नामप्रताप महामहिमा अँकरेकिये खोटेउ छोटेउ बाढ़े ॥ सेवक एक ते एक अनेक भये तुलसी तिहुँ तापन डाढ़े ॥ प्रेम बड़ो प्रहलादहिको जिन पाहनते प-रमेश्वरकाढ़े ॥ १२१ ॥ काढ़िकृपान कृपानकहूं पितु कालकराल विलोकि न भागे॥ रामकहाँ सबठाँउहै खंभमें हा सुनिहांक नृकेहरि जागे ॥ वैरि विदारि भये विकराल कहे प्रहलादहिके अनुरागे ॥ प्रीति प्रतीति बढ़ी तुलसी तबते सब पाहन पूजनलागे ॥ १२२ ॥ अंतर्य्यामिहुते बड़बाहर जानिहैं राम जे नाम लिये ते॥धावत धेनु प-न्हाइ लवाइ ज्यों बालक बोलनि कानकियेते ॥ आपनि बूझि कहै तुलसी कहिवेकी न बावरि बातवियेते ॥ पैजपरे प्रहलादहुको प्रगटे प्रभुपाहनते न हियेते ॥१२३ ॥ बालक बोलिदिये बलिकालकोका-यर कोटि कुचाल चलाई ॥ पापिहै बाप बडेपरितापते आपनी ओ-रते खोरि न लाई ॥ भूरिदई विषमूरिभई प्रहलाद सुधाई सुधाकी मलाई ॥ रामकृपा तुलसी जनको जगहोत भलेको भलाई भलाई ॥ १२४ ॥ कंसकरी ब्रजवासिनपै करतूति कुभाँतिं चली न चलाई ॥ पाण्डुकेपूत सपूत कुपूत सुयोधन भो कलि छोटो छलाई ॥ कान्हकृपालु बड़े नतपाल गये खलखेचर खीस खलाई ॥ ठीक प्रतीति कहै तुलसी जगहोइ भलेको भलाई

भलाई ॥ १२५ ॥ अवनीश अनेक भये अवनी जिनके डरते सुरशोच सुखाहीं ॥ मानव दानव देवसतावन रावण घाटिरच्यो जगमाहीं ॥ तेमिलये धरिधूरि सुयोधन जे चलते बहुछत्र कि छाहीं ॥ वेद पुराण कहैं जगजान गुमान गोविंदहि भावत नाहीं ॥ ॥ १२६ ॥ जब नयनन प्रीतिठई ठगश्यामसों स्यानी सखी हठिहौं बरजी ॥ नहिं जानो वियोग सुरोगहै आगे झुकीतबहौं तेहिसों तरजी ॥ अब देहभई पटनेहके घालेसों ब्योतकरे विरहा दरजी ॥ ब्रजराज कुमार विना सुनु भृङ्ग अनंगभयो जियको गरजी॥१२७॥ योगकथा पठई ब्रजको सबसो शठ चेरीकी चालचलाकी ॥ ऊधौजू कौनकहै कुबरी जो बरी नटनागर हेरिहलाकी॥जाहिलगै परि जानै सोई तुलसी सो सुहागिनि नंदललाकी ॥ जानीहै जानपनी हरिकी अबबांधियैगी कछुमोटि कलाकी॥१२८॥(क०)॥पठयोहै छपद छवीले कान्ह केहूकहूं खोजिकै खवासखांसो कूबरीसी बालको ॥ ज्ञानको कढ़ैया बिनुगिराको पढ़ैया बार खालको कढ़ैया सो बढ़ैया उरशालको ॥ प्रीतिकोवधिक रसरीतिको अधिक नीतिनिपुण विवेकहै निदेश देशकालको॥तुलसी कहे न बनै सहेही बनैगी सब योग भयो योगको वियोग नंदलालको ॥१२९॥ हनूमान ह्वै कृपालु लाड़िले लषणलाल भावते भरतकोजै सेवक सहायजू ॥ विनती करत दीन दूबरो दयावनोसो विगरेते आपही सुधारिलीजै भायजू ॥ मेरी साहिबिनी सदा शीशपर विलसत देवि क्यों न दासको देखाइयत पायजू ॥ खीझहूमें राझबेको वाणि रामरीझतहै रीझेह्वैहैं रामकी दुहाई रघुरायजू ॥ १३० ॥ (सवैया) वेष विरागको रागभरो मनमायकहौं सतिभावहौं तोसों ॥ तेरेही नाथको नामलै बेचिहौं पातका पामर प्राणनि पोसों ॥यते बड़े अपराधी अघीकहु तैं कहो अबकी मरा तुमोसों॥ स्वारथको परमारथको परिपूरण भो फिरि घाटि न होसों ॥ १३१ ॥ (घनाक्षरी)जहाँ वालमीकि भये व्याधते मुनींद्र साधु मरा मरा जपे सुनि शिष ऋषि सातकी ॥सीयको निवास लव कुशको जनम थल तुलसी छुवत छाँह ताप गरै गातकी ॥ विटप महीप सुर सरित समीप सोहै सीता वट

पेखत पुनीत होत पातकी ॥ वारि पुर दिग पुर बीच विलसति भूमि अंकित जो जानकी चरण जलजातकी ॥ १३२ ॥ मरकत बरन परन फल मानिकसे लसै जटाजूट जनु रूख वेष हरुहै ॥ सुखमाको ढेरु कैधौं सुकृत सुमेरु कैधौं संपदा सकल मुद मंगलको घरुहै ॥ देत अभिमत जो समेत प्रीति सेइये प्रतीति मानि तुलसी विचारि काको थरुहै ॥ सुरसरि निकट सोहावनी अवनि सोहै रामरमणीको वट कलि कामतरुहै ॥ १३३ ॥ देवधुनी पास मुनिवास श्रीनिवास जहाँ प्राकृतहूँ वट बुट बसत पुरारिहैं ॥ योग जप यागको विरागको पुनीतपीठि रागिनपै सीठि डीठि बाहरी निहारिहैं ॥ आयसु आदेश बाबू भलो भलो भावसिद्धि तुलसी विचारि योगी कहत पुकारिहैं ॥ रामभगतनको तौ कामतरुते अधिक सियवट सेये करतल फल चारिहैं ॥ १३४ ॥ जहाँ वन पावनों सुहावनो विहंग मृग देखि अति लागत अनंद खेट खूंटसो ॥ सीताराम लषण निवास वास मुनिन को सिद्ध साधु साधक सबै विवेक बूटसो ॥ झरना झरत झारि शीतल पुनीत वारि मंदाकिनि मंजुल महेश जटाजूटसो ॥ तुलसी जो रामसों सनेह साँचो चाहिये तौ सेइयै सनेहसों विचित्र चित्रकूट सो ॥ १३५ ॥ मोह वन कलिमल पल पीन जानि जिय साधु गाइ विप्रनके भयको नेवारिहै ॥ दीन्ही है रजाइ राम पाइसो सहाय लाल लषण समर्थ बीर हेरि हेरि मारिहै ॥ मंदाकिनी मंजुल कमान असि बान जहां वारि धार धीर धरि सुकर सुधारिहै ॥ चित्रकूट अचल अहेरी बैठ्यो घात मानों पातकके व्रात घोर सावज सँहारिहै॥ १३६ ॥(सवैया)॥लागिदवारि पहार ढही लहकी कपिलंक यथा खर खोकी ॥ चारुचुवा चहुँओर चली लपटैं झपटैं सो तमीचर तोकी ॥ क्यों कहि जात महा सुखमा उपमा तकि ताकतहैं कवि कोकी ॥ मानोंलसी तुलसी हनुमान हिये जगजीति जरायकी चौकी ॥ ॥१३७॥देवकहैं अपनी अपना अवलोकन तीरथराज चलोरे॥देखि मिटै अपराध अगाध निमज्जत साधु समाज भलोरे ॥ सोह सितासितको मिलिवो तुलसी हुलसे हिय हेरि हलोरे॥ मानों हरे तृण चा-

रु चरैं बगरे सुरधेनुके धौल कलोरे॥ १३८॥ देवनदी कहँ जो जन जान किये मनसा कुल कोटि उधारे॥ देखि चलैं झगरैं सुर नारि सुरेश बनाइ विमान सँवारे ॥ पूजाको साज विरंचिरचै तुलसी जे महातम जानन हारे॥ ओककी नीव परी हरिं लोक विलोकत गंग तरंग तिहारे॥ १३९ ॥ब्रह्म जो व्यापक वेद कहैं गमनाहिं गिरा गुणज्ञान गुनीको॥ जो करता भरता हरता सुर साहिब साहिब दीन दुनीको॥ सोई भयो द्रव रूप सहीज़ुहै नाथ विरंचि महेश मुनीको ॥ मानि प्रतीति सदा तुलसी जल काहे न सेवत देव धुनीको ॥१४०॥ बारि तिहारो निहारि मुरारि भये परसे पद पापलहौंगो॥ ईशह्वै शीश धरों पै डरों प्रभुकी समता बड़ दोष कहौंगो॥ वरु बारहि बार शरीर धरों रघुवीरको ह्वै तव तीर रहौंगो ॥ भागीरथी बिनवौं करजोरि बहोरि न खोरि लगै सो कहौंगो॥१४१॥(कवित्त)॥लालची ललात बिललात द्वार द्वार दीन वदन मलीन मन मिटै न विभूरना॥ ताकत सराधके विवाहके उछाव कछू डोलै लोल बूझत शबद ढोल तूरना ॥ प्यासे न पावहिं बारि भूखे न चनक चारि चाहत अहारतपहार दारि कूरना॥ शोकको अगार दुख भार भरो तौलों जंन जौलौं देवी द्रवै न भवानी अन्नपूरना॥१४२॥(छप्पय)॥ भस्म अंग मर्दन अनंग संतत असंगहर॥ शीश गंग गिरिजा अधंग भूषण भुजंगवर॥ मुण्डमाल विधु बाल भाल डमरू कपालकर॥ विबुध वृंद नवकुमुद चन्द सुखकन्द शूलधर॥ त्रिपुरारि त्रिलोचन दिग्वसन विष भोजन भव भय हरण ॥ कह तुलसिदास सेवत सुलभ शिव शिव शिव शंकर शरण॥ १४३ ॥ गरल अशन दिग्वसन व्यसन भंजन जनरंजन॥ कुंद इंदु कर्पूर गौर सच्चिदानंदघन॥ विकटवेष उरशेष शीशसुर सरित सहजशुचि॥ शिव अकाम अभिराम धाम नितराम नामरुचि॥ कंदर्पदर्प दुर्गमदवन उमा रमण गुणभवनहर॥तुलसीश त्रिलोचन त्रिगुण पर त्रिपुरमथन जय त्रिदशवर॥ १४४॥ अर्ध अंग अंगना नाम योगीश योगपति॥ विषम अशन दिगवसन नाम विश्वेश विश्वगति॥ कर कपाल

शिर माल व्याल विष भूति विभूषण ॥ नाम शुद्ध अविरुद्ध अमर अनवद्य अदूषण ॥ विकराल भूत वैतालप्रिय भीम नाम भवभय द-मन ॥ सब विधि समर्थ महिमा अकथ तुलसिदास संशयशमन ॥ ॥१४५॥ भूतनाथ भवहरण भीम भय भवन भूमिधर ॥ भानुमंत भगवंत भूति भूषण भुजंगवर ॥ भव्य भाव वल्लभ भवेश भवभार विभंजन ॥ भूरि भोग भैरव कुयोग गंजन जनरंजन ॥ भारती वदन विष अशन शिव शशि पतंग पावकनयन ॥ कह तुलसिदास किन भजसि मन भद्रसदन मर्दनमयन ॥१४६॥ (सवैया) ॥ नांगो फिरै कहै मांगनो देखि न खांगो कछू जनि मांगिये थोरो॥ राँक निनाकप रीझि करै तुलसी जग जो जुरे याचक जोरो ॥ नाक सवाँरत आयो-हौं नाकहि नाहिं पिनाकिहि नेकु निहोरो ॥ विरंचि कहै गिरिजा सि-खवो पतिरावरो दानिहै बावरो भोरो॥१४७॥विष पावक व्याल कराल गरे शरणागत तौ तिहुँतापन डाढ़े ॥ भूत वैताल सखा भव नाम दलै पलमें भवके भय गाढ़े ॥तुलसीश दरिद्र शिरोमणिसों सुमिरे दुखदा-रिद होंहिं न ठाढ़े ॥ भौनमें भांग धतूरोई आंगन नांगेके जागे हैं मा-गने बाढ़े ॥ १४८ ॥ शीश जटा वरदा वरदानि चढ़ेउ वरदा घरन्यों वरदाहै ॥ धाम धूतरो विभूतिको कूरो निवास तहाँ सबलै मरदाहै ॥ व्याली कपालीहै ख्याली चहूँदिशि भांगके टाटिनको परदाहै॥रंक शिरोमणि काकिणिभाव विलोकत लोकप को करदाहै ॥ १४९ ॥ दानि जो चारि पदारथको त्रिपुरारि तिहूँपुरमें शिरटीको ॥ भोरो भलो भले भायको भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसीको ॥ ता विन आशको दास भयो कबहूं न मिट्यो लघु लालच जीको ॥ साधो कहा करि साधनते जोपै राधो नहीं पति पारबतीको ॥१५०॥ जात जरे सब लोक विलोकि त्रिलोचनसों विष लोकि लियोहै ॥ पान कियो विष भूषण भो करुणा वरुणालय सांइ हियोहै ॥ मेरोई फोरिवे योग कपार किधौं कछु काहू लखाइ दियोहै ॥ काहे न कान-करो विनती तुलसी कलिकाल विहाल कियोहै ॥ १५१ ॥ (कवित्त) खायो कालकूट भयो अजर अमर तनु भवन मशान गथ गां-

ठरी गरदकी ॥ डमरू कपाल कर भूषण कराल व्याल बावरे बड़े की रीझ बाहन बरदकी ॥ तुलसी विशाल गोरे गात विलसाति भूति मानों हिमगिरि चारु चांदनी शरदकी ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष वसत विलोकनिमें काशी करामाति योगी जागत मरदकी॥१८२॥ पिंगल जटा कलाप माथेपै पुनीत आप पावक नयना प्रताप भ्रूपर बरत हैं ॥लोचन विशाल लाल सोहै लाल चन्द्र भाल कंठ कालकूट व्याल भूषण धरतहैं ॥ देत न अघात रीझि जात पात आकहीके भोलानाथ योगी जब औढर ढरतहैं ॥ सुंदर दिगम्बर विभूति गात भांग खात रूरे शृंगी पूरे काल कंटक हरतहैं ॥ १८३ ॥ देत संपदा समेत श्रीनिकेत याचकनि भवन विभूति भांग वृषभबहनु है ॥ नाम वामदेव दाहिनो सदा असंगरंग अर्द्धंग अंगना अनंगको महनु है ॥ तुलसी महेशको प्रभाव भावही सुगम गिरा अगमनिहूंको जानिबो गहनु है ॥ वेषतौ भिखारिको भयंकर रूप शंकर दयालु दीनबंधु दानि दारिद दहनुहै ॥ १८४ ॥ चाहै न अनंग अरि एकौ अंग मांगनेको देवोई पै जानिये स्वभाव सिद्ध बानिसों ॥ बारिबुंदचारि त्रिपुरारि पर डारियेतौ देत फल चारि लेत सेवा सांची मानिसों ॥ तुलसी भरोसो न भवेश भोलानाथको तौ कोटिक कलेश करो मरो छार छानिसों ॥ दारिद दमन दुख दोष दाह दावानल दुनी न दयालु दूजो दानि शूलपाणिसों ॥ १८५ ॥ काहेको अनेक देव सेवत जागै मशान खोवत अपान शठ होतहठि प्रेतरे ॥ काहेको कोटी उपाइ करत मरत धाय याचत नरेश देश देशके अचेतरे॥ तुलसी प्रतीति बिनु त्यागे तौ प्रयाग तनु धनहींके हेतु दान देत कुरुखेतरे॥पात द्वै धतूरके द्वै भोरेकै भवेश सो सुरेशहीकी संपदा सुभाय सो न लेतरे॥१८६॥स्यन्दन गयंद बाजिराजि भले भले भट धन धाम निकर करनिहू न पूजे कै ॥ वनिता विनीत पूत पावन सोहावन औ विनय विवेक विद्या सुभग शरीर वै ॥ यहां ऐसो सुख परलोक शिवलोक ओक ताको फल तुलसी सो सुनौ सावधान है ॥ जाने बिनु जानेकै रिसाने केलि कबहुँक शिवहि चढ़ा-

ये ह्वै हैं बेलके पतौवाद्दै ॥ १५७ ॥ रतिसी रवनि सिंधु मेखला अवनिपति औनिप अनेक ठाढ़े हाथ जोरि हारिकै ॥ संपदा समाज देखि लाज सुरराजहूके सुख सबविधि विधि दीन्हे हैं सँवारिकै॥ यहां ऐसो सुख सुरलोक सुरनाथ पद ताको फल तुलसी सो कहै गो विचारिकै ॥ आकके पतौवा चारि फूलके धतूरेकेद्दै दीन्हें ह्वैहैं वारक पुरारिपर डारिकै ॥ १५८ ॥ देवसरि सेवौ वामदेव गाउँ रावरेही नाम रामहीके माँगि उदर भरतहौं ॥ दीबे योग तुलसी न लेत काहूको कछुक लिखी न भलाई भाल पोचन करत हौं ॥ येतेहू पर कोऊ जो रावरोहूं जोर करै ताको जोर देवदीन द्वारे गुदरतहौं ॥ पाइकै उराहनो उराहनो न दीजे मोहिं कालि काला काशीनाथ कहे निवरतहौं ॥ १५९ ॥ चेरो राम रायको सुयश सुनि तेरोहर पाइ तर आइरह्यों सुरसरि तीर हौं ॥ वामदेव रामको स्वभाव शील जानियत नाता नेह जानिजिय रघुवीर भीरहौं ॥ अवि भूत वेदन विषम होत भूतनाथ तुलसी विकल पाहि पचत कुपीर हौं ॥ मारियेतो अनायास काशीवास खासफल ज्याइये तौ कृपा करि निरुज शरीरहौं ॥ १६० ॥ जीवेकी न ललसा दयालु महादेव मोहिं मालुमहै तोहिं मरिबेईको रहतुहौं ॥ कामरिपु रामके गुलामनिको कामतरु अवलंब जगदम्ब सहित चहतुहौं ॥ रोग भये भूत सो कुसूत भयो तुलसीको भूतनाथ पाहि पदपंकज गहतु हौं ॥ ज्याइये तौ जानकी जीवन जन जानि जिय मारियेतौ मांगी मीचु सुधिये कहतुहौं ॥ १६१ ॥ भूत भव भवति पिशाच दूत प्रेत प्रिय आपनो समाज शिव आपुनीके जानिये ॥ नाना वेष वाहन विभूषण वसन वास खान पान बलि पूजा विधिको बखानिये ॥ रामके गुलामनिकी रीति प्रीति सूधी सब सबसों सनेह सबहीको सनमानिये ॥ तुलसीकी सुधरे सुधारे भूतनाथहीके मेरे माय बाप गुरु शंकर भवानिये॥ १६२॥ गौरीनाथ भोलानाथ भवत भवानीनाथ विश्वनाथ पुर फिरि आन कलिकालकी ॥ शंकरसे नर गिरिजासी नारि काशीवासी वेद कही सही शशिशेखर

कृपालकी ॥ छमुख गणेशते महेशते पियारे लोग विकल विलोकि-यत नगरी विहालकी ॥ परी सुरबेलि केलि काटत किरात कलि निठुर निहारिये उघारि डीठि भालकी ॥१६३॥ ठाकुर महेश ठकु-राइनि उमासी जहाँ लोक वेदहू विदित महिमा ठहरकी ॥ भट रुद्र गण भूत गणपति सेनापति कलिकाल की कुचाल काहूतौ नहरकी॥ बसी विश्वनाथकी विषाद बड़ो वाराणसी बुझिये न ऐसी गति शंकर शहरकी ॥ कैसे कहे तुलसी वृषासुरके वरदानि बानि जानि सुधा तजि पिय निज हरकी ॥ १६४ ॥ लोक वेदहू विदित वाराणसीकी बड़ाई बासी नर नारि ईश अंबिका स्वरूप हैं ॥ कालनाथ कोतवाल दंडकारि दंडपाणि सभा सदगणपसे अमित अनूपहैं ॥ तहाँऊं कु-चालि कलि कालकी कुरीति कैधौं जानत न मूढ़ इहाँ भूतनाथ भू-पहैं ॥ फलै फूलै फैलै खलसीदैं साधु पलपल वाती दीपमालिका ठठाइयत सूपहैं ॥ १६५ ॥ पंचकोश पुण्यकोष स्वारथ परारथको जानि आप आपने सुपास वास दियोहै ॥ नीच नर नारि न सँभारि सकै आदर लहत फल कादर विचारि जो न कियोहै ॥ बारी वाराणसी बिनु कहे चक्र चक्रपानि मानि हित मानि सो मुरारि मनभियो है ॥ रोषमें भरोसो एक आशुतोष कहि जात विकल विलोकि लोक कालकूट पियोहै ॥ १६६ ॥ रचत विरंचि हरिपालत हरत हर तेरेही प्रसाद जग अगजग पालिके ॥ तोहिं में विकास विश्व तोहिंमें विलास सब तोहिं में समात मातु भूमिधर बालिके ॥ दीजै अवलंब जगदम्ब न विलंबकीजै करुणा तरंगिनी कृपातरंग मालिके ॥ रोष महामारी परितोष महतारी दुनि देखिये दुखारी मुनि मानस मरालिके ॥ १६७ ॥ निपट बसेरे अघ अवगुण घनेरे नर नारिऊ अनेरे जगदंब चेरी चेरेहैं ॥ दारिद दुखारी देखि भूसुर भिखारी भीरु लोभ मोह काम कोह कलिमल घेरेहैं ॥ लोक रीति राखिराम साखि वामदेव जानि जनकी विनति मानि मातु क-हि मेरेहैं॥महामारी महेशानि महा महिमा कि खानि मोद मंगल की राशि काशी वासी तेरेहैं ॥ १६८ ॥ लोगनको पाप कैधौं सिद्ध

सुर शाप कैधों कालके प्रताप काशी तिहूं ताप तईहै ॥ ऊंचेनीचे बीचके धनिक रंक राजा राय हठनि बजायकरि डीठि पीठि दईहै ॥ देवता निहोरे महामारिन्ह सों करजोरे भोलानाथ जानिभोरे आपनीसी ठईहै ॥ करुणानिधान हनुमान वीर बलवान यशराशि जहाँ ॥१६९॥ शंकर शहर सर नर नारि वारिचर विकल सकल महामारीमाया भई है ॥ उछरत उतरात हहरात मरिजात भभरि भगत जलथल मीचु मई है ॥ देवन दयालु महिपालन कृपालु चित वाराणसी बाढ़त अनीति नितनई है ॥ पाहि रघुराज पाहि कपिराज रामदूत रामहूकी बिगरी तुहीं सुधारिलई है ॥ १७० ॥ एकतौ कराल कलिकाल शूल मूलतामें कोढ़मेंकी खाजुसी शनीचरीहै मीनकी ॥ वेद धर्म दूरगये भूप चोर भूपभये साधु सिद्धमान जन बीते पापपीनकी ॥ दूबरेको दूसरो न द्वार रामदयाधाम रावरोई गतिबल विभव विहीनकी ॥ लागैगी पै लाजवा विराजमान विरदहि महाराज आजु जो न देत दादि दीनकी१७१॥ रामनाम मातु पितु स्वामि समरथ हितु आशरामनामको भरोसो रामनामको ॥ प्रेम रामनामहीं सों नेम रामनामहीको जानो न मरमपद दाहिनो न वामको ॥ स्वारथ सकल परमारथको रामनाम रामनामहीन तुलसी न काहूकामको ॥ रामकी शपथ सर्वसमेरे रामनाम कामधेनु कामतरु मोसे क्षीणछामको॥१७२॥ (सवैया) ॥ मारग मारि महीसुर मारि कुमारग कोटिकके धनलीयो ॥ शंकर कोपसो पापको दाम परीक्षित जाहिगो जारिकै हीयो ॥ काशीमें कंटक जेतेभये ते गोपाइ अघाइकै आपनोकीयो॥आजुकि कालिह परौं किन रौं जड़जाहिंगे चाटि देवारिको दीयो ॥ १७३॥ कुंकुम रंग सुअंग जितो मुखचंद्रसों चंदन होडपरीहै ॥ बोलत बोल समृद्धि चुवै अवलोकत शोच विषाद हरीहै ॥गौरीकी गंग विहंगिनि वेष कि मंजुल मूरति मोद भरीहै ॥ पेखि सप्रेम पयान समय सब शोच विमोचन क्षेम करीहै ॥ १७४ ॥ मंगलकी राशि परमारथकी खानि जानि विरंचि बनाई विधि केशव बसाईहै ॥ प्रलयहू काल राखी शूलपा-

णि शूलपर मीचुवशनीच सोऊ चहत खसाईहै ॥ छाँडि क्षितिपाल तो परीक्षित भये कृपालु भलोकियो खलको निकाई सो नसाईहै ॥ पाहि हनुमान करुणानिधान राम पाहि काशि कामधेनु कलिकुहत कसाई है ॥१७५॥ विरची विरंचिकी बसति विश्वनाथकीजो प्राणहूते प्यारी पुरी केशव कृपालकी ॥ ज्योतिरूप लिंगमई अगनित अंगमई मोक्ष वितरनि बिदरनिजगजालकी ॥ देवी देव देवसरि सिद्धि मुनि वरवास लोपाति विलोकत कुलिपि भोंड़े भालकी ॥ हाहा करै तुलसी दयानिधान राम ऐसी काशीकी कदर्थना कराल कलिकालकी ॥ ॥१७६॥ आश्रम वरण कलि विवश बिकलभये निज निज मरयाद मोटरीसि डारदी॥शंकर सरोष महामारिहीते जानियत साहिब सरोष दुनीदीनदीन दारदी ॥ नारि नर आरत पुकारत सुनै न कोउ काहू देवननि मिलि मोटी मूठी मारदी॥तुलसी सभीत पाल सुमिरे कृपालु राम समय सुकरुणा सराहि सनकारदी ॥ १७७॥

इति श्रीतुलसीदासकृत कवित्तावली रामायणे
उत्तरकाण्डःसमाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

इति कवित्तरामायण समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना

बम्बई.

इति

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत

कवित्तरामायण समाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः ।

कलि धर्म्माधर्म निरूपण ।



प्रसिद्ध कविवर श्रीमद्गोस्वामि तुलसी-
दासजी रचित



जिसमें

वर्तमान कलिमल विधान चारो वर्णका आचार अविचार
धर्म अधर्म उदाहरणों युक्त वर्णितहै ।

वही–लोकोपकारार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

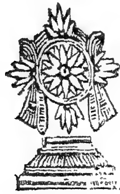
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

श्रावण संवत् १९५१

श्रीरामपंचायतन ॥





श्रीः।

अथ श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास कृत कलिधर्म्माधर्म निरूपण।

०—खातार सुदेश सुग्रामा । बसहि विप्र इक शंकर नामा ॥
धर्म शील शुचि साधु स्वभाऊ ॥ भूलि कुमारग धरै न पाऊ ॥
सुत विनीत पतिपूजक नारी । गृह समाज सब भाँतिसुखारी ॥
रेवा मज्जन सज्जन सेवा । प्रिय गुरु अतिथि प्रीय महिदेवा॥
सुजन शिरोमणि गुणगण गेहू । शिव सेवक हरि चरण सनेहू ॥
सुनै निगम आगम विधिनाना । रामायण इतिहास पुराना ॥
लोक चतुर परलोक सयाना ॥ जीवन धन हरि हर गुणगाना ॥
आश्रम वरण धर्म युग धर्मा ॥ कर्म विकर्म कुकर्म सुकर्मा ॥

दोहा—: ा, कर्म अनेक प्रकार ॥
सब, समुझे बारहिबार ॥

मुनि प्रणीत नृपगण मनुवानी ॥ नरक स्वर्ग अपवर्ग कहानी ॥
सब हित धर्म रहस्य घनेरे ॥ पुण्य प्रबंध विमल बहुतेरे ॥
सुकवि सुभाषित सरल सुहाये ॥ सुने सकल जहँ जहँ जग पाये ॥
कालकाल स्वभाऊ ॥ सुनि मन सोच भूमि सुरराऊ॥
मति अनुहार कहै कवि सोई ॥ कलि कुचालि जग प्रगट न होई॥
कलिमल मलिन सकल नर नारी ॥ वरण धर्म नहिं आश्रम चारी ॥
नीच निरंकुश निठुर नृपाला ॥ सचिव स्वारथी क्रूर कराला ॥
राज सरिस सब प्रजा अभागी ॥ दुसह दुरित दुख दारिद दागी ॥

०—दंभ सहित सब धर्म कलि, छल समेत व्यवहार॥
स्वारथ सहित सनेः सब, रुचि अनुहर आचार॥

विप्र सुमारग पाउँ न देहीं ॥ बेचहिं वेद धर्म दुहि लेहीं ॥
हरि हर परिहरि पूजहिं प्रेता ॥ सभा सुवेष कुचालि निकेता ॥

बोलत कोकिल करतब कागा ❀ वितहित होम नेम जप जागा ॥
कहत करत षट कर्म सुजाना ❀ सेवा करि करि लेहिं कुदाना ॥
पूजन पठन न होत प्रवीना ❀ छल मलानमन धन आधीना ॥
वासर सो नाहिं होहिं सुपापी ❀ पर अपकार परायण पापी ॥
कलि इहिविधि बुध विप्र विगोये ❀ मूढ़विशेष झुठाहिंहिं खोये ॥
परहिं कूपजहँ दिनहि उजारे ❀ किहि अवलंबहि अंध विचारे ॥

दोहा-धर्म सुतीरथ मंत्रसुर, महिमहिदेव विचार ।
तेछलि कलिमल किय प्रथम, योगौ हरिसो धार ॥

क्षत्री छलमय कलि मल मूला ❀ वंचकविप्र वेदप्रतिकूला ॥
अपने धर्म न सुपनेहु बलही ❀ समर सपरस शूर लर मरहीं ॥
नीच विचार नीच व्यवहारू ❀ नीच जीविका नीच अचारू ॥
क्षत्रिजात अभिमान न लेही ❀ कर्मम्लेच्छ जीतियशलेही ॥
शूर सहाय सबल बलजेई ❀ क्षत्रीजाति कहावत तेई ॥
तीसर वर्ण विशेष विवाकी ❀ सेवाकारि जगजीवन जाकी ॥
मूलन सुधनहिं सोइ सुजाती ❀ सकल वरणसंकर उतपाती ॥
आश्रम मध्य मुख्य संन्यासी ❀ कलिकाल निवासी ॥

दोहा-वरण विवेक विरागमय, मानस कलिमल खानि ।
मुंडित मूँड कषाय पट, दंडकमंडलु पानि ॥

सून कलह प्रिय पातक पीना संयम नेम दया दम हीना ॥
ब्रह्म कहावहिं ब्रह्म निरूपन जगवंचक वितहित बहुरूपन ॥
वासर साधहिं योग समाधी भोग परायण शांति उपाधी ॥
बोलनिवेष हंस वक करणी पंडित विहत यती गति वरणी ॥
परममूढ परमारथवादी परमहंसबहुवेष विषादी ॥
पठेविप्रढिगरहि यति होता ❀ परमहंस पथ पाप निसोता ॥
आश्रम नहिं कलि काननबासी ❀ कुटिल कुटीचर कलिमल रासी ॥
वटुव्रत रहित सकल गुणखाली ❀ पढ़ि सुनि कुलगुरु करहिं कुचाली ॥

दो०-निलज निरंकुश निठुर सब, पढ़ै थोर बहु गाल ॥
आश्रम वरण बिगोइ सब, गऊ गाजत कालकाल ॥
गृही गृहाश्रम धर्म विहीना ❋ धरणि धाम धन सोच मलीना ॥
सुरगुरुपितर अतिथि अपवादी ❋ स्वारथरतपरमारथवादी ॥
कपटी कोल कुमारगगामी ❋ कुधन कुधाम कुभामिनि स्वामी ॥
कुमति कुशील कुजीवनि जीवहिं ❋ सुरसरि तीर कूपजल पीवहिं ॥
करहिं अधर्म कर्म मन वानी ❋ चलहिं वामपथ ज्ञान गुमानी ॥
अवगुण अघ न अघाहिं अमापी ❋ चहहिं सुकृत फल पामर पापी ॥
आश्रम वरण सुधर्म मलिनसे ❋ जग सर कलि हिमहुए नलिनसे ॥
थोर बहुत कहुँ कहुँ कोइ कोई ❋ आश्रम दुखित वरण पहिलोई ॥
दो०-सकल धर्म विपरीति कलि, कलापेत कोटि कुपंथ ॥
पुण्य पराइ पहार वन, दुरे पुराण सुग्रंथ ॥
निज निज धर्म विमुख सब लोगा ❋ भोगहीनरतिरोग वियोगा ॥
क्षमा क्षीन पटु पीन प्रकोपू ❋ दिन दिन अशुभ उदय शुभलोपू ॥
सत्य सनेह शील सुखवीते ❋ शम दम दान दया जन रीते ॥
धर्म पंच विधि कलिमलभाँड़े ❋ सबहि बजाइ वेद पथ छाँड़े ॥
कर्म कलाप उपासन ज्ञाना ❋ तप जप तीरथ व्रत बहुदाना ॥
वित हित सकल सदंभ सहेतू ❋ छल मल निधि कलि कपट निकेतू ॥
कलि उतपातहोहिं बहुतेरे ❋ भूमिरु कंप विघात घनेरे ॥
लूक पात दिग दाह विशाला ❋ निशि सुरेश धनु केतु कराला ॥
दो०-काई सुरसरि विमल जल, भूमी मलिन सुथान ॥
फूलहिं फलहिं कुसमय तरु, सूचक अशुभ निदान ॥
तिनकर फल दुख दुरित दुकाला ❋ विविध व्याधिवश प्रजा विहाला ॥
ईति भीति महि कृषी मलीना ❋ फरहिं कुविटप सुतरु फलहीना ॥
घटहिं सुवस्तु सुनाज सुयोगा ❋ बढ़हिं कुवस्तु कुधान कुयोगा ॥
विद्यावनिज कृषी सिवकाई ❋ निपट थोर फल श्रम अधिकाई ॥
अन्नपान फल रस लघु स्वादा ❋ पाठ थोर बड़वाद विवादा ॥

धेनु थोर पय पय घृत थोरा ❀ अबल साधु जन खल बरजोरा ॥
सुमति मंत्र औषधि सबलोपे ❀ कपट मंत्र विष कलिमल रोपे ॥
बरसहिं ऊषर सालि सुखाहीं ❀ उलटी रीति सकल कलिमाहीं ॥

दो०–गोंड गुआर गँवार नृप, यमन महा महिपाल ।
साम न दाम न भेदकलि, केवल दंड कराल ॥

चोर चारु लघु लंपट लोभी ❀ सचिव सभासद मद महि छोभी ॥
राज सरिस सब राज समाजी ❀ प्रजा विकल बड़राज विराजी ॥
देश उजारि नरेश प्रतापा ❀ जरहिं जीव जग तिनहु तापा ॥
भूपति वंचक प्रजा अभागी ❀ प्रजा जरहिं अवनिप अघमागी ॥
प्रजा रोष मृग विहंग समाजा ❀ राजा विषम गद्य वृषवाजा ॥
महिप मुदित सुनि प्रजा अकाजू ❀ प्रजा कहहिं कब जाइहि राजू ॥
राजउ प्रजा परस्पर खोटे ❀ जग जन्महिं करि कलिमलमोटे ॥
सुखहित करहिं कुचाल कलेशू ❀ सहहिं दुसह दुख देश विदेशू ॥

दो०–प्रीति सगाई सकल गुण, वणिज उपाय अनेक ।
कलबल छल कलिमल मलिन, डहकत एकहिएक ॥

वणिज महाजन साहु सुनामा ❀ बोलनि दाहिन करनी वामा ॥
उभय वरद हर करहिं किसाना ❀ जोतहिं गोमग सर शुभथाना ॥
बाँधि वरद मुँहु दाँवरि देहीं ❀ तिहि अघ सब निशिचर हरि लेहीं ॥
धरणि धाम धन धरम विहीना ❀ प्रिय परिजन अपमान मलीना ॥
अशन वसन बिन बंधु बियोगी ❀ कुमति कुसाज कुरूप कुरोगी ॥
कलही कुटिल कठिन कटुवादी ❀ फिरहिं विकल विललात विषादी ॥
नीद भूख आलस वश कीन्हे ❀ सुख सदगुण कलिमल हरिलीन्हे ॥
आरति अछी अनाथ अभागी ❀ सब नर नारि जरहिं जठरागी ॥

दो०–ठाकुर कूर कुसचिव सब, पुरुष नारि आधीन ।
गुरु वितहित सब शिष्य वश, मूरख विवश प्रवीन ॥

धनी कुलीन धनी गुणसागर ❀ धनी साधु सब भाँति उजागर ॥
विबुध वेद गुरु विप्र विरोधी ❀ धनी पूजिहहिं पाप पयोधी ॥

विन धन मुनिगण गरहिं गलानी ❋ सहहिं निरादर घर घर मानी ॥
धनहित कहहिं दिवसकर राती ❋ नीचहि नवहिं बड़े सब भांती ॥
साधु सुजाति सुशील सुजाना ❋ विनधनजन सुख दोष निधाना ॥
कलि केवल धन मूल भलाई ❋ बुधि विवेक बल विनय बड़ाई ॥
प्रीति सहेतु अकारण कोही ❋ सब पितु मातु बंधु गुरु द्रोही ॥
पिसुन पंच पंडित छलवादी ❋ वकत लवार सुकवि अपवादी ॥

दो०—चोर चतुर वटपारभट, प्रभु प्रिय भँडुवाभंड॥
सब भक्षक परमारथी, कलि कुपंथ पाखंड ॥

सब कवि कोविद कलानिकेता ❋ साधक सिद्ध सधर्म सचेता ॥
हम सब भाँति बड़े सब छोटे ❋ हम विन खोर खरे सब खोटे ॥
सकल कहहिं हमसरिस न दूजा ❋ कोकहि मानइ कोकहि पूजा ॥
लोक वेद मरयाद विसारी ❋ सब नर नारि यथा रुचिकारी ॥
वकता सबकोउ सुनै न वानी ❋ सब याचक जगकोउ न दानी ॥
सब सिखवैं जन सुनै न कोऊ ❋ गुरु शिष अंध वधिर समदोऊ॥
सुत पितु मात हाथ विन व्याहे ❋ पुनि रिपु होहिं नारि मुखचाहे ॥
तिय वश तनय वसै ससुरारी ❋ परिहरि लोकलाज कुलगारी ॥

दो०—कामचारिनी करकसा, घरमें नारि प्रधान ॥
तियगुण सीख विहीन सब, दूषण दुरित निधान ॥

विधवा बहु सौभागिनि थोरी ❋ कठिन करम मन बोलत भोरी ॥
विधवा भूषण वसन विशेषी ❋ सौभागिनि सिहाहिं सुनि देषी ॥
हिंदू तुरक उभय कलि जीते ❋ निज निज करम धरम विपरीते ॥
गृही दरिद्र यती धनवाना ❋ नागरकूर गँवार सुजाना ॥
शूद्र पुराणिक विप्र किसाना ❋ युवा जरठ गुण जरठ जुवाना ॥
विप्र वर्म असि शर धनुधारी ❋ पुस्तक पाणि नीच नर नारी ॥
विप्र कछौटी पहिरि अन्हाहीं ❋ शूद्र सदर्भ निमज्जन जाहीं ॥
जाति पाँति बहु भेद अचारा ❋ एक वरण सब किए विचारा ॥

छंद-सबवरण एकविचार कीन्हेकोलकुलिकालिमलमई
बहु वेष बहु मत शैव शाक्तिक सौर सुरसेवा नई ॥

सब जाति पाँति जमाति जोरहिं जटिल भूत भयावने ।
अति रोष दोष निधान मानी खान पान अपावने ॥
सोरठा—कलि पाषंड प्रचार, प्रबल पाप पामर पतित ।
तुलसी उभय अधार, राम नाम सुरसरित जल ॥
सभा सराहिय सोर विशेषी ❀ श्रवण अगम कह आँखिन्हि देषी ॥
करि प्रपंच वंचै परघाती ❀ सोइ बड़धीर तासु बड़छाती ॥
कौड़ी कारण कहहिं कुसाखी ❀ ऋण अवनीक मरण अभिलाषी ॥
शठहि सुमति साहसी जुवारी ❀ जीवन थोर दुरास अपारी ॥
साँचि बात जिहि सभा बखानी ❀ हँसहिं लोग बड़कूवक ज्ञानी ॥
जहाँ होहिं जप यज्ञ पुराना ❀ विरति विवेक विचार न नाना ॥
कथाकीर्त्तन साधु समाजा ❀ तहँ विशेष कालकाल विराजा ॥
दो०—शूर समर रथ तीर्थ पुनि, कपट कुचालि कुसाज ।
मनहुँ भवासो मारि कलि, राजत सहित समाज ॥
बेचहिं गाय बिसाहहिं छेरी ❀ दुहगा सुतिय सुहागिनि चेरी ॥
पर पर पर घर सुरसरि सेतू ❀ दूर करहिं निज कीरति हेतू ॥
हरि पर ग्रंथ करहिं निजग्रंथा ❀ चहहिं सुयश सुखचलहिं कुपंथा ॥
काटहिं सुरतरु बवहिं बबूरे ❀ निज घर बरहिं बतावहिं धूरे ॥
भल क्रमनास कहहिं गति गंगा ❀ तुलसिहि हँसहिं सराहहिं भंगा ॥
गुरु पितु मातु साधु सिखपेली ❀ तीरथ चलहिं समाज सकेली ॥
सुथल सुतीरथ वन सुरथाना ❀ तहाँ तुरक कालि करहिं मशाना ॥
प्रीति प्रतीत न काहुकि काहू ❀ सब ठग चोर महाजन साहू ॥
दोहा—मंदिर मूरति मलिन कलि, थान प्रधान विचारि ।
ते सब सादर पूजिहहिं, फलहि भगति अनुहारि ॥
विष्णु भक्ति महिमा अधिकाई ❀ चहुँ युग बड़ चहुँ वेद बड़ाई ॥
काल कर्म गुण प्रकृति प्रभाऊ ❀ भक्तिसमीप जाहिं नहिं काऊ ॥
कर्मक देव ज्ञान विज्ञाना ❀ जप तप योग उपासन नाना ॥
भक्ति अनुग्रह जापर होई ❀ सो बड़ सबल सपन पर सोई ॥
पक्षपात नहिं कहहुँसुभाऊ ❀ लोक वेद बड़ भक्ति प्रभाऊ ॥

आप विमल कलिकाल मलीना ❀ अस विचारि हरि भक्ति प्रवीना ॥
अलख अनूप निरूपन जाई ❀ भक्ति सुथल लघु रूप समाई ॥
सब भगवंत सुग्रंथ सयानी ❀ जिमि माधुरी रसाल समानी ॥

दो०—तुलसी कानन साधु मन, गुरु पद प्रेम प्रमान।
भरत चरित सुर सरित जल, राम भक्ति विश्राम ॥

अमल भक्ति पथ अमल अनेका, लखहिं विमल जन विमल विवेका ॥
भक्ति विशेष भक्ति विश्रामा ❀ ते थोरे जन तलधि ललामा ॥
भक्ति निवास मनुज मन देषी ❀ कलिहि सकुच संताप विशेषी ॥
भक्ति भानु कलि कलुष उलूका ❀ सोच विलोकत लोचन टूका ॥
भक्ति वास सब शूक समाना ❀ वाम देत कलि कपट सयाना ॥
राम भक्त कहुँ कहुँ द्वै चारी ❀ अनघ अमान अमल अविकारी ॥
ते महि मंडल मंडन रूपा ❀ प्रीति रामपद अचल अनूपा ॥
तिन कहँ कलि कृत युग सम साजू ❀ सुकृत न सुखद यथा युवराजू ॥

दो०—जो हरि भक्त कहाय जग, वित हित करत कुफेर।
दंड कपट पाषंड भट, पठइ किये कलि जेर ॥

ते कलि वश बहु नाचहिं नाचा ❀ भूलि न बोलहिं सपनेहु सांचा ॥
तिलक विचित्र मनोहर माला ❀ वसन विभूषण वचन रसाला ॥
मिलत मधुर गावत मृदुवानी ❀ करम कठिन नहिं जाइ बखानी ॥
गूढ़ गर्व अघ अवगुण गरुये ❀ राम प्रेम परमारथ हरुये ॥
देव पितर महिदेव विरोधी ❀ मोह लोभ वश लंपट क्रोधी ॥
ज्ञान विराग सुनत जरि मरहीं ❀ आश्रम वरण धर्म परिहरहीं ॥
ताज सुकर्म कुलरीति सुहाई ❀ कलपि कुपंथ कुचालि चलाई ॥
खान पानकर थोर विचारू ❀ एकादशा अचारू ॥

दो०—बड़े भाग तजि जगत गुरु, उपदेशहिं सबकाहु।
सरवस गुरुहि समर्पिए, लेहु जन्म कर लाहु ॥

हिंदू तुरक नारि नरहीजा ❀ सबकहँ देहिं समंत्र सबीजा ॥
बेचहिं निज हरिनाम नगीना ❀ लोलुप लोभ विषय बड़ पीना ॥
वेद पुराण भागवत गीता ❀ पढ़ि गुण अर्थ कहहिं विपरीता ॥

सुधन सुनारि धनी वश होई ❀ पुरुषारथ परमारथ सोई ॥
वेष वरण हरि भक्ति विराजा ❀ जिय हुलसत कलि सहित समाजा॥
शंकर नाम सुनत मरि जाई ❀ सेवत यवन सुजन्म सिराई ॥
वितहित अंग बंग मग वासी ❀ वित विन वाइ लगावहिं कासी ॥

दो०-उपदेशक आचरण अस, पढ़हिं सुनहिं सब ग्रंथ।
ये उपदेशे नारि नर, कहे न चले कुपंथ ॥

ये गुरु बड़े नीच उपदेशे ❀ काल पाय पछिताहिं ठगेसे ॥
गुरु नग दिये न अवगथ गाठी ❀ खाई वेचत महडालाठी ॥
विन वित भक्ति न भक्त सुहाहीं ❀ सुख संताप शोच मन माहीं ॥
बहुत उपाय किये धन लागी ❀ दिन दिन दुनी दुरासा दागी ॥
सुमति न सुनिय न स्वामि सखाई ❀ विन वित सब हित मीत बड़ाई ॥
होइ न कृषी वणिज नहिं सेवा ❀ गये कुदेश भये गुरु देवा ॥
अचई उभय लोक गति घोरी ❀ विष्णु सुधर्म तजे तृण तोरी ॥
शिष्य कहाय बड़े गुरु केरे ❀ करि छल दंभ कपट बहु तेरे ॥

दो०-जिहि विधि उरके आप गुरु, सहसभाँति सोइरीति
करि प्रपंच वंचित सबहि, डरत न करत अनीति ॥

सधन सुधर्म नारि नरभोरी ❀ लोक वेद गति सामुझि थोरी ॥
तेकरि शिष्य सकल अपनाये ❀ कल्पि भक्तिमय वचन सुनाये ॥
गुरु विमूढ़ शिष निपट कुमेधा ❀ जुरा समाज वाम भये वेधा ॥
सोविधि कहहिं जोइ मन भावा ❀ सोइ निषेध जो नहिं है आवा ॥
आपुगये गुरुगये विगारे ❀ वातल बावर बीछी मारे ॥
सो वरनिय कुचालि किहि भांती ❀ एक पात जेमहिं सब जाती ॥
कोरि चमार गोड गुरु देवा ❀ तिनकर करहिं महीसुर सेवा ॥
भजहिं जबहिं तजि ज्ञात जनेई ❀ तब सराहि शिषकारिअहिं तेई ॥

दो०-साखी शब्दी दोहरा, कहि कहिनी उपखान,
भक्ति निरूपण भक्त कलि, निंदत वेद पुरान ॥

नाम सुनाम वाम पथयामी ❀ कायर कूर कुतरकी कामी ॥
सकल सुभाय कुनिंदक मंदा ❀ कुल कुठार तिय नर कुल वृंदा॥

कलि पाषंड प्रचंड प्रचारा ❋ संड भंड सब विधि व्यवहारा ॥
भगत कहाय अघाय अभेरे ❋ देखत कोमल करम करेरे ॥
भगत नारि नर विहीना ❋ दंभ निधान प्रपंच प्रवीना ॥
लोकहु वेद भगति पथ मोटा ❋ जिनके लिये लागे सोइ टोटा ॥
काहू जाहीं एकहि आंक भलाई नाहीं ॥
कहत सकल कलिकाल कुचाली ❋ बाढ़ै कथा वृथा शिरखाली ॥

दो०– तिहिते कही सहेतु कलि, कथा समास समेत ।
सुनिसदंभ शठ सकुचिहहिं, ह्वैहैं सुजन सचेत ॥

कलि गुणकहेउँ सुमति अनुहारी ❋ सुनेउ न भय उपजे द्वैचारी ॥
कलियुग मानस पातक नाहीं ❋ पुण्य पुनीत मनोरथ माहीं ॥
वाचिक पाप जाहिं पछिताने ❋ शिव सुमिरत सुरसरित अन्हाने ॥
कायिक कलुष कठिन कलिकाला ❋ सद्यफलहि परिणाम कराला ॥
पुनि संसार दोष कलि थोरे ❋ करतहिं कह कति घोर कठोरे ॥
करै जो संग समान सलोना जान बठत करता सम सोना ॥
हरि शंकरहि भाय भजिभोरे ❋ पावहिं सुजन सफल श्रम
जो छल छाड़ि धर्म रति होई ❋ फलै सुधासन शिरधरि ॥

दो०--अन्नदान सब यज्ञ मय, निरुपाधि धर्म निधान ।
तपतीरथ सुरसरित जल, दरशन मज्जन पान ॥

कलि केवल परमारथ हेतू ❋ राम नाम भवसागर सेतू ॥
साधन नाम सिद्धि फलधामा ❋ जोहि न प्रतीति ताहि विधिवामा ॥
कृतयुग जोरत योग समाधी त्रेता कर्म परम निरुपाधी ॥
द्वापर हरिपद पूज सप्रीती पाव परमगति नर जगजीती ॥
कलि जपि नाम सरुचि विश्वासा सो फल सुलभ सबै अनियासा ॥
ते सुकृती शुचि साधु सुजाना सद्गुण शील रसील निधाना ॥
जेहरि नाम जपत दिन राती ❋ प्रीति प्रतीति सप्रेम सुभाँती ॥
राम महातम चहुँ युग भारी ❋ कलि विशेष दायक फल चारी ॥

दो०–यथा भूमि सबबीजमय, नखत निवास अकास ।
राम नाम सब धर्ममय, जानत तुलसीदास ॥

यह विश्वास जासु जिय नाहीं ❋ जोबन जारिजात जग माहीं ॥

धर्मछीन कलिपातक पीना ❋ यथा ढोल धुनि सुनिय नवीना॥
अमंगल मंगल रासा ❋ यथाकेतु गृह जगत उमासी ॥
नृप अधीन काल गुण दोषा ❋ लोक वेद मति नाहिंन धोषा॥
भये वेणु महिषादिक राजा ❋ पुण्य काल कलिकाल विराजा॥
विक्रमादि अवनिप कलि जाये ❋ कृतत्रेता सब धर्म चलाये ॥
काल कर्म महिपाल अधीना ❋ कहत पुराण विनीत प्रवीना ॥

दोहा- यथा अमल पावक पवन, पाय सुसंग कुसंग ।
कहिय कुवास सुवास तिमि, काल महीश प्रसंग ॥

शंकर काल चालि सुनि देषी ❋ दिन दिन बढ़त विषादविशेषी ॥
विप्र जन्म गृह भाउ बिशाला ❋ करम भूमिनश काल कराला ॥
कृशतन नींद भूख भई थोरी ❋ गृह कृत प्रीति होत मति भोरी॥
जागत वागत सोवत सपने ❋ सुमिरे सबै सोच मन अपने ॥
विनाअमर अमृत तनु साधा ❋ गये जाय परलोक न साधा॥
बिलसत खात बालपन वीता ❋ भये तरुण तरुणी मनजीता ॥
बढ़त वयस अधि बढ़त दुरासा ❋ बुधि विवेक बल तेज हरासा॥

दो०-हम हमार अविचार बड़, भूरिभार धरि शीश ।
शठ हठ परवश भये इमि, कीर कोसकृमि कीश॥

सो०-कह शंकर मत संत, वेद पुराण विचार सब । द्रवैं जानकी कंत, तब छूटै संसार मय ॥ अब विनवों मन तोहिं,होहि राम पदकमल रति । अपथन प्रेरौ मोहिं,सुनहु सिखावन परमहित ॥ करुणासिंधु दयाल, तुमविन अवर न दूसरो।पतितनकी प्रतिपाल,करै कौन तुम विन प्रभो ॥ कह यह तुलसीदास, भववारिध बंधनहन्यो ॥ तब छूटै भवफास,जब रघुवीर कृपा करो ॥ नर तन धरि करिकाज, साज त्यागिमद मानको । गाइ नाथ रघुराज, माँजि माँजि मन्नविमल वर ॥

इति श्रीगुसाँई तुलसीदासकृत कलि धर्म्माधर्म निरूपणं सम्पूर्णम् ॥

दो०-कलिचरित्र तुलसी कथित, द्विज ज्वालाप्रसाद । सोध्यो मति अनुसार सबसुनितेहि मिटै विषाद ॥ सकल वेद अरु शास्त्रको, यही सारको सार । मन वच कर्म सयान ताजि, भजिये रामउदार ॥ *

पुस्तक मिलनेका ठिकाना- खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.

श्रीः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत-

विनयपत्रिका.

जिसमें

नानाप्रकारके मनोहर रागोंमें परम पवित्र रामविनय वर्णित हैं ।

वही

भगवद्भक्तोंके हितार्थ

चतुर्थावृत्ति

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

मुद्रितकर प्रकट किया ।

पौष संवत् १९५७.

श्रीरामपंचायतन।



श्रीः ।

भूमिका.



श्रीगोस्वामि तुलसीदासजी महाराजने आदि कवि श्रीवाल्मीकिजीके आदर्शपर जिसप्रकार रामचरित्र मानसको सप्त सोपानोंमें विभक्त किया है उसीप्रकार विनयपत्रिकाके भी, सात भाग किये हैं जो नीचे प्रकाश किये जाते हैं ।

।

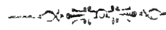
विनयपत्रिकाके विषे, सप्त भूमिका जान ॥
ईश्वर ऊपर द्वै कहीं, जीवन पञ्च प्रमान ॥ १ ॥
प्रथम कही सो दीनता, मान मर्षता आन ॥
भयदर्शन भर्त्सन कहत, आश्वासनहि बखान ॥ २ ॥
मनोराज्य वर्णन करत, बहुरि विचारहि जान ॥
सप्त भूमिका नाम यह, क्रमसों लक्षणमान ॥ ३ ॥

मान विषय. उदाहरण ।

(१) दीनता—किहिविधिदेहुँ नाथहि खोरि ।
(२) मानमर्षण—काहे ते हरि मोहिं बिसारो ।
(३) भयदर्शन—राम कहत चल भाई रे ।
(४) भर्त्सन—ऐसी मूढ़ता या मनकी ।
(५) आश्वासन—ऐसे राम दीन हितकारी ।
(६) मनोराज्य—कबहुँक हौं इहि रहनि रहोंगो ।
(७) विचार—केशवकहि न जाय का कहिये ।

श्रीः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत विनयपत्रिकाका-
अकारादि-सूचीपत्र ।



इति सूचीपत्र समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” छापाखाना, खेतवाड़ी–मुम्बई.

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत–

विनयपत्रिका।

राग बिलावल ।

गाइये गणपति जगवन्दन। शङ्करसुवन भवानीनन्दन ॥ सिद्धि-सदन गजवदन विनायक । कृपासिंधु सुन्दर सबलायक ॥ मोद-कप्रिय मुदमङ्गलदाता । विद्यावारिधि बुद्धिविधाता ॥ माँगत तुल-सिदास करजोरे । बसहिं राम सिय मानस मोरे ॥ १ ॥ दीनदयालु दिवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥ हिमतमकरिकेहरि करमाली । दहनदोष दुख दुरितरुजाली ॥ कोक कोकनद लोक प्रकाशी । तेज प्रताप रूप रसराशी ॥ सारथि पंगु दिव्यरथगामी। हरि शङ्कर विधि मूरति स्वामी ॥ वेद पुराण प्रगट यश जागे । तुलसी रामभक्ति वर माँगे ॥ २ ॥

को याचिये शंभु तजि आन । दीनदयालु भक्त आरतहर सब प्रकार समरथ भगवान ॥ कालकूटज्वर जरत सुरासुर निजपन लागि कियो विषपान । दारुण दनुज जगत दुखदायक मार्‍यो त्रिपुर एकही बान ॥ जो गति अगम महामुनि दुर्लभ कहत सन्त श्रुति सकल पुरान । सो गति मरण काल अपने पुर देत सदाशिव सबहिं समान ॥ सेवत सुलभ उदार कलपतरु पार्वतीपति परमसु-जान । देहु कामरिपु रामचरण रति तुलसिदास कहँ कृपानिधान॥३॥

राग धनाश्री ।

दानी कहुँ शंकर सम नाहीं । दीनदयालु दिबोई भावै याचक सदा सिहाहीं ॥ मारिकै मार थप्यो जगमें जाकी प्रथम रेख भट

माहीं। ता ठाकुरको रीझि निवाजिबो कह्यो क्यों परत मोपाहीं ॥ योग कोटि करि जो गति हरिसों मुनि माँगत सकुचाहीं । वेदवि-दित तेहि वद पुरारि पुर कीट पतङ्ग समाहीं। ईश उदार उमा-पति परिहरि अनत जे याचन जाहीं ॥ तुलसिदास ते मूढ़ माँ-गने कबहुँ न पेट अघाहीं ॥ ४॥

बावरो रावरो नाह भवानी । दानि बड़ो दिन देत दये बिन वेद बड़ाई भानी ॥ निज घरकी वर बात विलोकहु हौ तुम परम-सयानी । शिवकी दई सम्पदा देखत श्रीशारदा सिहानी ॥ जि-नके भाल लिखी लिपि मेरी सुख की नहीं निसानी । तिन्ह रंकनको नाक सँवारत हौं आयो नकवानी ॥ देखि दीनता दुखियनके दुख याचकता अकुलानी । यह अधिकार सौंपिये औरहि भीख भली मैं जानी ॥ प्रेम प्रशंसा विनय व्यंग्ययुत सुनि विधि की वर वानी । तुलसी मुदित महेश मनहिं मन जगतमातु मुसुकानी ॥ ५ ॥

राग रामकली।

याचिये गिरिजापति कासी। जासु भवन अणिमादिक दासी॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे। सकत न देखि दीन करजोरे॥ सुख सम्पति मति सुगति सुहाई। सकल सुलभ शंकर सेवकाई॥ गये शरण आरतके लीन्हे । निरखिनिहाल निमिष महँ कीन्हे ॥ तुलसिदास याचक यश गावै। विमल भक्ति रघुपतिकी पावै॥ ६॥

कस न दीन पर द्रवहु उमावर। दारुणविपति हरण करुणाकर॥ वेद पुराण कहत उदार हर । हमरि बेर कस भयहु कृपणतर ॥ कवन भक्ति कीन्ही गुणनिधि द्विज । है प्रसन्न दीन्हेहु शिव पद निज ॥ जो गति अगम महामुनि गावहिं। तवपुर कीट पतं-गहु पावहिं ॥ देहु कामरिपु रामचरण रति । तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति ॥ ७ ॥ देव बड़े दाता बड़े शंकर बड़े भोरे। किये दूरदुख सबनिके जिन २ करजोरे ॥ सेवा सुमिरण पूजिबो पात अक्षत थोरे। दियो जगत जहँ लगि सबै सुख गज रथ घोरे ॥ गाँउबसत

वामदेव मैं कबहूं न निहोरे । अधिभौतिक बाधा भई ते किंकर तोरे ॥ वेगि बोलि बलि बरजिये करतूति कठोरे। तुलसीदल रूंध्यो चहै शठ साखि सिहोरे ॥ ८ ॥ शिव शिव होइ प्रसन्न करु दाया । करुणामय उदार कीरति बलिजाउँ हरहु निज माया॥जलजनयन गुणअयन मयनरिपु महिमा जान न कोई । बिन तव कृपा रामपदपंकज स्वप्नेहु भक्ति न होई ॥ ऋषी सिद्ध मुनि मनुज दनुज सुर अपर जीव जगमाहीं ॥ तवपद विमुख पार नहिं पावत कलपकोटि चलि जाहीं॥अहिभूषण दूषणरिपु सेवक देव देव त्रिपुरारी । मोह निहार दिवाकर शंकर शरण शोक भयहारी ॥ गिरिजामनमानसमराल काशीश मशान निवासी । तुलसिदास हरिचरण कमल वर देहु भक्ति अविनासी ॥ ९ ॥

राग धनाश्री ।

देव! मोहतमतरणि हर रुद्र शंकर शरण हरण ममशोक लोकाभिरामं । बालशशिभाल सुविशाललोचन कमल कामशतकोटि लावण्य धामं ॥ कंबुकुन्देन्दु कर्पूर विग्रह रुचिर तरुण रविकोटि तनु तेज भ्राजै । भस्म सर्वाङ्ग अर्द्धाङ्ग शैलात्मजा व्यालनृकपाल माला विराजै ॥ मौलिसंकुल जटा मुकुट विद्युच्छटा तटिनिवरवारि हरिचरणपूतं । श्रवण कुंडल गरल कंठ करुणाकन्द सच्चिदानन्द वन्देवधूतं ॥ शूलशायक पिनाकासिकर शत्रुवन दहन इव धूमध्वज वृषभयानं । व्याघ्र गजचर्म्म परिधान विज्ञान घन सिद्ध सुर मुनि मनुजसेव्यमानं ॥ तांडवित नृत्य पर डमरु डिंडिम प्रवर अशुभ इव भाँति कल्याणराशी । महाकल्पान्त ब्रह्माण्डमंडलदवन भवन कैलाश आसीन काशी ॥ तज्ञ सर्वज्ञ यज्ञेश अच्युत विभव विश्व भवदंश संभव पुरारी । ब्रह्मेन्द्र चन्द्रार्क वरुणाग्नि वसु मरुत यम अर्च्य भवदंघ्रि सर्व्वाधिकारी ॥ अकल निरुपाधि निर्गुण निरञ्जन ब्रह्म कर्म्म पथमेकमजानिर्विकारं । अखिल विग्रह उग्ररूप शिव भूपसुर सर्वगत सर्व सर्वोपकारं ॥ ज्ञान वैरा-

ग्य धन धर्म्म कैवल्य सुख सुभग सौभाग्य शिवसानुकूलं । तदपि नर मूढ़ आरूढ़ संसारपथ भ्रमत भवविमुख तवपादमूलं ॥ नष्टमति दुष्ट अतिकष्टरत खेदगत दास तुलसी शम्भु शरण आया । देहि कामारि श्रीरामपदपंकजे भक्तिमनवरतगतभेदमाया ॥ १० ॥ देव ! भीषणाकार भैरव भयङ्कर भूत प्रेत प्रमथाधिपति विपतिहर्त्ता। मोहमूषकमार्जार संसारभयहरण तारणतरण अभयकर्त्ता ॥ अतुल बल विपुल विस्तार विग्रह गौर अमल अतिधवलधरणीधराभं । सिरशि संकुलित कलकूट पिङ्गलजटा पटलशतकोटि विद्युच्छटा-भं ॥ भ्राज विबुधा पगा आप पावन परम मौलिमालेव शोभावि-चित्रं । ललित लल्लाट पर राज रजनी सकल कलाधर नौमि हर धनदमित्रं ॥ इन्दु पावक भानुनयन मर्दनमयन ज्ञानगुणअयन विज्ञानरूपं । रवनागिरिजा भवन भूधराधिप सदा श्रवणकुण्डलवदन छविअनूपं ॥ चर्म असि शूलधर डमरु शर चापकर जान वृषभेश करुणानिधानं । जरत सुर असुर नरलोक शोकाकुलं मृदुलचित अजित कृतगरलपानं ॥ भस्मतनुभूषणं व्याघ्रचर्म्माम्बरं उरग नर-मौलि उरमाल धारी । डाकिनी साकनी खेचरं भूचरं यंत्र मंत्र भंजन प्रबल कलमषारी ॥ काल अतिकाल कलिकाल व्यालादि खग त्रिपुरमर्दन भीम कर्म भारी। सकल लोकान्त कल्पान्त शूला-ग्रकृतादिग्गजा व्यक्त गुणनृत्यकारी ॥ पाप सन्ताप घनघोर संसृति दीन भ्रमत जग योनि नहिं कोपि त्राता।पाहि भैरवरूपरामरूपी रुद्र बंधु गुरु जनक जननी विधाता ॥ यस्य गुणगण गणति विमलमति शारदा निगम नारद प्रमुख ब्रह्मचारी । शेष सर्वेश आसीन आन-न्दवन दासतुलसीप्रणत त्रासहारी ॥ ११ ॥ सदा शंकरं शंप्रदं सज्जनानन्ददं शैल कन्यावरं परमरम्यं । काममदमोचनं तामरस लोचनं वामदेवं भजे भावगम्यं ॥ कम्बुकुन्देन्दु कर्पूरगौरंशिवं सुन्दरं सच्चिदानन्दकंदं । सिद्धसनकादियोगीन्द्रवृन्दारका विष्णुवि-धिवन्द्य चरणारविंदं ॥ ब्रह्मकुलवल्लभं सुलभमतिदुर्लभं विकटवेषं

विभुं वेदपारं। नौमि करुणाकरं गरलगंगाधरं निर्मलं निर्गुणं निर्विकारं॥लोकनाथं शोकशूलनिर्मूलिनं शूलिनं मोहतमभूरिभानुं।कालकालं कलातीत मजरं हरं कठिनकलिकालकाननकृशानुं॥ तज्ञम ज्ञानपाथोधिघटसम्भवं सर्वगं सर्व सौभाग्य मूलं। प्रचुरभवभंजनं प्रणतजनरंजनं दासतुलसी शरणसानुकूलं॥ १२॥

राग वसन्त।

सेवहु शिवचरणसरोजरेनु। कल्याण अखिलप्रद कामधेनु॥ कर्पूरगौर करुणाउदार। संसारसार भुजगेन्द्रहार॥ सुख जन्म भूमि महिमा अपार। निर्गुण गुणनायक निराकार॥ त्रयनयन मयन मर्दन महेश। अहङ्कारनिहार उदित दिनेश॥वरबाल निशाकर मौलिभ्राज। त्रैलोक शोकहर प्रमथराज॥ जिन्ह कहँ विधि सुगति न लिखी भाल। तिन्हकी गति काशीपति कृपाल॥ उपकारी कोऽपर हर समान। सुर असुर जरत कृत गरलपान॥ बहु कल्प उपायन करि अनेक। बिनु शंभु कृपा नहिं भव विवेक॥ विज्ञानभवन गिरिसुतारवन। कह तुलसिदास मम त्रासशमन॥ १३॥ देखो देखो वन बन्यो आज उमाकंत॥ मानहुँ देखन तुमहिं आई ऋतु वसन्त॥ मानो तनुद्युति चम्पक कुसुम माल। वर वसन नील नूतन तमाल॥ कलकदलि जंघ पदकमल लाल। सूचक कटि केसरि गति मराल॥ भूषण प्रसून बहुविविध रंग। नूपुर किंकिणि कलरव विहंग॥ कर नवल बकुल पल्लव रसाल। श्रीफल कुच कंचुकि लताजाल॥ आनन सरोज कच मधुप गुंज। लोचन विशाल नवनील कंज॥ पिक वचन चरित वर बरहि कीर। सित सुमन हास लीलासमीर॥ कह तुलसिदास सुनु शिवसुजान। उर बसि प्रपंच रचै पंचवान॥ करि कृपा हरिय भ्रमफंद काम। जेहि हृदय बसहिं सुखराशिराम॥ १४॥

राग मारू।

दुसहदोषदुखदलनि करु देवि दाया। विश्व मूलासि जनसानुकू-

लासि शर शूलधारिणि महामूल माया॥तडितगर्भाङ्ग सर्वाङ्ग सुन्दर लसत दिव्यपट भव्य भूषण विराजै । बाल मृग मंजु खंजनविलोचनि चन्द्रवदनि लखि कोटि रति मार लाजै ॥ रूप सुख शील सीमासि भीमासि रामासि वामासि वर बुद्धिवानी । छमुखहेरम्ब अम्बासि जगदम्बिके शम्भुजायासि जय जय भवानी ॥ चण्डभुजदण्डखण्डन विहण्डनि मुण्ड महिषमद भंगकर अङ्ग तोरे । शुम्भ निःशुम्भ कुम्भीश रणकेशरिणि क्रोधवारीधि अरिवृन्दवोरे॥ निगम आगम अगम गुर्वि तवगुण कथन उर्विधर कहत जेहि सहसजीहा। देहि मा मोहिं प्रण प्रेम यह नेम निज राम घनश्याम तुलसी पपीहा ॥ १५ ॥

राग रामकली।

जय जय जगजननि देवि सुर नर मुनि असुरसेव भुक्ति मुक्ति दायनि भयहरणि कालिका। मङ्गलमुद सिद्धिसदनि पर्वसर्वरीश वदनि तापतिमिरतरुणतरणि किरणमालिका ॥ वर्मचर्म्मकर कृपाण शूलशैलधनुषवाण धरणि दलनि दानवदल रणकरालिका । पूतना पिशाच प्रेत डाकिनि शाकिनि समेत भूत ग्रह वैताल खग मृगालि जालिका ॥ जय महेशभामिनी अनेकरूपनामिनी समस्तलोकस्वामिनी हिमशैलबालिका । रघुपतिपद परम प्रेम तुलसी चह अचलनेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणतपालिका ॥ १६ ॥जय जय भगीरथनन्दिनी मुनिचयचकोरचंदिनी नर नाग विबुधवन्दिनी जय जह्नुबालिका । विष्णुपदसरोजजासि ईशशीश पर विभासि त्रिपथगासि पुण्यराशि पापछालिका ॥ विमल विपुल वहसिवारि शीतलत्रयतापहारि भवँरवरविभङ्गतर तरङ्गमालिका । पुरजन पूजोपहार शोभित शशि धवलधार भंजनिभवभार भक्तिकल्प थालिका । निजतटवासी विहङ्ग जल थल चर पशु पतङ्ग कीट जटिल तापस सब सरिसपालिका ॥ तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देहि मोहिं महिषकालिका ॥ १७ ॥

जयति जय सुरसरी जगदखिल पाविनी। विष्णुपदकंज मकरन्द इव अम्बुवर वहसि दुःखदहसि अघवृन्दविद्राविनी। मिलित जलपात्र अजयुक्त हरिचरणरज विरजवरवारि त्रिपुरारिशिर धामिनी॥ जह्नुकन्या धन्यपुण्यकृतसगरसुतभूधरद्रोणि विद्दरणि वहुनामिनी। यक्ष गंधर्व मुनि किन्नरीगण दनुज मनुज मज्जहिं सुकृतपुण्ययुतकामिनी। स्वर्गसोपान विज्ञानज्ञानप्रदे मोहमदमदन पाथोजहिमयामिनी। हरितगंभीरवानीर दुहुँ तीर वर मध्यधाराविशद विश्वअभिरामिनी। नीलपर्यंककृतशयनसर्पेशजनु सहसशीशावलीस्रोत सुरस्वामिनी॥ अमितमहिमा अमितरूप भूपावलीमुकुटमणिवंदित्रैलोकपथगामिनी। देहि रघुवीरपदप्रीति निर्भर मातु दास तुलसी त्रासहरणि भवभामिनी॥ १८॥ हरणि पाप त्रिविधताप सुमिरत सुरसरित। विलसति महि कल्पवेलि मुदमनोरथ फरित॥ सोहत शशिधवलधार सुधा सलिलभरित। विमलतर तरङ्ग लसत रघुवरकेसेचरित॥ तो विनुजगदंव गंग कलियुग का करित। घोर भव अपारसिंधु तुलसी किमितरित॥१९॥ ईशशीश वससि त्रिपथ लससि नभपातालधरनि। मुनि सुर नर नाग सिद्ध सुजन मङ्गल करनि॥ देखत दुख दोष दुरित दाह दारिद दरनि। सगरसुवनशासतिशमनिजलनिधिजलभरनि॥ महिमा को अवधिकरसि वहुविधि हरि हरनि। तुलसी करु वाणि विमल विमल वारिवरनि॥ २०॥

राग बिलावल।

यमुना ज्यों ज्यों लागी बाढ़न। त्यों त्यों सुकृत सुभट कलिभूपहिंनिदरि लगे बहु काढ़न॥ ज्यों ज्यों जल मलीन त्यों त्यों यमगण मुख मलीन है आढ़न। तुलसिदास जगदघजवास ज्यों अनघमेघ लागे डाढ़न॥ २१॥

राग भैरव।

सेइय सहित सनेह देहभर कामधेनु कलिकाशी ॥ शमनि शोक सन्ताप पाप रुज सकलसुमंगलराशी। मर्यादा चहुँ ओर चरणवर सेवत सुरपुरवासी॥ तीरथ सब शुभअंग रोम शिवलिंग अमित अविनासी । अन्तरअयन अयनभलपन फल वच्छ वेद विश्वासी॥ गलकंबल वरुणा विभाति जनु लूम लसति सरितासी । दंडपाणि भैरव विषाण मल रुचिखलगण भयदासी॥ लोलदिनेश त्रिलोचन लोचन करणघंट घंटासी । मणिकर्णिका वदन शशिसुन्दर सुरसरिसुखसुखमासी ॥ स्वारथ परमारथ परिपूरण पञ्चकोश महिमासी । विश्वनाथ पालक कृपालुचित लालति नित गिरिजासी॥ सिद्ध शची शारद पूजहिंमन जुगवत रहति रमासी । पञ्चाक्षरी प्राणमुदमाधव गव्य सुपञ्चनदासी॥ ब्रह्म जीव सम राम नाम युग आखर विश्वविकासी । चारितुचरति कर्म कुकर्म करि मरत जीवगण घासी॥ लहत परमपद पय पावन जेहि चहत प्रपञ्चउदासी । कहत पुराण रची केशव निजकर करतूतिकलासी। तुलसी वसि हरपुरी रामजपु जो भयो चहै सुपासी॥ २२॥

राग वसन्त।

सब शोचविमोचन चित्रकूट । कलिहरण करणकल्याण बूट॥ शुचि अवनि सुहावनि आलबाल। कानन विचित्र बारीविशाल॥ मन्दाकिनिमालिनि सदा सींच। वरवारि विषम नर नारि नीच॥ शाखा सुशृंग भूरुहु सुपात। निरझर मधुवर मृदु मलयवात॥ शुक पिक मधुकर मुनि वर विहारु। साधन प्रसून फल चारि चारु॥ भवघोर घामहर सुखदछाँह। थप्यो थिर प्रभाउ जानकीनाह॥ साधकसुपथिक बडे भाग पाइ। पावत अनेक अभिमत अघाइ॥ रस एक रहितगुणकर्मकाल । सिय राम लषण पालक कृपाल॥ तुलसी जो रामपद चहियप्रेम। सेइय गिरिकरु निरुपाधिनेम॥ २३॥

राग कान्हरा ।

अब चित चेति चित्रकूटहि चल । कोपितकलि लोपितमङ्गल मगविलसत बढ़त मोहमायामल ॥ भूमि विलोक रामपद अंकित वन विलोक रघुवरविहारथल । शैलशृंग भवभंगहेतु लख दलन कपटपाखण्डदंभदल ॥ जहँ जनमें जग जनक जगतपति विधि हरि हर परिहरि प्रपंचछल । सकृत प्रवेश करत जेहि आश्रम विगत विषाद भये पारथमल ॥ नकरु विलम्ब विचारु चारुमति वर्ष पाछिले सम अगिलेपल ॥ मंत्र सो जाइ जपहि जो जपत भे अजर अमर हर अँचइ हलाहल ॥ राम नाम जप याग करत नित मज्जन पयपावन पीवत जल । करिहैं राम भावतौ मनको सुख साधन अनयास महाफल ॥ कामदमणि कामता कल्पतरु सो युग युग जागति जगतीतल । तुलसीतोहिं विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकै बल ॥२४ ॥

राग धनाश्री ।

जयतिअंजनीगर्भ अम्भोधिसंभूत विधु विबुध कुलकैरवानन्दकारी॥ केसरी चारु लोचन चकोरक सुखद लोकगणशोकसन्तापहारी ॥ जयति जयबाल कपि केलि कौतुक उदित चंडकरमंडल ग्रासकर्त्ता । राहु रवि शक्रपविगर्वखर्वीकरण शरणभयहरण जय भुवन भर्त्ता ॥ जयति रणधीर रघुवीर हितदेवमणि रुद्रअवतार संसारपाता । विप्रसुरसिद्ध मुनि आशिषाकारवपुष विमल गुण बुद्धि वारिधि विधाता ॥ जयति सुग्रीव शिक्षादि रक्षणनिपुण वालिबलशालिवधमुख्यहेतू । जलधिलंघन सिंहसिंहिकामदमथन रजनिचरनगरउत्पातकेतू ॥ जयति भूनंदिनी शोचमोचन विपिनदलन घननादवश विगतशंका । लूमलीला अनलज्वालमालाकुलित होलिकाकरन लंकेशलंका ॥ जयति सौमित्ररघुनन्दनानन्दकर ऋच्छ कपि कटकसंघटविधाई । वृद्धवारिधसेतु अमरमंगलहेतु भानुकुलकेतुरणविजयदाई ॥ जयतिजय

वज्रतनु दशन नख मुख विकट चण्ड भुजदण्ड तरु शैल पानी ।
समर तैलिकयंत्र तिलतमीचरनिकर पेरि डारे सुभट घालि घानी ॥
जयति दशकंठघटकरणवारिदनाद कदनकारन कालिनेमिहन्ता ।
अघटघटनासुघट सुघटविघटनविकट भूमिपातालजलगगनगन्ता ॥
जयतिविश्वविख्यातबानैतविरुदावली विदुषवर्णत वेद विमलवा-
नी । दासतुलसी त्रासशमन सीतारमणसंगशोभितरामराज
धानी ॥ २५ ॥ जयति मर्कटाधीश मृगराज विक्रम महादेव मुद-
मङ्गलालय कपाली ॥ मोहमदक्रोधकामादिखलसंकुलाघोरसंसार
निशिकिरनमाली ॥ जयति लसदञ्जनादितिजकपिकेसरी कश्य-
पप्रभवजगदार्तिहर्त्ता । लोकलोकपकोककोकनदशोकहर हंस ह-
नुमान कल्याणकर्ता ॥ जयति सुविशालविकरालविग्रह वज्रसार-
सर्वांगभुजदण्डभारी । कुलिशनखदशनवरलसतबालधिबृहदवैरि
शस्त्रास्त्रधरकुधरधारी । जयति जानकीशोचसन्तापमोचन राम
लक्ष्मणानन्दवारिजविकाशी । कीशकौतुककेलिलूमलंकादहन
दलन कानन तरुनतेजराशी ॥ जयति पाथोधिपाषाणजलयानकर
यातुधानप्रचुरहर्षदाता ॥ दुष्टरावणकुम्भकर्णपाकारिजित् मर्मभि-
त्कर्मपरिपाकदाता ॥ जयतिभुवनैकभूषण विभीषणवरद विहितकृ
त रामसंग्रामशाका ॥ पुष्पकारूढसौमित्रसीतासहित भानुकुल-
भानुकीरतिपताका ॥ जयति परयन्त्रमन्त्राभिचारग्रसनकार्मण
कूटकृत्यादिहन्ता । शाकिनीडाकिनीपूतना प्रेत वैताल भूत प्रमथ
यूथजन्ता । जयति वेदान्तविधविविधविद्याविशद वेदवेदांगविद
ब्रह्मवादी । ज्ञान वैराग्यविज्ञानभाजनविभवविमलगुणगणतशुक
नारदादी ॥ जयति कालगुणकर्म्ममायामथननिश्चल ज्ञानव्रत
सत्यरतधर्म्मचारी । सिद्धसुरवृन्दयोगीन्द्रसेवितसदा दासतुलसी
प्रणतभयतमारी ॥ २६ ॥ जयति मंगलागार संसारभारापहर
वानराकारविग्रह पुरारी । रामरोषानल ज्वालमालामिषध्वान्तच-
रशलभसंहारकारी ॥ जयति मरुदञ्जनामोदमन्दिर नतग्रीवसुग्रीव
दुःखैकबन्धो । यातुधानोद्धतक्रुद्धकालाग्निहर सिद्धसुरसज्जनान-

न्दसिन्धो ॥ जयति रुद्राग्रणी विश्वविद्याग्रणी विश्वविख्यातभट चक्रवर्त्ती। सामगाताग्रणी कामजेताग्रणी रामहितरामभक्तानुवर्त्ती ॥ जयति संग्रामजयरामसन्देशहर कौशलाकुशलकल्याणभाषी।राम विरहार्कसन्तप्तभरतादिनरनारिशीतलकरणकल्पशाषी ॥ जयति सिंहासनासीनसीतारमण निरखि निर्भरहरषनृत्यकारी । रामसं-भ्राजशोभासहित सर्वदा तुलसिमानसरामपुरविहारी ॥ २७॥

जयति वातसञ्जात विख्यात विक्रम बृहद्बाहु बलविपुलवालधिवि-शाला। जातरूपा चलाकारविग्रहलसतलोमविद्युल्लताज्वालमाला ॥ जयति बालार्कवरवदनपिंगलनयन कपिश कर्कशजटाजूटधारी। विकटभ्रुकुटीवज्रदशननखवैरिमदमत्तकुंजरपुंजकुंजरारी ॥ जयति भीमार्जुनव्यालसूदनगर्वहर धनञ्जयरथत्राणकेतू । भीषमद्रोणकर-णादिपालितकालदृकसुयोधनचमूनिधनहेतू ॥ जयति गतराजदा-तार हरतार संसारसंकट दनुजदर्पहारी । ईति अतिभीति ग्रह प्रेतचौरानलव्याधिबाधाशमन घोरमारी ॥ जयति निगमागम व्याकरणकर्णलिपि काव्य कौतुककलाकोटिसिन्धो । सामगायक भक्तकामदायक वामदेव श्रीरामप्रिय प्रेमबन्धो। जयति घर्मांशु सन्दग्धसम्पाति नवपक्षलोचनदिव्यदेहदाता । कालकलिपापस-न्ताप संकुलसदा प्रणततुलसीदासतातमाता ॥ २८ ॥ जयति निर्भरानन्दसन्दोहकपिकेशरी केशरीसुअन भुवनैकभर्त्ता । दिव्य भूम्यञ्जनामंजुलाकरमणे भक्तसन्तापचिन्तापहर्ता ॥ जयतिधर्मा-र्थकामापवर्गदविभो ब्रह्मलोकादिवैभवविरागी । वचनमानसकर्मस-त्यधर्मव्रती जानकीनाथचरणानुरागी ॥ जयति विहगेशबलबुद्धि वेगातिमदमथनमन्मथमथन ऊर्ध्वरेता । महानाटकनिपुणकोटि-कविकुलतिलक गानगुणगर्वगन्धर्वजेता ॥ जयतिमन्दोदरीकेश-कर्षणविद्यमान दशकण्ठभटमुकुटमानी। भूमिजादुःखसंजातरोषां तकृज्जातनाजन्तुकृतयातुधानी । जयति रामायणश्रवणसंजातरो-माञ्चलोचनसजलशिथिलवाणी । रामपदपद्ममकरन्दमधुकरपाहि दासतुलसीशरणशूलपाणी ॥ २९ ॥

रागसारंग ।

जाके गति है हनुमान की । ताको पैज पूजि आई यह रेखा कुलिश पषानकी ॥ अघटितघटन ऐसी विरुदावली नहिं आन की । सुमिरत संकटशोचविमोचन मूरतिमोदनिधानकी ॥ तापर सानुकूल गिरिजा हर लषण राम अरु जानकी ॥ तुलसी कपिकी कृपाविलोकनि खानि सकल कल्यान की ॥ ३० ॥

रागगौरी ।

ताकिहै तमकिताकी ओर को । जाको है सब भाँति भरोसो कवि केशरीकिशोर को ॥ जनरञ्जन अरिगणगञ्जन मुखभञ्जन खलबल जोरको । वेदपुराणप्रगटपुरुषारथ सकलसुभटशिरमोरको ॥ उथपे थपन थप्योउथपनपनविबुधवृन्द वन्दि छोरको।जलधिलंघि दहिलंक प्रबलबल दलन निशाचर घोर को ॥ जाको बालविनोद समुझि जिय डरत दिवाकर भोर को । जाकी चिबुकचोट चूरण किय रदमद कुलिशकठोरको ॥ लोकपाल अनुकूल विलोकिबो चह- त विलोचन कोरको । सदा अभय जय मुदमंगलमय जो सेव- क रणरोर को ॥ भक्तकामतरु नाम राम परिपूरण चन्द चको- रको ॥ तुलसी फल चारों करतल यश गावतगईबहोर को ॥३१॥

रागबिलावल ।

ऐसी तोहिं न बूझिये हनुमान हठीले । साहब कहूं न राम से तोसे न वसीले ॥ तेरे देखत सिंहके शिशु मेढक लीले ॥ जा- नत हों कलि तेरेऊ मन गुणगण कीले । हांक सुनत दशकन्ध के भये बन्धन ढीले ॥ सो बल गयो किधौं भये अब गर्वगहीले । सेवकको परदा फटै तुम समरथसीले ॥ अधिक आपुते आपुनो सुनि मान सहीले । शासति तुलसीदास की सुनि सुयश तुहीले । तिहूँकाल तिनको भलो जे रामरँगीले॥ ३२ ॥ समरथ सुवन स- मीरके रघुवीरपियारे । मोपर कीबे तोहि जो करि लेहि भिया रे । तेरी महिमा ते चलैं चिञ्चिनीचियाँरे ॥ अँधियारोमेरी बारक्यों

त्रिभुवनउजियारे ॥ केहि करणी जन जानिकै सन्मान कियारे ॥ केहि अघ अवगुण आपने करि डारि दियारे । खाये खोंची माँग मैं तेरो नाम लियारे ॥ तेरे बल बलि आज लौं जगजागि जियारे ॥ जो तोसों हो तौ फिरौ मेरो हेतु हियारे । तौ क्यों वदन देखावतो कहि वचन इयारे ॥ तोसों ज्ञाननिधानको सर्वज्ञवियारे । हौंसमु-झत सांई द्रोहकी गति छार छियारे ॥ तेरे स्वामी राम से स्वामिनी सियारे । तहँ तुलसीके कौनको काको तकियारे ॥ ३३ ॥ अति आरत अतिस्वारथी अतिदीन दुखारी । इनको विलग न मानिये बोलहिं न विचारी ॥ लोकरीति देखी सुनी व्याकुल नर नारी । अति वरषै अनवरषेहू देहिं दैवहिं गारी ॥ नाकहि आये नाथ सों शासति भये भारी । कहि आयो कीवी क्षमा निज ओर निहारी ॥ समय साँकरे सुमिरिये समरथ हितकारी । सो सब विधि ऊपरकरै अपराध विसारी ॥ बिगरी सेवककी सदा साहबहिं सुधारी । तु-लसी पर तेरी कृपा निरुपाधिनिरारी ॥ ३४ ॥ कटु कहिये गाढे परे सुन समुझि सुसाईं । करहिं अनभले को भलो आपनी भलाई ॥ समरथ शुभ जो पाइये वीर पीर पराई । ताहितके सब ज्यों नदी वारिधि न बुलाई ॥ अपने २ को भलो चहैं लोग लुगाई । भावे जो जेहि तेहि भज शुभ अशुभ सगाई ॥ बाँहबोल दै थापिये जो निज बरिआई । बिन सेवा सों पालिये सेवककी नाई ॥ चूक चपलता मेरियै तू बड़ो बड़ाई । होत आदरे ढीठ हौं अति नीच निचाई ॥ बन्दि छोर विरुदावली निगमागम गाई । नीको तुलसीदासको तेरिही निकाई ॥ ३५ ॥

राग गौरी ।

मङ्गलमूरति मारुतनन्दन । सकल अमङ्गल मूलनिकन्दन ॥ पवनतनय सन्तनहितकारी । हृदय विराजत अवधविहारी । मातु पिता गुरु गणपति शारद । शिवासमेत शम्भु शुक नारद ॥ चरण वन्दि विनवौं सब काहू । देहु रामपद नेह निबाहू ॥ वन्दौं राम लषण वैदेही । जे तुलसीके परमसनेही ॥ ३६ ॥

दण्डक ।

लाल लाड़िके लषण हित हौ जनके । सुमिरे संकटहारी सकलसुमङ्गलकारी पालक कृपालु अपने पनके ॥ धरणीधरनहार भञ्जन भुवनभार अवतार साहसी सहसफनके । सत्यसन्ध सत्यव्रत परमधर्मरत निर्मलकरम वचन मनके ॥ रूपके निधान धनुबान पानि तूणकटि महावीर विदित जितैया बड़े रनके ॥ सेवकसुखदायक सबल सबलायक गायक जानकीनाथगुणगन के ॥ भावते भरतके सुमित्रा सीताके दुलारे चातक चतुर राम श्यामघनके । वल्लभ उर्मिलाके सुलभसनेहवश धनी धन तुलसीसे निरधनके ३७॥

राग धनाश्री ।

जयति लक्ष्मणानन्त भगवन्त भूधर भुजगराज भुवनेश भूभारहारी । प्रबलपावक महाज्वालमालावमन शमनसन्ताप लीलावतारी ॥ जयति दाशरथि समरसमरथ सुमित्रासुवन शत्रुसूदनरामभरतबन्धो । चारु चम्पकवरन वसनभूषन धरन दिव्यतरभव्य लावण्यसिन्धो ॥ जयति गाधेयगौतमजनकसुखजनक विश्वकण्टककुटिल कोटिहन्ता।वचन चयचातुरीपरशुधरगर्व हर सर्वदा रामभद्रानुगन्ता ॥ जयति सीतेशसेवासरस विषयरसनिरस निरुपाधिधुरधर्मधारी । विपुलबलमूल शार्दूल विक्रम जलदनाद मर्दन महावीर भारी॥ जयति संग्रामसागरभयङ्करतरण रामहितकरणवर बाहुसेतू । उर्मिलारमन कल्यान मङ्गलभवन दासतुलसी दोषदवन हेतू ॥ ३८ ॥ जयति भूमिजारमनपदकंजमकरन्दरसरसिक मधुकर भरत भूरिभागी।भुवनभूषण भानुवंशभूषण भूमिपालमणि रामचन्द्रानुरागी ॥ जयति विबुधेशधनदादिदुर्लभमहाराजसंभ्राज सुखप्रद विरागी । खड्गधाराव्रतीप्रथमरेखाप्रगट शुद्धमतियुवतिपतिप्रेमपागी । जयति निरुपाधिभक्तिभावयन्त्रितहृदय बंधुहिताचित्रकूटादिचारी । पादुकानृपसचिवपुहुमि पालक परमधर्म धुरधीरवर वीरभारी । जयति संजीविनीसमय संकट हनूमान धनुबाणम-

हिमावखानी। बाहुबलविपुलपरमितपराक्रम अतुल गूढ़गति जानकी जानजानी ॥ जयति रणअजिरगन्धर्वगण गर्वहर फिरकिये राम गुणगाथगाता। माण्डवी चित्तचातकनवांबुदवरण शरण तुलसीदास अभयदाता ॥ ३९ ॥ जयति जय शत्रु करिकेशरी शत्रुहन शत्रुतम तुहिनहर किरणकेतू । देव महिदेव महिधेनु सेवक सुजन सिद्ध मुनि सकलकल्याणहेतू ॥ जयति सर्वांग सुन्दर सुमित्रासुवन भुवनविख्यात भरतानुगामी। वर्मचर्मासिधनु बाणतूणीरधर शत्रुसंकटशमन यत्प्रणामी ॥ जयति लवणांबुनिधिकुम्भसम्भवमहादनुजदुर्जनदवनदुरितहारी । लक्ष्मणानुज भरत रामसीताचरणरेणुभूषितभालतिलकधारी ॥ जयति श्रुतिकीर्तिवल्लभ सुदुर्लभ सुलभ नमतनर्मद भक्तभक्तिदाता । दासतुलसी चरणशरणसीदत विभो पाहि दीनार्त्तसन्तापहाता ॥ ४० ॥ जयति श्रीजानकी भानुकुलभानुकी प्राणप्रियवल्लभातरणिभूपे । राम आनन्दचैतन्यघन विग्रहाशक्तिआह्लादनी साररूपे ॥ जयति चितचरणचिन्तनि जेहि धरत हृदि काम भय कोह मद मोह माया । रुद्रविधिविष्णुसुर सिद्धवन्दितपदे जयति सर्वेश्वरी रामजाया॥कर्म जप योग विज्ञान वैराग्य लहि मोक्षहित योगि जे प्रभुमनावैं । जयति वैदेहि सब शक्ति शिरभूषणी ते न तव दृष्टि बिन कबहुँ पावैं ॥ जयति कोटि ब्रह्माण्ड जगदीशको ईश जिह निगम मन बुद्धिते अगम गावैं । विदित यह गाथ अहदान कुलमाथ सो नाथ तव दान ते हाथ आवैं ॥ दिव्य शतवर्ष जप ध्यान जब शिव धर्यो राम गुरुरूप मिल पथ बतायो । चितै हित लीन लखि कृपा कीन्हीं तबै देव दुर्लभ देव दरश पायो॥जयति श्रीस्वामिनी सेय शुभनामिनीदामिनी कोटि निज देह दरशै। इन्दिराआदि दै मत्त गजगामिनी देव भामिनि सबै पाँव परशै ॥ दुखित लखि भक्तिबिन दरश निज रूप तव यजन जप तन्त्रते सुलभ नाहीं। कृपा परिपूर्ण नवकंजदललोचना प्रगट भइ जनकनृप अजिरमाहीं॥ रचित तव विपिन प्रियप्रेमप्रगटनकरन लंकपतिव्याज कछु खेल ठान्यो । गोपिका

कृष्ण नवतुल्य बहु यत्न करि तोहिं मिलि ईश आनन्द मान्यो ॥ हीन तव सुमुखि कै सङ्गरहि रंग सो विमुख सो देव नहिं नाह नेरो। अधमउद्धरण यह जान गहि शरण तव दासतुलसी भयो आय चेरो ॥ ४१ ॥

राग केदारा ।

कबहुँक अंब अवसर पाइ । मेरिओ सुधि द्यायबी कछु करुण कथा चलाइ ॥ दीन सब अँगहीन छीन मलीन अघी अघाइ । नाम लै भरै उदर एक प्रभु दासी दास कहाइ ॥ बूझि हैं सो है कौन कहिवो नाम दशा जनाइ । सुनत रामकृपालुके मेरी बिगरिओ बनिजाइ ॥ जानकी जगजननि जनकी किये वचन सहाइ । तरै तुलसी दास भव तव नाथ गुणगण गाइ ॥ ४२ ॥ कबहुँ समय सुधि द्याइबो मेरी मातु जानकी । जन कहाइ नाम लेत हौं किये पन चातक ज्यों प्यास प्रेम पानकी ॥ सरलप्रकृति आपु जानिकै करुणानिधान की । निजगुण अरिकृत अनहितो दास दोष सुरति चित रहत न दिये दान की ॥ बानि विसारन शील है मानद अमान की । तुलसीदास न विसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहुँ गति न आनकी ॥ ४३ ॥ जयति सच्चितव्यापकानन्द यतब्रह्म विग्रह व्यक्तलीलावतारी । विकलब्रह्मादिसुरसिद्धसंकोचवश विमलगुण गेहनरदेहधारी॥ जयति कौशलाधीशकल्याणकोशलसुताकुशलकैवल्य फलचारु चारी । वेदवोधितकर्मधर्मधरणी धेनुविप्रसेवक साधुमोदकारी ॥ जयति ऋषिमखपाल शमनसज्जनशाल शापवशमुनिवधूपापहारी । भंजि भवचाप दलिदापभूपावली सहितभृगुनाथनतमाथभारी ॥ जयति धार्म्मिकधुरधीररघुवीर गुरु मातु पितु वंधुवचनानुसारी । चित्रकूटाद्रि विन्ध्याद्रिदण्डकविपिनधन्यकृत पुण्यकाननविहारी ॥ जयति पाकारिसुतकाककरतूतिफलदानिखनिगर्त्तगोपितविराधा । दिव्यदेवीवेषदेखि लखि निशिचरी जनु विडंवितकरी विश्ववाधा ॥ जयति खरत्रिशिरदूषणचतुर्दशसहससुभटमारीचसंहारकर्त्ता । गृध्रशवरीभक्तिविवश करुणासिंधु चरित-

निरुपाधित्रिविधार्तिहर्त्ता ॥ जयति मदअन्धकुकबन्धवधिवालिब-लशालिवधकरण सुग्रीव राजा । सुभटमर्कटभालुकटकसंघटसजत नमतपदरावणानुज निवाजा ॥ जयति पाथोधिकृत सेतु कौतुक-हेतु कालमन अगम लई ललकिलंका । सकुल सानुज सदल दलितदशकण्ठरण लोकलोकप किये रहितशंका ॥ जयति सौमित्रि सीतासचिवसहित चले पुष्पकारूढ़ निज राजधानी । दासतुलसी मुदित अवधवासी सकल रामभे भूप वैदेहि रानी ॥ ४४ ॥ जयति राजराजेंद्रराजीवलोचन रामनाम कलिकामतरु श्यामशाली । अनयअंभोधिकुम्भजनिशाचरनिकर तिमिरघनघोरखरकिरणमा-ली ॥ जयति मुनिदेवनरदेवदशरत्थके देवमुनिवंद्यकिये अवध-बासी । लोकनायककोकशोकसंकटशमन भानुकुलकमलकानन-विकासी ॥ जयति शृङ्गारसरतामरसदामद्युतिदेहगुणगेह विश्वो-पकारी । सकलसौभाग्यसौन्दर्य सुखमारूप मनोभवकोटिगर्वा पहारी । जयति सुभग शारंग सुनिखङ्गसायक शक्तिचारुचर्मासि वरवर्मधारी । धर्मधुरधीर रघुवीरभुजबल अतुल हेलयादलितभूभा-रभारी ॥ जयति कलधौतमणिमुकुटकुण्डलतिलकझलकभलिभा-लविधुवदनशोभा । दिव्यभूषणवसन पीत उपवीत किय ध्यान कल्याणभाजननकोभा ॥ जयति भरत सौमित्रि शत्रुघ्नसेवितसुमुख सचिव सेवकसुखद सर्वदाता । अधमआरतदीनपतितपातकपीन सकृतनतमात्र कहैं पाहिपाता ॥ जयतिजय भुवनदशचारियश जगमगत पुण्यमय धन्य जय राम राजा । चरित सुरसरित कवि मुख्य गिरि निःसरित पिवतमज्जत मुदित सतसमाजा ॥ जयति वर्णाश्रमाचारि वरनारिनर सत्यशमदमदयादानशीला । विगतदुः खदोष संतोष सुखसर्वदा सुनत गावत रामराजलीला । जयति वैरा-ग्यविज्ञानवारांनिधे नमतनमंद पापतापहर्त्ता । दासतुलसीचरण-शरण संशयहरण देहि अवलम्ब वैदेहिभर्त्ता ॥ ४५ ॥

राग गौरी ।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरणभवभयदारुणं । नवकंजलो-

चन कंजमुख करकंज पदकंजारुणं ॥ कन्दर्पअगणित अमितछवि नवनीलनीरजसुन्दरं । पटपीतमानहुँ तड़ितरुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं ॥ भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकंदनं । रघुनन्द आनँदकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनं ॥ शिरमुकुटकुण्डल तिलकचारु उदार अंगविभूषणं । आजानुभुज शरचापधर संग्राम जितखरदूषणं ॥ इति वदत तुलसीदास शंकरशेषमुनिमनरञ्जनं ॥ मम हृदयकंज निवास करु कामादिखलदल गञ्जनं ॥ ४६ ॥

राग रामकली ।

देव! सदा रामजपुरामजपुरामजपुरामजपु रामजपु मूढ़ मनबारबारं । सकलसौभाग्य सुखखानि जियजानिशठ मानि विश्वासवदवेद सारं॥कौशलेन्द्रनवनीलकंजाभतनुमदनरिपुकंज हृदचञ्चरीकं।जानकीरम न सुखभवनभुवनैक प्रभु समर भंजन परमकारुणीकं ॥ दनुजवनधूमध्वजपीन आजानु भुजदण्डकोदण्डवरचण्डवानं । अरुण कर चरण मुख नयन राजीवगुण अयन बहुमयन शोभानिधानं ॥ वासनावृन्दकैरवदिवाकर कामक्रोधमदकंजकाननतुषारं । लोभ अतिमत्तनागेन्द्रपञ्चाननं भक्तहितहरणसंसारभारं ॥ केशवंक्लेशहं केशवन्दितपद द्वन्द्वमन्दाकिनीमूलभूतं ॥ सर्वदानन्दसन्दोहमोहापहं घोरसंसारपाथोधिपोतं ॥ शोकसन्देहपाथोदपटलानिलं पापपर्वतकठिनकुलिशरूपं ॥ सन्तजनकामधुकधेनुविश्रामपद नामकलि कलुष भञ्जन अनूपं ॥ धर्मकल्पद्रुमारामहरि धामपथिसम्बलंमूल मिदमेवएकं । भक्तिवैराग्यविज्ञानसमदानदमनाम आधीनसाधन अनेकं ॥ तेन तप्तं हुतंदत्तमेवाखिलं तेन सर्वं कृतं कर्मजालं । येनश्रीरामनामाऽमृतंपानकृतमनिशमनवद्यमवलोक्यकालं ॥श्वपचखलभिल्लयमनादिहरिलोकगतनामबल विपुल मतिमलिनपरसी । त्यागि सब आश संत्रासभव पासअसिनिशित हरिनाम जपु दासतुलसी ॥ ४७ ॥ ऐसीआरती राम रघुवीरकी करहि मन । हरणदुखद्वन्द गोविन्द आनन्दघन ॥ अचरचररूपहरि सर्वगत सर्वदा बसत इति वासनाधूप दीजै ॥ दीप निजबोधगतक्रोधम-

दमोहतम प्रौढअभिमान चितवृत्ति छीजै ॥ भाव अतिशयविशद प्रवरनैवेद्यशुभ श्रीरमणपरमसन्तोषकारी । प्रेम ताम्बूल गतशूलसंशयसकल विपुलभववासनाबीजहारी ॥ अशुभशुभ कर्मघृत पूर्ण दशवर्तिका त्यागपावकसतोगुणप्रकाशं । भक्तिवैराग्यविज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जगनिवासं ॥ विमलहृदिभवन कृतशान्तिपर्यंकशुभ शयन विश्राम श्रीरामराया । क्षमाकरुणाप्रमुखतत्रपरिचारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेदमाया । एहिआरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देव ऋषि अखिलमुनितत्त्वदरसी । करै सोइ तरै परिहरै कामादिमल वदति इति अमलमति दास तुलसी ॥ ४८ ॥ हरति सब आरती आरती रामकी । दहति दुख दोष निर्मूलिनी कामकी ॥ सुभगसौरभधूपदीपवरमालिका । उड़त अघ विहग सुनि तालकरतालिका ॥ भक्तहृदिभवन अज्ञान तमहारिणी । विमलविज्ञानमयतेजविस्तारणी ॥ मोहमदकोहकलिकंजहिमयामिनी । मुक्तिकी दूतिका देहद्युतिदामिनी ॥ प्रणतजनकुमुदवन इन्दुकरजालिका । तुलसि अभिमानमहिषेशबहुकालिका ॥ ४९ ॥ दनुजवनदहन गुणगहन गोविन्द नन्दादिआनन्ददाताऽविनाशी ॥ शंभु शिव रुद्र शंकर भयंकरभीम घोर ते जायतन क्रोधरासी ॥ अनन्त भगवन्त जगदन्त अन्तक त्रास शमन श्रीरमण भुवनाभिरामं । भूधराधीश जगदीश ईशानविज्ञान घन ज्ञानकल्याणधामं॥वामनाव्यक्त पावन परावरविभो प्रगट परमात्माप्रकृतिस्वामी । चन्द्रशेखर शूलपाणि हर अनघ अज अमित अविछिन्न वृषभेशगामी ॥ नीलजलदाभतनु श्याम बहु कामछवि राम राजीवलोचन कृपाला । कंबुकर्पूरवपुधवल निर्मल मौलि जटा सुरतटिनि सित सुमनमाला ॥ वसनकिंजल्कधर चक्रशारंगदरकंजकौमोदकी अतिविशाला । मारकरिमत्तमृगराज त्रयनयन हर नौमि अपहरणसंसारज्वाला ॥ कृष्णकरुणाभवन दवनकालीयखल विपुलकंसादि निर्वंशकारी । त्रिपुरमदभंगकरमत्तगजचर्मधर अन्धकोरग ग्रसनपन्नगारी ॥ ब्रह्मव्यापक अकल

सकलपर परमहित ज्ञानगोतीतगुणवृत्तिहर्त्ता । सिंधुसुतगर्वगिरि
वज्रगौरीश भवदक्षमखअखिलविध्वंसकर्त्ता ॥ भक्तिप्रिय भक्तजन
कामधुकधेनु हरि हरणदुर्घटविकट विपति भारी । सुखद नर्मद
वरद विरज अनवद्यखिलविपिन आनन्दवीथिनविहारी ॥ रुचिर
हरिशंकरी नाममन्त्रावली द्वन्द्वदुखहरनि आनन्दखानी । विष्णु
शिवलोकसोपानसम सर्वदा वदति तुलसीदासविशदवानी ॥ ५० ॥
भानुकुलकमलरवि कोटिकन्दर्पछवि कालकलिव्यालमिव वैनते
यं । प्रबल भुजदण्ड परचण्ड कोदण्डधर तूणवर विशिष बल-
मप्रमेयं ॥ अरुणराजीवदलनयन सुखमाअयन श्यामतनुकान्ति व
रवारिदाभं । ततकाञ्चनवस्त्र शस्त्रविद्यानिपुण सिद्धसुरसेव्य पा-
थोजनाभं ॥ ॥ अखिललावण्यगृह विश्वविग्रह परम प्रौढ़ गुणगूढ़
महिमाउदारं ॥ दुर्द्धर्षदुस्तर दुर्ग स्वर्ग अपवर्गपति भग्नसंसार
पादपकुठारं ॥ शापवश मुनिवधूमुक्तकृत विप्रहितयज्ञरक्षणदक्ष
पक्षकर्त्ता ॥ जनकनृपसदसि शिवचापभञ्जन उग्र भार्गवागर्वगरि-
मापहर्त्ता ॥ गुरुगिरागौरवअमरवसुदुस्त्यजराज्य त्यक्त सहित
सौमित्रिभ्राता। संग जनकात्मजामनुजमनुसृत्यअज दुष्टवधनिरतत्रै-
लोक्यत्राता ॥ दण्डकारण्य कृतपुण्य पावनचरण हरणमारी-
चमायाकुरंगं । वालिबलमत्तगजराज इवकेशरी सुहृदसुग्रीवदुखरा-
शिभंगं ॥ ऋच्छमर्कटविकट सुभट उद्भटसमरशैलसंकाशारि
पुत्रासकारी । बद्धपाथोधिसुरनिकरमोचन सकुलदलन दशशीश
भुजबीसभारी । दुष्टविबुधारिसंघात अपहरण महि भारअवतार
कारणअनूपं ॥ अमलअनवद्यअद्वैतनिर्गुणसगुण ब्रह्म सुमिरामिनर
भूपरूपं । शेष श्रुति शारदा शम्भु नारद सनक गणतगुणअन्त
नहिं तवचरित्रं । सोइराम कामारि प्रिय अवधपति सर्वदा दासतु
लसीत्रासनिधिवहित्रं ॥ ५१ ॥ जानकीनाथ रघुनाथ रागादितम
तरणितारुण्यतनुतेजधामं।सच्चिदानन्दआनन्दकन्दाकरं विश्वविश्रा-
मरामाभिरामं ॥ नीलनववारिधरसुभगशुभकान्तिकर पीतकौशेय
वरवसनधारी । रत्नहाटकजटितमुकुटमण्डितमौलि भानुशतसदृश

उद्योतकारी ॥ श्रवण कुण्डल भाल तिलकभ्रू रुचिरअति अरुण अम्भोजलोचनविशालं। वक्रअवलोकत्रैलोक्यशोकापहं माररिपुहृदयमानसमरालं ॥ नासिकाचारु सुकपोल द्विजवज्रद्युतिअधरबिम्बोपमा मधुरहासं। कण्ठदरचिबुकवरवचनगम्भीरतर सत्यसंकल्प सुरत्रासनाशं ॥ सुमनसुविचित्रनवतुलसिकादलयुतं मृदुलवनमाल उरभ्राजमानं। भ्रमतआमोदवशमत्तमधुकरनिकर मधुरतरमुखर कुर्वन्ति गानं ॥ सुभगश्रीवत्स केयूरकंकणहारकिंकिणीरटनिकटि तटरसालं। वाम दिशिजनकजासीनसिंहासनं कनकमृदुवल्लिवततरु तमालं ॥ आजानुभुजदण्डकोदण्डमण्डितबाम बाहु दक्षिणपाणिबाणमेकं। अखिलमुनिनिकरसुरसिद्धगन्धर्ववरनमतनरनागअवनिपअनेकं ॥ अनघ अनछिन्न सर्वज्ञ सर्वेशखलु सर्वतोभद्रदाताऽसमाकं। प्रणतजनखेदविच्छेदविद्यानिपुण नौमि श्रीरामसौमित्रिसाकं ॥ युगलपदपद्मसुखसद्म पद्मालयं चिह्नकुलिशादिशोभाति भारी। हनुमन्तहृदिविमल कृतपरम मन्दिरसदा दासतुलसीशरण शोकहारी ॥ ५२ ॥ कौशलाधीश जगदीश जगदेकहित अमितगुणविपुलविस्तारलीला। गायन्ति तवचरित सुपवित्र श्रुति शेष शुक शम्भु सनकादि मुनि मननशीला ॥ वारिचरवपुषधर भक्तनिस्तारपरं धरणिकृत नाव महिमातिगुर्वी। सकलयज्ञांशमयउग्रविग्रहक्रोडमर्दिदनुजेश उद्धरन उर्वी ॥ कमठ अतिविकटतनु कठिनपृष्ठोपरी भ्रमतमंदरकंडु सुखमुरारी। प्रगटकृतअमृत गो इन्दिरा इन्दु वृन्दारकावृन्दआनन्दकारी ॥ मनुज, मुनि, सिद्ध, सुर, नाग त्रासकदुष्ट, दनुज द्विजधर्ममर्य्यादहर्त्ता। । अतुल मृगराजवपुधरित विदारितअरि भक्तप्रह्लादअह्लादकर्त्ता ॥ छलनबलि कपटवटुरूप वामनब्रह्म भुवनपर्य्यंत पदतीनिकरणं। चरणनखनीरत्रैलोक्यपावनपरम विबुधजननीदुसहशोकहरणं ॥ क्षत्रियाधीशकरि निकरवर केशरी परशुधरविप्रशशिजलदरूपं। बीसभुजदंडदशशीशखंडन चंडवेगसायक नौमि रामभूपं ॥ भूमिभरभारहर प्रगटपरमात्मा ब्रह्मनररूपधर भक्तहेतू। वृष्णिकुलकुमुद राकेशराधारमण कंसवं

निविडयमनान्धकारं। विष्णुयशपुत्रकल्की दिवाकरउदित दासतु-
लसीहरणविपतिभारं॥ ५३॥ सकल सौभाग्यप्रद सर्वतोभद्रनिधि
सर्व सर्वेशसर्वाभिरामं।शर्वहृदिकंजमकरंदमधुकररुचिर रूपभूपाल-
मणि नौमि रामं॥ सर्वसुखधाम गुणग्राम विश्रामपद नामसर्वास्पद
मतिपुनीतं। निर्मलं शांतसुविशुद्धबोधायतन क्रोधमदहरणकरुणा
निकेतं॥ अजित निरुपाधि गोतीतमव्यक्तविभुमेकमनवद्यमजमद्वि-
तीयं। प्राकृतं प्रगटपरमात्मापरमहित प्रेरकानंत वंदे तुरीयं॥
भूधरं सुंदरं श्रीवरं मदनमदमथन सौंदर्य सीमातिरम्यं। दुःप्राप्यदुः
प्रेक्ष्यदुस्तर्क्य दुःपार संसारहरसुलभमृदुभावगम्यं॥ सत्यकृत
सत्यरत सत्यव्रतसर्वदा पुष्टसन्तुष्टसंकष्टहारी। धर्मवर्मणिब्रह्म
कर्म बोधैकद्विजपूज्यब्रह्मण्यजनप्रिय मुरारी॥ नित्यनिर्मम
नित्यमुक्त निर्मानहरिज्ञानघनसच्चिदानन्दमूलं। सर्व रक्षक सर्व
भक्षकाध्यक्ष कूटस्थगूढार्चिभक्तानुकूलं। सिद्धसाधकसाध्य
वाच्यवाचकरूप मंत्रजापकजाप्य सृष्टिस्रष्टा। परमकारण
कंजनाभजलदाभतनु सगुणनिर्गुणसकलदृश्यद्रष्टा॥ व्योमव्या-
पक विरजब्रह्मवरदेशवैकुंठवामनविमलब्रह्मचारी। सिद्धवृन्दारका
वृन्दवन्दितसदा खंडपाखंडनिर्मूलकारी॥ पूर्णानन्दसन्दोहअपहरण
संमोहअज्ञानगुणसन्निपातं। वचनमनकर्मगतशरणतुलसीदास त्रा-
सपाथोधिइव कुंभजातं॥ ५४॥ विश्वविख्यात विश्वेश विश्वायतन
विश्वमर्याद व्यालारिगामी। ब्रह्मवरदेशवागीशव्यापकविमल
विपुलबलवाननिर्वाणस्वामी॥ प्रकृतिमहतत्त्वशब्दादि गुणदेवता
व्योममरुदग्नि अमलांबुउर्वी। बुद्धिमनइंद्रिया प्राणचित्तातमा
कालपरमाणुचिच्छक्तिगुर्वी॥ सर्वमेवात्र त्वद्रूप भूपालमणि व्य-
क्तमव्यक्तगतभेद विष्णो। भुवनभवदंगकामारिवंदितपदद्वन्द्व
मंदाकिनीजनक जिष्णो॥ आदिमध्यान्त भगवंत त्वं सर्वगतमी-

शपश्यंति ये ब्रह्मवादी । यथापटतंतुघटमृत्तिका सर्पस्रग दारुकरि कनक कटकांगदादी ॥ गूढ़गम्भीरगर्वघ्नगूढ़ार्थवित् गुप्तगोतीत गुरुज्ञानज्ञाता ॥ ज्ञेयज्ञानांप्रेयप्रचुरगारमागार घोरसंसारपरपार-दाता ॥ सत्यसंकल्प अतिकल्प कल्पान्तकृत कल्पनातीतअहि तल्पवासी । वनजलोचनवनजनाभ वनदाभवपु वनचरध्वजकोटि लावण्यरासी ॥ सुकरदुःकरदुराराध्यदुर्व्यसनहर दुर्गदुर्द्धर्षदुर्गा-र्तिहर्त्ता ॥ वेदगर्भार्भकादर्भगुणगर्व अर्वागपरगर्वनिर्वापकर्त्ता ॥ भक्तअनुकूल भवशूलनिर्मूलकर तूलअघनामपावकसमानं । तरल तृष्णातमीतरणि धरणीधरण शरणभयहरण करुणानिधानं ॥ बहुलवृन्दारुवृन्दारकावृन्दपद द्वन्द्व मंदारमालोरधारी । पाहिमामीश संतापसंकुलसदा दासतुलसीप्रणत रावणारी ॥ ५५ ॥ सन्तसन्तापहर विश्वाविश्राणकर राम कामारिअभिरामकारी ।शुद्धबोधायतन सच्चिदानंदघन सज्जनानंदवर्द्धनखरारी ॥ शीलसमताभवन विषमता मतिशमन रामरमारमण रावणारी । खड्गकरचर्मवर वर्मधररुचिर कटितूण शरशक्तिशारंगधारी ॥ सत्यसंधान निर्वाणप्रद सर्वहित सर्वगुणज्ञानविज्ञानशाली । सघनतमघोरसंसार भारशर्वरी नाम दिवसेशखरकिरण माली ॥ तपनतीक्षणतरुण तीव्रतापघ्नतप रूपतनुभूपतमपर तपस्वी । मानमदमदनमत्सरमनोरथमथनमोह अम्भोधिमन्दर मनस्वी ॥ वेदविख्यातवरदेशवामनविरज विमल वागीशवैकुंठस्वामी । कामक्रोधादिमर्दन विवर्धनक्षमा शांतविग्रह विहगराजगामी ॥ परमपावन पापपुंजमुंजाटवी अनलइव निमिष निर्मूलकर्त्ता । भुवनभूषण दूषणारिभुवनेश भूनाथश्रुतिमाथ जय भुवनभर्त्ता । अमलअविचल अकलसकल संततकलिविकलता-भंजनानन्दरासी । उरगनायकशयन तरुणपंकजनयनक्षीरसागर अयनसर्ववासी । सिद्धकविकोविदानन्ददायक पदद्वन्द मदात्ममनुजैर्दुरापं।यत्रसंभूतअतिपूतजलसुरसरी दर्शनादेव अपहरतिपापं ॥ नित्यनिर्मुक्तसंयुक्तगुणनिर्गुणानंतभगवन्तनियामक नियंता । विश्वपोषणभरण विश्वकारणकरण शरणतुलसीदासत्रासहंता ॥ ५६ ॥

दनुजसूदन दयासिंधु दंभापहन दहन दुर्दोषदुःपापहर्त्ता । दुष्टता दमन दमभवन दुःखौघहर दुर्गदुर्वासनानाशकर्त्ता ॥ भूरिभूषण भानुमंत भगवंतभव भंजनाभयदभुवनेशभारी । भावनातीत भववंद्य भवभक्तहित भूमि उद्धरण भूधरण धारी॥वरवदनवनदाभवागीशविश्वात्मा विरज वैकुंठमंदिरविहारी । व्यापकव्योम वंदारुवामनविभो ब्रह्मविद्ब्रह्मचिन्तापहारी ॥ सहजसुंदरसुमुखसुमनशुभ सर्वदा शुद्ध सर्वज्ञ स्वच्छंदचारी । सर्वकृत सर्वभृत सर्वजित् सर्वहित सत्यसंकल्प कल्पांतकारी ॥ नित्यनिर्मोह निर्गुण निरंजन निजानंद निर्वाणनिर्वाणदाता । निर्भरानंदनिःकंप निःसीमनिर्मुक्तनिरुपाधि निर्ममविधाता ॥ महामंगलमूल मोदमहिमायतन मुग्धमधुमथन मानद अमानी । मदनमर्दन मदातीत मायारहित मंजुमानाथपाथोजपानी ॥ कमललोचन कलाकोशकोदंडधर कोशलाधीश कल्याणरासी । यातुधान प्रचुरमत्तकरिकेसरी भक्तमनपुण्यआरण्यवासी । अनघ अद्वैत अनवद्य अव्यक्त अज अमित अविकारआनन्दसिंधो । अचलअनिकेत अविरलअनामयअनारंभ अंभोदनादघ्नबंधो ॥ दासतुलसी खेदखिन्नआपन्नइह शोकसंपन्न अतिशयसभीतं । प्रणतपालक राम परमकरुणाधाम पाहि मा मुर्विपति दुर्विनीतं ॥ ५७ ॥ देहि सतसंग निजअंग श्रीरंग भवभंगकारण शरणशोकहारी । येतु भवदंघ्रिपल्लवसमाश्रितसदा भक्तिरत विगतसंशय मुरारी ॥ असुरसुरनागनरयक्षगंधर्वखग रजनिचर सिद्ध येचापि अन्ने । संत संसर्ग त्रयवर्गपर परमपद प्राप निःप्राप्यगतित्वयि प्रसन्ने ॥ वृत्रवलिप्राणप्रह्लादमयव्याधगजगृध्र द्विजबंधुनिजधर्मत्यागी ॥ साधुपदसलिल निर्धूतकल्मषसकल श्वपचयवनादिकैवल्यभागी । शांत निर्पेक्ष निर्मम निरामय अगुण शब्द ब्रह्मैकपरब्रह्मज्ञानी । दक्षसमदृक स्वदृक विगत अति स्वपरमति परमरति विरति तव चक्रपानी॥विश्व उपकारहित व्यग्र चित सर्वदा व्यक्तमदमन्युकृत पुण्यरासी । यत्र तिष्ठंति तत्रैव अज शर्वहरि सहित गच्छन्ति क्षीराब्धिवासी । वेदपयसिं

धुसुविचारमंदरमहा अखिलमुनिवृंदनिर्मथनकर्त्ता।सार सतसंग सुद्ध-त्यइति निश्चितं वदत श्रीकृष्ण वैदर्भिभर्त्ता ॥ शोकसंदेहभयहर्षत-मतर्षगण साधुसद्युक्तिविच्छेदकारी। यथा रघुनाथसायक निशा-चरचमू निचयनिर्दलन पटु वेगभारी ॥ यत्रकुत्रापि ममजन्म निज कर्मवश भ्रमत जगयोनि संकटअनेकम्। तत्रत्वद्भक्तिसज्जनसमाग-मसदा भवतुमेरामविश्राममेकम्। प्रबलभवजनित त्रैव्याधिभेषजभ-क्ति भक्त भैषज्यमद्वैतदरसी। संतभगवन्तअंतरनिरन्तर नहीं किमपि मतिमलिन कहदासतुलसी ॥ ५८ ॥ देहि अवलम्ब करकमल कमलारमन दमनदुखशमनसन्तापभारी । अज्ञानराकेशग्रासन विधुंतुदगर्व कामकरिमत्तहरि दूषणारी ॥ वपुषब्रह्माण्डसुप्रवृत्तिल ङ्कादुर्ग रचितमनदनुजमयरूपधारी। विविध कोशौघ अतिरुचिर मन्दिरनिकर सत्त्वगुण प्रमुख त्रयकटककारी । कुनपअभिमान सागरभयङ्कर घोर विपुलअवगाह दुस्तरअपारम्। नक्ररागादिसं-कुलमनोरथसकल संगसङ्कल्पवीचीविकारम् ॥ मोहदशमौलि तद भ्रातअहङ्कार पाकारिजित् कामविश्रामहारी । लोभ अतिकाय मत्सरमहोदरदुष्ट क्रोधपापिष्ठविबुधान्तकारी ॥ द्वेषदुर्मुख दम्भ खर अकंपनकपट दर्पमनुजाद मदशूलपानी । अमितबल परमदु-र्जननिशाचरनिकर सहितषड्वर्ग गो यातुधानी । जीवभवदंघ्रिसे वक विभीषणवसत मध्यदुष्टाटवीग्रसितचिन्ता । नियमयमसकल सुरलोकलोकेश लंकेशवशनाथअत्यन्तभीता ॥ ज्ञानअवधेश गृहगेहिनीभक्तिशुभ तत्र अवतारभूभारहर्ता। भक्तसङ्कष्टअवलो-कपितुवाक्यकृतगमन किय गहन वैदेहिभर्त्ता ॥ कैवल्यसाधन अखिल भालु मर्कट विपुल ज्ञानसुग्रीव कृतजलधिसेतू । प्रबलवै-राग्यदारुणप्रभंजनतनयाविषयवनभवनामिव धूमकेतू ॥ दुष्टदनुजे-श निर्वंशकृतदासहित विश्वदुखहरणबोधैकरासी । अनुजनिजजा-नकीसहितहरिसर्वदा दासतुलसीहृदयकमलवासी ॥५९॥ दीनउद्ध-रण रघुवर्य करुणाभवन शमनसन्ताप पापौघहारी । विमलविज्ञान विग्रह अनुग्रहरूप भूपवर विबुधनर्मदखरारी॥संसारकान्तारअतिघो-

रगम्भीरघन गहनतरुकर्मसंकुल मुरारी।वासनावल्लि खरकण्टकाकु-
लविपुल निबिडविटपाटवीकठिनभारी ॥ विविधचितवृत्तिखगनि-
करसेनोलूक काकचकगृध्र आमिषअहारी । अखिलखलनिपुण
छलछिद्रनिरखत सदा जीवजनपथिकमनखेदकारी ॥ क्रोधकरिम-
त्तमृगराज कन्दर्पमद दर्पवृकभालु अतिउग्रकर्म्मा। महिष मत्सर
क्रूर लोभशूकररूप फेरुछल दम्भ मार्ज्जार धर्म्मा ॥ कपटमर्कट-
विकटव्याघ्र पाखण्डमुखदुखदमृगव्रातउत्पातकर्त्ता । हृदयअवलो-
कि यहशोकशरणागतं पाहि मापाहि भो विश्वभर्त्ता॥प्रबलअहङ्का-
रदुर्घटमहीधर महामोहगिरिगुहा निबिडान्धकारम् ॥ चित्तवैताल
मनुजाद मनप्रेत गण रोग भोगौध-वृश्चिक विकारम्॥ विषयसुखला-
लसादंशमसकादिखल झिल्लिरूपादि सबसर्पस्वामी ॥ तत्र आक्षि-
प्त तवविषममायानाथ अन्ध में मन्दव्यालादगामी ॥ घोरअवगाह
भवआपगा पापजल पूरदुष्प्रेक्ष्य दुस्तर अपारा। मकरषडवर्ग गोन-
क्रचक्राकुला कूल शुभ अशुभ दुखतीव्रधारा ॥ सकलसंघट्टपोच
शोचवशसर्वदा दासतुलसीविषम गहननस्तम् । त्राहि रघुवंशभूष-
ण कृपाकर कठिनकालविकरालकलित्रासत्रस्तम् ॥ ६० ॥ नौमि
नारायणं नरं करुणायणं ध्यानपारायणं ज्ञानमूलम् । अखिलसंसार
उपकारकारनसदय हृदय तपनिरतप्रणतानुकूलम्॥श्यामनवताम-
रसदामद्युतिवपुषछवि कोटिमदनार्कअगणितप्रकाशम्।तरुणरमणीय
राजीवलोचन ललित वदनराकेशकरनिकरहासम् ॥ सकलसौन्दर्य्य
निधि विपुलगुणधामविधि वेदबुधशंभुसेवितअमानम्। अरुणपदकं-
ज मकरन्दमन्दाकिनी मधुपमुनिवृन्द कुर्वन्ति पानम्॥ शक्रप्रेरित
घोरमारमद भंगकृत क्रोधगत बोधरत ब्रह्मचारी । मार्कण्डेयमुनि
वर्यहितकौतुकी विनहिं कल्पान्त प्रभु प्रलयकारी॥पुण्यवन शैलस-
रिबदरिकाश्रमसदासीनपद्मासनं एकरूपं। सिद्धयोगीन्द्रवृन्दारकान
न्दप्रद भद्रदायक दरश अतिअनूपं॥मानमनभंगचितभंगमद क्रोध
लोभादिपर्वतदुर्गभुवनभर्त्ता।द्वेषमत्सर राग प्रबलप्रत्यूहप्रति भूरिनि-
र्दयक्रूरकर्मकर्त्ता। विकटतरवक्रक्षुरधारप्रमदातीव्रदर्पकन्दर्पगरखङ्ग
धारा। धीरगंभीरमनपीरकारक तत्र केवराकावयं विगतसारा ।

परमदुर्घट पन्थखलअसंगतसाथ नाथनहिंहाथवरविरतियष्टी । दर-
शनारतदास त्रसितमायापास त्राहिहरित्राहिहरि दास कष्टी ॥
दासतुलसी दीन धर्मबलहीन श्रमित अतिखेदमतिमोहनाशी । देहि
अवलंब न विलंब अंभोजकर चक्रधर तेजबलसर्भरासी ॥ ६१ ॥
सकलसुखकन्द आनन्दवन पुण्यकृत विन्दुमाधव द्वन्द्वविपति
हारी । यस्यांघ्रिपाथोज अज शम्भु सनकादिशुक शेषमुनिवृन्द
अलि निलयकारी ॥ अमलमर्कतश्याम कामशतकोटिछबि पी-
तपट तडितइव जलदनीलम् । अरुणशतपत्रलोचन विलोकनिचारु
प्रणतजनसुखद करुणार्द्रशीलम् ॥ कालगजराजमृगराज दनुजेशव-
नदहनपावक मोह निशिदिनेशम् । चारिभुजचक्रकौमोदकीजलजदर-
सरसिजोपरियथाराजहंसम् ॥ मुकुटकुंडलतिलक अलकअलिव्रात
इव भ्रुकुटिद्विजअधरवरचारुनासा । रुचिरसुकपोल दरग्रीव सुख-
सीव हरि इंदुकरकुंदमिवमधुरहासा ॥ उरसि वनमाल सुविशाल
वनमंजरी भ्राजश्रीवत्सलांछनउदारम् । परमब्रह्मण्य अतिधन्य गत
मन्यु अज अमितबलविपुल महिमा अपारम् ॥ हारकेयूरकरकनक
कंकणरतन जटित मणिमेखला कटिप्रदेशम् । युगलपदनूपुरामुखर
कल हंसवत सुभगसर्वाङ्गसौंदर्यवेषम् ॥ सकलसौभाग्यसंयुक्तत्रैलो-
क्यश्री दक्षदिशि रुचिरवारीशकन्या । वसत विबुधापगानिकटतट
सदनवर नयननिरखंति नर तेतिधन्या ॥ अखिलमंगलभवन निबि-
ड़संशयशमनदमनब्रजनाटवीकष्टहर्त्ता । विश्वधृत विश्वहित-
अजितगोतीत शिव विश्वपालनहरणविश्वकर्ता ॥ ज्ञानविज्ञान
वैराग्यऐश्वर्यनिधि सिद्धिअणिमादि दे भूरिदानम् । ग्रसतभवव्याल
अतित्रासतुलसीदास त्राहि श्रीराम उरगारियानम् ॥ ६२ ॥

राग आसावरी ।

इहै परमफल परमबड़ाई । नखशिखरुचिरबिन्दुमाधवछबि निर-
खहिं नयन अघाई ॥ विशद किशोर पीन सुंदर वपु श्मामसुरु-
चि अधिकाई । नीलकंज वारिद तमालमणि इन्ह तनु ते द्युति
पाई ॥ मृदुलचरण शुभ चिह्न पदज नख अति अद्भुत उपमाई ।

अरुण नील पाथोज प्रसव जनु मणियुत दलसमुदाई ॥ जातरूप मणिजटित मनोहर नूपुरजन सुखदाई। जनु हर उर हरि विविध-रूप धरि रहे वरभवन बनाई ॥ कटितट रटति चारु किंकिणिरव अनुपम वरणि न जाई। हेमजलज कलकलिनमध्य जनु मधुकर मुखर सोहाई ॥ उर विशाल भृगुचरण चारु अति सूचत कोमल-ताई। कंकण चारु विविधभूषण विधि रचि निज कर मन लाई ॥ गजमणिमाल बीचभ्राजत कहिजाति न पदिक निकाई। जनु उडु-गण मंडल वारिद पर नवग्रह रची अथाई ॥ भुजगभोग भुज-दण्ड कंज दर चक्र गदा वन आई। शोभासींव ग्रीव चिबुकाधर वदन अमित छवि छाई ॥ कुलिश कुंद कुड्मल दामिनिद्युति दश-नानि देख लजाई। नासा नयन कपोल ललित श्रुति कुंडल भ्रू मोहिं भाई ॥ कुंचित कच शिर मुकुट भालपर तिलक कहौं समु-झाई। अलप तड़ित युगरेख इंदुमहँ रहितजि चंचलताई ॥ निर्मल पीत दुकूल अनूपम उपमा हिय न समाई। बहुमणि युत गिरि नील शिखर पर कनक वसन रुचिराई ॥ दक्ष भाग अनुराग सहित इन्दिरा अधिक ललिताई। हेमलता जनु तरुतमाल ढिग नील निचोल ओढ़ाई ॥ शतशारदा शेष श्रुति मिलिकरि शोभा कहि न सिराई। तुलसिदास मतिमन्द द्वंद्वरत कहै कौन विधि गाई ॥ ६३ ॥

राग जयतिश्री।

मन इतनोई या तनुको परमफल। सब अँग सुभग विंदुमाधव छवि तजि स्वभाउ अवलोकु एक पल ॥ तरुण अरुण अंभोज चरण मृदु नख द्युति हृदयतिमिरहारी। कुलिशकेतु जव जलज रेखवर अंकुश मन गज वशकारी ॥ कनक जटित मणिनूपुरमेखल कटितट रटति मधुरवानी। त्रिवली उदर गंभीर नाभिसर जहँ उपजे विरंचिज्ञानी ॥ उर वनमाल पदिक अति शोभित विप्रचरण चित कहँ करषै। श्याम तामरसदामवर्णवपु पीतवसन शोभा वर-षै ॥ कर कंकण केयूर मनोहर देति मोद मुद्रिक न्यारी। गदा

कंज दर चारु चक्रधर नाग शुंडसम भुजचारी ॥ कंबुग्रीव छवि-
सींव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नत नासा । नवराजीवनयन शशि
आनन सेवकसुखदविशदहासा ॥ रुचिर कपोल श्रवण कुण्डल शिर
मुकुट सुतिलक भालभ्राजै । ललित भ्रुकुटि सुंदर चितवनि कच नि-
रखि मधुपअवली लाजै॥ रूपशीलगुणखानि दक्ष दिशि सिंधुसुतारत
पदसेवा।जाकी कृपाकटाक्ष चहत शिव विधि मुनि मनुजदनुज देवा ॥
तुलसिदास भवत्रास मिटै तब जब मति यहि स्वरूप अटकै ।
नाहिंत दीन मलीन हीनसुख कोटि जन्म भ्रमि भ्रमि भटकै ६४॥

राग बसन्त ।

वन्दौं रघुपति करुणानिधान । जाते छूटैभवभेदज्ञान ॥ रघु-
वंशकुमुदसुखप्रदनिशेष । सेवित पदपंकज अजमहेश ॥ निज-
भक्तहृदयपाथोजभृंग । लावण्यवपुषअगणितअनंग ॥ अतिप्रबल
मोहतममारतंड ॥ अज्ञानगहन पावकप्रचंड । अभिमानसिंधुकुं-
भजउदार । सुररंजन भंजन भूमिभार ॥ रागादिसर्पगण पन्नगारि ।
कंदर्पनाग मृगपतिमुरारि ॥ भवजलधिपोतचरणारविन्द । जान
कीरमण आनन्दकन्द ॥ हनुमंतप्रेमवापीमराल । निष्कामका-
मधुक गोदयाल ॥ त्रैलोक्यतिलक गुणगहनराम । कहतुलसिदा-
स विश्रामधाम ॥ ६५ ॥

राग भैरव ।

राम राम रमु राम राम रटु राम राम जपु जीहा । रामनाम नवनेह
मेहको मन हठि होहि पपीहा॥ सबसाधनफलकूप सरितसर सागर-
सलिलनिरासा । रामनामरति स्वातिसुधाशुभसीकर प्रेमपिया
सा ॥ गरजि तरजि पाषाण वरषि पवि प्रीति परखि जिय जानै ।
अधिकअधिक अनुराग उमँग उर पर परमिति पहिचानै ॥ राम
नामगति रामनाममति रामनामअनुरागी । ह्वैगये हैं जे होहिंगे आगे
तेइ त्रिभुवन गनियत बड़भागी ॥ एकअंग मग अगम गवन क-
रि विलंब न छिन छिन छाहैं ॥ तुलसी हित अपनी अपनी दिशि

निरुपधि नेम निवाहैं ॥ ६६ ॥ रामजपु रामजपु रामजपु बावरे। घोरभवनीरनिधि नाम निज नावरे ॥ एकही साधनसब ऋधि सिद्धि साधिरे। ग्रसे कलिरोग योग संयम समाधिरे ॥ भलो जोहै पोच जोहै दाहिनो जो वामरे। रामनामही सों अन्त सबही को कामरे॥जगनभवाटिका रहीहै फलिफूलिरे।धुवां केसे धौरहर देखि तू न भूलिरे॥ रामनाम छाँड़ि जो भरोसो करै औररे। तुलसी परोसो त्यागि माँगेकूर कौररे ॥ ६७ ॥ रामनाम जपु जिय सदा सानुरागरे। कलि न विराग योग याग तप त्यागरे ॥ रामसुमिरण सब विधिही को राजरे। रामको बिसारिबो निषेध शिरताजरे ॥ रामनाम महामणि फणि जगजालरे। मणि लिये फणि जिये व्याकुलविहालरे ॥ रामनाम कामतरु देत फल चारिरे ॥ कहत पुराण वेद पंडित पुरारिरे ॥ रामनाम प्रेम परमारथको साररे। रामनाम तुलसीको जीवन आधाररे ॥ ६८ ॥ राम राम राम जीह जौलों तू न जपिहै। तौलौंतू कहूं जाय तिहूं ताप तपिहै ॥ सुरसरि तीर बिनुनीर दुख पाइहै। सुरतरुतर तोहिं दुःख दारिद्र सताइहै ॥ जागत वागत स्वप्ने न सुख सोइहै। जनम जनम युग युग जग रोइहै ॥ छूटिबेके यतन विशेष बाँध्यो जायगो। हैहै विष भोजन जो सुधा सानि खायगो ॥ तुलसी तिलोक तिहूं काल तोसे दीनको। रामनामही की गति जैसे जल मीन को ॥ ६९ ॥ सुमिर सनेह सों तू नाम रामराय को। संवर निसंवरको सखा असहाय को॥भागहै अभागहूको गुण गुणहीनको। गाहक गरीबको दयालु दानि दीन को ॥ कुल अकुलीन को सुन्यो है वेद साखिहै। पागुरको हाथ पाँय आंधरेको आँखिहै ॥ माय बाप भूखे को अधार निराधार को ॥ सेतु भवसागरको हेतु सुखसार को ॥ पतितपावन रामनाम सों न दूसरो। सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो ॥ ७० ॥ भलो भलीभाँति है जो मेरे कहे लागिहैं। मन रामनाम सों स्वभाव अनुरागि है॥ राम नामको प्रभाव जानि जूड़ी आगि है। सहित सहाय कलिकाल भीरु भा-

गि है ॥ राग रामनाम सों विराग योग जागि है। वाम विधि भालहू न कर्म दाग दागि है ॥ राम नाम मोदक सनेह सुधा पागि है। पाइ परितोष तू न द्वार द्वार बागि है ॥ कामतरु रामनाम जोइ जोइ माँगिहै। तुलसीदास स्वारथ परमारथ खागिहै ॥७१॥ ऐसेऊ रे मन साहब की सेवा सों होत चोररे। अपनी न बूझि न कहै को राँडरोररे ॥ मुनि मन अगम सुगम माइ बापसों। कृपासिन्धु सहजसखा सनेही आप सों ॥ लोक वेद विदित बड़ो न रघुनाथ सों। सबदिन सब देश सबहींके साथ सों ॥ स्वामी सर्वज्ञ सों चलै न चोरी चार की। प्रीति पहिंचानि यह रीति दरबार की ॥ काय न कलेश लेश लेत मान मन की। सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जन की ॥ रीझे वश होत खीझे देत निज धामरे। फलत सकल फल कामतरु नामरे ॥ बेंचे खोटो दाम न मिलै न राखे कामरे। सोऊ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा रामरे ॥ ७२ ॥ मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई। हौंतो सांइ द्रोही पै सेवकहित सांई ॥ राम सों बड़ो है कौन मोसों कौन छोटो। रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥ लोक कहै राम को गुलाम हौं कहावों। एतो बड़ो अपराध भव न मनवावों। पाथ माथे चढ़े तृण तुलसी जो नीचो। बोरत न वारि ताहि जानि आपु सींचो ॥ ॥७३ ॥ जागु जागु जीव जड़ जोहै जगयामिनी। देह गेह नेह जानि जैसे घनदामिनी ॥ सोवत स्वपने सहै संसृति सन्तापरे। बूड़ो मृग वारि खायो जेवरीको साँपरे ॥ कहै वेद बुध तू तौ बूझि मन माँहिरे। दोष दुख स्वप्नेके जागेहींपै जाहिंरे ॥ तुलसी जागे ते जाइ ताप तिहुँ तायरे। रामनाम शुचि रुचि सहज स्वभायरे ॥ ७४ ॥

रागविभास।

जानकीश की कृपा जगावती सुजान जीव जागि त्यागि मूढता ऽनुरागु श्रीहरे। करि विचार तजि विकार भजि उदार रामचन्द्र भद्रसिंधु दीनबंधु वेद वदत रे ॥ मोहमय कुहू निशा विशाल काल

विपुल व्याल सोयो खोयो सो अनूप स्वप्न जूथरे । अब प्रभात प्रगट ज्ञान भानुके प्रकाश वासना सरोग मोह द्वेष निबिड़ तम टरे ॥ भागे मद मान चोर भोर जानि यातुधान काम क्रोध लोभ क्षोभ निकर अपडरे । देखत रघुवरप्रताप बीते सन्ताप पाप ताप त्रिविध प्रेम आप दूरही करे ॥ श्रवण सुनि गिरा गँभीर जागे अति धीर वीर वरविराग तोष सकल सन्त आदरे । तुलसिदासप्रभुकृपालु निरखि जीवजन विहाल भंज्यो भवजाल परम मंगलाचरे॥७८॥

रागललित ।

खोटो खरो रावरो हौं रावरे सों झूठ क्यों कहौंगो जानो सबहींके मन की । करम वचन हिये कहौं न कपट किये ऐसी हठ जैसी गाँठि पानी परे सनकी ॥ दूसरो भरोसो नाहिं वासना उपासना की वासव विरंचि सुर नर मुनिगन की । स्वारथके साथी मेरे हाथी श्वानलेवा देई काहू तो न पीर रघुवीर दीन जनकी ॥ साँप सभा साबर लबार भये देव दिव्य दुसह शासति कीजै आगेही या तनकी । साँचे परो पाऊं पान पंचनमें पन प्रमाण तुलसी चातक आश राम श्याम घनकी ॥ ७९ ॥ रामके गुलाम नाम रामबोलाराख्यो राम काम यहै नाम द्वै हौं कबहूं कहत हौं । रोटी लूंगा नीके राखै आगेहूकी वेद भाषै भलो ह्वै है तेरो ताते आनँद लहत हौं॥बांध्यो हौं करम जड़ गरब गूढ़ निगड़ सुनत दुसह हौंतो शासति सहत हौं । आरत अनाथ नाथ कौशल कृपाल पाल लीन्हों छीनि दीन देख्यो दुरित दहत हौं ॥ बूझ्यो ज्योंहीं कह्यो मैं हूं चेरो ह्वैहौं रावरो जू मेरो कोऊ कहूं नाहिं चरण गहतहौं । मींजो गुरु पीठ अपनाइ गहि बाँह बोलि सेवक सुखद सदा विरद बहत हौं ॥ लोग कहै पोचु सो न सोच न संकोच मेरे व्याह न बरेखी जाति पाँति न चहत हौं । तुलसी अकाज काज रामहीके रीझे खीझे प्रीति की प्रतीति मन मुदित रहत हौं॥८०॥जानकीजीवन जगजीवन जगतहित जगदीश रघुनाथ राजीवलोचन राम।शरदविधुव-

दनसुखशील श्रीसदन सहज सुंदरतनु शोभा अगणित काम ॥ जगसुपिता सुमातु सुगुरु सुहित सुमीत सबको दाहिनो दीनबंधु काहूको न बाम । आरतहरण शरणद अतुलितदानि प्रणतपाल कृपालु पतितपावन नाम ॥ सकलविश्ववन्दित सकल सुरसेवित आगम निगम कहैं रावरेई गुणग्राम । इहै जानिकै तुलसी तिहारो जन भयो न्यारो कै गनिबो जहाँ गने गरीब गुलाम ॥ ७८ ॥

राग टोडी ।

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोऊ । जाहि दीनता कहौं हा दीन देखौं सोऊ ॥ मुनि सुर नर नाग असुर साहब तौ घनेरे ॥ पै तौलौं जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहुँकाल विदित वदत वेद चारी ॥ आदि अन्त मध्य राम साहबी तिहारी ॥ तोहिं मांगि माँगनो न माँगिबो कहायो । सुनि स्वभाउ शील सुयश याचन जन आयो ॥ पाहन पशु विटप विहग अपने कर लीन्हें । महाराज दशरथके रंक राय कीन्हें ॥ तू गरीब को निवाज हौं गरीब तेरो । बारक कहिये कृपालु तुलसिदास मेरो ॥ ७९ ॥ तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी । हौं प्रसिद्ध पातकी तू पापपुंजहारी ॥ नाथ तू अनाथको अनाथ कौन मोसों । मो समान आरत नहिं आरतहर तोसों ॥ ब्रह्म तू ही जीव तू ही ठाकुर हौं चेरो । तात मात गुरु सखा तु सब विधि हित मेरो ॥ तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिये जो भावे । ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावे ॥ ८० ॥ और काहि माँगिये को माँगिबो निवारै । अभिमतदातार कौन दुखदारिद्र दारै ॥ धर्म धाम राम काम कोटिरूप रूरो । साहब सब विधि सुजान दान खड्ग शूरो । सुसमय दिन द्वै निशान सबके द्वार बाजै । कुसमय दशरथके दानि तैं गरीब निवाजे ॥ सेवा विनु गुण विहीन दीनता सुनाये । जेजे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसिदास याचकरुचि जानि दान दीजै । रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजै ॥ ८१ ॥

दीनबंधु सुखसिंधु कृपाकर कारुणीक रघुराई । सुनहु नाथ मन जरत त्रिविधज्वर करत फिरत बौराई ॥ कबहुं योगरत भोगनिरत शठ हठ वियोग वश होई । कबहुँ मोहवश द्रोह करत बहु कबहुँ दया अति सोई ॥ कबहुँ दीन मतिहीन रंकतर कबहुँ भूप अभिमानी । कबहुँ मूढ़ पंडित बिडंबरत कबहुं धर्मरत ज्ञानी । कबहुं देख जग धनमय रिपुमय कबहुँ नारिमय भासै । संसृति सन्निपात दारुणदुख विनु हरिकृपा न नासै ॥ संयम जप तप नेम धर्म व्रत बहु भेषज समुदाई । तुलसिदास भवरोग रामपद प्रेमहीन नहिं जाई ॥ ८२ ॥ मोहजनित मल लाग विविधविध कोटिहु जतन न जाई । जनम जनम अभ्यासनिरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥ नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषय सँग लागे । हृदय मलिन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे ॥ परनिन्दा सुनि श्रवण मलिन भये वचन दोष पर गाये । सब प्रकार मलभार लाग निज नाथचरण बिसराये ॥ तुलसिदास व्रत दान ज्ञान तप शुद्धिहेतु श्रुति गावै । रामचरण अनुराग नीर विनु मल अति नाश न पावै ॥ ८३ ॥

राग जयतश्री।

कछु ह्वै न आय गयो जनम जाय । अति दुर्लभ तनु पाइ कपट तजि भजे न राम मन वचन काय ॥ लरिकाई बीती अचेत चित चंचलता चौगुने चाय । यौवन ज्वर युवती कुपथ्यकारि भयो त्रिदोष भरि मदन बाय ॥ मध्य बयस धनहेतु गँवाई कृषी बनिज नाना उपाय । राम विमुख सुख लह्यो न सपनेहुँ निशि बासर तयो तिहुँ ताय ॥ सेये नहिं सीतापतिसेवक साधु सुमति भले भगति पाय । सुने न पुलकि तनु कहे न मुदित मन किये जे चरित रघुवंशराय ॥ अब शोचत मणि बिनु भुजंगज्यों बिकल अंग दले जरा वाय । शिर धुनि धुनि पछितात मींजि कर कोउ न मीत हित दुसह दाय ॥ जिन्ह लगि निज परलोक बिगारयो

ते लजात होत ठाढ़े ठाँय । तुलसी अजहूं सुमिरि रघुनाथहि त-
रयो गयन्द जाके एक नाय ॥ ८४ ॥ तौ तू पछितैहै मन मींजि
हाथ । भयो है सुगम तोको अमर अगम तनु समुझ धों कत
खोवत अकाथ ॥ सुखसाधन हरिविमुख वृथा जैसे श्रमफल घृत-
हित मथै पाथ । यह विचारि तजि कुपथ कुसंगति चलि सुपंथ
मिलि भले साथ ॥ देखु रामसेवक सुनि कीरति रटहिं नाम
करिगान गाथ । हृदय आनु धनुबाण पाणि प्रभु लसे मुनिपट
कटि कसे भाथ ॥ तुलसीदास परिहरि प्रपंच सब नाउ रामपद
कमल माथ । जानि डरपहि तोसे अनेक खल अपनाये
जानकीनाथ ॥ ८५ ॥

राग धनाश्री ।

मन माधवको नेकु निहारहि । सुनु शठ सदारंकके धन ज्यों
छनछन प्रभुहि सँभारहि । शोभाशील ज्ञानगुणमन्दिर सुन्दर पर-
म उदारहि । रञ्जनसन्तअखिलअघगञ्जन भञ्जनविषयविकारहि ।
जो विनुयोग यज्ञ व्रत संयम गयो चहहि भवपारहि । तौ जनि
तुलसिदास निशि वासर हरिपदकमल बिसारहि ॥ ८६ ॥ इहै
कह्यो सुत वेद नित चहूं । श्रीरघुवीरचरणचिन्तन तजि नाहिन
ठौर कहूं ॥ जाकेचरण विरंचि सेइ सिधि पाई शंकरहूं । शुक
सनकादि मुक्त विचरत तेउ भजन करत अजहूं॥यद्यपि परमचपल
श्री सन्तत थिर न रहति कतहूं । हरिपदपंकज पाइ अचल
भइ कर्म वचन मनहूं ॥ करुणासिंधु भक्तचिन्तामणि शोभा सेव-
तहूं । और सकल सुर असुर ईश सब खाये उरग छहूं ॥ सुरुचि
कह्यो सोइ सत्य तात अति परुष वचन जबहूं । तुलसिदास रघु-
नाथविमुख नहिं मिटै विपति कबहूं ॥ ८७ ॥ सुनु मन मूढ़ शिखा-
वन मेरो । हरिपदविमुख लह्यो न काहु सुख शठ यह समुझ सबे-
रो ॥ विछुरे शशि रवि मन नयनानि ते पावत दुख बहुतेरो । भ्रम-
त श्रमित निशि दिवस गगन महँ तहँ रिपु राहु बड़ेरो ॥ यद्यपि

अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुयश घनेरो । तजे चरण अजहूं न मिटत नित बहिबो ताहू केरो॥छुटै न विपति भजे विनु रघुपति श्रुति सन्देह निवेरो । तुलसिदास सब आश छाँड़ि करि होहु राम कर चेरो ॥ ८८ ॥ कबहूं मन विश्राम न मान्यो । निशि दिन भ्रमत विसारि सहज सुख जहँ तहँ इन्द्रिन तान्यो ॥ यदपि विषयसँग सहे दुसह दुख विषमजाल अरुझान्यो । तदपि न तजत मूढ़ ममतावश जानतहूं नहिं जान्यो ॥ जन्म अनेक किये नाना विधि कर्म कीच जित सान्यो । होइ न विमल विवेक नीर विनु वेद पुराण बखान्यो ॥ निज हित नाथ पिता गुरु हरि सों हर्षि हृदय नहिं आन्यो । तुलसिदास कब तृषा जाइ सर खनतहिं जन्म सिरान्यो ॥ ८९ ॥ मेरो मन हरि हठ न तजै । निशिदिन नाथ देउँ शिष बहुविधि करत स्वभाउ निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवति प्रसव अति दारुण दुख उपजै ॥ ह्वै अनुकूल विसारि शूल शठ पुनि खल पतिहि भजै ॥ लोलुप भ्रमत गृहपशु ज्यों जहँ जहँ शिर पदत्रान बजै । तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै ॥ हौं हार्यौ करि यत्न विविध विध अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास वश होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ ९० ॥ ऐसी मूढ़ता या मनकी । परिहरि रामभक्ति सुरसरिता आश करत ओसकनकी ॥ धूमसमूह निरखि चातक ज्यों तृषितजानिमति घनकी । नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचनकी ॥ ज्यों गच काँच विलोकि श्वान जड़ छाँह आपने तनकी ॥ टूटत अतिआतुर अहार वश क्षति विसारि आनन की ॥ कहँलौं कहौं कुचाल कृपानिधि जानत हौं गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख करहु लाज निज पनकी ॥ ९१ ॥ नाचतही निशि दिवस मरचो । तबहीं ते न भयो हरि थिर जबते जिव नाम धरचो ॥ बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भरचो । चर अरु अचर गगन जल थल में कौन न स्वांगु करचो ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज नहिं याँचत कोउ उबरचो । मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख

काहू तो न हरयो ॥ थके नयन पद पाणि सुमतिबल संग सकल बिछुरयो। अब रघुनाथ शरण आयो जन भवभयविकल डरयो॥ जेहि गुणते वश होहु रीझि करि सो मोहिं सब बिसरयो। तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन परयो ॥ ९२ ॥ माधव जू मोसम मन्द न कोऊ। यद्यपि मीन पतंग हीनमति मोहिं नहिं पूजहिं ओऊ ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावक लोह न जान्यो। देखत विपति विषय न तजत हौं ताते अधिक अयान्यो ॥ महामोहसरिता अपार महँ सन्तत फिरत बह्यो। श्रीहरिचरणकमल नौका तजि फिरि फिरि फेन गह्यो ॥ अस्थिपुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यों भरि मुख पकरयो। निज तालूगत रुधिर पान करि मन सन्तोष धरयो। परमकठिन भवव्यालग्रसित हों त्रसित भयो अति भारी। चाहत अभय भेक शरणागत खगपतिनाथ बिसारी ॥ जलचर वृन्द जाल अन्तर्गत होत सिमिटि इक पासा। एकहि एक खात लालचवश नहिं देखत निज नाशा। मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावै। तुलसीदास पतितपावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ॥ ९३ ॥ कृपा सो धौं कहा बिसारी राम। जेहि करुणा सुनि श्रवण दीन दुख धावत हो तजि धाम॥ नागराज निज बल विचारि हिय हारि चरण चित दीन।आरतगिरा सुनत खगपति तजि चलत बिलम्ब न कीन ॥ दितिसुतत्रास त्रसित निशि दिन प्रह्लाद प्रतिज्ञा राखी ॥ अतुलितबल मृगराजमनुजतनु दनुज हत्यो श्रुति साखी ॥ भूप सदसि सब नृप बिलोकि प्रभु राखु कह्यो नर नारी। वसनपूरि अरिदर्प दूरि करि भूरि कृपा दनुजारी ॥ एक एक ते रिपुत्रासित जन तुम राखे रघुवीर। अब मोहिं देत दुसह दुख बहुरिपु कस न हरहु भवपीर ॥लोभग्राह दनुजेश क्रोध कुरुराज बन्धु खल मार। तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु रामउदार ॥ ९४ ॥ काहे ते हरि मोहिं बिसारो- जानत निज महिमा मेरे अघ तदपि न नाथ सँभारो ॥ पतितपुनीत दीनहित अशरण शरण कहत श्रुतिचारो। हौं नहिं

अधम सभीत दीन किधौं वेदन मृषा पुकारो ॥ खग गणिका गज व्याध पाँति जहँ तहँ होहूँ बैठारो । अब केहि लाज कृपा- निधान परसत पनवारो फारो ॥ जो कलिकाल प्रबल अति हो तो तुव निदेश ते न्यारो । तौ हरि रोष भरोस दोष गुण तेहि भजते तजि गारो ॥ मसक विरंचि विरंचि मसक सम करहु प्र- भाउ तुम्हारो । यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथ तहाँ कछु चारो ॥ नाहिंन नरक परत मोकहँ डर यद्यपि हों अति हारो । यह बड़ि त्रास दासतुलसी प्रभु नामहुँ पाप न जारो ॥ ॥ ९५ ॥ तऊ न मेरे अघ अवगुण गनिहैं । जो यमराज काज सब परिहरि यहो ख्याल उर अनि हैं ॥ चलिहैं छूटि पुंज पापि- नके असमंजस जिय जनिहैं । देखि खलल अधिकार प्रभू सों मेरी भूरि भलाई भनिहैं ॥ हँसि करिहैं परतीति भक्त की भक्त शिरोमणि मनिहैं । ज्यों त्यों तुलसिदास कौशलपति अपनायहि परिबनिहैं ॥ ९६ ॥ जो पै जिय धरिहो अवगुण जनके । तौ क्यों कटत सुकृत नख ते मो पै विपुल वृन्द अघ वनके ॥ क- हिहै कौन कलुष मेरे कृत कर्म वचन अरु मनके । हारहिं अमि- त शेष शारद श्रुति गिनत एक यक छिनके । जो चित चढ़ै ना- म महिमा निज गुण गण पावन पनके ॥ तौ तुलसिहि तारिहौ विप्र ज्यों दशन तोरि यमगनके ॥ ९७ ॥ ॥ जो पै हरि जनके अवगुण गहते । तौ सुरपति कुरुराज बालि सों कत हठि वैर बिसहते ॥ जो जप याग योग व्रत वर्जित केवल प्रेम न चहते । तौ कत सुर मुनिवर विहाय ब्रज गोपिगेह बसि रहते ॥ जो जहँ तहँ प्रण राखि भक्तको भजनप्रभाउ न कहते । तौ कालि काठिन कर्म मारग जड़ हम केहि भाँति निबहते ॥ जो सुतहित लिय नाम अजामिलके अघ अमित न दहते । तौ यमभट शा- सति हर हमसे वृषभ खोजि खोजि नहते ॥ जो जगविदित पतितपावन अति बांकुर विरद न वहते । तौ बहुकल्प कुटिलतुलसीसे स्व- प्नहुँ सुगति न लहते ॥ ९८ ॥ ऐसी हरि करत दास परप्रीति ।

निज प्रभुता बिसारि जनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन बाँधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्म की डोरी। सोइ अविछिन्न ब्रह्म यशुमति हठि बाँध्यो सकत न छोरी। जाकी मायावश विरंचि शिव नाचत पार न पायो। करतल ताल बजाइ ग्वाल युवतिन सोइ नाच नचायो॥ विश्वम्भर श्रीपति त्रिभुवनपति वेद विदित यह लीख। बलि सों कछु न चली प्रभुता वरु है द्विज माँगी भीख॥ जाको नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुखभार। अम्बरीष हित लागि कृपानिधि सोइ जनम्यो दश बार॥ योग विराग ध्यान जप तप करि जे खोजत मुनि ज्ञानी। वानर भालु चपल पशु पांवर नाथ तहाँ रति मानी॥ लोकपाल यमकाल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी। तुलसिदास प्रभु उग्रसेनके द्वार बेंतकरधारी॥ ९९॥ विरद गरीबनिवाज राम को। गावत वेद पुराण शम्भु शुक प्रगट प्रभाव नाम को॥ ध्रुव प्रह्लाद विभीषण कपिपति जड़ पतङ्ग पाण्डव सुदाम को। लोक सुयश परलोक सुगति इन्हमें को है राम काम को॥ गणिका कोल किरात आदि कवि इन्हते अधिक वाम को॥ वाजिमेध कब कियो अजामिल गज गाये कब श्याम को। छली मलीन हीन सबही अँग तुलसी सों छीन छाम को। नाम नरेश प्रताप प्रबल जग युग युग चालत चाम को॥ १००॥ सुनि सीतापति शील स्वभाउ। मोद न मन तनु पुलक नयन जल सो नर खेहर खाउ॥ शिशुपन ते पितु मातु बंधु गुरु सेवक सचिव सखाउ। कहत रामविधुवदन रिसौहैं स्वप्नेहुँ लख्यो न काउ॥ खेलत संग अनुज बालक नित जुगवत अनट अपाउ। जीति हारि चुचुकारि दुलारत देत दिवावत दाउ॥ शिला शापसन्ताप विगत भइ परशत पावन पाउ। दइसुगति सो न हेर हर्ष हिय चरण छुएको पछिताउ॥ भवधनुभंजि निदरि भूपति भृगुनाथ खाइ गएताउ। क्षमि अपराध क्षमाइ पाँयपरि इतौ न अनत समाउ॥ कह्यो राज वन दियो नारिवश गरि गलानि गयो राउ। ता कुमातुको मनजुगवत ज्यों निजतनु मर्म कुघा-

उ ॥ कपि सेवा वश भये कनौडे कह्यो पवनसुत आउ। देवे को न कछू ऋणियां हौं धनिक तु पत्र लिखाउ ॥ अपनाए सुग्रीव विभीषण तिन न तज्यो छलछाउ। भरतसभा सन्मानि सराहत होत न हृदय अघाउ ॥ निजकरुणा करतूति भक्तपर चपत चलत चरचाउ। सकृत प्रणाम प्रणत यश वर्णत सुनत कहत फिर गाउ ॥ समुझि समुझि गुणग्राम रामके उरअनुराग बढ़ाउ। तुलसिदास अनयास रामपद पइहे प्रेमपसाउ ॥ १०१ ॥ जाउँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे। काको नाम पतितपावन जग केहि अतिदीन पियारे ॥ कौने देव बराइ विरदहित हठि हठि अधम उधारे। खग मृग व्याध पषाण विटप जड़ यवन कवन सुरतारे ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवश विचारे। तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥ १०२ ॥ हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हो। साधनधाम विबुधदुर्लभ तनु मोहिं कृपा करि दीन्हों ॥ कोटिहुँ मुख कहि जाइँ न प्रभुके एक एक उपकार। तदपि नाथ कछु और माँगिहों दीजै परमउदार ॥ विषय वारि मनमीन भिन्ननहिं होत कबहुँ पल एक ॥ ताते सहिय विपति अति दारुण जन्मत योनि अनेक ॥ कृपाडोरिवंसीपद अंकुश परमप्रेम मृदुचारो। यहि विधि वेधि हरहु मेरोदुख कौतुक राम तिहारो ॥ है श्रुतिविदित उपाय सकल सुर केहि केहि दीन निहोरे। तुलसिदास यहि जीव मोहरजु जोइ बांध्यो सोइ छोरे ॥ १०३ ॥ यह विनती रघुवीर गुसांईं। और आश विश्वास भरोसो हरु जियकी जड़ताई ॥ चहौं न सुगति सुमति संपति कछु ऋधि सिधि विपुल बड़ाई। हेतुरहित अनुराग रामपद बढ़ो अनुदिन अधिकाई ॥ कुटिल कर्म लै जाय मोहिं जहँ तहँ अपनी बरिआईं। तहँ तहँ जिनि छिन छोह छांड़िए कमठअंडकी नाईं ॥ यह जग में जहँ लगि या तनु की प्रीति प्रतीति सगाई। ते सब तुलसिदास प्रभुही सों होहु सिमिटि एक ठाईं ॥ १०४ ॥ जानकीजीवन की बलिजैहौं। चित कहै रामसीयपद परिहरि अब न कहूं चलि जैहौं ॥ उपजी उर प्रतीति स्वप्नेहुँ सुख

प्रभुपद विमुख न पैहौं। मन समेत या तनुके वासिन इहै शिखावन देहौं। श्रवणन और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं। रोकिहौं नयन विलोकत औरहिं शीश ईशही नैहौं॥ नातो नेह नाथ सों करि सब नातो नेह बहैहौं। यह छर भार ताहि तुलसी जग जाको दास कहै हौं॥ १०५॥ अबलौं नशानी अब न नशैहौं। रामकृपा भवनिशा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं॥ पायो नाम चारु चिन्तामणि उर करते न खसैहौं। श्याम रूप शुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहि कसैहौं॥ परवश जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निजवश ह्वै न हँसैहौं। मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपतिपदकमल बसैहौं॥ १०६॥

राग रामकली।

महाराज रामादऱ्यो धन्य सोई। गरुअ गुणराशि सर्वज्ञ सुकृती शीलनिधि साधु तेहि सम न कोई॥ उपल केवट कीश भालु निशिचर शबरि गीध शम दम दया दान हीने। नाम लिये रामकिये परमपावन सकल नर तरत तिनके गुणगान कीने॥ व्याध अपराधकी साध राखी कौन पिङ्गला कौन मतिभक्ति भेई। कौन धों सो मजाजी अजामिल अधम कौन गजराज धौं वाजपेई॥ पांडुसुत गोपिका विदुर कुबरी सबहि शोध किये शुद्धता लेस कैसो। प्रेम लखि कृष्ण किये आपने तिनहुँ को सुयश संसार हरि हर को जैसो॥ कोल खल भिल्ल यवनादि खस राम कहि नीच ह्वै ऊँच पद को न पायो। दीनदुखदमन श्रीरमन करुणाभवन पतित पावन विरद वेद गायो॥ मन्दमति कुटिल खल तिलक तुलसी सरिस भौ न तिहुँलोक तिहुँकाल कोऊ। नाम की कानि पहिंचानि जन आपनो ग्रसत कलिव्याल रखु शरण सोऊ॥ १०७॥

राग बिलावल।

है नीको मेरो देवता कोशलपतिराम। सुभग सरोरुहलोचन सुठि सुन्दर श्याम॥ सिय समेत शोभित सदा छबि अमित अनङ्ग॥

भुज विशाल शर धनु धरे कटि चारु निषङ्ग । बांछे पूजा चाहत नहीं चाहै एक प्रीति । सुमिरतही मानै भलो पावन सब रीति ॥ देहि सकल सुख दुख दहै आरतजनबंधु । गुणगहि अघ अवगुणहरै अस करुणासिंधु ॥ देश काल पूरण सदा वद वेद पुरान । सबको प्रभु सब मों बसै सबकी गति जान ॥ को करि कोटिक कामना पूजे बहु देव । तुलसिदास तेहि सेइये शंकर जेहि सेव ॥ १०८ ॥ वीर महा अवराधिये साधे सिधि होय । सकल काम पूरण करै जानै सब कोय ॥ वेगि विलम्ब न कीजिये लीजै उपदेश । बीजमन्त्र जपिये सोई जो जपत महेश । प्रेमवारि तर्पण भलो घृत सहज सनेह । संशय समिध अगिन क्षमा ममता बलि देह ॥ अघ उचाट मनवश करै मारै मद मार । आकरषै सुखसम्पदा सन्तोष विचार ॥ जे यहिभाँति भजन कियो मिले रघुपति ताहि । तुलसिदास प्रभुपथ चढ्यो जो लेहु निबाहि ॥ १०९ ॥ कस न करहु करुणा हरे दुखहरण मुरारि । त्रिविधताप सन्देह शोक संशयभयहारि ॥ यह कलिकालजनित मल मतिमन्द मलिनमन । तेहि पर प्रभु नहिं कर सँभार केहि भाँति जियै जन ॥ सब प्रकार समरथ प्रभो मैं सब विधि दीन । यह जिय जानि द्रवहु नहीं मैं कर्मविहीन ॥ भ्रमत अनेक योनि रघुपति पति आन नमोरे । दुख सुख सहौं रहौं सदा शरणागत तोरे ॥ तो सम देव न कोउ कृपालु समुझौं मनमाहीं । तुलसिदास हरि तोषिये सो साधन नाहीं ॥११०॥ कहु केहि कहिये कृपानिधे भवजनित विपति अति । इन्द्रिय सकल विकल सदा निज २ स्वभाउरति॥जे सुख सम्पति स्वर्ग नरक सन्तत सँग लागी । हरि परिहरि सोइ यत्न करत मन मोर अभागी ॥ मैं अति दीनदयालु देव सुनि मन अनुरागे । जो न द्रवहु रघुबीर धीर काहे न दुख लागे ॥ यद्यपि मैं अपराधभवन दुखशमन मुरारे । तुलसिदास कहँ आश इहै बहु पतित उधारे ॥ १११ ॥ केशव कहि न जाइ का कहिये ॥ देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिये ॥ शून्य

भीति पर चित्र रंग नहिं तनु विनु लिखा चितेरे । धोये मिटै न मरे भीति दुख पाइय यहि तनु हेरे ॥ रविकर नीर बसै अति दारुण मकर रूप तेहि माहीं । बदनहीन सो ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं ॥ कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ युगल प्रबल करि माने । तुलसिदास परिहरै तीनि भ्रम सो आपन पहिचाने ॥ ॥ ११२ ॥ केशव कारण कौन गुसाईं । जेहि अपराध असाधु जानि मोहिं तजेहु अज्ञ की नाईं ॥ परमपुनीत सन्त कोमलचित तिनहिं तुमहिं बनिआई । तौ कत विप्र व्याध गणिकहि तारेहु कछु रही सगाई ॥ काल कर्मगति अगति जीव की सब हरि हाथ तुम्हारे ॥ सोइ कछु करहु हरहु ममता मम फिरहुँ न तुमहिं बिसारे ॥ जो तुम तजहु भजौं न आन प्रभु यह प्रमाणप्रण मोरे । मन क्रम वचन नरक सुरपुर जहँ तहँ रघुवीर निहोरे ॥ यद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सों करौं ढिठाई । तुलसिदास सीदत निशि दिन देखत तुम्हरी निठुराई ॥ ११३ ॥ माधव अब न द्रवहु केहि लेखे । प्रणतपाल प्रण तोर मोर प्रण जिअउँ कमलपद देखे ॥ जब लगि मैं न दीनदयालु तैं मैं न दास तैं स्वामी । तब लगि जो दुख सहेउँ कहेउँ नहिं यद्यपि अन्तर्यामी ॥ तैं उदार मैं कृपण पतित मैं तैं पुनीत श्रुति गावै । बहुत नात रघुनाथ तोहिं मोहिं अब न तजे बनिआवै ॥ जनक जननि गुरु बंधु सुहृद पति सब प्रकार हितकारी । द्वैत रूप तम कूप परौं नहिं अस कछु यतन विचारी ॥ सुन अदभ्रकरुणावारिजलोचन मोचनभयभारी । तुलसिदास प्रभु तव प्रकाश बिनु संशय टरै न टारी ॥ ११४ ॥ माधव मो समान जगमाहीं । सब विधि हीन मलीन दीन अति लीन विषय कोउ नाहीं ॥ तुम सम हेतु रहित कृपालु आरतहित ईश न त्यागी । मैं दुख शोक विकल कृपालु केहि कारण दया न लागी ॥ नाहिंन कछु अवगुण तुम्हार अपराध मोर मैं माना । ज्ञानभवन तनु दियहु नाथ सोउ पाय न मैं प्रभु जाना ॥ वेणु करील श्रीखण्ड वसन्तहि दूषण मृषा लगावै । सार रहित हतभाग्य सुरभि पल्लव सो कहु

कहँ पावै॥सब प्रकार मैं कठिन मृदुल हरि दृढ़विचार जिय मोरे। तुलसिदास प्रभु मोह शृंखला छुटिहि तुम्हारे छोरे ॥ ११५ ॥ माधव मोहफाँस क्यों टूटै। बाहर कोटि उपाय करिय अभ्यन्तर ग्रन्थि न छूटै ॥ घृतपूरण कराह अन्तर्गत शशिप्रतिबिम्ब दिखावै। ईंधन अग्नि लगाइ कल्पशत औटत नाश न पावै ॥ तरु कोटर महँ बस विहंग तरु काटे मरै न जैसे ॥ साधन करि अविचार हीन मन शुद्ध होइ नहिं तैसे ॥ अन्तर मलिन विषय मन अति तन पावन करिय पखारे। मरइ न उरग अनेक जतन बल्मीकि विविध विधि मारे ॥ तुलसिदास हरिगुरुकरुणा बिनु विमल विवेक न होई ॥ बिनु विवेक संसार घोर निधि पार न पावै कोई ॥ ॥ ११६ ॥ माधव असि तुम्हारि यह माया । करि उ-पाय पचि मरिय तरिय नहिं जब लगि करहु न दाया ॥ सुनिय गुनिय समुझिय समुझाइय दशा हृदय नहिं आवै । जेहि अ-नुभव बिनु मोह जनित भव दारुण बिपति सतावै ॥ ब्रह्म पियूषम-धुर शीतल जो पै मन सो रस पावै ॥ तौ कत मृगजल रूप विष-य कारण निशि वासर धावै ॥ जेहिके भवन विमल चिन्तामणि सो कत काँच बटोरै।स्वप्ने परवश पऱ्यो जागि देखत केहिजाइ निहोरै ॥ ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूठ कछु नाहीं । तुलसिदास हरिकृपा भ्रम यह भरोस मनमाहीं ॥ ११७ ॥ हे हरिकवन दोष तोहिं दीजै । जेहि उपाय स्वप्नेहुँ दुर्लभ गति सोइ निशिवासर कीजै। जानत अर्थ अनर्थ रूप तम कूप परब यहि लागे । तदपि न तजत श्वान अज खर ज्यों फिरत विषय अनुरागे ॥ भूत द्रोह-कृत मोहवश्यहित आपन मैं न विचारो। मद मत्सर अभिमान ज्ञान रिपु इनमहँ रहनि अपारो ॥ वेद पुराण सुनत समुझत रघु-नाथ सकलजगव्यापी। भेद नाहिं श्रीखण्ड वेणु इव सारहीन मन पापी ॥ मैं अपराधसिंधु करुणाकर जानत अन्तर्यामी । तुलसि-दास भवव्याल ग्रसित तव शरण उरगरिपुगामी ॥ ११८ ॥ हे हरि कवन यतन सुख मानहु। ज्यों गज दशन तथा मम करणी

सब प्रकार तुम जानहु ॥ जो कछु कहिय करिय भवसागर तरिय वत्सपद जैसे । रहनि आनि विधि कहिय आन हरिपद सुख पाइय कैसे ॥ देखत चारु मयूर नयन शुभ बोल सुधा इव सानी । सविषउरग आहार निठुर अस यह करणी वह वानी ॥ अखिल जीव वत्सल निर्मत्सर चरणकमल अनुरागी । ते तव प्रिय रघुबीर धीरमति अतिशय निज परत्यागी ॥ यद्यपि मम अवगुण अपार संसार योग्य रघुराया । तुलसिदास निजगुण विचारि करुणानिधान करु दाया ॥ ११९ ॥ हे हरि कवन यतन भ्रम भागै । देखत सुनत विचारत यह मन निज स्वभाव नाहिं त्यागै ॥ भक्ति ज्ञान वैराग्य सकल साधन यहि लागि उपाई । कोउ भल कहउ देउ कछु कोऊ असि वासना हृदय ते न जाई ॥ जेहि निशि सकल जीव सूतहिं तव कृपापात्र जन जागै । निज करणी विपरीत देखि मोहिं समुझि महाभय लागै ॥ यद्यपि भग्नमनोरथ विधि वश सुख इच्छित दुख पावै । चित्रकार करहीन यथा स्वारथ विनु चित्र बनावै ॥ हृषीकेश सुनि नाउँ जाउँ बलि अति भरोस जिय मोरे। तुलसिदास इन्द्रियसम्भवदुख हरे बनिहि प्रभु तोरे ॥ १२० ॥ हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी। यद्यपि मृषा सत्य भासै जब लगि नहिं कृपा तुम्हारी ॥अर्थ अविद्यमान जानिय संसृति नहिं जाइ गोसाईं । विनु बाँधे निज हठ शठ परवश परेउ कीर की नांई ॥ स्वप्ने व्याधि विविध बाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई। वैद्य अनेक उपाय करहिं जागे विनु पीर न जाई ॥ श्रुति गुरु साधु स्मृति संमत यह दृश्य सदा दुखकारी । तेहि विनु तजे भजे विनु रघुपति विपति सकैको टारी ॥ बहु उपाय संसारतरण कहँ विमलगिरा श्रुति गावै। तुलसिदास मैं मोर गये विनु जिय सुख कबहुँ न पावै ॥ ॥ १२१ ॥ हे हरि यह भ्रम की अधिकाई। देखत सुनत कहत समुझत संशय सन्देह न जाई ॥ जो जग मृषा ताप त्रय अनुभव होहि कहहु केहि लेखे। कहिन जाइ मृगवारि सत्य भ्रम ते दुख होइ विशेखे ॥ सुभगसेज सोवत स्वप्ने वारिधि बूड़त भय लागै। को-

टिहुँ नाव न पार पाव सो जब लगि आपु न जागै ॥ अनविचार रमणीय सदा संसार भयङ्कर भारी। सम संतोष दया विवेक ते व्यवहारी सुखकारी ॥ तुलसिदास सब विधि प्रपंच जग यदपि झूठ श्रुति गावै। रघुपति भक्ति सन्तसंगति विनु को भवत्रास नशावै ॥ १२२ ॥ मैं हरि साधन करइ न जानी। जस आमय भेषज न कीन्ह तस दोष कहा वरवानी ॥ स्वप्ने नृप कहँ घटै विप्रवध विकल फिरै अघ लागे। वाजिमेधशत कोटि करै नहिं शुद्ध होइ विनु जागे ॥ स्रग महँ सर्प विपुल भयदायक प्रगट होइ अविचारे। बहु आयुध धरि वल अनेक करि हारहि मरइ न मारे ॥ निज भ्रमते रविकरसम्भवसागर अतिभय उपजावै। अवगाहत वोहित नौकाचढ़ि कबहूं पार न पावै ॥ तुलसिदास जग आपु सहित जब लगि निर्मूल न जाई। तब लगि कोटि कल्प उपाय करि मरिय तरिय नहिं भाई ॥ १२३ ॥ अस कछु समुझि परत रघुराया ॥ विन तव कृपा दयालु दासहित मोह न छूटै माया। वाक्यज्ञानअत्यन्तनिपुण भवपार न पावै कोई। निशि गृह मध्य दीपकी बातन्ह तम निवृत्त नहिं होई ॥ जैसे कोउ इक दीन दुखी अति अशनहीन दुख पावै। चित्र कलपतरु कामधेनु गृह लिखे न विपति नशावै ॥ षटरस बहुप्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै। बिन बोले सन्तोष जनित सुख खाइसोइ पै जानै ॥ जब लगि नहिं निज हृदि प्रकाश अरु विषयत्रास मनमाहीं। तुलसिदास तब लगि जगयोनि भ्रमत स्वप्नेहुँ सुख नाहीं ॥ १२४ ॥ जो निज मन परिहरै विकारा। तौ कत द्वैतजनितसंसृति दुख संशय शोक अपारा ॥ शत्रु मित्र मध्यस्थ तीनि ये मन कीन्हे बरियाई। त्यागव गहव उपेक्षनीय अहि हाटक तृणकी नाई ॥ अशन वसन पशु वस्तु विविध विधि सब माहिमहँ रह जैसे। स्वर्ग नरक चर अचर लोक बहु बसत मध्य मन तैसे ॥ विटप मध्य पुत्रिका सूत्र महँ कंचुक विनहिं बनाये। मनमहँ तथा लीन नाना तनु प्रगटत अवसर पाये ॥ रघुपति भक्तिवारिछालित चित विनु प्रया-

सही सूझै। तुलसिदास कह चिद विलास जग बूझत बूझत बूझै ॥ ॥१२५॥मैं केहि कहौं विपति अति भारी।श्रीरघुवीर धीर हितका-री ॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तहँ बसे आइ बहु चोरा ॥ अ-ति कठिन करहिं वरजोरा। मानहिं नाहिं विनय निहोरा ॥ तम मो-ह लोभ अहङ्कारा। मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥ अति करहिं उपद्र-व नाथा। मर्दहिं मोहिं जान अनाथा ॥ मैं एक अमित वटपारा। कोउ सुनै न मोर पुकारा ॥ भागेहु नहिं नाथ उबारा। रघुनायक करहु सँभारा ॥ कह तुलसिदास सुनु रामा। लूटहिं तस्कर तव धामा ॥ चिन्ता यह मोहिं अपार। अपयश नहिं होइ तुम्हार॥ ॥ १२६ मन मेरे मानहिं शिख मेरी। जो निज भक्ति चहै हरि केरी ॥ उर आनहि प्रभु कृत हित जेते। सेवहि ते जे अपनपौ चेते ॥ दुख सुख अरु अपमान बड़ाई। सब सम लेखहिं विपति वि-हाई ॥ सुनु शठ काल ग्रसित यह देही। जनि तेहिं लागि विदूषहि केही ॥ तुलसिदास विनु असि मति आये। मिलहिं न राम कपट-लय लाये ॥ १२७ ॥ ॥ मैं जानी हरिपदरति नाहीं। स्वप्नेहुँ नहिं विराग मन माहीं ॥ जे रघुवीरचरण अनुरागे। तिन्ह सब भोग रो-ग सम त्यागे ॥ कामभुजङ्ग डसत जब जाही। विषय नींब कटु लगत न ताही ॥ असमंजस अस हृदय विचारी। बढ़त शोच नित नूतन भारी ॥ जब कब रामकृपा दुख जाई। तुलसिदास नहिं आन उपाई ॥ १२८ ॥ सुमिरु सनेह सहित सीतापति। रामचरण तजि नहिंन आन गति ॥ जप तप तीरथ योग समाधी। कलि म-ति विकल न कछु निरुपाधी ॥ करतहुँ सुकृत न पाप सिराहीं। रक्तबीज जिमि बाढ़त जाहीं ॥ हरणि एक अघ असुर जालिका। तुलसिदास प्रभु कृपाकालिका ॥ १२९ ॥ रुचिर रसना तू राम राम राम क्यों न रटत। सुमिरत सुख सुकृत बढ़त अघ अमंगल घटत ॥ बिनु श्रम कलिकलुषजाल कटु कराल कटत। दिनकरके उदय जैसे तिमिर तोम फटत ॥ योग याग जप विराग तप सुती-र्थ अटत। बाँधिवे को भवगयन्द रेणुकी रज्जु बटत ॥ परिहरि

सुरमणि सुनाम गुंजा लखि लटत। लालच लघु तेरो लखि तुल-
सि तोहिं हटत ॥ १३० ॥ राम राम राम राम राम राम जपत।
मंगलमुद उदित होत कलिमल छल छपत॥ कहुके लहे फल रसाल
बबुर बीज बपत। हारहि जनि जन्म जाय गालगूल गपत ॥
काल कर्म गुण स्वभाव सबके शीश तपत। रामनाम महिमा
की चरचा चले जपत॥ साधन विनु सिद्धि सकल विकल लोग
लपत। कलियुग वर बनिज विपुल नाम नगर खपत ॥ नाम
सों प्रतीत प्रीति हृदय सुथिर थपत। पावन किय रावन रिपु
तुलसिहुसे अपत॥ १२१ ॥ पावन प्रेम रामचरणकमल जनम ला-
हु परम। रामनाम लेत होत सुलभ सकल धरम ॥ योग मख
विवेक विरति वेद विदित करम। करिबे कहँ कटु कठोर सुनत
मधुर नरम॥ तुलसी सुनि ज्ञान बूझि भूलहि जनि भरम। तेहि
प्रभु को तू होहि जेहि सबहिं की शरम॥ १३२ ॥ रामसे प्रीतम
की प्रीतिरहित जीव जाय जियत। जेहि सुख सुख मानि लेत
सुख सो समुझ कियत॥ जहँ तहँ जेहि योनि जनम महि पताल
वियत। तहँ तहँ तू विषय सुखहि चहत लहत नियत ॥ कत
विमोह लट्यो फट्यो गगन मगन सियत। तुलसी प्रभु सुयश
गाइ क्यों न सुधा पियत॥ १३३ ॥ तोसे हौं फिरि फिरि हित प्रिय
पुनीत सत्य वचन कहत। सुनि मन गुणि समुझि क्यों न सुगम
सुगम गहत ॥ छोटो बड़ो खोटो खरो जग जो जहँ रहत।
अपने अपनेको भलो कहहु जो न चहत ॥ विधिलगि
लघुकीटअवधि सुख सुखी दुखदहत। पशुलौं पशुपालईश बां-
धत छोरत नहत॥ विषय मुद निहार भार शिरको कांधे ज्यों बहत। यों-
ही जियजानि मानि शठ तू सासति सहत॥ पायो केहि घृत विचार
हरिणवारि महत। तुलसी तकु ताहि शरण जाते सब लहत॥ १३४ ॥
तातेहों बार बार देवद्वार परिपुकार करत। आरति नति दीनता
कहे प्रभु संकट हरत॥ लोकपाल शोक विकल रावण डर डरत।
का सुन सकुचे कृपालु नरशरीर धरत॥ कौशिक मुनितीय जनक

शोच अनत जरत। साधन केहि शीतल भये सो न समुझि परत॥ केवट खग शबरि सहज चरण कमल नरत। सन्मुख तोहिं होत नाथ कुतरु सुफल फरत॥ बंधुवैर कपि विभीषण गुरुगलानि गरत। सेवा केहि रीझि राम किये सरिस भरत॥ सेवक भयो पवनपूत साहब अनुहरत। ताको लिये रामनाम सबको सुढर ढरत॥ जाने विनु राम रीति पचि पचि जग मरत। परिहरि छल शरण गये तुलसिहु से तरत॥ १२८॥

राग सूहो बिलावल।

राम सनेही सों तैं न सनेह कियो। अगम जो अमरनिहूं सो तनु तोहिं दियो॥

छंद।

दियो सुकलजन्म शरीर सुंदर हेतु जो फल चार को। जो पाइ पंडित परमपद पावत पुरारि मुरारि को॥ यह भरतखण्ड समीप सुरसरि थल भलो संगति भली। तेरी कुमति कायर कल्पवल्ली चहति है विष फल फली॥१॥ अजहूं समुझि चित्तदै सुनो परमारथ। है हित सो जगहूं जाहिते स्वारथ॥ स्वारथहि प्रिय स्वारथ सो कातैं कौन वेद बखानई। देखु खल अहिखेल परिहरि सो प्रभुहि पहिचानई॥ पितु मातु गुरु स्वामी अपनपौ तिय तनय सेवक सखा। प्रिय लगत जाके प्रेम सों विनुहेतु हित नाहिं तैं लखा॥ २॥ दूरि न सो हितू हेरहियेही है। छलहिछाँड़ि सुमिरे छोह किये ही है॥ किये छोह छाया कमल करकी भक्त पर भजतेहि भजै। जगदीशजीवन जीवको जो साज सब सबको सजै॥ हरिहि हरिता विधिहि विधिता शिवहिशिवता जो दई। सोइ जानकीपति मधुर मूरति मोदमयमंगलमई॥ ३॥ ठाकुर अतिहि बड़ो शील सरल सुठि। ध्यान अगम शिवहूं भेट्यो केवट उठि॥ भरि अंकभेट्यो सजलनयनसनेह सिथिल शरीरसों। सुर सिद्ध मुनि कवि कहत कोउ न प्रेमप्रियरघुवीर सों॥ खग शबरि निशिचर

भालु कपि किए आपुते वन्दित बड़े। तापर तिन्हकि सेवा सुमि-
रि जिय जात जनु सकुचनि गड़े ॥ ४ ॥ स्वामीको स्वभाव कह्यो
सो जब उर आनि हैं। शोच सकल मिटिहैं राम भलो मनमानिहैं ॥
भलो मानिहैं रघुनाथ जोरि जो हाथ माथो नाइहैं । तत्काल
तुलसीदास जीवन जन्म को फल पाइहैं ॥ जपिनाम करहि प्रणाम
कहि गुणग्राम रामहिं धरि हिये। विचरहि अवनि अवनीश चर-
णसरोज मनमधुकर किये ॥ ॥ १२६ ॥ जिय जबते हरिते बिल-
गान्यो। तबते देह गेह निज जान्यो ॥ मायावश स्वरूप बिसरायो।
तेहि भ्रमते दारुणदुख पायो ॥ पायो जो दारुण दुसह दुख सुख
लेश स्वप्नेहुँ नहिं मिल्यौ। भवशूल शोक अनेक जेहि तेहि पंथ
तू हठि हठि चल्यौ ॥ बहुयोनि जन्म जरा विपति मतिमन्द हरि
जान्यो नहीं। श्रीरामबिनु विश्राम मूढ़ विचार लखि पायो क-
हीं ॥ १ ॥ आनँदसिंधु मध्य तव वासा। बिनुजाने कस मरसि पिया-
सा ॥ मृगभ्रम वारि सत्य जियजानी। तहँ तू मगन भयो सुख-
मानी ॥ तहँमगन मज्जसि पानकरि त्रयकाल जलनाहींजहाँ । निज
सहज अनुभवरूप तू खल भूलि अब आयो तहाँ ॥ निर्मल निरं-
जन निर्विकार उदार सुखतैं परिहरचो ॥ निःकाज राज विहाय
नृप इव स्वप्नकारागृह परचो ॥ २ ॥ तैं निज कर्मडोरि दृढ़की-
न्ही। अपने करनि गाँठि गहि दीन्ही ॥ ताते परवश परचो
अभागे। ताफल गर्भवास दुख आगे। आगे अनेक समूह संसृति
उदरगत जान्यो सोऊ। शिरहेठ ऊपर चरण सङ्कट बात नहिं
पूछै कोऊ ॥ शोणित पुरिष जो मूत्र मल कृमि कर्दमावृत सेवही।
कोमलशरीर गँभीर वेदन शीशधुनि धुनि रोवही ॥ ३ ॥ तू निज
कर्मजाल जहँ घेरो। श्रीहरि संग तजों नहिं तेरो ॥ बहुविधि
प्रतिपालन प्रभुकीन्हो। परमकृपालु ज्ञान तोहिं दीन्हो ॥ तोहिं
दियो ज्ञान विवेक जन्म अनेक की तब सुधि भई। तेहि ईशकी
हौं शरण जाकी विषम माया गुण मई ॥ जेहि किये जीव निका-
य वश रसहीन दिन दिन अति नई ॥ सो करौ वेगि सँभार श्रीपति

विपति महँ जेहि मति दई॥४॥पुनि बहुविधि मलानि जिय मानी। अब जग जाइ भजों चक्रपानी॥ ऐसहि करि विचार चुप साधी। प्रसव पवन प्रेरेउ अपराधी॥ प्रेर्यो जो परमप्रचण्ड मारुत कष्ट नाना तैं सह्यो। सो ज्ञान ध्यान विराग अनुभव यातना पावक दह्यो॥ अति खेद व्याकुल अलपबल छिन एक बोलि न आवई। तब तीव्र कष्ट न जान कोउ सब लोग हर्षित गावई॥५॥ बाल दशा जेते दुख पाये। अति अनीश नहिं जाहिं गनाये॥ क्षुधा व्याधि बाधा भइ भारी। वेदन नहिं जानै महतारी॥ जननी न जानै पीर सो केहि हेतु शिशु रोदन करै। सोइकरै विविध उपाय जाते अधिक तुव छाती जरै॥ कौमार शैशव अरु किशोर अपार अघ को कहि सकै। व्यतिरेक तोहि निर्दय महाखल आन कहु को सहि सकै॥६॥ यौवन युवति संग रंग रात्यो। तब तू महा मोहमद मात्यो॥ ताते तजी धर्म मर्यादा। बिसरे तब सब प्रथम विषादा॥ बिसरे विषाद निकाय संकट समुझि नहिं फाटत हियो। फिरि गर्भगत आवर्त्त संसृति चक्र जेहि होइ सोइ कियो॥ कृमि भस्म विट परिणाम तनु तेहि लागि जगु वैरी भयो। परदार परधन द्रोहपर संसार बाढ़ै नितनयो॥ ७॥ देखतही आई विरुधाई। जो तैं स्वप्नेहुँ नाहिं बुलाई॥ ताके गुण कछु कहे न जाहीं। सो अब प्रगट देखु जग माहीं॥ सो प्रगट तनु जर्जर जरावश व्याधि शूल सतावई। शिरकम्प इन्द्रियशक्ति प्रतिहत वचन काहु न भावई॥ गृहपालहू ते अति निरादर खान पान न पावई। ऐसिहु दशा न विराग तहँ तृष्णा तरंग बढ़ावई॥८॥ काहि को सकै महाभव तेरे। जन्म एक के कछुक गने रे॥ खानि चारि सन्तत अवगाही। अजहुँ न करु विचार मनमाहीं॥ अजहूं बिचार विकार तजि भजुराम जनसुखदायकं। भवसिंधुदुस्तरजलरथं भजु चक्रधर सुरनायकं॥ विनुहेतु करुणाकर उदार अपारमायातारनं। कैवल्यपति जगपति रमापति प्राणपति गतिकारणं॥९॥ रघुपति भक्ति सुलभ सुखकारी।

सोत्रयताप शोकभयहारी ॥ विनु सतसंग भक्ति नहिं होई । ते तब मिलैं द्रवै जब सोई ॥ जब द्रवै दीनदयालु राघव साधु संगति पाइये। जेहि दरश परश समागमादिक पापराशि नशाइये ॥ जिन्हके मिले सुख दुख समान अमानतादिक गुण भये । मद मोह लोभ विषाद क्रोध सुबोधते सहजहि गये ॥ १० ॥ सेवत साधु द्वैत भय भागै । श्रीरघुवीर चरणलय लागै ॥ देहजनित विकार सब त्यागै । तब फिरि निजस्वरूप अनुरागै ॥ अनुराग-सों निजरूप जो जगते विलक्षण देखिये । संतोष सम शीतल सदा दम देहवंत न लेखिये॥निर्मल निरामय एकरस तेहि हर्ष शोक न व्यापई । त्रैलोक्यपावन सो सदा जाकी दशा ऐसी भई ११ जो तेहि पंथ चलै मन लाई । तौ हरि काहे न होइँ सहाई ॥ जो मारग श्रुति साधु दिखावै । तेहि पथ चलत सबै सुख पावै ॥ पावे सदासुख हरिकृपा संसार आशा तजि रहै । स्वप्नेहुँ नहीं दुख देत दरशन बात कोटिक को कहै ॥ द्विज देव गुरुहरिसंतविनु संसार पार न पावई । यह जानि तुलसीदास त्रासहरं रमापति गावई ॥ १२ ॥ १३७ ॥

राग बिलावल ।

जोपै कृपा रघुपति कृपालुकी वैर औरके कहा सरै । होइ न बांको बार भक्त को जो कोउ कोटि उपाय करै ॥ तके नीच जो मीच साधु की सोइ पामर तेहि मीच मरै । वेदविदित प्रह्लाद-कथा सुनि को न भक्तिपथ पाउँ धरै ॥ गज उधारि हरि थप्यो विभीषण ध्रुव अविचल कबहूं न टरै ॥ अंबरीषकी शाप सुरति करि अजहुँ महामुनि ग्लानि गरै । सो धों कहा जु न कियो सुयोधन अबुध आपने मान जरै॥ प्रभुप्रसाद सौभाग्य विजययश पांडव ने वरिआइ बरै। जो जो कूप खनैगो परकहँ सो शठ फिरि तेहि कूप परै । स्वप्नेहुँ सुख न सन्तद्रोही कहँ सुरतरु सोउ विषफरनिफरै ॥हैं काके द्वै शीश ईशके जो हठिजनकी सीम चरै ॥तुलसिदास रघुवीरबाहुबल सदा अभय काहू न डरै ॥ १३८ ॥

कबहूं सो करसरोज रघुनायक धरिहौ नाथ शीश मेरे । जेहि कर अभय किये जन आरत बारक विवश नाम टेरे ॥ जेहिकर कमल कठोर शंभुधनु भंजि जनक संशय मेट्यो । जेहि करकमल उठाइ बंधु ज्यों परम प्रीति केवट भेंट्यो ॥ जेहिकर कमल कृपालु गीधकहँ उदकदेइ निज लोक दियो । जेहि कर बालि विदारि दासहित कपिकुलपति सुग्रीव कियो ॥ आयो शरण सभीत विभीषण जेहि करकमल तिलक दीन्हों । जेहि कर गहि शर चाप असुरहति अभयदान देवन्ह दीन्हों ॥ शीतल सुखद छाँह जेहि करकी मेटति पाप ताप माया । निशि बासर तेहि करसरोजकी चाहत तुलसिदास छाया ॥ १२९ ॥ दीनदयालु दुरित दारिद दुख दुनी दुसह तिहुँताप तई है ॥ देव दुआर पुकारत आरत सबकी सब सुखहानि भई है ॥ प्रभुके वचन वेदबुधसम्मत ममभूरति महि देवमई है । तिन्हकी मति रिस राग मोह मद लोभ लालची लीलि लई है ॥ राज समाज कुसाज कोटि कटु कलपत कलुष कुचाल नई है । नीति प्रतीति प्रीति परमिति पति हेतु बाद हठि हेरि हई है ॥ आश्रम वर्ण धर्म विरहित जग लोक वेद मर्याद गई है । प्रजापतित पाखण्ड पापरत अपने अपने रंग रई है॥शांतिसत्य शुभरीति गई घटि बढ़ी कुरीति कपट कलई है । सीदत साधु साधुता शोचति खल विलसति हुलसति खलई है ॥ परमारथ स्वारथ साधनभये अफल सकल नहिं सिद्धि सईहै । कामधेनु धरणी कलि गोमर विवश विकल जामति न बईहै ॥ कलि करणी वरणिये कहाँलों करत फिरत बिनु टहल टईहै । तापर दाँत पीसि कर मींजत को जाने चित कहा ठईहै ॥ त्यों त्यों बोझ चढ़त शिर ऊपर ज्यों ज्यों शीलवश ढीलदईहै । सरुष वरजि तरजिये तरजनी कुम्हिलैहै कुम्हड़ेकी जई है ॥ दीजै दादि देखि नातो बलि मही मोद मंगल रितईहै । मेरे भाग अनुराग लोग कहैं राय अवधि चितवनि चितईहै ॥ विनती सुनि सानन्द हेरि हँसि करुणा वारि भूमि भिजई है । रामराज भ-

यो काज शकुन शुभ राजा राम जगत विजईहै ॥ समरथ बड़ो सुजान सुसाहब सुकृत सैन हारत जितईहै । सुजन स्वभाव सराहत सादर अनायास साँशति वितईहै ॥ उथपे थपन उजारि बसावन गई बहोरि विरद सदईहै । तुलसी प्रभु आरत आरतिहर अभय बाँह केहि केहि न दईहै ॥ १४० ॥ ते नर नरकरूप जीवत जग भवभञ्जन पदविमुख अभागी । निशि बासर रुचि पाप अशुचिमन खलमति मलिन निगमपथत्यागी ॥ नहिं सतसंग भजन नहिं हरिको श्रवणन राम कथा अनुरागी । सुत वित दार भवन ममता निशि सोवत अति न कबहुँ मति जागी॥तुलसिदास हरिनाम सुधा तजि शठ हठि पियत विषय विष मांगी । शूकर श्वान शृगाल सरिस जन जन्मत जगत जननिदुख लागी ॥ १४१ ॥ रामचन्द्र रघुनायक तुम सों हों विनती केहि भाँति करों । अघ अनेक अवलोकि आपने अनघ नाम अनुमानि डरों ॥ परदुखदुखी सुखी परसुख ते सन्तशील नहिं हृदय धरों । देखि आनकी विपति परमसुख सुनि सम्पति विनु आगि जरों ॥ भक्ति विराग ज्ञान साधन कहि बहुविधि डहँकत लोग फिरों । शिव सरवस सुखधाम नाम तव बेंचि नरकप्रद उदर भरों ॥ जानत हूं निज पाप जलधि जिय जलसीकरसम सुनत लरों । रजसम पर अवगुण सुमेरु करि गुण गिरि सम रजते निदरों ॥ नाना वेष बनाइ दिवस निशि परवित जेहि तेहि जुगति हरों । एको पल न कबहुं अलोल चित हित दै पदसरोज सुमिरों ॥ जो आचरण विचारहु मेरो कलप कोटि लगि औटि मरों । तुलसिदास प्रभुकृपा विलोकनि गोपद ज्यों भवसिंधु तरों ॥ १४२ ॥ सकुचत हौं अति राम कृपानिधि क्योंकरि विनय सुनावों ॥ सकल धर्म विपरीत करत केहि भाँति नाथ मन भावों ॥ जानत हू हरि रूप चराचर मैं हठि नयनन लावों । अंजन केश शिखा युवती तहँ लोचन शलभ पठावों ॥ श्रवणन्हिको फल कथा तिहारी यह समुझों समुझावों । तिन्ह श्रवणन्हि परदोष निरन्तर सुनि सुनि भरि भरि तावों ॥ जेहि रसना गुण गाइ तिहारे

बिनु प्रयास सुख पावों । तेहि सुख पर अपवाद भेक ज्यों रटि रटि जन्म नशावों ॥ करहु हृदय अति विमल बसहिं हरि कहि कहि सबहि शिखावों । हौं निज उर अभिमान मोह मद खलमण्डली बसावों ॥ जो तनु धरि हरिपद साधहिं जन सो बिनु काज गवावों । हाटक घट भरि धय्यो सुधागृह तजि नभ कूप खनावों ॥ मन क्रम वचन लाइ कीन्हे अघ ते करि यतन दुरावों । पर प्रेरित ईर्षा वश कबहुँक कियो कछु शुभ सो जनावों ॥ विप्रद्रोह जनु बाँट पय्यो हठि सबसों वैर बढ़ावों । ताहू पर निजमति बिलास सब सन्तन माँझगनावों ॥ निगम शेष शारद निहोरि जो अपने दोष कहावों । तौ न सिराहिं कलपशत लगि प्रभु कहा एक मुख गावों ॥ जो करणी आपनी विचारौं तौ कि शरण हौं आवों । मृदुल स्वभाव शील रघुपति को सो बल मनहिं दिखावों ॥ तुलसिदास प्रभु सो गुण नहिं जेहि स्वप्नेहुँ तुमहिं रिझावों । नाथ कृपा भवसिंधु धेनुपद सम जो जानि सिरावों ॥ १४३ ॥सुनहु राम रघुवीर गुसांई मन अनीतिरत मेरो।चरणसरोज बिसारि तिहारे निशिदिन फिरत अनेरो ॥ मानत नाहिं निगम अनुशासन त्रास न काहू केरो । भूल्यो शूल कर्म कोलुन्ह तिल ज्यों बहु बारनि परो ॥ जहँ सतसंग कथा माधव की स्वप्नेहुँ करत न फेरो । लोभ मोह मद काम क्रोधरत तिन्ह सों प्रेम घनेरो ॥ परगुण सुनत दाह परदूषण सुनत हर्ष बहुतेरो । आप पापको नगर बसावत सहि न सकत परखेरो ॥ साधन फल श्रुति सार नाम तव भव सरिता कहँ बेरो । सो परकर काकिनी लागि शठ बेंचि होत हठि चेरो ॥ कबहुँ कहौं संगति स्वभाव ते जाउँ सुमारग नेरो । तब करि क्रोध संग कुमनोरथ देत कठिन भट भेरो ॥ इक हौं दीन मलीन हीनमति विपति जाल अति घेरो । तापर सहि नजाइ करुणानिधि मनको दुसह दरेरो ॥ हारि पय्यों करि यत्य बहुत विधि ताते कहत सबेरो । तुलसिदास यह त्रास मिटै जब हृदय करहु तुम डेरो ॥ १४४ ॥ सो धों को जो नाम लाज ते नहिं राख्यो रघु-

वीर । कारुणीक बिनु कारणही हरि हरी सकल भवभीर ॥ वेद-विदित जगविदित अजामिल विप्रबन्धु अघधाम । घोर यमालय जात निवाऱ्यो सुत हित सुमिरत नाम ॥ पशु पाँवर अभिमान सिंधु गज ग्रस्यो आइ जब ग्राह । सुमिरत सुकृत सपदि आये प्रभुहऱ्यो दुसह उर दाह ॥ व्याध निषाद गृध्र गणिकादिक अगणित अवगुणमूल । नाम ओटते राम सबनिकी दूरि करी सब शूल ॥ केहि आचरण घाटिहौं तिन्हते रघुकुलभूषण भूप । सीदत तुलसिदास निशि वासर पऱ्यो भीमतमकूप ॥ १४५ ॥ कृपासिंधु जनदिनदुवारे दादि न पावत काहे । जब जहँ तुमहिं पुकारत आरत तब तिन्हके दुख दाहे ॥ गज प्रह्लाद पांडुसुत कपि सबके रिपु संकट मेट्यो । प्रणत बन्धुभय विकल विभीषण उठि सो भरत ज्यों भेट्यो ॥ मैं तुम्हरे लै नाम ग्राम एक उर आपने बसावौं । भजन विवेक विराग लोगभले क्रम क्रम करि ल्यावौं ॥ सुनि रिसभरे कुटिल कामादिक करहिं जोर बरिआई । तिन्हहिं उजारि नारि अरि धन पुर राखहिं रमा गुसांई ॥ सम सेवा छल दान दंड हौं रचि उपाय पचिहाऱ्यो । बिनु कारणके कलह बड़ो दुख प्रभु सों प्रगटि पुकाऱ्यो ॥ सुरस्वारथी अनीश अलायक निठुर दया चित नाहीं । जाउँ कहाँ को विपति निवारक भवतारक जगमाहीं ॥ तुलसी यदपि पोच तौ तुम्हरो और न काहू केरो । दीजे भक्ति बाँह बैरक ज्यों सुबस बसै अब खेरो ॥ १४६ ॥ हौं सब विधि राम रावरो चाहत भयो चेरो । ठौर ठौर साहबी होत है ख्याल काल कलि केरो ॥ काल कर्म इन्द्रिय विषय गाहकगणघेरो । हौं न कबूलत बाँधिकै मोल करत करेरो ॥ वंदि छोर तेरो नाम है विरुदैत बड़ेरो । मैं कह्यो तब छल प्रीति कै मांगे उर डेरो ॥ नाम ओट अलबगि बच्यों मलयुग जग जेरो । अब गरीबजन पोषिये पाइबो न हेरो ॥ जेहि कौतुक बक श्वानको प्रभु न्याय निबेरो । तेहि कौतुक कहिये कृपालु तुलसी है मेरो ॥ १४७॥ कृपासिंधु ताते रहौं निशि दिन मनमारे । महाराज लाजआपुहि

निज जाँघ उघारे ॥ मिल्यो रहैं मारचो चहैं कामादि संघाती । मो विनु रहैं न मेरिये जारैं छल छाती ॥ बसतहिये हित जानि मैं सबकी रुचि पाली । कियो कथिकको दंड हौं जड़ कर्म कुचाली ॥ देखी सुनी न आजुलौं अपनायत ऐसी । करहिं सबै शिर मेरहीं फिरि परै अनैसी ॥ बड़े अलेखी लखिपरे परिहरे न जाहीं ॥ असमंजस में मगन हौं लीजे गहि बाहीं ॥ वारक बलि अवलोकिये कौतुक जन जीको । अनायास मिटि जाइगो संकट तुलसी को ॥ ॥ १४८ ॥ कहौं कौनमुँहु लाइके रघुवीर गुसांई । सकुचत समुझत आपनी सब सांइ दोहाई ॥ सेवत वश सुमिरत सखा शरणागत सोहौं । गुणगण सीतानाथके चित करत न हो हौं ॥ कृपासिंधु बंधुदीनके आरत हितकारी । प्रणतपाल विरुदावली सुनि जानि विसारी ॥ सेइ न धेइ न सुमिरिके पदप्रीति सुधारी । पाइ सुसाहिब राम सों भरिपेट बिगारी ॥ नाथगरीबनिवाज हैं मैं गही गरीबी । तुलसी प्रभु निज औरते बानि परै सो कीबी ॥ १४९ ॥ कहाँ जाउँ कासों कहों और ठौर न मेरे । जन्म गवायों तेरेही द्वार किंकर तेरे ॥ मैं तो बिगारी नाथ सों आरतिके लीन्हे। तोहिं कृपानिधि क्यों बनै मेरीसी कीन्हे ॥ दिन दुरदिन दिन दुर्दशा दिन दुखदिन दूषण । जबलौं तू न बिलोकि है रघुवंशविभूषण ॥ दई पीठ विनु डीठ मैं तुम विश्वविलोचन । तोसों तुहीं न दूसरो नत शोचविमोचन॥ पराधीन देवदीन हौं स्वाधीन गुसांई । बोलनिहारे सोंकरै बलि विनय कि झांई ॥ आपु देखि मोहिं देखिये जन मानिय साँचो । बड़ी ओट राम नामकी जेहि लयो सो बाँचो ॥ रहनि रीतिरामरावरी नित हिय हुलसी है । ज्यों भावै त्यों करु कृपा तेरो तुलसी है ॥ १५० ॥ रामभद्र मोहिं आपनो शोच है अरु नाहीं । जीव सकल संतापके भाजन जगमाहीं ॥ नातो बड़े समर्थ सों एक और किधो हूं । तोको मोसे अति घने मोको इक तो हूं ॥ बाड़ि गलानि हानि है हिये सर्वज्ञ गुसांई । कूर कुसेवक कहत हौं सेवक की नाँई ॥ भलो पोच रामकोकहै मोहिं सब नर नारी । बिगरे से-

वक श्वान ज्यों साहब शिर गारी ॥ असमंजस मनको मिटै सो उपाय न सूझै। दीनबंधु कीजै सोई बनिपरै जो बूझै॥ विरदावली विलोकिये तिन्ह में कोइ होहौं। तुलसी प्रभुको परिहरचो शरणागत ।॥१५१॥जो पै चेराई राम की करतो न लजातो। तौ तू दास कुदाम ज्यों कर कर न विकातो ॥ जपत जीह रघुनाथको नाम नहिं अलसातो। बाजीगरके सूम ज्यों खल खेह नखातो॥ जो तू मन मेरे कहे राम नाम कमातो। सीतापति सन्मुख सुखी सब ठाँव समातो ॥ राम सोहाते तोहिं जो तू सबहि सोहातो। काल कर्म कुल कारनी कोऊ न कोहातो ॥ रामनाम अनुरागही जिय जो रति आतो। स्वारथ परमारथ पथी तोहिं सब पतिआतो। सेइ साधु सुनि समुझिकै परपीर पिरातो। जन्म कोटि को काँदलो ह्रद हृदय थिरातो। भव मग अगम अनन्त है विनु श्रमहि सिरातो। महिमा उलटे नाम की मुनि कियो किरातो॥ अमर अगम तनु पाइ सो जड़ जाय न जातो। होतो मंगल मूल तू अनुकूल विधातो॥जो मन प्रीति प्रतीति सों राम नामहि रातो। तुलसी रामप्रसाद सो तिहुँ ताप नतातो॥ १५२ ॥राम भलाई आपनी भल कियो न काको। युग युग जानकीनाथ जग जागत साको॥ ब्रह्मादिक विनती करी कहि दुख वसुधा को। रविकुलकैरवचन्द भो आनन्द सुधा को॥ कौशिक गरत तुषार ज्यों तकि तेज तिया को। प्रभु अनहित हितको दियो फल कोप कृपा को॥ हरचो पाप आप जाइकै सन्ताप शिलाको। शोचमगन काढ़यो सही साहब मिथिलाको॥ रोषराशि भृगुपति धनी अहमिति ममता को। चितवत भाजन कर लियो उपसम समता को। मुदित मानि आयसु चले वन मातु पिताको ॥ धर्मधुरन्धर धीर धुर गुण शीलजिता को॥ गुह गरीब गत ज्ञातिहूं जेहि जिउ न भखा को। पायो पावन प्रेमते सन्मान सखाको ॥ सद्गति शबरी गिद्धकी सादर कर ताको। शोचसींव सुग्रीवके संकटहरताको॥ राखि विभीषण को सकै तेहि काल कहां को। आज विराजत

राजहो दशकण्ठ जहां को । बालिसवासी औधके बूझिये नखा-को ॥ ते पाँवर पहुँचे तहाँ जहँ मुनि मन थाको । गति न लहै रा-मनाम सों विधि सों शिरजाको । सुमिरत कहत प्रचारिकै वल्लभ गिरिजा को ॥ अकनि अजामिलकी कथा सानन्द न भाको ॥ नाम-लेत कलिकालहूं हरिपुरहि नगाको ॥ रामनाम महिमाकरै काम भूरुह आको ॥ साक्षी वेद पुराण है तुलसीतन ताको ॥ १५३ ॥ मेरे रावरीये गति है रघुपति बलि जाउँ ॥ निलज नीच निर्धन नि-र्गुण कहँ जग दूसरो न ठाकुर ठाउँ ॥ हैं घर घर भव भरे सुसाहिब सूझत सबनि आपनो दाउँ । वानर बंधु बिभीषण हित बिन कोश-लपाल कहूं न समाउँ ॥ प्रणतारतिभंजन जनरंजन शरणागत प-विपंजर नाउँ । कीजे दास दास तुलसी अब कृपासिंधु बिनु मोल बिकाउँ ॥ १५४ ॥ देव दूसरो कौन दीनको दयाल । शीलनिधान सुजान शिरोमणि शरणागत प्रिय प्रणतपाल ॥ को समर्थ सर्वज्ञ सकल प्रभु शिव सनेह मानस मराल । को साहब किये मीत प्री-तिवश खग निशिचर कपि भील भाल ॥ नाथ हाथ माया प्रपञ्च सब जीव दोष गुण कर्म काल । तुलसिदास भलो पोच रावरो नेकु निरखि कीजिये निहाल ॥ १५५ ॥

राग सारंग ।

विश्वास एक राम नामको।मानत नहीं प्रतीति अनत ऐसोई स्व-भाव मन वाम को ॥ पढ़िबो पर्यो न छठी छमत ऋग् यजुर अथर्वण साम को ॥ व्रत तीरथ तप सुनि सहमत पचि मरै करै तन छाम को ॥ कर्मजाल कलिकाल कठिन आधीन सुसाधित दाम को ॥ ज्ञान विराग योग जप तप भय लोभ मोह कोह काम को ॥ सब दिन सब लायक भव गायक रघुनायक गुणग्राम को । बैठे नाम का-म तरु तर डर कौन घोर घन घाम को ॥ कोजानै को जैहै यमपुर को सुरपुर परधाम को । तुलसिहि बहुत भलो लागत जग जी-वन रामगुलाम को ॥ १५६ ॥ कलि नाम कामतरु राम को । दलनिहार दारिद दुकाल दुख दोष घोर घन घाम को ॥ नाम

लेत दाहिनो होत मन वाम विधाता वामको । कहत मुनीश म-
हेश महातम उलटे सूधे नाम को ॥ भलो लोक परलोक तासु
जाके वल ललित ललाम को । तुलसी जग जानियत नाम ते
शोच न कूच मुकामको ॥ १५७ ॥ सेइये सुसाहब राम सो ।
सुखद सुशील सुजान शूर शुचि सुन्दर कोटिक काम सो ॥ शा-
रद शेष साधु महिमा कहैं गुण गण गायक साम सो । सुमिरि
सप्रेम नाम जासों रति चाहत चन्द्र ललाम सो ॥ गमन विदेश
न लेश कलेश को सकुचत सकृत प्रणाम सो । साखी ताको वि-
दित विभीषण बैठो है अविचल धाम सो ॥ टहल सहज जन म-
हल महल जागत चारो युगयाम सो । देखत दोष न खीझत री-
झत सुनि सेवक गुणग्राम सो ॥ जाके भजे तिलोक तिलक भये
त्रिजग योनि तनु ताम सो । तुलसी ऐसे प्रभुहि भजै जो न ताहि
विधाता वाम सो ॥ १५८ ॥

राग नट।

कैसे देउँ नाथहि खोरि । काम लोलुप भ्रमत मन हरिभक्ति
परिहरि तोरि ॥ बहुत प्रीति पुजाइबे पर पूजिबे पर थोरि । देत
शिष शिखयो न मानै मूढ़ता असि मोरि ॥ किये सहित सनेह जे
अघ हृदय राखै चोरि। संग वशकिये शुभ सुनाये सकल लोक नि-
होरि ॥ करों जो कछु धरों सचि पचि सुकृत शिला बटोरि । पै-
ठि उर वरवश दयानिधि दम्भ लेत अजोरि ॥ लोभ मनहिं नचा-
व कपि ज्यों गरे आशा डोरि । बात कहौं बनाइ बुध ज्यों वरवि-
राग निचोरि ॥ एतेहुँ पर तुम्हरो कहावत लाज अँचई घोरि ।
निलजता पर रीझि रघुवर देह तुलसिहिं छोरि ॥१५९॥ है प्रभु मेरोई
सब दोषु । शीलसिंधु कृपालु नाथ अनाथ आरतपोषु ॥ वेष
वचन विराग मन अघ अवगुणनिको कोषु । राम प्रीति प्रतीति पो-
ले कपट करतब ठोषु॥ राग रंग कुसंगही सो साधु संगति रोषु ।
चहत केहरि यशहि सेइ शृगाल ज्यों खरगोसु ॥ शंभु शिखवन रस-
नहूं नित रामनामहि घोषु । दम्भहूं कलिनाम कुम्भज शोच सा-

गरसोषु ॥ मोद मंगल मूल अति अनुकूलनिज निरयोषु । रामनाम प्रभाव सुनि तुलसिहुँ परम सन्तोषु ॥ १६० ॥ मैं हरि पतितपावन सुने। मैं पतित तुम पतितपावन दोउ वानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल साखि निगमनि भने । और अधम अनेक तारे जात कापै गने ॥ जानि नाम अजानि लीन्हें नरक यमपुर मने। दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने॥ १६१ ॥

राग मलार ।

तोसों प्रभु जो पै कहुँ कोउ होतो। तौ सहि निपट निरादर निशि दिन रटिलटि ऐसो घटिकोतो ॥ कृपासुधा जलदानि माँगिवो कहो सो साँच निसोतो । स्वाति सनेह सलिल सुख चाहत चित चातक को पोतो ॥ काल कर्म वश मन कुमनोरथ कबहुँ कबहुँ कछु भोतो । ज्यों मुदमय बसि मीन वारि तजि उछरि भभरि लेत गोतो ॥ जितो दुराउ दास तुलसी उर क्यों कहि आवत ओतो । तेरे राज राय दशरथके लयो बयो बिनु जोतो ॥ १६२ ॥

राग सोरठा ।

ऐसो को उदार जगमाहीं । विनु सेवा जो द्रवै दीनपर रामसरिस कोउ नाहीं । जो गति योग विराग यत्नकरि नहिं पावतमुनि ज्ञानी । सो गति देत गिद्ध शबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी । जो सम्पति दशशीश अर्पि करि रावण शिव पहँ लीन्ही । सो सम्पदा विभीषण कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही ॥ तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो । तौ भजु राम काम सब पूरण करैं कृपानिधि तेरो ॥ १६३ ॥ एकै दानि शिरोमणि साँचो । जिहिं यांच्यो सो याचकतावश फिरि बहु नाच न नाचो ॥ सब स्वारथी असुर सुर नर मुनि कोउ न देत विनु पाये । कोशलपाल कृपालु कल्पतरु द्रवत सकृत शिरनाये ॥ हरिहुँ और अवतार आपन राखी वेद बड़ाई । लै चिउरा निधि दई सुदामहिं यद्यपि बाल मिताई ॥ कपि शबरी सुग्रीव विभीषण को नहिं कियो अयाची। अब तुलसिहि दुख देति दयानिधि दारु-

ण आश पिशाची॥ १६४ ॥ जानत प्रीति रीति रघुराई । नाते सब हाते करि राखत रामसनेह सगाई ॥ नेह निबाहि देह तजि दशरथ कीरति अचल चलाई । ऐसेहुँ पितु ते अधिक गीध पर ममता गुण गरुआई ॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया बिसराई । रण पर्‌यो बंधु विभीषणहीको शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भइ जब जहँ पहुनाई । तब तहँ कहि शब-रीके फलनि की रुचि माधुरी नपाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुचि शिरनाई । केवट मीत कहे सुख मानत वानर बंधु बड़ाई ॥ प्रेमकनौडो राम सों प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल न भाई । ऋणी तोर हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानिहि को सेवकाई ॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई । तौ तोहिं जन्मि जाय जननी जड़ तनु तरुणतागँवाई॥ १६५ ॥ रघुवर रावरि यहै बड़ाई । निदरि गनी आदर गरीब पर करत कृपा अधिकाई ॥ थके देव साधन अनेक करि स्वप्नेहुँ नहिं देत दिखाई । केवट कुटिल भालु कपिको नृप कियो सकुल सँग भाई ॥ मिलि मुनिवृन्द फिर-त दण्डकवन सो चरचौ न चलाई । बारहि बार गृध्र शबरीकी वर्णत प्रीति सुहाई ॥श्वान कहेते किये पुर बाहर यती गयन्द चढ़ाई। तियनिन्दक मतिमन्द प्रजा रज निज नय नगर बसाई ॥ यह दरबार दीनको आदर रीति सदा चलि आई । दीनदयालु दीन तुलसीकी काहु न सुरति कराई ॥ १६६ ॥ ऐसे राम दीनहित-कारी । अतिकोमल करुणानिधान विन कारण परउपकारी ॥ साधन हीन दीन निज अघवश शिला भई मुनि नारी ॥ गृहते गवनि परशि पद पावन घोर शापते तारी ॥ हिंसारत निषाद ता-मस वपु पशु समान वनचारी । भेंट्यो हृदय लगाइ प्रेमवश नहिं कुल जाति बिचारी ॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपतिसुत कहि न जाइ अति भारी । सकल लोक अवलोकि शोकहत शरणगये भय टारी ॥ विहँगयोनि आमिष अहार पर गीध कौन व्रतधारी । जन-कसमान क्रिया ताकी निज कर सब भाँति सँवारी ॥ अधमजाति

शबरी योषित शठलोक वेद ते न्यारी। जानि प्रीति दै दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी॥ कपि सुग्रीव बंधुभय व्याकुल आयो शरण पुकारी। सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो वालि सहि गारी॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी। शरण गये आगे ह्वै लीन्हों भेंट्यो भुजा पसारी॥ अशुभ होइ जिनके सुमिरे ते वानर ऋच्छ विकारी। वेदविदित पावन कियेते सब महिमा नाथ तुम्हारी॥ कहँ लगि कहों दीन अगणित जिन्ह की तुम विपति निवारी। कलिमलग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी॥॥ १६७॥ रघुपतिभक्ति करत कठिनाई। कहत सुगम करणी अपार जाने सोइ जेहि बनिआई॥ जो जेहि कला कुशल ताकहँ सोइ सुलभ सदा सुखकारी। सफरी सन्मुख जल प्रवाह सुरसरी बहे गज भारी॥ ज्यों शर्करा मिलै सिकतामहँ बल ते न कोउ बिलगावै। अति रसज्ञ सूक्षम पिपीलिका विनुप्रयासही पावै॥ सकल दृश्य निज उदर मेलि सोवै निद्रा तजि योगी। सोइ हरिपद अनुभवै परमसुख अतिशय द्वैत वियोगी॥ शोक मोह भय हर्ष दिवस निशि देश काल तहँ नाहीं। तुलसिदास यहि दशाहीन संशय निर्मूल न जाहीं॥ १६८॥ जोपै रामचरण रति होती। तौ कत त्रिविधशूल निशि वासर सहते विपति निसोती॥ जो संतोष सुधा निशि वासर स्वप्नेहुँ कबहुँकपावै। तौ कत विषय विलोकि झूंठ जल मन कुरंग ज्यों धावै॥ जो श्रीपति महिमा विचारि उर भजते भाव बढ़ाए। तौ कत द्वारद्वार कूकर ज्यों फिरते पेट खलाए॥ जे लोलुप भये दास आशके ते सबही के चेरे। प्रभु विश्वास आश जीती जिन्ह ते सेवक हरिकेरे॥ नहिं एकौ आचरण भजन को विनय करत हौं ताते। कीजै कृपा दासतुलसी पर नाथ नामके नाते॥॥ १६९॥ जो मोहिं राम लागते मीठे। तौ नवरस षटरस रस अनरस ह्वै जाते सब सीठे॥ वंचक विषय विविध तनु धरि अनुभवे सुने अरु डीठे। यह जानत हौं हृदय आपने स्वप्ने न अघाइ उबीठे॥ तुलसिदास प्रभु सों एकहि बल वचन कहत

अति ढीठे । नामकि लाज राम करुणा करि केहि न दिये करि चीठे ॥ १७० ॥ यों मन कबहूँ तुमहिं न लाग्यो । ज्यों छल छाँड़ि स्वभाव निरन्तर रहत विषय अनुराग्यो ॥ ज्यों चितई परनारि सुने पातक प्रपंच घर घर के । त्यों न साधु सुरसरितरंग निर्मल गुणगण रघुवर के ॥ ज्यों नासा सुगंधरसवश रसना षटरसरतिमानी । रामप्रसाद मालजूठन लगि त्यों न ललकि ललचानी ॥ चंदन चन्द्रवदनि भूषण पट ज्यों चह पाँवर परस्यो । त्यों रघुपतिपदपद्म परशको तनु पातकी न तरस्यो ॥ ज्यों सब भाँति कुदेव कुठाकुर सेए वपु वचन हियेहूं । त्यों न राम सुकृतज्ञ जे सकुचत सकृत प्रणाम किये हूँ । चंचल चरण लोभ लगि लोलुप द्वार द्वार जग बागे । रामसीय आश्रमनि चलत त्यों भये न श्रमित अभागे ॥ सकल अंगपदविमुख नाथ मुख नामकी ओटलई है । है तुलसिहि परतीति एक प्रभु मूरति कृपामई है ॥ १७१ ॥ कीजे मोको यम यातनामई । राम तुम से शुचि सुहृद साहिबहि मैं शठ पीठि दई ॥ गर्भवास दश मास पालि पितु मातु रूप हित कीन्हो । जड़हि विवेक सुशील खलहि अपराधिहि आदर दीन्हों ॥ कपट करौं अन्तर्यामिहुं सों अघ व्यापकहिं दुरावौं । ऐसहु कुमति कुसेवक पर रघुपति न कियो मनबावौं ॥ उदर भरों किंकर कहाइ बेच्यो विषयनि हाथ हियो है । मोसे वंचक को कृपालु छल छाँड़ि कै छोहु कियो है ॥ पल पलके उपकार रावरे जानि बूझि सुनि नीके । भिद्यो न कुलिशहु ते कठोर चित कबहुँ प्रेम सिय पीके ॥ स्वामीकी सेवक हितता सब कछु निज सांइ दोहाई । मैं मति तुला तौलि देखो भई मेरिहि दिशि गरुआई ॥ एतेहु पर हितकरत नाथ मेरो करि आयो अरु करिहैं । तुलसी अपनी ओर जानियत प्रभुहि कनोडोइ भरिहैं ॥ १७२ ॥ कबहुँक हों यहि रहनि रहौंगा । श्रीरघुनाथ कृपालु कृपात संत स्वभाउ गहौंगो ॥ यथालाभ संतोष सदाकाहू सों कछू न चहौंगा । परहित निरत निरंतर मन क्रम वचन नेम

निबहौंगो ॥ परुष वचन अति दुसह श्रवण सुनि तेहि पावक न दहौंगो। विगत मान सम शीतल मन पर गुण अवगुण न कहौं-गो ॥ परिहरि देहजनित चिन्ता दुख सुख समबुद्धि सहौंगो । तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि अविचल हरि भक्ति लहौंगो ॥ ॥ १७३ ॥ नाहिन आवत आन भरोसो । यहि कलिकाल सकल साधनतरु है श्रम फलनि फरोसो ॥ तप तीरथ उपवास दान मख जेहि जो रुचै करो सो। पायहि पै जानिबो कर्म फल भरि भरि बे-द परोसो ॥ आगम विधि जप योग करत नर सरत न काज खरोसो। सुख स्वप्नेहु न योग सिधि साधन रोग वियोग धरोसो ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि ज्ञान विराग हरोसो । बिगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरोसो ॥ बहुमत सुनि बहुपंथ पुराणनि जहाँ तहाँ झगरोसो । गुरु कह्यो राम भजन नीको मोहिं लागत राम राज डगरोसो ॥ तुलसी विनु परतीति प्रीति फिर फिरि पचि मरै मरो सो ॥ रामनाम बोहित भवसागर चाहै तरन तरोसो ॥ १७४ ॥ जाके प्रिय न राम वैदेही। सो छाँड़िये कोटि वैरीसम यद्यपि परमसनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बंधु भरत महतारी । बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज वनितनि भयो मुद मंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँलों। अञ्जन कहा आँखि जेहि फूटै बहुतक कहौं क-हाँ लौं ॥ तुलसी सो सब भाँति परमहित पूज्य प्राण ते प्यारो । जासों होय सनेह रामपद एतो मतो हमारो ॥ १७५ ॥ जो पै रह-नि राम सों नाहीं। तौ नर खर कूकर शूकर से जाय जियत जग माहीं ॥ काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूप प्यास सबहीके । मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ शूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गरुआई । विनु हरिभजन इँद्रायणके फल तजत नहीं करुआई ॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने । तुलसी प्रभु अनुराग रहित जस सालन शाक अलोने ॥ १७६ ॥ राख्यो राम सुस्वामी सों

नीच नेह न नातो । एते अनादर होतहूं ते नहातो ॥ जोरे नए नाते नेह फोकटके फीके । देहके दाहक गाहक जीके ॥ अपने अपनेको सब चाहत नीको ॥ मूल दुहूँको दयालु दूलह सीको ॥ जीवके जीवन प्राणके प्यारे । सुखहूको सुख राम सो विसारे ॥ कियो करैगो तोसे खलको भलो । ऐसे सुसाहब सों तू कुचाल क्यों चलो ॥ तुलसी तेरी भलाई अजहूं बूझैं । राडउराउत होत फिरि कै जूझैं ॥ १७७ ॥ जो तुम त्यागो राम हों तो नहिं त्यागों । परिहरि पाँय काहि अनुरागों ॥ सुखद सुप्रभु तुमसों जगमाहीं । श्रवण नयन मन गोचर नाहीं ॥ हौं जडजीव ईश रघुराया । तुम मायापति हौं वशमाया ॥ हौं तो कुयाचक स्वामी सुदाता । हौं कुपूत तुमहीं पितु माता ॥ जो पै कहूं कोउ बूझत बातो । तौ तुलसी विनु मोल विकातो ॥ १७८ ॥ भयेहूं उदास राम मेरे आश रावरी । आरत स्वारथी सब कहैं बात बावरी ॥ जीवनको दानी धन कहा ताहि चाहिये । प्रेम नेमके निबाहे चातक सराहिये ॥ मीन तेन लाभ लेश पानी पुण्य पीनको । जलविनु थल कहां मीचु विनु मीन को ॥ बड़ेही की ओट बलि बाँचि आये छोटे हैं । चलत खरेके संग जहाँ तहाँ खोटे हैं ॥ यहिदरबार भलो दाहिनेहु वामको । मोको शुभदायक भरोसो रामनाम को । कहत नशानी ह्वैहै हिये नाथ नीकी है । जानत कृपानिधान तुलसीके जीकी है १७९॥

राग बिलावल ।

कहाँ जाउँ कासों कहौं को सुनै दीन की । त्रिभुवन तुहीं गति सब अंगहीन की ॥ जग जगदीश घर घरनि घनेरे हैं । निराधारको अधार गुणगण तेरे हैं ॥ गजराज काज खगराज तजि धायो को । मोसे दोष कोष पोसे तोसे माय जायो को ॥ मोसे क्रूर कायर कुपूत कौड़ी आधके । किये बहुमोल तैं करैया गीधश्राद्धके ॥ तुलसी की तेरही बनाये बलि बनैगी । प्रभुकी विलम्ब अम्ब दोष दुख जनैगी ॥ १८० ॥ बारक विलोकि बलि कीजे मोहिं आपनो । राय दशरथके तू उथपन थापनो ॥ साहब शरणपाल सबल न

दूसरो ॥ तेरो नाम लेतहीं सुखेत होत ऊसरो ॥ वचन करम तेरे मेरे मन गड़े हैं । देखे सुने जाने मैं जहान जे ते बड़े हैं ॥ कौने कियो समाधान सनमान शिलाको। भृगुनाथ सों ऋषी जितैया कौन लीला को ॥ मातु पितु बंधु हित लोक वेदपाल को । बोलको अ-चल नत करत निहाल को ॥ संग्रही सनेहवश अधम असाधु को । गीध शबरीको कहो करि है शराध को ॥ निराधारको अधार दीन को दयालु को ॥ मीत कपि केवट रजनीचरभालु को ॥ रंक निर्गु-णी नीच जितने निवाजेहैं । महाराज सुजन समाज ते विराजे हैं ॥ सांची विरदावली न बढ़ि कहि गई है । शीलसिंधु ढील तुलसी की बार भई है ॥ १८१ ॥ केहू भाँति कृपासिन्धु मेरी ओर हेरिये । मोको और ठौर न सुटेक एक तेरिये ॥ सहस शिला ते अति ज-ड़ मति भई है । कासों कहौं कौने गति पाह नहिं दई है ॥ पद राग याग चहों कौशिक ज्यों कियोहै । कलिमल खल देखि भारी भीति भयो है ॥ करम कपीश बालि बली त्रास त्रस्यो हौं । चाहत अनाथ नाथ तेरी बाँह बस्यो हौं ॥ महामोह रावण विभीषण ज्यों हयो है। त्राहि तुलसी त्राहि तुलसी तिहूं ताप तयो है ॥१८२॥ नाथ गुणगाथ सुनि होत चित चाउ सो । राम रीझिवे की जानो भगति न भाउ सो ॥ करम स्वभाव काल ठाकुर न ठांउ सो । सु-धन न सुतन न सुमन सुआउ सो ॥ याँचो जल जाहि कहैं अमिय पिआउ सो । कासों कहौं काहू सों न बढ़त हिआउ सो । बाप बलि जाउँ आपु करिये उपाउ सो । तेरेही निहारे परै हारेहू सुदाउ सो ॥ तेरेही सुझाये सूझै असुझ सुझाउ सो । तेरेही बुझाये बूझै अबुझ बुझाउ सो ॥ नाम अवलम्ब अम्बु दीन मीन राउ सो ॥ प्रभु सों बनाइ कहौं जीह जरि जाउ सो ॥ सब भाँति बिगरी है एक सुब नाउ सो । तुलसी सुसाहिबहि दियोहै जनाउ सो ॥ १८३ ॥

राग आसावरी ।

राम प्रीतिकी रीति आप नीके जनियतहैं ॥ बड़ेकी बड़ाई छो-टेकी छोटाई दूरि करै ऐसी विरदावलि बलि वेद मनियत हैं ॥

गीध को कियो शराध भीलनीको खायो फल सोऊ साधु सभा भलीभाँति भनियत हैं। शबरे आदरे लोक वेदहूँ आदरियत योग ज्ञानहूते गरू गनियत हैं॥ प्रभुकी कृपा कृपालु कठिन कलिहूं काल महिमा समुझि उर अनियतहैं। तुलसी परायवश भये रस अनरस दीनबंधु द्वारे हरि हठ ठनियत हैं॥१८४॥ रामनामके जपे जाइ जियकी जरनि।कलिकाल अपर उपायते अपाय भये जैसे तम नाशिबेको चित्रके तरनि॥ करम कलाप परिताप पाप साने सब ज्यों सुफूल फूलेतरु फोकट फरनि। दंभलोभ लालच उपासना विनाशिनीके सुगति साधन भई उदर भरनि॥ योग न समाधि निरुपाधि न विराग ज्ञान वचन विशेष वेष कहूं न करनि। कपट कुपथ कोटि कहनि रहनि खोटि सकल सराहैं निज निज आचरनि॥मरत महेष उपदेश है कहा करत सुरसरि तीर काशी धरम धरनि॥ रामनामको प्रताप हर कहैं जपैं आप युगयुग जानेजगवेदहूं बरनि॥ मतिरामनामहींसों रतिरामनामहींसों गतिरामनामहींकी विपति हरनि। रामनाम सों प्रतीति प्रीति राखे कबहुंक तुलसी ढरैंगे राम आपनी ढरनि॥१८५॥ लाज न लागत दास कहावत। सो आचरण बिसारि शोच तजि जो हरि तुम कहँ भावत॥ सकल संग तजि भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत। मोसम मन्द महाबल पाँवर कौन जतन तेहि पावत। हरि निर्मल मलग्रसित हृदय असमंजस मोहिं जनावत। जेहि सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत॥ जाकी शरण जाइ कोविद दारुण त्रयताप बुझावत। तहूं गये मद मोह लोभ अति सरगहुँ मिटत नशावत॥ भवसरिता कहँ नाव संत यह कहि औरनि समुझावत। हौं तिन्ह सों हरि परम वैर करि तुम सों भलो मनावत॥ नाहिंन और ठौर मो कहँ ताते हठि नातो लावत। राखु शरण उदार चूड़ामणि तुलसिदास गुण गावत॥१८६॥ कौन यतन विनती करिये। निज आचरण विचारि हारि हिय मानि जानि डरिये॥ जेहि साधन हरि द्रवहु जानि जन सो हठि परिहरिये। जाते विपति

जाल निशि दिन दुख तेहि पथ अनुसरिये ॥ जानतहूं मन वचन कर्म परहित कीन्हे तरिये । सो विपरीत देखि परसुख विनु कारणही जरिये । श्रुति पुराण सबको मत यह सतसंग सुदृढ़ धरिये । निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिन्हहि न आदरिये ॥ सन्तसोइ प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि तरिये । कहो अब नाथ कौन बलते संसार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभाउ ते द्रवहु तो निस्तरिये । तुलसिदास विश्वास आन नहिं कत पचि पचि मरिये ॥ १८७ ॥ ताहि ते आयो शरण सबेरे ॥ ज्ञान विराग भक्ति साधन कछु स्वप्नेहुँ नाथ न मेरे ॥ लोभ मोह मद काम क्रोध रिपु फिरत रैनि दिन घेरे । तिन्हहिं मिले मन भयो कुपथ रत फिरै तिहारेहि फेरे ॥ दोष निलय यह विषय शोकप्रद कहत सन्त श्रुति टेरे । जानतहूं अनुराग तहाँ अति सो हरि तुम्हरेहि प्रेरे॥ विष पियूष सम करहु अग्नि हिम तारि सकहु विनु बेरे । तुम सम ईश कृपालु परमहित पुनि न पाइहौं हेरे ॥ यह जिय जानि रहों सब तजि रघुवीर भरोसे तेरे । तुलसिदास यहि विपति वागुरो तुम सों बनिहि निबेरे ॥ १८८ ॥ मैं तू अब जान्यो संसार । बाँधि न सकहि मोहिं हरिके बल प्रगट कपट आगार । देखतहीं कमनीय कछु नाहिन पुनि पुनि किये विचार।ज्यों कदलीतरु मध्य निहारत कबहुँ न निकरत सार ॥ तेरे लिये जनम अनेक मैं फिरत न पायो पार। महामोह मृगजल सरिता महँ बोन्यो हौं बारहिं बार ॥ सुनु खल छल बल कोटि किये वश होहि न भक्त उदार । सहित सहाय तहाँ बसि अब जेहि हृदय न नंदकुमार । तासों करहु चातुरी जो नहिं जानै मर्म तुम्हार । सो परि मरै डरै रजु अहि ते बूझै नहिं व्यवहार ॥ निज हित सुनु शठ हठ न करहि जो चहहि कुशल परिवार । तुलसिदास प्रभुके दासन्ह तजि भजहि जहाँ मद मार ॥ १८९ ॥

राग गौरी ।

राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे । ना-

हिं तो भव बेगारि महँ परिहौ छूटत अति कठिनाइ रे ॥ बाँस पु-
रान साज सब अठ कठ सरल तिकोन खटोला रे । हमहिं दिहल
करि कुटिल करमचंद मन्द मोल बिनु डोला रे ॥ विषम कहार
मारमदमाते चलहिं न पाँव बटोरारे । मन्द बिलन्द अभेरा दलक-
न पाइयदुख झकझोरा रे ॥ कांट कुराय लपेटन लोटन ठाँवहिं ठाँ-
उँ बझाऊं रे । जस २ चलिय दूरि तस २ निज बास न भेंट
लगाऊंरे ॥ मारग अगम संगनहिं सम्बल नाउँ गाउँकर भूलारे ॥
तुलसिदास भवत्रास हरहु अब होहु राम अनुकूलारे ॥
॥ १९० ॥ सहज सनेही राम सों तैं कियो न सनेह । ताते भव
भाजन भयो सुनु अजहुँ शिखावन एह ॥ जो सुख मुकुर विलो-
किये अरु चित न रहै अनुहारि । त्यों सेवतहुँ न आपने ये मातु
पिता सुत नारि ॥ दै दै सुमन तिल बासकै अरु खरि परिहरि
रस लेत । स्वारथहित भूतल भरे मनमेचक तनुसेत ॥ करिवी
त्यों अब करतु हैं करिबेहित मीत अपार ॥ कबहुँ न कोउ रघुवीर
सों नेह निवाहनिहार ॥ जासों सब नातो फुरै तासों न करी पहि-
चानि । ताते कछु समझों नहीं कहा लाभ कहँ हानि ॥ साँचो जान्यो
झूठको झूठे कहँ साँचो जानि । कौन गयो कौन जातहै कौन जैहै
करि हित हानि ॥ बेद कह्यो बुध कहतहैं अरु होहुँ कहत हों
टेरि । तुलसी प्रभु साँचो हितू तू हिये की आँखिन हेरि ॥१९१॥
एक सनेही साँचिलो केवल कोशलपालु । प्रेमकनोड़ो रामसों नहिं
दूसरो दयालु ॥ तनु साथी सब स्वारथी सुर व्यवहार सुजान ।
आरत अधम अनाथहिते को रघुवीर समान ॥ नाद निठुर सम
चर शिखी सलिल सनेह न शूर । शशि सरोग दिनकर बड़े पय-
द प्रेमपथ कूर ॥ जाको मन जासों बँध्यों ताको सुखदायक सोइ ।
सरलशील साहब सदा सीतापति सरिस न कोइ ॥
सुनि सेवा सहि को करै परिहरै को दूषण देखि ।
केहि दिवान दिन हीनको आदर अनुराग विशेखि ॥ खग शबरी
पितु मातु ज्यों मानै कपिको किये मीत । केवट भेंट्यो भरत ज्यों

ऐसो को कहु पतित पुनीत ॥ देइ अभागहि भाग को को राखे श-
रण सभीत। वेद विदित विरदावली कवि कोविद गावत गीत ॥
कैसेउ पाँवर पातकी जेहि लई नामकी ओट। गाँठी बाँध्यो दाम
सो परख्यो न फेरि खर खोट ॥ मन मलीन कलिकिलविषी होत
सुनत जासु कृतकाज। सो तुलसी कियो आपनो रघुवीर गरीब-
निवाज ॥ १९२ ॥ जोपै जानकीनाथ सों नातो नेह न नीच। स्वा-
रथ परमारथ कहा कलि कुटिल विगोयो बीच ॥ धर्म वर्ण आश्र-
मनिके पैयत पोथिही पुरान। करतब विन वेष देखिये ज्यों शरीर
बिनु प्रान ॥ वेदविहित साधन सबै सुनियत दायक फल चारि।
राम प्रेम बिनु जानिबो जैसे सरसरिता बिन वारि ॥ नाना पथ नि-
र्वाणके नाना विधान बहुभाँति। तुलसी तू मेरे कहे जपु रामनाम
दिन राति ॥ १९३ ॥ अजहुँ आपने रामके करतब समुझत हित
होइ। कहँ तू कहँ कोशल धनी तोको कहा कहत सब कोइ ॥
रीझि निवाज्यो कबहिं तू कब खीझि दई तोहिं गारि। दर्पण वदन
निहारिकै सुविचार मान हिय हारि ॥ बिगरी जन्म अनेक की सुध-
रत लगै पल न आधु। पाहि कृपानिधि प्रेम सों कहै को न राम
कियो साधु ॥ वाल्मीकि केवटकथा कपि भील भालु सनमान।
सुनि सन्मुख जो न राम सों तिहि को उपदेशहि ज्ञान ॥ का सेवा
सुग्रीव की का प्रीति रीति निरवाहु। जासु बंधु वध्यो व्याध ज्यों
सो सुनत सोहात न काहु ॥ भजन विभीषणको कहा फल कहा
दियो रघुराज। राम गरीबनिवाजके बड़ी बाँह बोलकी लाज ॥
जपहि नाम रघुनाथको चर्चा दूसरी न चालु। सुमुख सुखद साह-
ब सुधी समरथ कृपालु नतपालु ॥ सजल नयन गद्गद गिरा गहवर
मन पुलक शरीर। गावत गुणगण रामके केहिकी न मिटी भवभी-
र ॥ प्रभु कृतज्ञ सर्वज्ञ हैं परिहरु पाछिली गलानि। तुलसी तोसों
राम सों कछु नइ न जान पहिचानि ॥ १९४ ॥ जो अनुराग न
रामसनेही सों। तो लह्यो लाहु कहा नरदेही सों ॥ जो तनु धरि
परिहर सब सुख भय सुमति राम अनुरागी। सो तनु पाइ अघाइ

किये अघ अवगुण अधम अभागी ॥ ज्ञान विराग योग जप तप मख जग मुद मग नहिं थोरे।राम प्रेम विनु नेम जाय जैसे मृग जल जलधि हिलोरे ॥ लोक विलोकि पुराण वेद सुनि समुझि बूझि गुरु ज्ञानी । प्रीति प्रतीति रामपदपंकज सकल सुमंगलखानी ॥ अजहुँ जानि जिय मानि हारि हिय होइ पलक महँ नीको । सुमि-र सनेह सहित हित रामहिं मानु मतो तुलसी को ॥ १९५ ॥ ब-लि जाउँ हों राम गुसाईं । कीजिये कृपा आपनी नांईं ॥ परमारथ सुरपुर साधन सब स्वारथ सुखद भलाई । कलि सकोप लोपी सु-चाल निज कठिन कुचाल चलाई ॥ जहँ जहँ चित चितवत हित तहँ नित नव विषाद अधिकाई । रुचि भावती भभरि भागहि समुहाहिं अमित अनभाई ॥ आधि मगन मन व्याधि विकल तन वचन मलीन झुठाई । एतेहुँ पर तुम सों तुलसी की प्रभु सकल सनेह सगाई ॥ १९६ ॥ काहे को फिरत मन करत बहु जतन मिटै न दुख विमुख रघुकुल वीर ॥ कीजै जो कोटि उपाय त्रिविध ताप नजाइ कह्यो जो भुज उठाइ मुनिवर कीर । सहज टेव बिसारि तुहीं धौं देखु विचारि मिलै न मथत वारि घृत विनु क्षीर । समुझि तजहिं भ्रम भजहिं पद युगम सेवत सुगम गुण गहन गम्भीर ॥ आगम निगम ग्रन्थ ऋषि मुनि सुर सन्त सबहीको एक मत सुनु मतिधीर । तुलसिदास प्रभु बिन प्यास मरै पशु यद्यपि है निकट सुरसरि तीर ॥ १९७ ॥ नाहिंन चरणरति ताहि ते सहों विपति कहत श्रुति सकल मुनि मतिधीर।बसे जो शशि उछंग सुधा स्वादित कुरंग ताहिको भ्रम निरखि रवि कर नीर॥सुनिय नाना पुरा-ण मिटत नहिं अज्ञान पढ़िय न समुझिये जिमि खग कीर । बूझत बिनहिं पाश सेमर सुमनआश करत चरत तेइ फल विनु हीर ॥ कछु न साधन सिद्धि जानों न निगम विधि नहिं जप तप वश मन न समीर ॥ तुलसिदास भरोस परम करुणा कोश प्रभु हरि हैं विष-म भवभीर ॥ १९८ ॥ मन पछितैहै अवसर बीते । दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु कर्म वचन अरु हीते । सहसबाहु दशवदन आदि नृप

बचे न काल बलीते। हम हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठि रीते॥ सुत वनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबही ते। अन्तहुँ तोहिं तजैंगे पामर तू न तजहि अबहीं ते॥ अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़ त्यागु दुरासा जी ते। बुझै न कामअग्नि तुलसी कहुँ विषय भोग बहु घीते॥१९९॥ काहेको फिरत मूढ़ मन धायो। तजिहरिचरणसरोजसुधारस रविकर जल लय लायो॥ त्रिजगदेव नर असुर अपर जग योगि सकल भ्रमि आयो। गृह वनिता सुत बंधु भये बहु मातु पिता जिन्ह जायो॥ जाते निरय निकाय निरन्तर सोइ न तोहिं सिखायो। तव हित होइ कटहिं भवबन्धन सो मग्ु तोहिं न बतायो॥ अजहुँ विषय कहँ जतन करत यद्यपि बहुविधि डहँकायो। पावक काम भोग घृत ते शठ कैसे परत बुझायो॥ विषयहीन दुख मिले विपति अति सुख स्वप्नेहुँ नहिं पायो। उभय प्रकार प्रेत पावक ज्यों धन दुखप्रद श्रुतिगायो॥ छिन छिन क्षीण होत जीवन दुर्लभ तनु वृथा गँवायो। तुलसिदास हरि भजहि आश तजि कालउरग जग खायो॥२००॥ तांबे सों पीठि मनहुँ तनु पायो। नीच मीच जानत न शीशपर ईश निपट बिसरायो॥ अवनि रवनि धन धाम सुहृद सुत को न इन्हहिं अपनायो। काके भये गए सँग काके सब सनेह छल छायो॥ जिन्ह भूपनि जगजीति बाँधि यम अपनी बाँह बसायो। तेऊ काल कलेऊ कीन्हें तू गिनती कब आयो॥ देखु विचारि सार का साँचो कहा निगम निज गायो। भजहि न अजहुँ समुझि तुलसी तेहि जेहि महेश मन लायो॥२०१॥ लाभ कहा मानुष तनु पाए। काय वचन मन स्वप्नेहुँ कबहुँक घटत न काज पराए॥ जो सुख सुरपुर नरक गेह वन आवत बिनहिं बुलाए। तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन समझत नहिं समुझाए॥ परदारा परद्रोह मोहवश किये मूढ़ मन भाए।गर्भवास दुखराशि यातना तीव्र विपति बिसराए॥ भय निद्रा मैथुन अहार सबके समान जग जाए। सुरदुर्लभतनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गँवाए॥ गई न निज पर-

बुद्धि शुद्ध ह्वै रहे न रामलय लाए। तुलसिदास यह अवसर बीते का पुनिके पछिताए ॥ २०२॥ काज कहा नरतनु धरि सारचो ॥ पर उपकार सारश्रुति को सो धोखेहु में न विचारचो ॥ द्वैतमूल भय शूल शोकफल भवतरु टरै न टारचो। रामभजन तीक्षण कुठार लै सो नहिं काटि निवारचो ॥ संशय सिंधु नाम बोहित भजि निज आतमा न तारचो। जन्म अनेक विवेकहीन बहु योनि भ्रमत नहिं हारचो ॥ देखि आनकी सहज सम्पदा द्वेष अनल मन जारचो। शम दम दया दीन पालन शीतल हिय हरि न सँभारचो। प्रभु गुरु पिता सखा रघुपति में मन क्रम वचन बिसारचो। तुल-सिदास यहि आशशरण राखिहि जेहि गीध उधारचो ॥ २०२ ॥ श्रीहरिगुरुपदकमल भजहु मन तजि अभिमान। जेहि सेवत पाइय हरि सुखनिधान भगवान ॥ परिवा प्रथम प्रेम बिनु राम मिलन अतिदूरि। यद्यपि निकट हृदय निज रहे सकल भरि पूरि ॥ दुइज द्वैत मति छाँड़ि चरहि महि मंडल धीर। विगत मोह माया मद हृदय सदा रघुवीर ॥ तीज त्रिगुण पर परमपुरुष श्रीरमण मुकुन्द। गुण स्वभाव त्यागे बिनु दुर्लभ परमानन्द ॥ चौथि चारि परिहरहु बुद्धि मन चित अहंकार। विमल विचार परमपद निज सुख सहज उदार ॥ पाँचइ पाँच परस रस शब्द गन्ध अरु रूप। इन्ह कर कहा न कीजिये बहुरि परव भवकूप ॥ छठि षडवर्ग करिय जप जनकसुतापति लागि ॥ रघुपति कृपा वारि बिनु नहिं बुताइ लो भागि ॥ सातैं सप्तधातु निर्मित तनु करिय विचार। तेहि तनु केर एक फल कीजिये पर उपकार। आठइँ आठ प्रकृति पर नि-र्विकार श्रीराम। केहि प्रकार पाइय हरि हृदय बसहिं बहुकाम ॥ नवमी नवद्वारपुर बसि जेहि न आपु भल कीन्ह। ते नर योनि अने-क भ्रमत दारुण दुख दीन्ह ॥ दशइँ दशहु कर संयम जो न करिय जिय जानि। साधन वृथा होइँ सब मिलहिं न शारँगपानि ॥ एका-दशी एक मन वशकै सेवहु जाइ। सोइ व्रत कर फल पावै आवा-गमन नशाइ ॥ द्वादशि दान देहु अस अभय होइ त्रैलोक। पर-

हित निरत सो पार न बहुरि न व्यापक शोक । तरसि तीन अवस्था तजहु भजहु भगवन्त । मनक्रम वचन अगोचर व्यापक व्याप्य अनन्त ॥ चौदशि चौदह भुवन अचर रूप गोपाल । भेद गये विनु रघुपति अति न हरहिं जगजाल ॥ पूनो प्रेमभक्ति रस हरिरस जानहिं दास । सम शीतल गत मान ज्ञानरत विषय उदास ॥ त्रिविध शूल होलिय जारिय खेलिय अब फाग ॥ जो जिय चहसि परमसुख तौ यहि मारग लाग ॥ श्रुति पुराण बुध संमत चांचरि चरित मुरारि । करि विचार भवतरिय परिय न कबहुँ यमधारि ॥ संशय शमन दमन दुख सुखनिधान हरि एक । साधु कृपा विनु मिलहिं न करिय उपाइ अनेक । भवसागर कहँ नाउ शुद्ध सन्तन के चरण । तुलसिदास प्रयास विनु मिलहिं राम दुखहरण ॥ २०४ ॥

राग कान्हरा ।

जो मन लागै रामचरण अस । देह गेह सुत वित कलत्र महँ मगन होत विनु यतन किये जस ॥ द्वन्द्व रहित गत मान ज्ञानरत विषय विरत खटाई नानाकस । सुखनिधान सुजान कोशलपति ह्वै प्रसन्न कहु क्यों न होहिं बस ॥ सर्व भूतहित निर्व्यलीकचित भक्ति प्रेम दृढ़ नेम एक रस ।तुलसिदास यह होइ तबहिं जब द्रवै ईश जेहि हते शीशदश ॥ २०५ ॥ जो मन भज्यो चहै हरि सुरतरु । तौ तजि विषय विकारसार भजु अजहूँ जो मैं कहौं सोइ करु ॥ सम संतोष विचार विमल अति सतसंगति ए चारि दृढ़ करि धरु । काम क्रोध अरु लोभ मोह मद राग द्वेष निःशेष करि परिहरु ॥ श्रवण कथा मुखनाम हृदय हरि शिर प्रणाम सेवा कर अनुसरु । नयनन निरखि कृपा समुद्र हरि अग जग रूप भूप सीतावरु ॥ इहै भक्ति वैराग्य ज्ञान यह हरितोषन यह शुभ व्रत आचरु । तुलसिदास शिवमत मारग यहि चलत सदा स्वप्नेहुँ नाहिंन डरु ॥ २०६ ॥ नाहिंन और कोऊ शरण लायक दूजो

श्रीरघुपति सम विपति निवारण। काको सहज स्वभाउ सेवक वश काहि प्रणत पर प्रीति अकारण॥ जन गुण अलप गनत सुमेरु करि अवगुण कोटि विलोकि विसारन। परमकृपालु भगत चिन्तामणि विरद पुनीत पतितजनतारन॥ सुमिरत सुलभ दासदुख सुनि हरि चलत तुरत पटपीत सँभारन। साखि पुराण निगम आगम सब जानत द्रुपदसुता अरु वारन॥ जाको यश गावत कवि कोविद जिन्हके लोभ मोह मद मारन। तुलसिदास तजि आश सकल भजु कोशलपति मुनिवधू उधारन॥२०७॥ भजिवे लायक सुखदायक रघुनायक सरिस शरण पद दूजो नाहिंन। आनँदभवन दुख दमन शोकशमन रमारमन गुण गनत सिराहिंन॥ आरत अधम कुजाति कुटिल खल पतित सभीत कहूं जे समाहिं न। सुमिरत नाम विवशहू बारक पावत सो पद जहाँ सुर जाहिं न॥ जाके पदकमल लुब्ध मुनि मधुकर विरति जे परम सुगतिहु लुभाहिं न। तुलसिदास शठ तेहि न भजसि कस कारुणीक जो अनाथहि दाहिन॥ २०८॥

राग कल्याण।

नाथ सों कौन विनती कहि सुनावौं। त्रिविध अनगनित अवलोकि अघ आपने शरण सन्मुख होत सकुचि शिरनावौं॥ विरचि हरिभक्तको वेष वर वाटिका कपटदल हरित पल्लवनि छावौं। नाम लगि लाइ लासा ललित वचन कहि व्याध ज्यों विषय विहँगनि बझावौं॥ कुटिल शत कोटि मेरे रोम पर वारि यहि साधु गनतीमो पहिलहिं गनावौं। परमबर्बर खर्व गर्व पर्वत चढ्यो अज्ञ सर्वज्ञ जनमणि जनावौं। साँच किधौं झूठ मोको कहत कोउको उरामरावरो होहुँ तुम्हरोइ कहावौं। विरदकी लाज करि दासतुलसीहि देव लेहु अपनाइ अब देहु जनि बावौं॥ २०९॥ नाहिनो नाथ अवलंब मोहिं आनकी। कर्म मन वचन प्रण सत्य करुणानिधे एक गति राम भवदीय पदत्राण की॥ कोह मद मोह ममता य-

तन जानि मन बात नहिं जाति कहि ज्ञान विज्ञानकी । काम संकल्प उर निरखि बहु बासनहिं आशनहिं एकहू आंक निर्वान की ॥ वेद बोधित कर्म धर्म बिनु अगम अति यदपि जियलालसा अमरपुर जानकी । सिद्ध सुर मनुज दनुजादि सेवत कठिन द्रवहिं हठयोग दिए भोग बलि प्राण की ॥ भक्तिदुर्लभ परम शंभु शुक मुनि मधुप प्यास पदकंज मकरंद मधु पानकी ॥ पतितपावन सुनत नाम विश्रामकृत भ्रमत पुनि समुझि चित ग्रन्थि अभिमान की ॥ नरक अधिकार मम घोर संसारतम कूप कहि भूप मोहिं शक्ति आपानकी ॥ दासतुलसी सोऊ त्रास नहिं गनत मन सुमिरि गुह गीध गज ज्ञाति हनुमानकी ॥ ॥ २१० ॥ और कहँ ठौर रघुवंशमणि मेरे । पतितपावनप्रणतपाल अशरण शरण बाँकुरे विरद विरुदैत केहि केरे । समुझि जियदोष अतिरोष करि रामजेहि करत नहिं कान विनती वदन फेरे ॥ तदपि ह्वै निडर हौं कहौं करुणासिंधु क्यों बरहि जात सुनिबात बिन हेरे । मुख्य रुचि होत वसिबे को पुर रावरे राम तेहि रुचिहि कामादि गण घेरे ॥ अगम अपवर्ग अरु स्वर्ग सुकृतैक फल नाम बल क्यों बसो यमनगर नेरे । कतहुँ नहिं ठाउँ कहँ जाउँ कोशलनाथ दीन वितहीन हौं विकल बिनु डेरे । दास तुलसिहि बास देहु अब करि कृपा बसत गज गृध्र व्याधादि जेहि खेरे ॥ २११ ॥ कबहुँ रघुवंशमणि सो कृपा करहुगे । जेहि कृपा व्याध गज विप्र खल नर तरे तिन्हहिं सम मानि मोहिं नाथ उद्धरहुगे ॥ योनि बहु जन्मि किए कर्म खल त्रिविधविधि अधम आचरण कछु हृदय नहिं धरहुगे । दीनहित अजित सर्वज्ञ समरथ प्रणतपाल चित मृदुल निजगुणनि अनुसरहुगे ॥ मोह मद मान कामादिखल मंडली सकुल निर्मूल करि दुसह दुःख हरहुगे ॥ योग जप यज्ञ विज्ञान ते अधिक अति अमल दृढ़ भक्ति दै परमसुख भरहुगे ॥ मन्दजन मौलिमणि सकल साधनहीन कुटिलमन मलिन जिय जानि जो

डरहुगे । दासतुलसी वेद विदित विरदावली विमल यश नाथ केहि भाँति विस्तरहुगे ॥ २१२ ॥

राग केदारा ।

रघुपति विपति दवन । परमकृपालु प्रणतप्रतिपालक पतित पावन ॥ क्रूर कुटिल कुल हीन दीन अतिमलिन यवन ॥ सुमिरत नाम राम पठए सब अपने भवन ॥ गज पिंगला अजामिल से खल गनेधौं कवन । तुलसिदास प्रभु केहि न दीनि गति जानकी रवन ॥ २१३ ॥ हरि सम आपदाहरन । नहिं कोउ सहज कृपालु दुसह दुखसागरतरन ॥ गज निजबल अवलोकि कमल गहि गयो शरन । दीन वचन सुनि चले गरुड़ तजि सुनाभूधरन ॥ द्रुपदसुताको लग्यो दुशासन नगन करन । हाहरि पाहि कहत पूर पट विविध बरन ॥ इहै जानि सुर नर मुनि कोविद सेवत चरन । तुलसिदास प्रभु को न अभय कियो नृग उद्धरन ॥ २१४ ॥

राग कल्याण ।

ऐसी कौन प्रभुकी रीति । विरद हेत पुनीत परिहरि पांवरनि पर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाइ । मातु की गति दई ताहि कृपालु यादवराइ ॥ काममोहित गोपिकनपर कृपा अतुलित कीन्हि । जगतपिता विरंचि जिन्हके चरणकी रज लीन्हि ॥ नेमते शिशुपाल दिन प्रति देत गनि गनि गारि । कियो लीन सुआप में हरि राजसभा मँझारि ॥ व्याध चित दै चरण मार्‍यो मूढ़मति मृगजानि । सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट करि निजबानि ॥ कौन तिन्हकी कहै जिन्हके सुकृत अरु अघ दोउ । प्रगट पातकरूप तुलसी शरण राख्यो सोउ ॥ २१५ ॥ श्रीरघुबीर की यह बानि । नीचहूं सों करत नेह सुप्रीति मन अनुमानि ॥ परम अधम निषाद पांवर कौन ताकी कानि । लियो सो उर लाइ सुत ज्यों प्रेमकी पहिचानि ॥ गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सानि । जनक ज्यों रघुनाथ ताकहँ दियो जल निज

पानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुणखानि । खात ताके दिये फल अति रुचि बखानि बखानि ॥ रजनिचर अरु रिपु विभीषण शरण आयो जानि । भरत ज्यों उठि ताहि भेटत देह दशा भुलानि ॥ कौन सुभग सुशील वानर जिनहिं सुमिरत हानि । किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि ॥ राम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि। भजहि ऐसे प्रभुहि तुलसी कुटिल कपट न ठानि ॥ २१६ ॥ हरि तजि और भजिये काहि । नाहिंने कोउ राम सों ममता प्रणत पर जाहि ॥ कनककशिपु विरंचिको जन करम मन अरु बात । सुतहि दुखवत विधि न बरज्यो कालके घर जात ॥ शम्भु सेवक जान जग बहु बार दिए दशशीश । करत राम विरोध सो स्वप्नेहुँ न हटक्यो ईश ॥ और देवन की कहा कहों स्वारथहिके मीत । कबहुँ काहु न राखि लियो कोउ शरण गयउ सभीत ॥ को न सेवत देत संपति लोकहू यह रीति । दासतुलसी दीन पर एक रामही की प्रीति ॥ २१७ ॥ जोपै दूसरो कोउ होइ ॥ तो हौं बारहिं बार प्रभु कत दुख सुनावौं रोइ ॥ काहि ममता दीन पर काको पतितपावन नाम । पापमूल अजामिलहिं केहि दियो अपनो धाम ॥ रहे शंभु विरंचिसुरपति लोकपाल अनेक । शोकसरि बूड़त करीसहि दई काहु न टेक ॥ विपुल भूपति सदसि महँ नर नारि कह्यो प्रभु पाहि । सकल समरथ रहे काहु न वसन दीन्हो ताहि ॥ एक मुख क्यों कहों करुणासिंधुके गुणगाथ । भक्तहित धरि देह काह न कियो कोशलनाथ ॥ आपसे कहुँ सौंपिये मोहिं जो पै अतिहिं घिनात । दासतुलसी और विधि क्यों चरण परिहरि जात ॥ २१८ ॥ कबहिं देखाइहौ हरि चरण । शमन सकल कलेश कलिमल सकल मंगलकरण। शरद भव सुन्दर तरुणतर अरुणवारिजवरण ॥ लच्छि लालित ललित करतल छबि अनूपम धरण । गंग जनक अनंगअरिप्रिय कपट बटु बलिछरण ॥ विप्रातिय मृग बधिकके दुख दोष दारुणदरण । सिद्ध सुर मुनि वृन्दवन्दित सुखद सब क-

हैं शरण ॥ सकृत उर आनत जिनहिं जन होत तारणतरण । कृपासिंधु सुजान रघुवर प्रणत आरति हरण ॥ दरश आश पियास तुलसीदास चाहत मरण ॥ २१९ ॥ द्वारे हौं भोरही को आज । रटत रिरिहा आरि और न कौरहीते काज ॥ कलिकराल दुकाल दारुण सब कुभांति कुसाज । नीच जन मन ऊंच जैसो कोढ़ में की खाज ॥ हहरि हिय में सदय बूझ्यो जाइ साधुसमाज । मोहुसे कहुँ कतहुँ कोउ तिन कह्यो कोशलराज । दीनता दारिद दलै को कृपावारिधि बाज । दानि दशरथ रायके तुम बानइत शिरताज ॥ जनमको भूखो भिखारी हौं गरीबनेवाज । पेट भरि तुलसिहि जेंवाइयभक्तिसुधासुनाज ॥ २२० ॥ करिय सँभार कोशलराय । और ठौर न और गति अवलम्ब नाम बिहाय ॥ बूझि अपनी आपनो हित आप बाप न माय । राम राउर नाम गुरु सुर स्वामि सखा सहाय ॥ राम राज न चले मानस मलिनके छल छाय । कोप तेहि कलिकाल कायर मुयहि घालतवाय ॥ लेत केहरि सों वयर ज्यों भेक हानि गोमाय । त्यों हिं रामगुलाम जानि निकाम देव कुदाय ॥ अकानि याके कपट करतब अमित अनय अपाय । सुखी हरिपुर बसत होत परिक्षितहि पछिताय ॥ कृपासिंधु विलोकिये जन मन को शासति साय । शरन आयो देव दीनदयालु देखन पाय ॥ निकट बोलि न बरजिये बलिजाँउ हानिय न हाय ।देखिहैं हनुमान गोमुख नाहरनिके न्याय ॥ अरुण मुख भ्रू विकट पिंगल नयन रोष कखाय । वीर सुमिरि समीरको घटिहै चपल चित चाय॥विनय सुनि विहँसे अनुज सों वचनके कहिभाय । भलि कही कह्यो लषण हूँ हँसि बने सकल बनाय ॥ दई दीनहिं दादि सो सुनि सुजन सदन बधाय । मिटे संकट शोच पोच प्रपंच पाप निकाय॥ पेखि प्रीति प्रतीति जन पर अगुण अनघ अमाय । दास तुलसी कहत मुनिगण जयति जय उरगाय ॥२२१॥ नाथ कृपाहीको पन्थ चितवत दीन हौं दिन राति । होइ धौं केहि काल दीनदयालु जानि न जाति॥सगुण ज्ञान विराग भक्ति सुसा-

धननि की पाँति । भजे विकल विलोकि कलि अघ अवगुणनिकी थाति । अति अनीति कुरीति भइँ भुइ तरनिहूं ते ताति। जाउँ कहँ बलिजाउँ कहुँ ना ठाउँ मति अकुलाति ॥ आप सहित न आपनो कोउ बाप कठिन कुभाँति । श्यामघन सींचिये तुलसी शालि सफल सुखाति ॥ २२२ ॥ बलि जाउँ और कासों कहौं । सद्गुणसिंधु स्वामि सेवक हित कहुँ न कृपानिधि सों लहौं ॥ जहँ २ लोभ लोल लालचवश निजहित चित चाहनिचहौं । तहँ २ तरणितकत उलूक ज्यों भटकि कुतरुकोटर गहौं ॥ काल स्वभाउ करमविचित्र फलदायक सुनि शिर धुनि रहौं । मोको तौ सकल सदा एकहिरस दुसह दाह दारुण दहौं ॥ उचित अनाथ होइ दुखभाजन भयो नाथ किङ्कर नहौं । अब रावरो कहाय न बूझिये शरणपाल शांसति सहौं ॥ महाराज राजीवविलोचन मगन पाप सन्तापहौं । तुलसी प्रभु जब जेहि तेहि विधि राम निबाहे निरवहौं ॥ २२३ ॥ आपनो कबहूं करि जानि हो ॥ राम गरीबनिवाज राजमणि विरद लाज उर आनिहो ॥ शीलसिंधु सुन्दर सब लायक समरथ सद्गुण खानि हो । पाल्यो है पालत पालहुगे प्रणत प्रेम पहिचानि हो ॥ वेद पुराण कहत जग जानत दीनदयालु दीन दानि हो । कहि आवत बलिजाउँ मनहुँ मेरी बार बिसारे बानि हो ॥ आरत दीन अनाथनिके हित मानत लौकिक कानि हो । है परिणाम भलो तुलसीको शरणागत भय भानिहो ॥ २२४ ॥ रघुवरही कबहूं मन लागिहै। कुपथ कुचाल कुमति कुमनोरथ कुटिल कपट कब त्यागिहै ॥ जानत गरल अमिय विमोहवश अमिय गनत करि आगि है । उलटी रीति प्रीति अपनेकी तजि प्रभुपद अनुरागिहै ॥ आखर अर्थ मंजु मृदु मोदक राम प्रेम पगि पागिहै । ऐसे गुण गाइ रिझाइ स्वामी सों पाइ है जो मुँह मागिहै ॥ तू यहि विधि सुख शयन सोइहै जियकी जरनि भूरि भागिहै । रामप्रसाद दास तुलसी उर रामभगति योग जागिहै । ॥ २२५ ॥ भरोसो और आइहै उर ताके । कै कहूं लहै जो रामहि सो साहब कै अपने बल जाके ॥ कै कलिकाल कराल न सूझत

मोह मार मद छाके। कै सुनि स्वामि स्वभाउ न रह्यो चित जो हित सब अँग थाके॥ हौं जानत भलिभाँति अपनपौ प्रभु सों सुन्यो न साके॥ उपल भील खग मृग रजनीचर भले एक करतब काके॥ मोको भलो रामनाम सुरतरु सो रामप्रसाद कृपालु कृपा के। तुलसी सुखी निशोच राज ज्यों बालक माय बबाके॥ २२६॥ भरोसो जाहि दूसरो सो करो।मोको तो रामको नाम कल्पतरु कलि कल्याण फरो॥ कर्म उपासन ज्ञान वेदमत सो सब भाँति खरो। मोहिंतो श्रावणके अंधहि ज्यों सूझत रंग हरो॥ चाटत रहौं श्वान पातरि ज्यों कबहुँ न पेट भरो॥ सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेषत परुसि धरो॥ स्वारथ औ परमारथ हू को नहिं कुंजरो नरो। सुनियत सेतु पयोधि पषाणनि करि कपिकटक तरो॥ प्रीति प्रतीति जहाँ जाकी तहँ ताको काज सरो। मेरे तो माय बाप दोउ आखर हों शिशुअरनि अरो॥ शंकर साखि जो राखि कहौं कछु तौ जरि जीह गरो। अपनो भलो राम नामहिं ते तुलसिहिं समुझि ॥२२७॥नाम राम रावरोई हितु मेरे।स्वारथ परमारथ साथिन्ह भुज उठाइ कहौं टेरे॥ जननी जनक तज्यो जन्मि कर्म बिनु विधिहू सृज्यो हौं अवढेरे। मोहसे कोउ कोउ कहत रामहिको सो प्रसंग केहि केरे॥ फिरयों ललात बिनु नाम उदरलगि दुखउ दुखित मोहिं हेरे॥नाम प्रसाद लहत रसाल फल अबहौं बबुर बहेरे॥ साधत साधु लोक परलोकहि सुनि गुनि जतन घनेरे। तुलसीके अवलंब नामको एक गाँठि कइ केरे॥ २२८॥ प्रिय रामनाम ते जाहि न रामो। ताको भलो कठिन कलिकालहुँ आदि मध्य परिणामो॥ सकुचत समुझि नाममहिमा मद लोभ मोह कोह कामो। राम नाम जप निरत सुजन पर करत छाँह घोर घामो॥ नाम प्रभाउ सही जो कहै कोउ शिला सरोरुह जामो। जो सुनि सुमिरि भागभाजन भइ सुकृतशील भीलभामो॥ वाल्मीकि अजामिलके कछुहुतो नसाधन सामो। उलटे पलटे नाम महातम गुंजनि जितो ललामो। राम ते अधिक नाम करतब जेहि किए नगर गत गामो। भये बजाइ दाहिने जो जपि तुल-

सिदासहु से बामो ॥ २२९ ॥ गरैगी जीह जो कहौं और को
जानकी जीवन जनम जनम जग ज्यायो तिहारेहि कौर कोहौं ॥
तीनि लोक तिहुँ काल न देखत सुहृद रावरे जोर को हौं। तुम्हसों
कपट करि कल्प कल्प कृमि ह्वै हौं नरक घोर को हौं ॥ कहा
भयो जो मन मिलि कलिकालहि कियो भुरूट भोर को हौं।
तुलसिदास शीतल नित यहि बल बड़े ठेकाने ठौर को हौं॥
॥ २३० ॥ अकारण को हितु और को है। विरद गरीबनिवाज
कौनको भौंह जासु जन जोहै ॥ छोटो बड़ो चहत सब स्वारथ जो
विरंचि विरचोहै। कोल कुटिल कपि भालु पालिबो कौन कृपालुहि
सोहै ॥ काको नाम अनख आलस कहें अघ अवगुणनि बिछोहै।
को तुलसी से कुसेवकु संग्रह्यो शठ सब दिन सांईं द्रोहै ॥ २३१ ॥
और मोहिं कोहै काहि कहि हौं। रंकराज ज्यों मनको मनोरथ
जेहि सुनाइ सुख लहिहौं ॥ यमयातना योनि संकट सब सहे दुसह
अरु सहिहौं। मोको अगम सुगम तुम्हको प्रभु तउफल चारि न
चहिहौं ॥ खेलिबेको खग मृग तरु किंकर ह्वै रावरो रामहौं रहि-
हौं। यहि नाते नर कहुँ सचु पैहौं या बिनु परमपदहुँ दुख दहिहौं॥
इतनी जिय लालसा दास के कहत पानही गहि हौं। दीजे वचन
कि हृदय आनिये तुलसी को पन निर्बहिहौं ॥ २३२ ॥ दीनबंधु
दूसरो कहँ पावों ॥ को तुमबिनु परपीर पाइहै केहि दीनता सुना-
वों। प्रभुअकृपालु कृपालु अलायक जहँरचितहि डोलावों॥ इहै समु-
झि सुनि रहौं मौनहीं केहि भ्रम कहा गँवावों ॥ गोपद बूड़िबे योग
कर्म करों बातनि जलधि थहावों। अति लालची काम किंकर
मन मुख रावरो कहावों ॥ तुलसी प्रभु जिय की जानत
सब अपनो कछुक जनावों ॥ सो कीजे जेहि भाँति छाँड़ि छल
द्वार परो गुण गावों ॥२३३॥ मनोरथ मनको एकै भाँति। चाहत
मुनि मन अगम सुकृत फल मनसा अघन अघाति ॥ कर्म भूमि
कलि जन्म कुसंगत मति विमोह मद माति। करत कुयोग कोटि
क्यों पैयत परमारथ पद शांति ॥ सेइ साधु गुरु सुनि पुराण
श्रुति बूझ्यो राग बाजी तांति। तुलसी प्रभु स्वभाउ सुरतरु सों
ज्यों दर्पण मुखकांति ॥ २३४ ॥ जन्म गयो बादिहिं वर बीति।

परमारथ पाले न पर्‍यो कछु अनुदिन अधिक अनीति ॥ खेलत खात लडकपन गो चलि यौवन युवतिन्ह लियो जीति । रोग वियोग शोक श्रम संकुल बड़ी वय वृथहि अतीति ॥ राग रोष ईर्षा विमोहवश रुची न साधु समीति । कहे न सुने गुणगण रघुवरके भइ न रामपद प्रीति ॥ हृदय दहत पछिताय अनल अब सुनत दुसह भवभीति । तुलसी प्रभुते होइ सो कीजिय समुझि विरदकी रीति ॥ २३५ ॥ ऐसेहि जन्म समूह सिराने । प्राणनाथ रघुनाथसे प्रभु तजि सेवत चरण विराने॥जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने । सूखत वदन प्रशंसत तिन्ह कहँ हरि ते अधिक करि माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरन्तर करत न पाँय पिराने । सदा मलीन पंथके जल ज्यों कबहुँ न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूरि करिवेको अमित यतन उर आने । तुलसी चित चिन्ता न मिटै विनु चिन्तामणि पहिचाने ॥ २३६ ॥ जो पै जिय जानकीनाथ न जाने । तौ सब कर्म धर्म श्रमदायक ऐसइ कहत सयाने ॥ जे सुर सिद्ध मुनीश योगविद वेद पुराण बखाने । पूजा लेत देत पलटे सुख हानि लाभ अनुमाने ॥ काको नाम धोखेहूं सुमिरत पातकपुंज सिराने । विप्र वधिक गज गृद्ध कोटि खल कौनके पेट समाने ॥ मेरुसे दोष दूरि करि जनके रेणुसे गुण उर आने । तुलसिदास तेहि सकल आश तजि भजहि न अजहुँ अयाने ॥ २३७ ॥ काहे न रसना रामहिं गावहि । निशिदिन पर अपवाद वृथा कत रटि रटि राग बढ़ावहि ॥ नरमुख सुन्दर मन्दिर पावन बसि जनि ताहि लजावहि । शशि समीप रहि त्यागि सुधा कत रवि कर जल कहँ धावहि । काम कथा कलि कैरव चन्दिनि सुनत श्रवणदै भावहि । तिनहिं हटकि कहि हरि कल कीरति कर्ण कलंक नशावहि ॥ जातरूप मति जुगुति रुचिर मणि रचि रचि हार बनावहि । शरण सुखद रविकुल सरोज रवि रामनृपहि पहिरावहि ॥ वाद विवाद स्वाद तजि भजि हरि सरस चरित चित लावहि । तुलसिदास भवतरहिं तिहूं पुर तू पुनीत यश पावहि ॥ २३८ ॥ आपनो हित रावरे सो जो पै सूझै ।

तौ जनु तनुपर अछत शीश सुधि क्यों कबन्ध ज्यों जूझै ॥ नि-
ज अवगुण गुण राम रावरे लखि सुनि मति मन रूझै । रहनि
कहनि समुझनि तुलसी की को कृपालु बिनु बूझै ॥ २३९ ॥
जाको हरि दृढ़ करि अंग करयो । सोइ सुशील पुनीत वेदविद
विद्या गुणनि भरयो ॥ उत्पति पांडुतनयकी करणी सुनि सत-
पन्थ डरयो । ते त्रयलोक्य पूज्य पावन यश सुनि २ लोक
तरयो ॥ जो निज धर्म वेद बोधित सो करत न कछु बिसरयो ।
बिन अवगुण कृकलासकूप मज्जत कर गहि उधरयो ॥ ब्रह्म
विशिख ब्रह्माण्ड दहन क्षम गर्भ न नृपति जरयो । अजर अमर
कुलिशहुँ नाहिन वध सो पुनि फेन मरयो ॥ विप्र अजामिल
अरु सुरपति ते कहा जो नहिं बिगरयो । उनको कियो सहाय ब-
हुत उरको सन्ताप हरयो ॥ गणिका अरु कन्दर्प ते जग महँ
अघ न करत उबरयो । तिनको चरित पवित्र जानि हरि निज हृ-
दि भवन धरयो ॥ केहि आचरण भलो मानै प्रभु सो तो न जानि
परयो । तुलसिदास रघुनाथ कृपाको जोवत पन्थ खरयो ॥२४०॥
सोइ सुकृती शुचि साँचो जाहि राम तुम रीझे । गणिका गृध्र ब-
धिक हरिपुर गये लैकरसी प्रयाग कब सीझे ॥ ॥ कबहुँ न डग्यो
निगम मग ते पग नृग जग जानि जिते दुख पाये । गज धौं कौन
दीक्षित जाके सुमिरत लै सुनाम वाहन तजि धाये ॥ सुर मुनि वि-
प्र विहाइ बड़े कुल गोकुल जन्म गोपगृह लीन्हो। बायों दियो विभ-
व कुरुपति को भोजन जाइ विदुर घर कीन्हो ॥ मानत भलहि
भलो भक्तन ते कछुक रीति पारथहि जनाई । तुलसी सहज सने-
ह रामवश और सबै जलकी चिकनाई॥२४१॥ तब तुम मोहूं से शठ
निको हठि गति देते। कैसेहुँ नाम लेहि कोउ पामर सुनि सादर आगे ह्वै
लेते॥पापखानि जियजानि अजामिलयमगण तमकि ताइ ताको भेते।
लिये छुड़ाइ चले कर मींजत पीसत दाँत गये रिसि रेते ॥गौतमतिय
गज गृद्ध विटप कपि है नाथहि नीके मालुम तेते॥तिन्ह तिन्ह का जानि
साधु समाज तजि कृपासिंधु तब २ उठि गेते ॥ अजहुँ अधिकआ-
रत यहि द्वारे पतितपुनीत होत नहिं केते । मेरे पासंगहु न पूजिहैं ह्वै

गएहैं होने खल जेते ॥ हौं अबलौं करतूति तिहारिय चितवतहुतो न रावरे चेते । अब तुलसी पूतरो बाँधि है सहि न जात मोपै परिहास एते ॥ २४२ ॥ तुम सम दीनबंधु न दीन कोउ मोसम सुनहु नृपति रघुराई । मो सम कुटिल मौलिमणि नहिं जग तुम सम हरि न हरन कुटिलाई ॥ हौं मन वचन कर्म पातक रत तुम कृपालु पतितनि गतिदाई । हौं अनाथ प्रभु तुम अनाथ हित चित यह सुरति कबहुँ नहिं जाई ॥ हौं आरत आरतिनाशक तुम कीरति निगम पुराणनि गाई ॥ हौं सभीत तुम हरण सकल भय कारण कौन कृपा बिसराई ॥ तुम सुखधाम राम श्रमभंजन हौं अति दुखित त्रिविध श्रम पाई ॥ यह जिय जानि दासतुलसी कहँ राखहु शरण समुझि प्रभुताई ॥ २४३ ॥ यहै जानि चरणन्ह चित लायो । नाहिन नाथ अकारणको हित तुम समान पुराण श्रुति गायो । जननि जनक सुत दार बंधुजन भये बहुत जहँ २ हौं जायो। सब स्वारथ हित प्रीति कपट चित काहू ना हरिभजन शिखायो ॥ सुर मुनि मनुज दनुज अहि किन्नर मैं तनु धरि शिर काहि न नायो। जरत फिरत त्रयताप पापवश काहु न हरि करि कृपा जुड़ायो ॥ यत्न अनेक किये सुख कारण हरिपद विमुख सदा दुख पायो ॥ अब थाक्यो जलहीन नाव ज्यों देखत विपति जाल जग छायो॥ मोकहँ नाथ बूझिये यह गति सुखनिधान निजपति बिसरायो । अब तजि रोष करहु करुणाहरि तुलसिदास शरणागत आयो ॥ २४४ ॥ याहि ते मैं हरिज्ञान गँवायो । परिहरि हृदय कमल रघुनाथहि बाहर फिरत विकल भयो धायो । ज्यों कुरंग निज अंग रुचिर मद अति मतिहीन मर्म नहिं पायो । खोजत गिरि तरु लता भूमि बिल परम सुगन्ध कहाँते धौं आयो ॥ ज्यों सर विमल वारि परिपूरण ऊपर कछु सिवार तृण छायो। जारत हियो ताहि तजिहौं शठ चाहत यहि विधि तृषा बुझायो ॥ व्यापत त्रिविधताप तनुदारुण तापर दुसह दरिद्र सतायो । अपनेहिं धाम नाम सुरतरु तजि विषय बबूर बाग मन लायो ॥ तुम सम ज्ञाननिधान मोहिं सम मूढ़ न आन पुराणनि गायो। तुलसिदास प्रभु य-

ह विचारि जिय कीजै नाथ उचित मनभायो॥२४५॥मोहिं मूढ़मन बहुत बिगोयो । याके लिए सुनहु करुणामय मैं जग जन्म जन्म दुखरोयो॥ शीतल मधुर पियूष सहज सुख निकटहिं रहत दूरि जनु खोयो। बहुभाँतिन श्रम करत मोहवश वृथहिं मन्दमति वारि बिलोयो॥ कर्म कीच जिय जानि सानि चित चाहत कुटिल मलहि मलधोयो। तृषावन्त सुरसरि विहाय शठ फिरि२विकल अकाश निचोयो॥ तुलसिदास प्रभु कृपा करहु अब मैं निजदोष कछू नहिं गोयो। डासतही गइ बीति निशा सब कबहुँ न नाथ नींदभरि सोयो॥२४६ ॥ लोक वेदहू विदित बात सुनि समुझि मोहमोहित विकल मति थिति न लहति। छोटे बड़े खोटे खरे मोटेऊ दूबरे राम रावरे निबाहे सबहीकी निबहति॥ होती जो आपने वश रहती एकही रस दुनी न हरष शोक शासति सहति।चहतो जो जोइ जोइ लहतो सो सोइ सोइ केहू भाँति काहू की न लालसा रहति॥कर्मकाल स्वभाव गुण दोष जीव जग माया ते सो सभय भौंह चकित चहति। ईशनि दिगीशनि योगीशनि मुनीशनिहूं छोड़ति छोड़ायेते जो गहायेते गहति॥शतरंज को सो राज काठको सब समाज महाराज बाजी रची प्रथम न नहति। तुलसी प्रभुके हाथ हारिबो जीतिबो नाथ बहु वेष बहु सुख शारदा कहति॥२४७॥राम जपु जीह जानि प्रीति सों प्रतीति मानि रामनाम जपे जैहै जी की जरनि। राम नाम सों रहनि रामनाम की कहनि कुटिल कलिमल शोकसङ्कटहरनि॥ रामनामको प्रभाउ पूजियत गणराउ कियो न दुराउ कही आपनी करनि। भवसागरको सेतु काशीहूं सुगति हेतु जपत शारद शंभु सहित घरनि॥ वाल्मीकि व्याध हैं अगाध अपराधनिधि मरा मरा जपें पूजें मुनि अमरनि। रोक्यों विन्ध्य सोख्यो सिंधु घटजहूं नामबल हारचो हिय खारो भयो भूसुर डरनि॥ नाम महिमा अपार शेष शुक बार २ मति अनुसार बुध वेदहु वरनि। नामरति कामधेनु तुलसीको कामतरु रामनाम है विमोह तिमिर तरनि॥२४८॥ पाहि पाहि रामपाहि रामभद्र रामचंद्र सुयश श्रवण सुनि आयो हौं शरण। दीनबन्धु दीनता दरिद्र दाह दोष दुख

दारुण दुसह दर दरप हरण ॥ जब २ जगजाल व्याकुल करमका-
ल सब खल भूप भये भूतलभरण। तब २ तनु धरि भूमिभार दूरि
करि थापे मुनि सुर साधु आश्रम वरण ॥ वेद लोक सब साखी का-
हु की रती न राखी रावणकी वन्दि लागे अमर मरण। ओकदे
विशोक किये लोकपति लोकनाथ रामराज भयो धर्म चारिहु च-
रण ॥ शिला गुह गृद्ध कपि भील भालु रातिचर ख्यालही कृपालु
कीन्हें तारण तरण। पीलउद्धरण शीलसिंधु ढील देखियति तुलसी
पै चाहत गलानिहीं गरण॥२४९॥भली भाँति पहिचाने जाने साहब
जहाँ लों जग जूड़े होत थोरेही थोरेही गरम।प्रीति न प्रवीन नीति हीन
रीतिके मलीन मायाधीन सब किये कालहूँ करम ॥ दानव दनुज
बड़े महामूढ़ मूड़ चढ़ जीते लोक नाथ नाथबलनिभरम॥ रीझि २
दिये वर खीझि २ घाले घर आपने निवाजे कीन काहूके शरम।
सेवा सावधान तू सुजान समरथ साँचो सद्गुणधाम राम पावन परम॥
सुरुख सुमुख एकरस एकरूप तोहिं विदित विशेषि घट २ के म-
रम। तोसों नतपाल न कृपाल न कंगाल मोसों दया में बसत देव
सकल धरम ॥ राम कामतरु छाँह चाहै रुचि मन माहँ तुलसी
विकल बलि कलि कुधरम ॥ २५० ॥ तौ हौं बार बार प्रभुहि पु-
कारि कै खिझावतो न जोपै मोको होतो कहूँ ठाकुर ठहर। आल-
सी अभागे मोसे तैं कृपालु पाले पोसे राजा मेरे राजाराम अवध
शहर ॥ सेए न दिगीश न दिनेश न गणेश गौरी हित कै न माने
विधि हरिउ न हर। राम नामहीं सों योग क्षेम नेम प्रेमपण सुधा
सो भरोसे एहु दूसरो जहर ॥ समाचार साथके अनाथ नाथ कासों
कहौं नाथहीके हाथ सब चोरऊ पहर॥ निज काज सुर काज आर-
तके काज राज बूझिये विलंब कहाँ कहूं न गहर। रीतिसुनि रावरी
प्रतीति प्रीति रावरे सों डरत हौं देखि कलिकालको कहर ॥ कहेही
बनैगी कै कहाये बलिजाउँ राम तुलसी तू मेरी हारि हिये न हहर॥
॥ २५१ ॥ राम रावरो स्वभाउ गुण शील महिमा प्रभाउ जान्यो
हर हनुमान लषण भरत। जिन्हके हिये सुथल राम प्रेम सुरतरु
लसत सरस सुख फूलत फरत ॥ आप माने स्वामीके सखा सुभाइ

पति ते सनेह सावधान रहत डरत ।साहब सेवक रीति प्रीति परमिति नीति नेमको निबाह एकटेक न टरत ॥शुक सनकादिक प्रह्लाद नारदादि कहैं रामकी भगति बड़ी विरत निरत । जाने बिनु भक्ति न जानिबो तिहारे हाथ समुझि सयाने नाथ पगनि परत ॥ क्षमत विमत न पुराण मत एक पथ नेति नेति नेति नित निगम करत । औरनि की कहा चली एकै बात भले भली राम नाम लिए तुलसीहूँसे तरत ॥ २५२ ॥ बाप आपने करत मेरी घनी घटि गई । लालची लवार की सुधारिये बारक बलि रावरी भलाई सबही की भली भई ॥ रोगवश तनु कुमनोरथ मलिन मन पर अपवाद मिथ्या वाद बाणी हुई।साधनकी ऐसी विधि साधन बिना न सिद्धि बिगरी बनावै कृपानिधि कृपा नई॥पतितपावन हित आरत अनाथनिको निराधारको अधार दीनबंधु दई । इन्हमें न एको भयो बूझि न जूझे न जयो ताहि ते त्रिताप तयो लुनियत बई॥स्वांग सूधो साधु को कुचाल कलिते अधिक परलोक फीकीमति लोक रंग रई । बड़े कुसमाज राज आजु लौं जो पाए दिन महाराज केहू भाँति नाम ओट लई ॥ राम नामको प्रताप जानियत नीके आप मोको गति दूसरी न विधि निरमई । खीझिबे लायक करतब कोटि कोटि कटु रीझिबे लायक तुलसी की निलजई ॥ २५३ ॥ राम राखिये शरण राखि आए सबदिन । विदित त्रिलोक तिहूँ काल न दयालु दूजो आरत प्रणतपाल को है प्रभु बिन॥लाले पाले पोषे तोषे आलसी अभागी अघी नाथ पै अनाथनि सो भये न उऋन। स्वामी समरथ ऐसो हौं तिहारो जैसो तैसो काल चाल हेरि होति हिए घनी घिन ॥ खीझि रीझि बिहँसि अनख क्यों हूं एक बार तुलसी तू मेरो बलि कहियत किन । जाहि शूल निरमूल होहिं सुख अनुकूल महाराज राम रावरी सों तेहि छिन ॥ २५४ ॥ राम रावरो नाम मेरो मातु पितु है ।सुजन सनेही गुरु साहब सखा सुहृद राम नाम प्रेम अविचल वितु है ॥ शत कोटि चरित अपार दधिनिधि मथि लियो काढ़ि बामदेव नाम घृतु है । नामको भरोसो बल चारिहूं फलको फल सुमिरिये छाँडि छल भलो कृतु है ॥ स्वारथ

साधक परमारथदायक नाम राम नाम सारिखो न और हितु है । तुलसी स्वभाव कही साँचिये परैगी सही सीतानाथ नाथनके चितहूं को चितु है ॥ २९५ ॥ राम रावरो नाम साधु सुरतरु है । सुमिरे त्रिविधघाम हरत पूरत काम सकल सुकृत सरसिजको सरहै ॥ लाभहूको लाभ सुखहूको सुख सरवस पतितपावन डरहू को डर है । नीचेहूको ऊँचेहूको रंकहूको रायहूको सुलभ सुखद आपनो सो घर है ॥ वेदहुँ पुराणहुँ पुरारिहुँ पुकारि कह्यो नाम प्रेम चारि फलहूको फर है । ऐसे राम नाम सों न प्रीति न प्रीतीति मन मेरे जान जानिबो सोई नर खर है ॥ नामसों न मातु पितु मीत हित बंधु गुरु साहिब सुधी सुशील सुधाकर है । नाम सों निबाह नेह दीनको दयालु देह दासतुलसी को बलि बड़ो वर है ॥ २९६ ॥ कहे बिनु रह्यो न परत कहे रामरस न रहत । तुमसे सुसाहब की ओट जन खोटो खरो काल की करमकी कुशासति सहत ॥ करत विचार सार पैयत न कहूं कछु सकल बड़ाई सब कहाँ ते लहत । नाथ की महिमा सुनि समुझि आपनी ओर हेरि हारि कै हहरि हृदय दहत ॥ सखा न सुसेवक न सुतिय न प्रभु आप माय बाप तुही साँचो तुलसी कहत । मेरी तो थोरी है सुधरैगी बिगरियो बलि राम रावरी सो रही रावरो चहत ॥ २९७॥ दीनबंधु दूरियो किये दीनको न दूसरो शरण । आपको भलो है सब आपनेको कोऊ कहूं सबको भलो है राम रावरो चरण ॥ पाहनपशु पतंग कोल भील निशिचर काँच ते कृपानिधान किए सुवरण । दंडक पुहुमि पायँ परशि पुनीत भई उकठे विटप लागे फूलन फरण ॥ पतित पावन नाम बामहूं दाहिनो देव दुनी न दुसह दुख दूषण दरण । शीलसिंधु तोसों ऊंची नीचियो कहत शोभा तोसों तुही तुलसीकी आरातिहरण २९८ ॥ जानि पहिचानि मैं बिसारे हों कृपानिधान एतो मान ढीठ हौं उलटि देत खोरि हौं । करत यतन जासों जोरिबे को योगीजन तासों क्यों-हूं जुरी सो अभागो बैठे तोरिहौं ॥ मोसे दोष कोशको भुवनकोश दूसरो न आपनी समुझि सूझि आयो टकटोरि हौं । गाढ़ीके

श्वान की नाईं माया मोह की बड़ाई छिनहिं तजत छिन भजत बहोरिहौं। बड़ो सांई द्रोही न बराबरी मेरी को कोऊ नाथकी शपथ किये कहत करोरि हौं॥ दूरि कीजे द्वार ते लबार लालची प्रपं-ची सुधा सों सलिल शूकरी ज्यों गह डोरि हौं॥ राखिये नीके सुधारि नीच को डारिये मारि दुहूं ओर की बिचारि अब न निहोरि हौं। तुलसी कही है सांची रेख बार २ खांची ढील किये नाम महिमाकी नाव बोरिहौं॥२५९॥ रावरी सुधारी जो बिगारी बिगरैगी मेरी कहो बलि वेद किन लोकु कहा कहै गो। प्रभुको उदास भाउ जनको पाप प्रभाउ दुहूं भाँति दीनबंधु दीन दुख दहैगो। मैं-तो दियो छातीपवि लयो कलिकालदवि शासति सहस परवश को न सहैगो। बांकी बिरदावली बनैगी पालेही कृपालु अन्त मेरो हाल हेरियो न मन रहैगो॥ करमी धरमी साधु सेवक बिरतर-त आपनी भलाई थल कहां को न लहैगो। तेरे मुँह फेर मोसे कायर कपूत कूर लटे लटपटेनिको कौन परिगहैगो॥ काल पाय फिरत दशा दयालु सबही की तोहिं बिनु मोहिं कबहूं न कोऊ चहैगो। वचन करम हिये कहौं राम सौंह किये तुलसी पै नाथके निबाहे निबहैगो॥ २६०॥ साहब उदास भये दास खास खीस होत मेरी कहा चली हौं बजाइ जाइ रह्योहौं। लोक में न ठाउँ पर-लोकको भरोसो कौन हौंतो बलिजाउँ रामनामहीं ते लह्यो हौं॥ करम स्वभाव काल काम कोह लोभ मोह ग्रहअति गहनि गरीब गाढ़े ग-ह्यौ हौं। छोरिबेको महाराज बाँधिबेको कोटि भट पाहि प्रभु पाहि तिहुँ ताप पाप दह्यो हौं॥ रीझि बूझि सबकी प्रतीति प्रीति एही द्वार दूध को जरयो पियत फूंकि २ मह्यो हौं। रटत २ लटयो जाति पाँति भाँति घटयो जूठनिको लालची चह्यो न दूध नह्यो हौं। अनत चह्यो न भलो सुपथ सुचाल चल्यो नीके जिय जानि इहाँ भलो अनचह्यो हौं। तुलसी समुझि समुझायो मन बार बार अपनो सो नाथहूँ सों कहि निरबह्यो हौं॥ ॥२६१॥ मेरी न बने बनाये मेरे कोटि कलप लौं राम रावरे ब-ने बनाये पल पाउ मैं। निपट सयाने हौ कृपानिधान कहा कहौं

लिये वेर बदलि अमोलमणि आउ मैं ॥ मानस मलीन करतब कलिमल पीन जीहहूं न जप्यो नाम बक्यो आउबाउ मैं । कुपथ कुचाल चल्यो भयो न भूलिहूं भलो बाल दशाहूं न खेल्यो खेलत सुदाउमैं ॥ देखी देखा दंभ ते कि संग ते भई भलाई प्रगटि जनाई कियो दुरित दुराउ मैं । राग रोष द्वेष पोषे गोगण समेत मन इनकी भगतिकीन्हीं इनहींको भाउ मैं ॥ आगिलो पाछिलो अबहूंको अनुमानही ते बूझियत गति कछु कीन्हों तो न काउ मैं ॥ जग कहै राम की प्रतीति प्रीति तुलसीहू झूठे सांचे आश्रय साहब रघुराउ मैं ॥ २६२ ॥ कह्यो न परत बिनु कह्यो न रह्यो परत बड़ो सुख कहत बड़े सो बलि दीनता । प्रभु की बड़ाई बड़ी आपनी छोटाई छोटी प्रभु की पुनीतता आपनी पापपीनता ॥ दुहूँओर समुझि सकुचि सहमत मन सन्मुख होत सुनि स्वामीसमीचीनता । नाथ गुणगाथ गाए हाथजोरि माथो नाए नीचऊ निवाजे प्रीति रीति की प्रवीणता ॥ यहि दरबार है गरब ते सरबहानि लाभ योग क्षेम को गरीबी मिस कीनता । मोटो दशकन्ध सों न दूबरो विभीषण सों बूझि परि रावरे की प्रेमपराधीनता ॥ यहां की सयानप अयानप सहस सम सूधो सतभाय कहैं मिटति मलीनता । गृद्ध शिला शबरी की सुधि सब दिन किए होइगी न सांई सों सनेह हित हीनता ॥ सकल कामना देत नाम तेरो कामतरु सुमिरत होत कलिमल छलक्षीनता । करुणानिधान बरदान तुलसी चहत सीतापति भगति सुरसरिनीर मीनता ॥ २६३ ॥ नाथ नीके कै जानि बी ठीक जन जीय की । रावरो भरोसो नाह कैसे प्रेम नेम लियो रुचिर रहनि रुचि मति तीय की ॥ दुकृत सुकृत वश सबही सों संग पर्‌यो परखि पराई गति आपनेहूं कीय की । मेरे भलेको गोसांई पोच को न शोच होय सकल किये कहौं सौंह सांँची सियपीय की ॥ ज्ञानहूं गिराके स्वामी बाहर अन्तर्यामी यहाँ क्यों दुरैगी बात मुख की औ हीयकी । तुलसी तिहारो तुमहीं ये तुलसी के हित राखि कहूं हौं जो पै हुतो ह्वै हों माखी घीय की ॥ २६४ ॥ मेरो कह्यो सुनि पुनि भावै तोहि करि सो । चारिहूं

विलोचन विलोक तू तिलोक महँ तेरो तिहुँकाल कहु कोहै हितु हरि सो ॥ नए नए नेह अनुभये देह गेह वसि परिखे प्रपंची प्रेम परत उघरि सो । सुहृद समाज दगावाजिही को सौदा सूत जब जाको काज तब मिलै पाँय परिसो ॥ विबुध सयाने पहिचाने कैधौं नाहीं नीके देत एक गुण लेत कोटि गुण भरिसो । करम धरम श्रम फल रघुबर विनु राख कोसो होम है ऊसर कैसो बरिसो ॥ आदि अन्त बीच भलो भलो करै सबहीको जाको यश लोक वेद रह्यो है बगरि सो । सीतापतिसारिखो न साहब शीलनिधान कैसे कल परै शठ बैठो सो बिसरिसो ॥ जीवको जीवन प्राण प्राणको परमहित प्रीतम पुनीत कृत नीच न निदरि सो । तुलसी तोको कृपाल जो कियो कोशलपाल चित्रकूटको चरित्र चेतु चित करि सो ॥ २६५ ॥ तन शुचि मन रुचि मुख कहौं जन हौं सिय पीको । केहि अभाग जान्यो नहीं जो न होइ नाथ सों नातो नेह न नीको ॥ जल चाहत पावक लहौं विष होत अमी को । कलि कुचाल सन्तनि कही सोइ सही मोहिं कछु फहम न तरनि तमी को ॥ जानि अन्ध अञ्जन कहै बन बाघिनि घी को । सुनि उपचार विकार को सुविचार करौं जब तब बुद्धि बल हरै हीको ॥ प्रभु सों कहत सकुचत हौं परौं जनि फिरि फीको । निकट बोलि बलि बरजिये परिहरै ख्याल अब तुलसिदास जड़ जीको ॥ २६६ ॥ ज्यों ज्यों निकट भयो चहौं कृपालु त्यों त्यों दूरि परचोहौं । तुम चहुँ युग रस एक राम हौं हूं रावरो यदपि अघ अवगुणन्हि भरचोहौं ॥ बीच पाइ नीच बीचहीं छरनि छरचोहौं । हौं सुवरण कुवरण कियो नृप ते भिखारि करि सुमति ते कुमति करचोहौं ॥ अगणित गिरि कानन फिरचो विनु आगि जरचोहौं । चित्रकूट गये मैं लखी कलि की कुचाल सब अब अपडरनि डरचोहौं । माथनाइ नाथ सों कहौं हाथ जोरि खरचोहौं । चीन्हों चोर जिय मारिहै तुलसी सों कथा सुनि प्रभु सों गुदरि निबरचो हौं ॥ २६७ ॥ प्रण करिहौं हठि आजुते राम द्वार परचोहौं । तू मेरो यह बिन कहे उठिहौं न जनम भरि प्रभु की सौं करि

निवरयोहौं ॥ दै दै धक्का यमभट थके टारे न टरयोहौं । उदर दुसह शासति सही बहुबार जनमि जग नरक निदरि निकरयोहौं ॥ हौं मचला लै छाँड़िहौं जेहि लाग अरयोहौं । तुम दयालु बनिहै दिये बलि विलंब न कीजिय जात गलानि गरयो हों ॥ प्रगट कहत जो सकुचिये अपराध भरयोहौं ॥ तौ मनमें अपनाइये तुलसिहि कृपा करि कलि विलोकि हहरयोहौं॥२६८॥ तुम अपनायो तब जानिहौं जब मन फिरि परिहै। जेहि सुभाव विषयनि लग्यो तेहिं सहज नाथ सों नेह छाँड़ि छल करि है॥ सुत की प्रीति प्रतीति मीत की नृप ज्यों डर डरिहै । अपनो सो स्वारथस्वामी सों चहुँ विधि चातक ज्यों एकटेक ते नहिं टरिहै ॥ हरपिहै न अति आदरै निदरै न जरि मरिहै । हानि लाभ दुख सुख सबै समचित हित अनहित कलि कुचाल परिहरिहै ॥ प्रभु गुण सुनि मन हरषिहै नीर नयननि ढरिहै । तुलसिदास भयो रामको विश्वास प्रेम लखि आनन्द उमँगि उर भरि है ॥ २६९ ॥ राम कबहुँ प्रिय लागिहौ जैसे नीर मीनको । सुख जीवन ज्यों जीवको मणि ज्यों फणि को हित ज्यों धन लोभ लीन को ॥ ज्यों स्वभाव प्रिय लगति नागरी नागर नवीनको । त्यों मेरे मन लालसा करिये करुणा कर पावन प्रेम पीनको ॥ मनसा को दाता कहैं श्रुति प्रभु प्रवीन को । तुलसिदास को भावतो बलिजाउँ दयानिधि दीजे दान दीन को॥२७०॥ कबहुँ कृपा करि रघुवीर मोहूं चितैहो । भलो बुरो जन आपनो जिय जानि दयानिधि अवगुण अमित बितैहो ॥ जन्म जन्म हौं मन जित्यो अब मोहिं जितैहो । हौं सनाथ ह्वैहों सही तुमहूं अनाथपति जो लघुतहि न भितैहो ॥ विनय करों अपभयहुँ ते तुम्ह परमहितै हो ।तुलसिदास कासों कहै तुमही सब मेरे प्रभु गुरु मात पितैहो ॥ २७१ ॥ जैसो हौं तैसो हौं राम रावरो जन जानि परिहरिये । कृपासिंधु कोशलधनी शरणागतपालक ढरनि आपनी ढरिये ॥ हौं तो बिगरायल और को बिगरो न बिगरिये । तुम सुधारि आए सदा सबकी सबही विधि अब मेरियो सुधरिये ॥ जग हँसिहै मेरे संग्रहे कत एहि डर डरिये । कपि केवट कीन्हे सखा जेहि शील सरलचित

तेहि स्वभाव अनुसरिये ॥ अपराधी तउ आपनो तुलसी न बिसरि-ये। टूटियो बाँह गरे परै फूटे हूं बिलोचन पीर होत हित करिये ॥ २७२ ॥ तुम जनि मन मैलो करो लोचन जनि फेरो । सुनहु राम बिनु रावरे लोकहुँ परलोकहुँ कोउ न कहूँ हितु मेरो ॥ अगुण अलायक आलसी जानि अधन अनेरो ॥ स्वारथके साथिन तज्यो तिजरा कैसो टोटक औचट उलटि न हेरो ॥ भक्तिहीन वेद बाहिरो लखि कलिमल घेरो । देवनिहूं देव परिहरयो अन्याव न तिनको हौं अपराधी सब केरो ॥ नाम की ओट लै पेट भरत हौं पै कहाव-त चेरो । जगत विदित बात है परी समुझिये धौं अपने लोक की वेद बड़ेरो ॥ ह्वै है जब तब तुम्हहिं ते तुलसीको भलेरो । दीन दिन हूं दिन बिगरिहै बलिजाउँ बिलंब किए अपनाइये सबेरो ॥ ॥ २७३ ॥ तुम तजि हौं कासोंकहौं और को हितु मेरे ॥ दीनबंधु सेवक सखा आरतअनाथ पर सहज छोहु केहि केरे ॥ बहुत पतित भवनिधि तरे बिनु तरिनी बिनु बेरे । कृपा कोपसतिभायहुँ धोखेहु तिरिछेहुँ राम तिहारेहि हेरे ॥ जो चितवनि सौंधी लगे चितइये सबेरे । तुलसि दास अपनाइये कीजै न ढील अब जीवन अवधि अति नेरे ॥ २७४ ॥ जाऊँ कहाँ ठौर है कहां देव दुखित दीन को । को कृपालु स्वामी सारिखो राखे शरणागत सब अंग बल विहीन को॥ गर्णिहिं गुणिहिं साहब लहै सेवा समीचीन को । अधन अगुण आलसिनको पालवो फबिआयो रघुनायक नवीन को ॥ मुख कै कहा कहौं विदित है जीकी प्रभु प्रवीन को । तिहूंकाल तिहुँलोक में एक टेक रावरी तुलसी से मनमलीन को ॥ २७५ ॥ द्वार द्वार दीनता कही काढ़ि रद परि पाहूं । है दयालु दुनि दश दिशा दुख दोष दलन क्षम कियो न संभाषण काहूं ॥ तनु जनेउ कुटिल कीट ज्यों तज्यो मातु पिताहूं । काहेको रोष दोष काहिधौं मेरेही अभाग मोसों सकुचत सब छुइ छाहूं । दुखित देखि संतन कह्यो शोचै जानि मन माहूं । तोसे पशु पाँवर पातकी परिहरे न शरण गए रघुवर ओर निबाहूं ॥ तुलसी तिहारो भये भयो सुखी प्रीति प्रतीति बिनाहूं । नामकी महिमा शीलनाथको मेरो भलो बिलोकि अबते सकुचाहूं सिहाहूं ॥ २७६ ॥ कहा न कियो कहां

न गयो शीश काहि न नायों। राम रावरो विनभये जन जनमि जनमि जग दुख दशहूं दिशि पायों। आश विवस खास दास ह्वै नीच प्रभुनिजनायों। हाहा करि दीनता कही द्वार द्वार बार बार परी न छार मुँह बायों॥ अशन वसन बिन बावरो जहँ तहँ उठि धायों। महिमा अति प्रिय प्राणते तजि खोलि खलनि आगे खिन खिन पेट खलायों॥ नाथहाथ कछु नाहिं लग्यो लालच ललचायों। सांच कहौं नाच कौन सो जो न मोहिं लोभ लघु निलज नचायों॥ श्रवण नयन मन मग लगे सब थल पतितायों॥ मूड़ मारि हिय हारिकै हित हेरिहहरि अब चरण शरण तकि आयों। दशरथके समरथ तुहीं त्रिभुवन यश गायों।तुलसी नमत अवलोकिये बलि बांह बोल दै बिरदावली बुलायों॥ २७७॥ रामराय विन रावरे मेरेको हितू सांचो। स्वामी सहित सबसों कहों सुनि गुणि विशेषि कोउ रेख दूसरी खांचो॥ देह जीव योगके सखा मृषा टाच न टांचो। किये विचार सार कदलि ज्यों मणि कनक संग लघु लसत बीच बिच कांचो॥ विनयपत्रिका दीनकी बापु आपुही बांचो। हिये हेरि तुलसी लिखी सो स्वभाव सही करि बहुरि पूछियेहि पांचो॥ ॥ २७८॥ पवनसुवन रिपुदवन भरत लाल लषण दीन की। निज निज अवसर सुधि किये बलिजाउँ दास आश पूजि है खास खीन की॥ राज द्वार भली सब कहैं साधु समीचीन की। सुकृत सुयश साहब कृपा स्वारथ परमारथ गति भये गति विहीन की॥ समय सँभारि सुधारिवी तुलसी मलीन की। प्रीति रीति समुझाइवी नत पाल कृपालुहि परमिति पराधीन की॥ २७९॥ मारुतिमन रुचि भरतकी लखि लषण कही है। कलिकालहूं नाथ नामसों प्रतीति प्रीति एक किङ्कर की निवही है॥ सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रहीहै॥ कृपा गरीबनिवाज की देखत गरीबको साहब बाँह गहीहै॥ विहँसि राम कह्यो सत्य है सुधि मैंहूँ लहीहै। मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथकी परी रघुनाथ हाथ सही है॥

यदि रघुपतिभक्तिर्मुक्तिदा वक्ष्यते सा सकलकलुषहर्त्री सेवनायामयासात्।
शृणुत सुमतिपुंसो निर्मिता रामभक्तैर्जगति तुलसिदासै रामगीतावलीयम्॥ १॥

इति श्रीतुलसीदासकृता विनयपत्रिका समाप्ता।

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,--खेतवाडी-मुंबई.

श्रीः ।

छप्पयरामायण ॥

जिसमें

सातोकांडरामायण की कथा अतिरुचिर छप्पय छन्दोंमें अतीव सरलपदों से वर्णित है

जिसको

महात्मा श्रीगोसाईं तुलसीदासजीने रामचरित्रानुरा-गियों के आनन्दार्थ निर्मित किया

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई.

निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रकट किया ।

भा० शु० संवत् १९५१ शके १८१६

श्रीः ।

अथ छप्पयरामायण ॥

छप्पय ।

श्रीगुरुचरणसरोजवन्दि गणनाथमनावों ॥ जेहिंप्रसादशुभहोयँ रामसोइविनयसुनावों ॥ आरतभञ्जन रामनाममुनिसाधुन गाई ॥ सुमिरतगाढ़ेनाथ होतसबठौरसहाई ॥ श्रीपतिरघुपतिअवधपतिकर- हुँनामसोजापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसन्तापना ॥ ॥ १ ॥ रहिकपोतशिशुपतिसमेतबैठेतरुपासा ॥ गगनउड़ेशंचान भूमितलअग्निप्रकासा ॥ व्याधागहिकरबाणदेखिलोचनजलमोचित पक्षीसोमनमहँसभीतदंपतिउरशोचित ॥ दुष्टदवनकरुणायतन राखिलेहुशरणापना ॥ कृपाकरिय श्रीरामचन्द्र ममहरहुशोकसंताप ना॥२॥उठेततक्षणमेघवृष्टिजलअनलबुताने ॥ निकसिभुअंगमडसे सुधी व्याधाबिकलाने ॥ निसरेउकरतेतीरजाय शंचानहिंमारी ॥ अ- स्तुतिकरतकपोतनाथप्रणतारतिहारी ॥ सोप्रभुहोहुदयालुममजिमि कपोतरिपुदापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचन्द्र मम हरहुशोकसंतापना ॥ ३ ॥ जैजैमीनबराह कमठनरहरि श्रीवामन ॥ परशुराम श्रीराम कृ- ष्ण जन हित खलदामन ॥ जगन्नाथकलिकीनमामिदशविधिवपुधा रन ॥ अमितरूपअगणितचारित्रकृतनामउदारन ॥ सुररंजनसज्जन सुखद सियानाथअरिजापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोक संतापना ॥ ४ ॥ वधिताड़कासुबाहुविप्रमखरक्षकरघुपति ॥ मोचित बाहनशापभक्तवरदायकशुभगति॥ प्रणविदेहकोराखिरामखंडयोधनु शंकर॥ दीन्हशरासनबाणजानिरामहिंसुपरशुधर ॥ सियविवाहिगवने अवधछूटेजनककलापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसं- तापना॥५॥राजत्यागिवनचलेअसुरमारनसुरकारज॥ केवटधोवतचर णत्रिलोचनअजपदजारज ॥ चित्रकूटबसिअमितकोलभिल्लनकारिपा- वन ॥ भरततोषिकृतचरणपीठदैशोकनशावन ॥ चलेभरतस्तुति करतराखिलियेविरदापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचंद्रममहरहुशोक

संतापना ॥ ६ ॥ पाहिकहतबचिप्राणचक्षुइकहतेजयंता ॥ वधिवि राधखर दूषणादिमुनिसुयशकहंता ॥ हेमकपटमृगप्राणदीन्हप्रभुशर केलागत ॥ गतिगृध्रहिदैहतिकबंधशवरीशरणागत ॥ बालित्राससु ग्रीवरहुगिरिपरकरतकलापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशो कसंतापना ॥ ७ ॥ हनुमतचीन्हेउँनामनाथ निजदासहिजानी ॥ भ क्तिविमलवरदेइ मित्रकृतशारँगपानी॥ बालिवधो कपिराज साजिऋ- तुमेह गँवाये ॥ करमुद्रिक दे सिय उदेश हनुमानपठाये ॥ वहाँसि यानिशिदिनजपतरामनाममनआपना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममह रहुशोकसंतापना ॥ ८ ॥ हर्षिचलेहनुमानभाग्यनिजकरतबड़ाई ॥ खोजत सर गिरिखोहऋच्छकपिसंगसगाई ॥ गयेसिंधुतटसकलशोक वशसुनिसंपाती ॥ सुनिसपक्षहोयजोहसियायहसुरआराती ॥ निरखि सिंधुठहरेसभैकरहिंविलापकलापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहु शोकसंतापना ॥ ९ ॥ पुलकिउठेहनुमानकानसुनिवयनऋछेशा ॥ चलतमहाधुनिगरजिडोलुगिरि दिग्गजशेशा॥सुरसावदनसमायसिंहि कोवधतसिधाये ॥ प्रभुप्रताप जलयान पार सागरहोइआये॥मुष्टिकह नितहँलंकिनी सुमिरिचलेहरि आपना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥ १० ॥ गृह गृह शोधतचले जोह कतहूं नहिं पाये ॥ लगे उचारण रामनामसुनिविभीषणआये ॥ सन्ततमिलिदु हुँकरतमुदित जिमिवासरकोका ॥ युक्तिविभीषणबूझिआयजहँविट पअशोका ॥ मौनलईकपिछपिगुणतयुक्तिहोयप्रगटापना ॥ कृपाकर हुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ ११ ॥ तेहिअवसरदशकंधना रिसँगआयडेरावा ॥ प्रभुप्रतापरविआपुनखतसुनिगृहहिसिधावा ॥ विरहवंतहोयअनलतवहिंमाँग्यहुवैदेही ॥ शोकहरनमुद्रिकादीन्हक पिऔसरतेही ॥ चीन्हिहरषविस्मयतेहि दुखभंजनप्रभुआपना ॥ कृ पाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोक संतापना ॥ १२ ॥ वरणिरामगुण करिप्रणामबोले हनुमाना ॥ हौंअनुचरतदनाथमातुमैंमुँदरीआना ॥ निकटबोलिसुनि अमियवयनपूछीकुशलाता ॥ कहेउकुशलदो उबंधुशोचकीजै जनिमाता ॥ कपिमुखरामसंदेशसुनिकहेसीता

विरहापना॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥ १३ ॥ सियप्रबोधिलैतबनिदेशसुसमीरकुमारा ॥ गयेबागफलखायतोरित रुरक्षकमारा ॥ सुवनवधेसुनिविसहुवाहुवननादपठाये ॥ लंक दहनहितकीशतासुकरआपुबँधाये ॥ दनुजबांधिपटलायदियोलूम देखिकीशापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ ॥ १४ ॥ ज्वालावन्तकरालकीशचढ़िकनकअटारी ॥ नगरशो रचहुँओरजरनलागेनरनारी ॥ वातजातबलपुंजहाँकसुनिदनुज सकाने ॥ बालवृद्धसंपतिविहायसबजरतपराने ॥ जरालंकबचुएकघ रविभीषणकेहरिजापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्र ममहरहुशोकसं तापना ॥ १५ ॥ श्रमविहायपुरजारिसिंधुमहँलूमबुताई ॥ आयमातु पदपद्मवंदिकपिमांगुरजाई ॥ सहिदानीकछुदेहुमातुसुधिप्रभुहिजना वों ॥ चूड़ामणिदैकह्यो मातुबहुविनयसुनावों ॥ कहेउमोरिहुतिना थजू शरणलाजरखुआपना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्र ममहरहुशोक संतापना ॥ १६ ॥ विविधभाँतिदैधीरमातुपदवंदिकपीशा ॥ चलेशु भाशिषपाय आयभेंटेसबकीशा ॥ चरणचूमिकरिकीश सकल पूछहिंकुशलाई ॥ कहतकथासबभाँति आयमधुवनफलखाई ॥ वं दिरामपदकंजकहिसीतासुधिइतहासना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रमम हरहु शोकसंतापना ॥ १७ ॥ विरहअनलतनुतप्तआपुहितराखीनै ना ॥ अबबिलम्बजनिकरहुसिया हेराजिवनैना ॥ शक्रसुवनमृगहेम जातुतवबाणप्रतापा ॥ जातुकबंधअरुबालिकहाभैसोशरचापा ॥ सि याविनयचरणनपड़ीचूड़ामणिदिहिआपना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्र ममहरहुशोकसंतापना ॥ १८ ॥ सियाविनयसुनि सियानाथ करग हिधनुतीरा ॥ उतरेकटकसमूह संगलैसागरनीरा ॥ मिलेविभीषण आय पाहिकहि जयअवधेशा ॥ प्रणतपालकरिअभैतासुपुनिकहि लंकेशा ॥ तारनसिन्धुउपलपुनिकृतशंकरस्थापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचन्द्र ममहरहुशोकसंतापना ॥ १९ ॥ रामेश्वरसुखधाम राम कहि श्रीमुखवानी ॥ जासुनामउच्चारप्रेमगतिपावतप्रानी ॥ गिरिजा रमनदयालु दीनहित दानीअवढर ॥ जनपर होहुदयालुदीनहितसो

गौरीवर ॥ उमारमनममदुखदमन हरहुशोकसंतापना ॥ कृपाकरहु श्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २० ॥ जलनिधिउतरेपार भालुकपि कटकसमेता ॥ पठैबसीठीबूझिमरमगढ़उठेसचेता ॥ चारियूथहोइलगेवीरसबसुभटजुझारे ॥ प्रभुप्रतापकरिदापऋच्छकपिकटक सँहारे ॥ कंपअकंपआदिकहतेकहिजैजैनाथापना ॥ कृपाकरहुश्री रामचन्द्र ममहरहु शोकसंतापना ॥ २१ ॥ महोदरअतिकायआदि कहहँतिहनुमंता ॥ हांकिसमरमहँमेघनादकहँहत्योअनन्ता ॥ अहिरावणवधकियउरामसेवकसुखदाई ॥ दलपाछेकरसोंहत्रोणकटिकसिद्धौ भाई ॥ कृपादृष्टिकरिविपुलबलनाथदियोदलआपना ॥ कृपाकरहुश्री रामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २२ ॥ कुम्भकर्णअतिविकटरूप आवादलमाहीं ॥ दपटिपटकिभटभालुकीशमरदेमहिमांहीं ॥ उठि बहोरितेहिअस्त्रशस्त्रछांड़ेकपिदलपर ॥ दलपाछेकरिसौंहलीन्हनिज शरसीतावर ॥ वध्योताहिनिजपाणिप्रभुदेवजयतिकरुजापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥२३॥ रावणआयोसौंहबंधुपरशैलचलावत ॥ दलपाछेकरिसौंहताहिप्रभुआपुखेलावत ॥ कहतदेवअबजानिबिलम्बकरदुष्टहिमारो ॥ त्रिभुवनविजयसमेतनाथ निजपुरपग्रुधारो ॥ सुनिपुकाररावणहतेराजविभीषणथापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २४ ॥ प्रभुसिखलैहनु अंगदादिगयेसियालेवाई ॥ निसरिदियोतेसियाशपथमिसुप्रभुपहँआई ॥ शोभितजानकिरामसंगकपिदलहर्षाने ॥ जैजैजैतिउचारदेवमुनिसाधुनगाने ॥ ब्रह्मादिकस्तुतिकरतछबिनिहारिनाथापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचन्द्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २५ ॥ चढ़िपुष्पक आरूढ़रामासियलषणसमेता ॥ चलेअवधलैसखासंगप्रभुकृपानिकेता ॥ आयेतीरथराजभेजिहनुमानभरतपहँ ॥ वातजातसानन्दजात प्रभुभरतदरशकहँ ॥ भरतविरहवारिधिमगनरामदेहुदर्शापना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २६ ॥ हनूमानजलयानभेटकरिजलनिधिपारा ॥ कहेउकुशललैसमाचारचलुपवनकुमारा ॥ भरतआयगुरुनिकटमातुपुरलोगजनाई ॥ पुलकिउठेसमस्वा

तिवारिजनुचातकपाई ॥ गंगपूजिसियरामचलेवपायकुशलअनुजाप
ना ॥ कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥२७॥ उतरियान
तेपुरसमीपभेटेमुनिगुरुजन ॥ भरतचरणहियलायपुनिकभेटेरिपुसूद
न ॥ लषणभरतसानंदामिलेसानुजद्वौभाई ॥ हुँकरिगायदिनअंतधाय
जनुवच्छपिआई ॥ मिलिपरिजनसानंदसियरामचलेभवनापना ॥
कृपाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २८ ॥ गुरुअनुशासन
सचिवसाजिअभिषेकवनाई ॥ रामसिंहासनराज्यदीनगुरुमुनिसमुदा
ई ॥ भरतगहेकरछत्रचवरसियरामनिहारे ॥ मुदितजन्मफलपायमा
तुआरतीउतारे ॥ वेदस्तुतिकरिजयतिभनिभक्तिदेहुरामापना ॥ कृ
पाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ २९ ॥ छुटेवंदिसबविबु
धकोटितेंतीसहराषिकै ॥ स्तुतिकरतबनायपुष्पजयमालबराषिकै ॥
शंभुआयकृतविविधभांतिस्तुतिश्रीरामा । पायरजायसुचलेदेवसब
निजानिजधामा ॥ बिदाकियोसबसखाहिप्रभुदेवजयतिकरुजापना । कृ
पाकरहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ ३० ॥रामचरितअवगा
हसिंधुकोइपारनपावा॥शेषशारदानिगमनेतिकहिनिजमुखगावा ॥ शं
भुउमासनभरद्वाजसोंयाज्ञवल्क्यमुनि । कागभुशुण्डिसोंगरुडमानासि
ककहितुलसीगुनि ॥ कहैसुनैरतिरामपदएकराजमतिआपना । कृपा
करहुश्रीरामचंद्रममहरहुशोकसंतापना ॥ ३१ ॥

इति श्रीछप्पयरामायणतुलसीदासकृत

समाप्तः ॥

श्रीवेङ्कटेशायनमः ॥

श्रीसीतारामाभ्यांनमः ॥

अथ श्रीहनुमानबाहुक प्रारंभः

छप्पय ॥

सिंधुतरनसियसोचहरनरविबालवरनतनु ॥ भुजविसालमूरतिकराल कालहुकोकालजनु ॥ गहनदहननिरदहनलंकनिःशंकवंकभुव ॥ यातुधानबलवानमानमददवनपवनसुव ॥ कहतुलसिदाससेवत सुलभसेवकहितसंततनिकट ॥ गुनगनतनमतसुमिरतजपतशमनसकलशंकटविकट ॥ १ ॥ स्वर्णशैलसंकासकोटिरवितरुनतेजधन ॥ उरविसालभुजदंडचंडनखवज्रवज्रतन ॥ पिंगनयनभ्रुकुटीकरालरसनादशनानन ॥ कपिसकेसकरकसलंगूरखलदलबलभानन ॥ कहतुलसिदासबसजासुउरहनुसूरतमूरतिविकट ॥ संतापपापतेहिपुरुषकहँ सपनेहुँनहिंआवतनिकट ॥२॥ झूलना ॥ पंचमुखछमुखभृगुमुख्यभट असुरसुरसर्वसरिसमरसमरत्थशूरो ॥ वाँकुरोवीरविरुदैतविरुदावली वेदवंदीवदतपैजपूरो ॥ जासुगुणगाथरघुनाथकहजासुबलविपुलजल भरितजगजलधिक्रूरो ॥ दीनदुखदवनकोकौनतुलसीसहैपवनकोपूतर जपूतरूरो ॥ ३ ॥ घनाक्षरी ॥ भानुसोंपढनहनुमानगएभानुमनअनुमानिशिशुकेलिंकियोफेरफारसो ॥ पाछिलेपगनिगमगगनमगनमन क्रमकौनभ्रमकपिबालकविहारसो ॥ कौतुकविलोकिसुरपालहरिहर विधिलोचननिचकाचौंधीचित्तनिखँभारसो ॥ बलकैधौंवीररसधीरज कैसाहसकैतुलसीशरीरधरेसबनिकोसारसो ॥ ४ ॥ भारतमेंस्मरथक रथकेतुकपिराजगाज्योसुनिकुरुराजदलहलबलभो ॥ कह्योद्रोणभीषमसमीरसुतमहावीरवीररसवारिनिधिजाकोबलजलभो ॥ वानरसुभायबालकेलिभूमिभानुलगिफलंगफलांगहूतेधाटिनभतलभो ॥ नायनायमाथजोरिजोरिहाथजोधाजोहैंहनुमानदेखेजगजीवनकोफलभो ॥५॥

गोपदपयोधिकरिहोलिकाज्योंलायलंकनिपटनिशंकपरपुरगलबलभो द्रोणसोपहारलियोख्यालहींउखारिकरिकंदुकज्योंकपिखेलबेलकैसो फलभो॥शंकटसमाजअसमंजसमेंरामराजकाजजुगपूंगनिकोकरतलप लभो॥ साहसीसमत्थतुलसीकोनाहजाकीबांहलोकपालनीकोफिरिफि रिथिरथलभो॥६॥ कमठकीपीठिजाकेगोडनिकीगाडैमानोनापकेभा जनभरिजलनिधिजलभो॥ यातुधानदावनपरावनकोदुर्गभयोमहामी नवासतिमितोमानिकोथलभो॥कुंभकर्णरावणपयोदनादईधनकोतुल सीप्रतापजाकोप्रबलअनलभो॥भीषमकहतमेरेअनुमानहनुमानसारि खोत्रिकालनत्रिलोकमहाबलभो॥७॥ दूतरामरायकोसपूतपूतपौन कोतुअंजनीकोनंदनप्रतापभूरिभानुसो॥सीयसोचशमनदुरितदोषदम नशरनआएअवनलखनप्रियप्रानसो॥ दशमुखदुसहदरिद्रदरिबेकोभ योप्रगटत्रिलोकओकतुलसीनिधानसो॥ज्ञानगुनवानबलवानसेवासाव धानसाहेबसुजानउरआनुहनुमानसो॥८॥ दवनदुवनदलभुवनविदि तबलवेदयशगावतविबुधवंदीछोरको॥ पापतापतिमिरतुहिनविघटन पटुसेवकसरोरुहसुखदभानुभोरको॥ लोकपरलोकतेविसोकसपनेन सोकतुलसीकहीएहैभरोसोएकओरको॥ रामकोदुलारोदासवामदेव कोनिवासनामकलिकामतरुकेसरीकिसोरको॥९॥ महाबलसींवमहा भीममहाबानयतमहावीरविदितवरायोरघुवीरको॥कुलिशकठोरतनु जोरपरैरोररनकरुणाकलितमनधारमीकधीरको॥दुर्जनकोकालसोक रालपालसज्जनकोसुमिरेहरनहारतुलसीकेपीरको॥ सीयसुखदायकदु लारेरघुनायककोसेवकसहायकहैसाहसीसमीरको॥१०॥ रचिवेको विधिजैसेपालिवेकोहरिहरमीचमारिवेकोज्यायवेकोसुधापानभो॥धरि वेकोधरनितरनितमदलिवेकोसोखिवेकृशानुपोषिवेकोहिमभानुभो॥ खलदुखदोषिवेकोजनपरितोषिवेकोमागिवोमलीनताकोमोदकसुदान भो॥ आरतकीआरतीनिवारिवेकोतिहूंपुरतुलसीकोसाहिबहठीलो हनुमानभो॥ ११ ॥ सेवकसेवकाईजानिजानकीसमानैकानिसानु कूलशूलपानिनवैनाथनाकको॥ देवीदेवदानवदयावनेह्वैजोरैहाथवा पुरेवराकऔरराजारानाराकको॥ जागतसोवतबैठेवागतविनोदमोद

ताकैजोअनर्थसोसमर्थएकआंकको ॥ सबदिनरूरोपरैपूरोजहांतहांता हिजाकेहैभरोसहियहनुमानहांकको ॥ १२ ॥ सानुगसगौरिसानुकूल शूलपाणिताहिलोकपालसकललषणरामजानकी ॥ लोकपरलोकको विसोकसोत्रिलोकताहितुलसीतमाहिकहिकहावीरआनकी ॥केसरीकि सोरवंदीछोरकेनिवाजेसबकीरतिविमलकपिकरुणानिधानकी ॥ बाल कज्योंपालिहैंकृपालुमुनिसिद्धताको जाकेहिएहुलसतिहांकहनुमान की ॥ १३ ॥ करुणानिधानबलबुद्धिकेनिधानमोदमहिमानिधानगुन ज्ञानकेनिधानहौ ॥ वामदेवरूपभूपरामकेसनेहीनामलेतदेतअर्थधर्म कामनिरवानहौ ॥ आपनोप्रभावसीतानाथकोसुभावशीललोकवेद विधिहुविदुखहनुमानहौ ॥ मनकीवचनकीकरमकीतिहूँप्रकारतुलसी तिहारोतुमसाहिबसुजानहौ ॥ १४ ॥ मनकोअगमतनसुगम कियेकपीशकाजमहाराजकेसमाजसाजसाजेहैं ॥ देववंदीछोररणरो रकेसरीकिसोरयुगयुगजगतेरेविरदविराजेहैं ॥ वीरवरजोरघटिजो रतुलसीकीओरसुनिसकुचानेसाधुखलगणगाजेहैं ॥ विगरीसँवारअं जनीकुमारकीजैमोहिंजैसेहोतआएहनुमानकेनिवाजेहैं ॥ १५ ॥ मत्त गयंद ॥सुजानशिरोमणिहौहनुमानसदाजनकेमनवासतिहारो ॥ ढारो विगारोमैंकाकोकहाकेहिकारणखीझतहौंतोतिहारो ॥ साहेबसेवक नातेतेहातोकियोतोतहांतुलसीकोनचारो ॥ दोषसुनाएतेआगेहुँ कोहुसियारतहौंमनतोहियहारो ॥ १६ ॥ तेरेथपेउथपैनमहेशथ पैथिरकोकपिजेघरघाले ॥ तेरेनिवाजेगरीबनिवाजविराजितवैरिनके उरशाले ॥ शंकटसोचसबैतुलसीलियेनामफटैमकरीकेसेजाले ॥ बूढभएवलिमेरेहिवारकिहारपरेबहुतैनतपाले ॥ १७ ॥ सिंधुतरे वडेवीरदलेखलजालेहैंलंकसेवंकमवासे ॥ तैरणकेहरिकेहरिकेविद लेअरिकुंजरछैलछवासे ॥ तोसोंसमर्थसुसाहिबसेइसहैतुलसीदुखदोष दवासे ॥ वानरवाजबढेंखलखेचरलीजतक्योंनलपेटिलवासे ॥ १८ ॥ अच्छविमर्दनकाननभानिदशाननआननभाननिहारो ॥ वारिदनाद अकंपनकुंभकरन्नसेकुंजरकेहरिवारो ॥ रामप्रतापहुतासनकच्छविप च्छसमीरसमीरदुलारो ॥ पापतेशापतेतापतिहूंतेसदातुलसीकहँसो

रखवारो ॥ १९ ॥ घनाक्षरी ॥ जानतजहानजनहनुमानकोनिवाज्यौ मनअनुमानिवलिबोलनविसारिए ॥ सेवायोगतुलसीकवहूंकहांचूकप रीसाहेवसुभावकपिसाहेवसंभारिए ॥ अपराधीजानिकीजैसासातिस हसभाँतिमोदकमरैजोताहिमाहुरनमारिए ॥ साहसीसमीरकेदुलारेर घुवीरजूकेवाहँपीरमहावीरवेगिहींनिवारिए ॥ २० ॥ वालकविलोकि वलिवारेतेआपनोकियोदीनवंधुदयाकीन्हींनिरुपाधिन्यारीये ॥ रावरो भरोसोतुलसीकेरावरोईवलआशारावरीयेदासरावरोविचारिये ॥ वड़ो विकरालकलिकोकोनविहालकियोमाथेपगुवलीकोनिहारिसोनिवारि ए ॥ केसरीकिसोररणरोरवरजोरवीरबाहूपीरराहुमातुज्यौंपछारिमा रिए ॥ २१ ॥ उथपेथपनथिरथपेउथपनहारकेसरीकुमारबलआपनो संभारिए ॥ रामकेगुलामनिकोकामतरुरामदूतमोसेदीनदूवरकोतकि यातिहारिए ॥ साहिवसमर्थतोसोंतुलसीकेमाथेपरसोऊअपराधविनु वीरबाँधिमारिए ॥ पोषरीविसालवाहूंवलिवारिचरपीरमकरीज्यौंपक रिकैबदनविदारिए ॥ २२ ॥ रामकोसनेहरामसाहसलषणसियराम कीभगतिसोचशंकटनिवारिए ॥ मुदमरकटरोगवारिनिधिहेरिहारे जीवजाम्बवंतकोभरोसोतेरोभारिए ॥ कूदिएकृपालुतुलसीसोंप्रेमपध यतेंसुथलसुवेलभालबैठिकैविचारिए ॥ महावीरवाँकुरेवराकीबाहुपीर क्योंनलंकिनीज्यौंलातघातहीमरोरिमारिए ॥ २३ ॥ लोकपरलोकहूं तिलोकनविलोकियततोसोंसमरथचषचारिहूँनिहारिए ॥ कर्मकाल लोकपालअगजगजीवजालनाथहाथसवनिजमहिमाविचारिए ॥ खा सदासरावरोनिवासतेरोतासुउरतुलसीसोंदेवदुखीदेखियतभारिए॥ वा ततरुमूलबाहुशूलकापिकछुवेलिउपजीसकेलिकापिखेलहीउखारिये ॥ ॥ २४ ॥ करमकरालकंसभूमिपालकेभरोसेवकीवकभगिनीकाहु तेकहांडरैगी ॥ वडीविकरालबालघातिनीनजातकाहिबाहुबलबालक छबीलेछोटेछरैगी ॥ आईहैबनायवेषआपतूविचारिदेखपापजायसब कोगुणीकेपालेपरैगी ॥ पूतनापिशाचिनीजौंकापिकाह्नतुलसीकीबाहू पीरमहावरितेरेमारेमरैगी ॥ २५ ॥ भालकीकिकालकीकिरोषकी त्रिदोषकीहै वेदनविषमपापतापछलछाहँकी ॥ करमनकूटकीकियंत्रमं

ऋबूटकीपराहिज ।हिपापिनीमलीनमनमाहकी ॥ पायहैसजायनतकह तवजायतोहि बावरीनहोहिवानिजानिकपिनाहकी ॥ आनहनुमानकीदोहाईबलवानकीशपथमहावीरकीजोरहैपीरवाहँकी ॥२६॥सिंहिकासहारिबलिसुरसासुधारिछललंकिनपिछारिमारिवाटिकाउजारी है॥ लंकापरजारिमकरीविदारीवारवारयातुधानधारिधूरिधानीकरिडारी है ॥ तोरियमकातरिमंदोदरिकढोरिआनिरावणकीरानिमेघनादमहतारीहै ॥ भीरवाहँपीरकीनिपटराखीमहावीरकौनकेसकोचतुलसीकेसोचभारीहै ॥ २७ ॥ तेरीबालकेलिवीरसुनिसहमतधीरनूलतशरीरसुधिशक्ररविराहकी ॥ तेरीबांहवसतविसोकलोकपालसवतेरोनामलिएरहेआरतिनकाहुकी ॥ सामदामभेदविधिवेदहूलवेदसिद्धिहाथकपिनाथहीकेचोटीचोरसाहुकी ॥ आलसअनखपरीहाँसाकिसिखावनहैएतेदिनरहीपीरतुलसीकेबाहुकी ॥२८॥ टूकनिकोघरघरडोलतकंगालबोलिबालज्योंकृपालतनपालपालिपोसोहै ॥ कीन्हीहैसंभारसारअंजनीकुमारवीरअपनोविसारीहै नमरेहूंभरोसोहै ॥ एतनोपरेखोसबभांतिसमरथआजुकपिनाथसाँचीकहोकोत्रिलोकतोसोहै ॥ सासतिसहतदासकीजैपेषिपरिहासचीरीकोमरनखेलबालकनिकोसोहै ॥२९॥ आपनेहीपापतेत्रितापतेकीशापतेबढीहैबांहवेदनकहीनसहिजातिहै ॥ औषधअनेकयंत्रमंत्रटोटकादिकिएवादिभएदेवतामनाएअधिकातिहै ॥ करतारभरतारहरतारकर्मकालकोहै जगजालजोनमानतिइतातिहै ॥ चेरोतेरोतुलसीतूमेरोकह्योरामदूतढीलतेरीवारमोहिंपीरतेपिरातिहै ॥ ॥ ३० ॥ दूतरामरायकोसपूतपूतवायकोसमर्थहाथपायकोसहायअसहायको ॥ वांकीविरुदावलिविदितवेदगाइयतरावणसोंभटभयोमुठिकाकेघायको ॥ एतेबडेसाहेबसमर्थकोनिवाजोआजुसीदतसुसेवकवचनमनकायको॥थोरिवाहूपीरकीबडीगलानितुलसीको कौनपापकोपलोपप्रगटप्रभायको ॥ ३१ ॥ देवीदेवदनुजमनुजमुनिसिद्धनागछोटेबड़ेजीवजेतेचेतनअचेतहैं ॥ पूतनापिशाचीयातुधानीयातुधानवामरामदूतकीरजाइमाथेमानिलेतहैं ॥ घोरयंत्रमंत्रकूटकपटकुयोगरोगहनुमानआनसुनिछांडतनिकेतहैं ॥ क्रोधकीजैकर्मकोप्रबोधकीजैतुल-

सीकोसोधकीजैतिनकोजोदोषदुखदेतहैं ॥ ३२ ॥ तेरेबलवानरजिता येरनरावनसेंतेरेघालेयातुभानधाएघरघरके ॥ तेरेबलरामराजकियेस बसुरकाजसकलसमाजसाजसाजेरघुवरके ॥ तेरेगुणमानसुनिगीरवान पुलकितसजलविलोचनविरंचिहरिहरके ॥ तुलसीकेमाथेपरहाथफेरो कीशनाथबूझिएनदासदुखीतोसेकनिगरके ॥ ३३ ॥ पालेतेरेटूकको परेहूंचूकमूकिये नकूरकौडीटूकोहोंआपनीओरहेरिये ॥ भोरानाथभो- रेहौसरोषहोतथोरेदोषपोषितोषिथापिआपनोनअवडेरिये ॥ अंबुतुहौ अम्बुचरअम्बुतुहौडिंभसोनबूझिएविलंवअवलंबमेरेतेरिये ॥ बालक विकलजानिपाहिप्रेमपहिचानितुलसीकेबांहेपरलांबीलूमफेरिये॥३४॥ घेरिलियोरोगनिकुलोगनिकुयोगनिज्यौंवासरजलदघनघटाधकिनाईहै वरषतवारिपीरजारियेजवासेजसरोषविनुदोषधूममूलमलिनाईहै ॥ क रुणनिधानहनुमानमहाबलवानहेरिहँसिहांकिफूंकिफौजेतेउड़ाईहै ॥ खाएहुतेतुलसीकुरोगराडराकसनिकेशरीकिशोरराखेवीरवरियाईहै ॥ ॥ ३५ ॥ मत्तगयन्द ॥ रामगुलामतुहींहनुमानगुसांइसुसाईसदाअनु- कूलो ॥ पाल्यौहौंबालकआखरदूंपितुमातुज्यौंमंगलमोदसमूलो ॥ वा- हुकीवेदनबांहपगारपुकारतआरतऔंनदभूलो ॥ श्रीरघुवीरनिवारिये पीररहोंदरवारपरोलटिलूलो ॥ ३६ ॥ घनाक्षरी ॥ कालकीकराल- ताकरमकठिनाईकीधोंपापकेप्रभावकीसुभायवायवावरे ॥ वेदनकुभां तिसोसहीनजातिरातिदिनसोईबांहगहीजोगहीसमीरडावरे ॥ लायोत- रुतुलसीतिहारोसोनिहारिवारिसींचिएमलीनभोकुपरितापतावरे ॥ भू- तनिकी आपनीपराईहैकृपानिधानजानियतसबहीकीरीतिरामरावरे ॥ ॥ ३७ ॥ पाँयपीरपेटपीरबाहुपीरमुखपीरजरजरसकलशरीरपीर मईहै ॥ देवभूतपितरकर्मखलकालग्रहमोहिंपरदवरिदमानकसीदईहै॥ होंतोविनमोलहींविकानोवलिवारेहीतेंओढरामनामकीललाटलिखिल ईहै ॥ कुंभजकेकिंकरविकलबूडेगोखुरनि हायरामरायऐसीहालक हूंभईहै ॥ ३८ ॥ बाहुकसुबाहुनीचलीचरमलीचामिलिमुहँपीडके तुजाकुरोगयातुधानहै ॥ रामनामजपजागकियोचाहौसानुरागका लकैसेदूतभूतकहांमेरोमानहै ॥ सुमिरेसहाइरामलषणआखरदोऊ

जिन्हकेसाकेसमूहजागतजहानहै ॥ तुलसीसँभारिताडकासँहारि मारिभटवेधेवरगदसेबनाइवानवानहै ॥ ३९ ॥ ॥ वालपने सूधेम नरामसनमुखभयोरामनामलेतमांगिखातठकठाकहौं ॥ परचौलो करातिमेंपुनीतप्रीतिरामरायमोहवशबैठोतोरितरकितराकहौं ॥ खोटेआचरणआचरतअपनायो अंजनीकुमारसोध्यौरामपानिपाक हौं ॥ तुलसीगुसांईभयोभोडेदिनभूलिगयोताकेफलपावतनिदानपरि पाकहौं ॥ ४० ॥ अशनवसनहीनविषमविषादलीनदेखिदीनदूब रोकरैनहायहायको ॥ तुलसीअनाथसोसनाथरघुनाथकियोदियोफ लशीलसिंधुआपनेसुभायको ॥ नीचएहिवीचपतिपाइभरुआइगो विहायप्रभुभजनवचनमनकायको ॥ तातेतनुपेषियतघोरवरतोरमि सिफूटिफूटिनिकसतलोनरामरायको॥ ४१॥ जीवोंजगजानकीजीव नकोकहायजन मरिवेकोवाराणसीवारिसुरसरिको॥ तुलसीकेदुहूंहाथ मोदकहैंऐसेठाँव जाकेजियेमुएसोचकरिहैंनलरिको ॥ मोकोझूठो सांचोलोगरामकोकहतसबमेरेमनमानहैनहरकोनहरिको ॥ भारीपीर दुसहशरीरतेविहालहोतसोऊ रघुवीरविनुसकैदूरिकरिको ॥ ४२ ॥ सीतापतिसाहेबसहायहनुमाननितहितउपदेशकोमहेशमानोगुरुकै ॥ मानसवचनकायशरणतिहारीपायतुम्हरेभरोसेसुरमैंनजानेसुरकै ॥ व्याधिभूतजनितउपाधिकाहूखलकी समाधिकीजैतुलसीकोजानिजन फुरकै ॥ कपिनाथरघुनाथभोलानाथभूतनाथरोगसिंधुक्योंनडारियत गायखुरकै ॥४३॥ कहौंहनुमानसोंसुजानरामरायसोंकृपानिधानशंक रसोसावधानसुनिये ॥ हरषविषादरागरोषगुणदोषमईविरचीविरंचि सबदेखियतदुनिये ॥ मायाजीवकालकेकरमकेसुभायकोकैरयारामवे दकहैंसांचीमनगुनिये ॥ तुमसेकहानहोयहाहासोबुझैयमोहिंहाहूरहौं मौनहींवयोसोजानिलुनिये ॥ ४४ ॥

इति श्रीगुसांईतुलसीदासकृतहनुमानबाहुकसमाप्त।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ हनूमानचालीसा ॥

प्रारम्भः ॥

दोहा ॥

श्रीगुरुचरणसरोजरज, निजमनमुकुरसुधार । वरणोंरघुवर विमलयश, जोदायकफलचार ॥ १ ॥ बुद्धिहीनतनुजानिकै, सुमिरोंपवनकुमार ॥ बलबुधिविद्यादेहुमोहिं, हरहुकलेशविकार ॥

चौपाई—जयहनुमानज्ञानगुणसागर ॥ जयकपीशतिहुँलोकउजागर ॥ रामदूतअतुलितबलधामा ॥ अंजनिपुत्रपवनसुतनामा ॥ महावीरविक्रमबजरंगी ॥ कुमतिनिवारसुमतिकेसंगी ॥ कंचनवर्णविराजसुवेशा ॥ काननकुंडलकुंचितकेशा ॥ हाथवज्रऔध्वजाविराजै ॥ काँधेमूंजजनेऊसाजै ॥ शंकरसुवनकेसरीनंदन ॥ तेजप्रतापमहाजगवंदन ॥ विद्यावानगुणीअतिचातुर ॥ रामकाजकरिवेकोआतुर ॥ प्रभुचरित्रसुनिवेकोरसिया ॥ रामलषणसीतामनबासिया ॥ सूक्ष्मरूपधरिसियहिंदिखावा ॥ विकटरूपधरिलंकजरावा ॥ भीमरूपधरिअसुरसँहारे ॥ रामचन्द्रकेकाजसँवारे ॥ लायसजीवनलषणजिवाये ॥ श्रीरघुवीरहृदयभरलाये ॥ रघुपतिकीनीबहुतबड़ाई ॥ तुममममप्रियाभरतसमभाई ॥ सहसवदनतुमरोयशगावै ॥ असकहिश्रीपतिकण्ठलगावै ॥ सनकादिकब्रह्मादिमुनीशा ॥ नारदशारदसहितअहीशा ॥ यमकुबेरदिगपालजहांते ॥ कविकोविदकहिसकेंकहांते ॥ तुमउपकारसुग्रीवहिकीन्हा ॥ राममिलायराजपददीन्हा ॥ लंकेश्वरभयेसबजगजाना ॥ वीरपराक्रमकीर्तिबखाना ॥ युगसहस्रयोजनजोभानू ॥ लीलाताहिमधुरफलजानू ॥ प्रभुमुद्रिकामेलिमुखमाहीं ॥ जलधिलाँघिगयेअचरजनाहीं ॥ दुर्गमकाजजगतकेजेते ॥ सुगमअनुग्रहतुमरेतेते ॥ रामदुलारेतुमरखवारे ॥ होतनआज्ञाविनपैसारे ॥ सबसुखलहैतुम्हारीशरना ॥ तुमरक्षककाहूकोडरना ॥ अपनातेजसम्हारौआपै ॥ ती

नौंलोकहाँकतेकापँ ॥ भूतपिशाचनिकटनहिंआवै ॥ महावीरजबनाम सुनावै ॥ नाशैरोगहरैसबपीरा ॥ जपतनिरंतरहनुमतवीरा ॥ संकट सेहनुमानछुड़ावै ॥ मनक्रमवचनध्यानजोलावै ॥ सबपररामतपस्वी राजा ॥ तिनकेकाजसकलतुमसाजा ॥ औरमनोरथजोकोइलावै ॥ तासुअमितजीवनफलपावै ॥ चारोंयुगपरतापतुम्हारा ॥ हैपरसिद्धज गतउजियारा ॥ साधुसंतकेतुमरखवारे ॥ असुरनिकंदनरामदुलारे ॥ अष्टसिद्धिनवनिधिकेदाता ॥ असवरदीनजानकीमाता ॥ रामरसाय नतुम्हारेपासा ॥ सादरतुमरघुपतिकेदासा ॥ तुम्हारेभजनरामकोपावै ॥ जन्मजन्मकोदुखबिसरावै ॥ अंतकालरघुबरपुरजाई ॥ जहांजन्महरि भक्तिकहाई ॥ औरदेवताचित्तनधरई ॥ हनुमतसेयसर्वसुखकरई ॥ संकटहरैमिटैसबपीरा ॥ जोसुमिरैहनुमतबलवीरा ॥ जैजैजैहनुमान गुसाईं ॥ कृपाकरोगुरुदेवकिनाईं ॥ यहशतबारपाठकरजोई ॥ छूटैबं दिमहासुखहोई ॥ जोयहपढ़हनुमानचालीशा ॥ होइसिद्धसाखीगौ रीशा ॥ तुलसीदाससदाहरिचेरा । कीजैदासहृदयमहँडेरा ॥

दोहा—पवनतनयसंकटहरण, मंगलमूरतिरूप ॥
रामलषणसीतासहित, हृदयबसोसुरभूप ॥

इति श्रीहनुमानचालीसासम्पूर्ण ।

अथ संकटमोचनहनुमानाष्टक ।

मत्तगयंदछंद ॥ बालसमैरविभक्षलियो तबतीनहुलोकभयोअँ धियारो ॥ ताहिसोंत्रासभइजगको, यहसंकटकाहुसोंजातनटारो ॥ देव निआनिकरीविनतीतबछांडिदियोरविकष्टनिवारो ॥ कोनहिंजानतहै जगमेंप्रभु संकटमोचननामतुम्हारो॥१॥बालिकित्रासकपीशबसे गिरि जातमहाप्रभुपंथनिहारो ॥ चौंकिमहामुनिशापदियोतबचाहियकौन विचारविचारो॥कैद्विजरूपलियायमहाप्रभु सोतुमदासकुशोकनिवा रो॥कोन०॥२॥अंगदकेसँगलेनगयेसियखोजकपीशयहवचनउचारो॥ जीवतनाबाचिहैहमसोंजु विनासुधिलीयइहांपगुधारो ॥ हेरिथकेतटसिं धुसबैतबलेसियकीसुधिप्राणउबारो॥को० ॥३॥ रावणत्रासदईसियको

तबराक्षसिकोकहिशोकनिवारो ॥ ताहिसमैहनुमानमहाप्रभुजायमहा रजनीचरमारो ॥ चाहंतिसीयअशोकसोंआगि सुदैप्रभुमुद्रिविषाद निवारो ॥ को० ॥ ४ ॥ बाणलग्योउरलक्ष्मणकेतब ॥ प्राणतजेसुत रावणमारो ॥ लेगृहवैद्यसुषेणसमेततभीगिरि द्रोणसुवीरउपारो ॥ आनिसजीवनिहाथदेईतबलक्ष्मणकेतुमप्राण उबारो ॥ को० ॥ ५ ॥ रावणयुद्धअजानकियो तबनागकिपाशसबैशिरडारो ॥ श्रीरघुनाथ समेतसबैदलमोहभयोतबसंकटभारो ॥ आनिखगेशतबैहनुमानजु बंधनकाटिसुत्रासनिवारो ॥ कोनहिं० ॥ ६ ॥ बंधुसमेतजबैअहिरा वण लैरघुनाथपतालसिधारो ॥ देविहिपूजिभलीविधिसोंबलिदेहुसबै मिलिमंत्रविचारो ॥ जायसहायभयेतबहीं अहिरावणसैन्यसमेतसंहा रो ॥ कोन०॥७॥ कार्यकियेबड़देवनकेतुमवीरमहाप्रभुदेखविचारो ॥ कौनसुसंकटमोरगरीबकूंजोतुमसोंनाहिंजातहैटारो ॥ वेगिहरोहनुमा नमहाप्रभु जो कछुसंकटहोयहमारो ॥ कोनहिं० ॥ ८ ॥

दोहा ॥ लालदेहलालीलसै, अरुधरिलाललँगूर ॥ वज्रदेहदानवद लन, जयजयजयकपिशूर ॥ यहअष्टकहनुमानको, विरचिततुलसी दास ॥ गंगादासजुप्रेमसों, पढेहोयदुखनास

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृतसंकटमो चनहनूमानाष्टकंसंपूर्णम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना.

मुंबई.